SRI JAIN SIDHANT BHAWAN GRANTHAWALI

VOL.--2

श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

भाग-२

जैन–सिद्धान्त–भवन–ग्रंथावली

(देव कुमार जैन प्राच्य ग्रन्थागार, जैन सिद्धान्त भवन, आरा की संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एवं हिन्दी की हस्तलिखित पाण्डुलिपियों की विस्तृत सूची)

भाग–२

प्रस्तवन .

डा० गोकुलचन्द्र जैन

अध्यक्ष, प्राकृत एवं जैनागम विभाग, संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

संपादन .

ऋषभचन्द्र जैन फौजदार, दर्शनाचार्य

शोधाधिकारी, देवकुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान, आरा (बिहार)

संकलन

शशीभूषण त्रिपाठी, M. A. (संस्कृत)

कविराज दिवाकर ठाकुर, G.A.M.S. (आयुर्वेद)

गुप्तेश्वर तिवारी, आचार्य

श्री जैन सिद्धान्त भवन प्रकाशन.

भगवान महावीर मार्ग, आरा–८०२३०१

श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

(भाग-२)

प्रथम संस्करण १९८७

मूल्य—१३५)

प्रकाशक

श्री देवकुमार जैन प्राच्य ग्रन्थागार

श्री जैन सिद्धान्त भवन

आरा (बिहार)-८०२३०१

मुद्रक :

शाहाबाद प्रेस

महादेवा रोड, आरा

आवरण शिल्प :

क्रिएटिव आर्ट ग्रुप

दिल्ली

SRI JAINA SIDHANTA BHAWAN GRANTHAWALI (Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa, Hindi mss. Published by Sri D.K. Jain Oriental Library, Sri Jain Sidhanta Bhawan, Arrah (Bihar) India.

First Edition - 1987 Price Rs. 135/-

Jaina Siddhant Bhawana Granthavali

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṁśa & Hindi Manuscripts

of

Sri Devakumar Jain Oriental Library, Arrah

Vol.-2

Introduction
Dr. Gokulchandra Jain
Head of the department of Prakrit & Jainagama.
Sampurnananda Sanskrit Vishvavidyalaya, Varanasi

Editor ;
Rishabhachandra Jain Fouzdar,
Research Officer
Devakumar Jain Oriental Research Institute, Arrah (Bihar)

Compilation :
Shashi Bhushan Tripathi, M A.(San.)
Kaviraj Diwakar Thakur, G. A. M S. (Aurveda)
Gupteshwar Tiwari

Sri Jaina Siddhant Bhawan
PUBLICATION
Bhagwan Mahavir Marg, Arrah-802301

Foreword

Bihar has played a great role in the history of Jainism. Last Tirthankar, Mahavira, who gave a great fillip to the Jain religion, was born here and spread his massage of peace and ahimsa. It is from the land ot Bihar that the fountain of Jainism spread its influence to the different parts of India in ancient period. And in the modern age the Jain Siddhanta Bhavan at Arrah in Bhojpur district has kept the torch of of Jainism burning. It occupies a unique place among the modern Jain institutions of culture. This institution was established to promote historical research and advancement of knowledge particularly Jain learning.

There is a collection of thousands of manuscripts, rare books, pictures and palm-leaf manuscripts, in Shri Devakumar Jain Oriental Library Arrah attached to the said institution. Some of the manuscripts contain rare Jain paintings. These manuscripts are very valuable for the study of the creed as well as the socio-economic life of ancient India.

The present work "Sri Jain Siddhanta Bhavan Granthavali" being the Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṁsa and Hindi Manuscripts is being prepared in six volumes. Each volume contains two parts First parts consists of the list of manuscripts preserved in the institution with some basic informations such as accession number, title of the work, name of the author, scripts, language, size, date etc Part second which is named as Pariśiṣṭa (Appendix) contains more details about the manuscripts recorded in the first part.

The author has taken great pains in preparing the present Catologue and deserves congratulations for the commendable job, This work will no doubt remain for long time a ready book of reference to scholars of ancient Indian Culture particularly Jainism

(Naseem Akhtar)
Director, Museums
Bihar, Patna.

February 29, 1988.
Vikas Bhavan, Patna

प्रकाशकीय नम्र निवेदन

'जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली' का दूसरा भाग प्रकाशित होते देख मुझे अपार हर्ष हो रहा है। लगभग पाँच वर्ष पहले से इस सपने को साकार करने का प्रयत्न चल रहा था। अब यह महत्वपूर्ण कार्य प्रारम्भ हो गया है। एक पंचवर्षीय योजना के रूप में इसके छः भाग प्रकाशित करने में सफलता मिलेगी ऐसी पूरी आशा है।

'जैन सिद्धांत भवन ग्रन्थावली' का यह दूसरा भाग जैन सिद्धात भवन, आरा के ग्रन्थागार में संग्रहीत संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, कन्नड एवं हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थो की विस्तृत सूची है। इसमे लगभग एक हजार ग्रन्थो का विवरण है। हर भाग मे इसका विभाजन दो खण्डो मे किया गया है। पहले खण्ड मे अंग्रेजी (रोमन) मे ग्यारह शीर्षको द्वारा पाण्डुलिपियों के आकार, पृष्ठ संख्या आदि की जानकारी दी गई है। 'भवन' के ग्रंथागार मे लगभग छह हजार हस्तलिखित कागज एवं ताडपत्र के ग्रंथो का संग्रह है। इनमें अनेक ऐसे भी ग्रन्थ है जो दुर्लभ तथा अद्यावधि अप्रकाशित है। अप्रकाशित ग्रन्थों को सम्पादित कराकर प्रकाशित करने की भी योजना आरम्भ हो गई है। वर्तमान मे जैन सिद्धात भवन, आरा मे उपलब्ध 'राम यशोरसायन रास (सचित्र जैन रामायण) का प्रकाशन हो रहा है जो शीघ्र ही पाठको के हाथ मे होगा। इसमे २१३ दुर्लभ चित्र है।

'जैन सिद्धात भवन ग्रन्थावली' के कार्य को प्रारम्भ कराने मे काफी कठिनाइयों का सामना करना पडा लेकिन श्रीजी और माँ सरस्वती की असीम कृपा से सभी संयोग जुडते गए जिससे मैं यह ऐतिहासिक एव महत्व पूर्ण कार्य आरम्भ कराने में सफल हुआ हूँ। भविष्य मे भी अपने सभी सहयोगियो से यही अपेक्षा रखता हूँ कि हमे उनका सहयोग हमेशा प्राप्त होता रहेगा।

ग्रन्थावली एव रामयशोरसायन रास के प्रकाशन के सबसे बडे प्रेरणा-स्रोत आदरणीय पिता जी श्री सुबोध कुमार जैन के सहयोग एव मार्गदर्शन को कभी विस्मृत नही किया जा सकता। अपने कार्यकर्त्ताओं की टीम के साथ उनसे विचार विमर्श करना तथा सबकी राय मे निर्णय लेना उनका ऐसा तरीका रहा है जिसके कारण सभी एकजुट होकर कार्य मे लगे हैं।

बिहार सरकार एव भारत सरकार के शिक्षा विभाग एवं संस्कृति विभाग ने इस प्रकाशन को अपनी स्वीकृति एवं आर्थिक सहयोग प्रदान कर एक बहुत ही महत्वपूर्ण कदम उठाया है जिसके लिये हम निदेशक राष्ट्रीय अभिलेखागार, दिल्ली, निदेशक पुरातत्व एवं निदेशक संग्रहालय बिहार सरकार तथा भारत सरकार के सभी संबंधित

अधिकारियों के कृतज्ञ है और उनसे अपेक्षा रखेंगे कि भवन के अन्य अप्रकाशित हस्त-लिखित ग्रंथों के प्रकाशन में उनका सहयोग देश की सांस्कृतिक धरोहर की सुरक्षा हेतु भविष्य में भी हमें प्राप्त होगा।

डा० गोकुलचन्द जैन, अध्यक्ष, प्राकृत एवं जैनागम विभाग, संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ने ग्रन्थावली की विद्वतापूर्ण प्रस्तावना आंग्ल भाषा में लिखी है। बिहार म्यूजियम के विद्वान एवं कर्मठ निर्देशक श्री नसीम अख्तर साहब ने समय निकालकर इस पुस्तक की भूमिका लिखी है। डा० राजाराम जैन, अध्यक्ष, संस्कृत-प्राकृत विभाग, जैन कालेज, आरा तथा मानद निदेशक श्री देवकुमार जैन प्राच्य शोधसंस्थान, आरा ने आवश्यकता पड़ने पर हमें इस प्रकाशन के सम्बन्ध में बराबर महत्वपूर्ण मार्ग दर्शन दिया है। हम तीनोंही जाने माने विद्वानों का आभार मानते है।

श्री ऋषभ चन्द जैन 'फौजदार', जैनदर्शनाचार्य परिश्रम और लगन से ग्रन्थावली का संपादन कर रहे हैं। श्री ऋषभ जी हमारे संस्थान में मानद शोधा-कारी के रूप में भी कार्यरत हैं। ग्रन्थावली के दोनों खण्डो के संकलन के संपूर्ण कार्य यानी अंग्रेजी भाषा में एक हजार ग्रंथों की ग्यारह कालमों में विस्तृत सूची तथा प्राकृत एवं संस्कृत आदि भाषाओं में परिशिष्ट के रूप में सभी ग्रंथों के आरम्भ की तथा अंत के पदों का और उनके कोलाफोन के भी विस्तृत विवरण देने जैसा कठिन कार्य श्री विनय कुमार सिन्हा, एम० ए० और श्री शत्रुघ्न प्रसाद सिन्हा, बी० ए० ने बहुत परिश्रम करके योग्यता पूर्वक किया है। डा० दिवाकर ठाकुर और श्री मदनमोहन प्रसाद वर्मा ने पुस्तक के अंत में 'वर्ण-क्रम के आधार पर ग्रन्थकारों एवं टीकाकारों की नामावली और उनके ग्रन्थो की क्रम संख्या का संकलन तैयार किया है।

श्री जिनेश कुमार जैन, पुस्तकालय-अधिक्षक, श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा का सहयोग भी सराहनीय है जिनके अथक परिश्रम से ग्रन्थों का रखरखाव होता है। प्रेस मैनेजर श्री मुकेश कुमार वर्मा भी अपना भार उत्साह पूर्वक संभाल रहे हैं। इनके अतिरिक्त जिन अन्य लोगों से भी मुझे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग मिला है उन सभी का हृदय से अभारी हूँ।

अजय कुमार जैन

मंत्री

श्री देवकुमार जैन ओरिएन्टल लाईब्रेरी

देवाश्रम,

आरा

ABBREVIATION

V. S.	—	Vikrama Saṁvata
D.	—	Devanāgarí
Stk.	—	Sanskrit
Pkt.	—	Prakrit
Apb,	—	Apabhraṁśa
C.	—	Complete
Inc.	—	Incomplete

Catg. of Skt. Ms. - Catalogue of Sanskrit manuscripts in Mysore and coorg. by Lewis Rice. M. R. A. S,, Mysore Government Press, Bangalore, 1884.

Catg. of Skt. & Pkt Ms - Catalogue of Sankrit & Prakrit manuscripts in the Central Provinces & Berar by. Rai Bahadur Hiralal B A. Nagpur, 1926.

(१) आ० सू० — आमेर सूची—डा० कस्तूरचन्द, कासलीवाल।

(२) जि० र० को० — जिनरत्नकोश – डा० वेलणकर, भण्डारकर ओरिएण्टल रिसर्च इन्स्टीच्यूट, पूना।

(३) जै० ग्र० प्र० स० — जैन ग्रन्थ प्रशस्ति संग्रह—प० जुगलकिशोर मुख्तार।

(४) दि० जि० ग्र० र० — दिल्ली जिन ग्रन्थ रत्नावली—श्री कुन्दनलाल जैन भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली।

(५) प्र० जै० सा० — प्रकाशित जैन साहित्य—डा० पन्नालाल अग्रवाल।

(६) प्र० स० — प्रशस्ति संग्रह डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल।

(७) भ सं० — भट्टारक सम्प्रदाय – विद्याधर जोहरापुरकर।

(८) रा० सू० — राजस्थान के शास्त्र भंडारों की सूची—डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल, दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी, जयपुर (राजस्थान)।

समर्पण

देवाश्रम परिवार में

पंडित-प्रवर बाबू प्रभुदास जी,

राजर्षि बाबू देवकुमार जी,

ब्र० पं० चन्दा माँश्री,

और

बाबू निर्मलकुमार चक्रेश्वरकुमार जी

यशस्वी तथा गुणीजन हुए है।

उन सभी की पावन

स्मृति को यह

श्री जैन सिद्धांत भवन ग्रन्थावली

सादर सर्मपित है।

देवाश्रम आरा —सुबोधकुमार जैन

१४-३-८७

INTRODUCTION
(VOL—I.)

I have great pleasure in introducing *Śrī Jaina Siddhānta Bhavan Granthāvalī* – a descriptive Catalogue of 997 Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa and Hindi Manuscripts preserved in Shri Deva Kumar Jain Oriental Library, popularly known as Jaina Sidhānta Bhavan, Arrah. The actual number of MSS exceeds even one thousand as some of them are numbered as *a* and *b*. Being the first volume, it marks the beginning of a series of the Catalogues to be prepared and published by the Library.

The Catalogue, devided into two parts, covers about 500 pages and each part numbered separately. In the first part, descriptions of the MSS have been given while the second part contains the Text of the opening and closing portions of MSS along with the Colophon. The catalogue has been prepared strictly according to the scientific methodology developed during recent years and approved by the scholars as well as Government of India The description of the MSS has been recorded into eleven columns viz. 1. Serial number, 2. Library accession or collection number, 3. Titleof the work, 4. Name of the author, 5. Name of the commentator. 6. Material, 7 Script and language, 8. Size and number of folio, lines per page and letters per line. 9. Extent, 10. Condition and age, 11. Additional particulars These details provide adequate informations about the MSS. For instance thirteen MSS of *Dravyasaṁgraha* have been recorded (S. Nos. 213 to 224) It is a well known tiny treatise in Prakrit verses by Nemicanda Siddhānti and has had attracted attention of Sanskrit ond other commentators. Each Ms preserved in the Bhavana's Library has been given an independent accession number Its justification could be observed in the details provided

From the details one finds that first four MSS (213 to 215/2) contain bare Prakrit text. All are paper, written in *Devanāgarī* Script, their language being natured in poetry. Each Ms has different size and number of folios Lines per page and letters per line are also different. All are complete and in good condition. Only one Ms (216) is a Hindi verson in poetry by some unknown

writer and is incomplete. Two MSS (218, 222) are with exposition in *Bhāṣā* (Hindi) prose and poetry by Dyānatarāya and three are in Bhāsā poetry by Bhagavatidas. Ms No. 223 dated 1721 v. s., is with Sanskrit commentary in Prose. Ms No. 229 is a *Bhāṣā vacanikā* by Jayacanda. These details could be seen at a glance as they are presented scientifically.

The Manuscripts recorded in the present volume have been broadly classified into following eleven heads : -

1.	Purāna, Carita, Kathā	1 to 155
2	Dharma, Darśana, Ācāra	156 to 453
3.	Nyāyaśāstra	454 to 480
4.	Vyākarana	481 to 492
5.	Kośa	493 to 501
6.	Rasa, chanda, Alaṅkāra & Kāvya	502 to 531
7.	Jyotiṣa	532 to 550
8.	Mantra Karmakāṇḍa	551 to 588
9.	Āyurveda	589 to 600
10.	Stotra	601 to 800
11.	Pūjā, Pāṭha-vidhāna	801 to 997

The details have been presented in Roman scripts in Hindi Alphabetic order. The classification is of general nature and help a common reader for consultation of the Catalogue. However, critical observations may deduct some MSS which do not fall under any of these eleven categories (see MSS 295, 511, 512).

The Second Part of the volume is entitled as *Pariśiṣṭa* or Appendix. This part furnishes more details regarding the MSS recorded in the first part. Along with the text of the opening and closing portions of each Ms, colophons have been presented in *Devanāgarī* script. The text is presented as it is found in the MSS and the readers should not be confused or disheartened even if the text is currupt. The cross references of more than ten other works deserve special mention. Only a well read and informed scholar could make such a difficult task possible with his high industry and love of labour.

From the details presented in the Second part we get some very interesting as well as importnt informations. A few of them are noted below :—

(1) Some Mss belong to quite a different category and do not come under the heads, they have been enumerated, such as *Navaratnaparīkṣā* (295) which deals with Gemeology. The opening & closing text as well as the colophon clearly mention that it is a *Ratna śāstra* by Buddhabhatt. Similarly, *Nītivākyāmṛtam* (511. 512) is the famous work on Polity by Somadeva Suri (10th cent.). *Trepanakriyākośa* (498, 499) is not a work on Lexicon. It deals with rituals and hence falls under *Ācāraśāstra*. These observations are intended to impress upon the consultant of the catalogue that he should not by pass merely by looking over the caption alone but should see thoroughly the details given in the Second part of the catalogue which may reveal valuable informations for him.

(2) Some of the MSS of *Āptamīmāṁsā* contain *Āptamīmāṁsālaṅkṛti* of Vidyānanda (455) *Āptamīmāṁsāvṛtti* of Vasunandi (456) and *Āptamīmāṁsābhāṣya* of Akalaṅka (457). These three famous commentaries are popularly known as *Aṣṭasahasrī*, *Aṣṭaśatī* and *Devāgamavṛtti*. Though these works have once been published, yet these can be utilised for critical editions.

(3) In the colophon of some of the MSS the parential MSS have been mentioned and the name of the copyist, its date and place where they have been copied, have been given These informations are of manifold importance. For instance the information regarding parential Ms is very important If the editor feels necessary to consult the original Ms for his satisfaction of the readings of the text, he can get an opportunity for the same. It is of particular importance if the Ms has been written into different scripts then that of the original one. Many Sanskrit, Prakrit and Apabhramsa works are preserved on palm leaves in *Kannada* scripts. When these are rendered into *Devanāgarī* scripts there are every possibility of slips, difference in readings and so on. It is not essential that the copyist should be well acquainted with all its languages and subject matter of each Ms. The difference of alphabets in different languages is obvious. Thus the reference of parential Ms is of great importance (373).

(4) The references of places and the copyists further authenticate the MSS. Some of the MSS have been copied in Karnataka at Moodbidri and other places from the palm leaf MSS written in *Kannada* scripts (7, 318, 373) whereas some in Northen India, in Rajasthan, Uttar Pradesh, Bihar, Madhya Pradesh and Delhi.

5) It is also noteworthy that copying work was done at Jaina Siddhanta Bhavana. Arrah itself. MSS were borrowed from different collections & copying work was conducted in the supervision of learned Scholars.

(6) The study of colophon reveals many more important references of *Saṁgh s Ganas, Gacchas, Bhaṭṭārakas* and presentation of *Śāstras* by pious men and women to ascetics. copying the Ms for personal study - *svā hyāya*, and getting the work prepared for his son or relative etc. Such references denote the continuity of religious practice of *śāstradāna* which occupy a very high position in the code of conduct of a Jaina household,

(7) The copying work of MSS was done not only by paid professionals but also by devout *śrāvakas* and desciples of *Bhaṭṭārakas* or other ascetics.

(8) In most of the MSS counting of alphabets, words, *ślokas*, or *gāthās* have been given as *granthaparimāna* at the end of the MSS. This reference is very important from the point of the extent of the Text. Many times the author himself indicates the *grantha-parimāna* Even the prose works are counted in the form of ślokas (32 alphabets each). The *Āptamimāṁsā Bhāṣya* of Akalanka is more popularly known as *Aṣṭaśati* and *Āptamīmāṁsālaṅkṛti* of Vidyānanda is famous as *Aṣtasahaśri*. Both works are the commentaries on the *Āptamimāṁsā* (in verse) of Samanta Bhadra in Sanskrit prose, Vidyananda himself says about his work :—

"*Śrotavy – aṣṭasahasrī śrutaiḥ kimanyaih sahasrasamkhyānaih.*"

Counting in the form of ślokas seems a later development. When the teachings of Vardhamāna Mahāvira were reduced to writing counting was done in the form of *Padas*. For instance the *Āyāramga* is said to contain eighteen thousand *Padas*.

" Āyāramgamatthāraha—pada - sahassehi "

(Dhavalā p. 100)

Such references are more useful for critical study of the text.

(9) Some references given in the colophons shed light on some points of socio-cultural importance as well. The copying work was done by Brāhmins, Vaiśyas, Agarawālas, Khandelāwāls, Kāyasthas and others. There had been some professionally trained persons with very good hand writing who were entrusted with the work of copying the MSS. The remuneration of writing was decided per hundred words. For the purpose of the counting generally the copyist used to put a particular mark (I) invariably without punctuation. In the end of some of the MSS even the sum paid, is mentioned. Though it has neither been recorded in the present catalogue nor was required, but for those who want to study the MSS these informations may be important.

The study of Colophons alone can be an independent and important subject of research.

From the above details it is clear that both the parts of the present volume supplement each other. Thus, the *Jaina Siddhānta Bhavana Granthāvalī* is a highly useful reference work which undoubtedly contributes to the advancement of oriental learning. With the publication of this volume the Bhavana has revived one of its important activities which had been started in the first decade of the present Centuty.

Shri Jaina Siddhant Bhavan, Arrah, established in the beginning of the present century had soon become famous for its threefold activities viz. 1) procuring and preserving rare and more ancient MSS, 2) publication of important texts with its english translation in the series of Sacred Books of the Jaina's and 3) bringing out a bilingual research journal *Jaina Siddhānta Bhāskara* and *Jaina Antiquary*. Under the first scheme, many palm leaf MSS have been procured from South India, particularly from Karnataka, and paper MSS from Northern India However the copying work was done on the spot if the Ms was not lent by the owner or otherwise was not transferable. The earliest Śauraseni Prakrit *Siddhānta Śāstra Saṭkhaṇḍāgama*

with its famous commentaries *Davalā*, *Jayadavalā*, and *Mahādavlā* was copied from the only surviving palm leaf Ms in old *Kannada* scripts, preserved in the *Siddhānta Basadi* of Moodbidri.

Bhavan's Collection became known all over the world within ten years of establishment. In the year 1913, an exhibition of Bhavan's collection was organised at Varanasi by its sister institution on the occasion of Three Day Ninth Annual Function of Śrī *Syādvāda Mahāvidyālava*. A galaxy of persons from India and abroad who participated in the function greatly appreciated the collection. Mention may specially be made of Pt. Gopal Das Baraiya, Lala Bhagavan Din, Pt. Arjunlal Sethi, Suraj Bhan Vakil, Dr. Satish Chandra Vidyabhusan, Prof. Heraman Jacobi of Germany, Prof. Jems from United States of America, Ajit Prasad Jain, and Brahmachari Shital Prasad. A similar exhibition was organised in Calcutta in 1915. Among the visitors mention may be made of Sir Asutosh Mukherjee, Shri Aurvind Nath Tegore, Sir John woodruf and Sarat Chandra Ghosal.

The other activity of the publication of *Biblothica Jainica—The Sacred Books of the Jainas* began with the publication of *Dravya Saṁgiaha* as Volume I (1917) with Introduction, English translation and Notes etc. In this series important ancient Prakrit texts like *Samayasāra*, *Gommatasāra*, *Ātmānuśāsana* and *Puruṣārtha Siddhyupāya* were published. Alongwith the Sacred Book Series books in English on Jaina tenets by eminent scholars were also published. *Jaina Siddhānta Bhāskara* and *Jaina Antiquary*, a bilingual Research Journal was published with the objectiveto bring into light recent researches and findings in the field of Jainalogical learning.

Thanks to the foresight of the founders that they could conceive of an Institution which became a prestigious heritage of the country in general and of the Jainas in particular. The palm leaf MSS in *Kannada* scripts or rendered into *Devanāgarī* on paper are valuable assets of the collection. It is undoubtedly accepted that a manuscipt is more valuable than an icon or Architectural set-up. An icon may be restalled and similarly an Architectural set-up can be re-built, but if even a piece of any Ms is lost, it is lost for ever. It is how plenty of ancient works have been lost. It is why the followers of Jainism paid a thoughtful consideration to preserve

the MSS which is included in their religious practice. A Jaina Shrine, particularly the temple was essentially attached with a *Śāstra-Bhandāra*, beeause the *Jina. Jinavāṇī* and *Jinaguru* were considered the objects of worship. Almost all the Jaina temples are invariably accompanied with the *Śāstra-Bhandāras*. During the time of some of the Mughal emperors like Mahmud Gaznai (1025 A.D.) and Aurangzeb (1661-1669 A.D) when the temples were destroyed, a new awakening for preservation of the temples and *Śāstra* started and much interior places wēre choosen for the purpose. A new sect of the Bhattārakas and Caityavāsīs emerged among the Jaina ascetics who undertook with enthusiasm the activity of building up the *Śāstra Bhandaras*. As a result, many MSS collections came up all over India. The collections of Sravanabelagola, Moodbidri and Humach in Karnataka, Patan in Gujrat, Nagaur, Ajmer, Jaipur in Raj asthan, Kolhapur in Maharastra, Agra in Uttar Pradesh and Delhi are well known. A good number of copies of important MSS were prepared and sent to different *Śāstra Bhandāras*. One can imagine how the copies of a works composed in South India could travel to North and West And likewise works composed in North-West reached the Southern coast of India. A great number of Sanskrit, Prakrit and Apabhramsa works were rendered into Kannada, Tamil and Malayalee Scripts and were transcribed on the Palm Leaf. It is a historical fact that the religious enthusiasm was so high that Shāntammā, a pious Jaina lady, got prepared one thousand copies of *Śāntipurāṇa* and distributed them among religious people. At a time when there were no printing facilities such efforts deserved to be considered of great significance.

The above efforts saved hundreds thousands MSS. But along with the development of these new sects these social institutions became almost private properties. This resulted into two unwanted developments viz. 1) lack of preservation in many cases and 2) hardship in accessiblity. Due to these two reasons the MSS remained locked for a long period for safety, and consequently the valuable treasure remained unknown to scholars. The story of the *Siddhānta* Śāstra *Satkhandāgama* is now well known. It is only one example.

With the new awakening in the middle or last quarter of the Nineteenth Century some enlightened Jaina householders came out

with a strong desire to accept the challenge of the age and started establishing independent MSS libraries. This continued during the first quarter of 20th century- In such Institution, Eelak Pannalal Sarasvati Bhavan at Vyar, Jhalara Patan and Ujjain, and Shri Jaina Siddhanta Bhawan at Arrah stand at the top. More significant part of these collections had been their availability to the scholars all over the world. Almost all the eminent Joinologist of the present century studing the MSS, have utilized the collection of Sri Jaina Siddhanta Bhawan. It had been my proud privilege and pleasure that I too have used Bhavan's MSS for almost all my critical editions of the works I edited.

During last few decades catalogues of some of the MSS collections, in Government as well as in private institutions, have been published Through these catalogues the MSS have become known to the world of Scholars who may utilise them for their study.

In the series of the publications of catalogues relating to Jainalogy, *Jinaratnakośa* by Velankar deserves special mention. It is quite a different type of reference work relating to MSS. Bharatiya Janapitha, Kashi published in Hindi in Devanagari script the *Kannḍaprāntīya Tāḍapatrīya Grantha* Sūchī in 1948 recording descriptions of 3538 Palm leaf MSS. The catalogues of the MSS of Rajasthan prepared by Dr. Kastoor Chand Kaslіwal and published in five volumes by Shri Digambar Jaina Atisaya Ksetra Shri Mahaviraji, Jaipnr also deserve mention. L. D. Institute of Indology, Ahmedabad have published catalogue in several volumes. Among the publication of new catalogues mention may be made of *Dillī Jina-Grantha-Ratnāvālī* published by Bharatiya Jnanpith, New Delhi and the catalogue of *Nāgaura Jaina Śāstra-Bhandāra* published by Rajasthan University.

In the above range of catalogues, the present volume of *Śrī Jaina Siddhānta Bhavana Granthāvalī* is a valuable addition. As already started this is the beginning of the publication of catalogues of the MSS preserved in Sri Jain Siddhant Bhavan now Shri Deva Kumar Jain Oriental Library, Arrah. It is likely to cover eight volumes each covering about 1000 MSS. I am well aware that preparation and publication of such works require high industrious zeal, great

passions and continued endeavour of a team of scholars with keen insight besides the large sum required for such publications.

It is not the place to go into many more details regarding the importance of the MSS and contribution of Bhavan's collection, but I will be failing in my duty if I do not record the contribution of the founder Sriman Devakumarji and his worthy successors. I sincerely thank Shriman Babu Subodh Kumar Jain, Honorary Secretary of Shri Jain Siddhant Bhavan, who is carrying forward the activities of the Institute with great enthusiasm. Shri Risabh Chandra Jain deserves my whole hearted appreciation for preparing, editing and seeing through the press the Catalogue with fullest sincerity, ability and insight. His associates also deserve applause for their due assistance. I also thank my esteem friend Dr. Rajaram Jain, who is a guiding force as the Honorary Director of the Institute.

In the end I sincerely wish to see other volumes published as early as possible

Dr Gokul Chandra Jain
Head of Department of Prakrit
and Jainãgam, Sampurnanand
Sanskrit Vishvavidyalay,
VARANASI

सम्पादकीय

श्री देवकुमार जैन ओरिएण्टल लायब्रेरी तथा श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा 'सेन्ट्रल जैन ओरिएन्टल लायब्रेरी' के नाम से देश-विदेश मे विख्यात है। यह ग्रन्थागार आरा नगर के प्रमुख भगवान महावीर मार्ग (जेल रोड) पर स्थित है। वर्तमान में इसके मुख्य द्वार के ऊपर सरस्वती जी की भव्य एवं विशाल प्रतिमा है। अन्दर बहुत बड़ा सगमरमर का हॉल है, जिसमे सोलह हजार छपे हुए तथा लगभग छह हजार हस्तलिखित कागज एव ताडपत्र के ग्रन्थों का संग्रह है। जैन सिद्धान्त भवन के ही तत्वावधान में श्री शान्तिनाथ जैन मन्दिर पर 'श्री निर्मलकुमार चक्रेश्वरकुमार जैन कला दीर्घा' है। इस कला दीर्घा मे शताधिक दुर्लभ हस्तनिर्मित चित्र, ऐतिहासिक सिक्के एवं अन्य पुरातत्त्व सामग्री प्रदर्शित है। यहीं ८४ वर्ष पूर्व एक महत्वपूर्ण सभा मे श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा का उद्घाटन (जन्म) हुआ था।

सन् १९०३ मे भट्टारक हर्षकीर्ति जी महाराज सम्मेद शिखर की यात्रा से लौटते समय आरा पधारे। आते ही उन्होने स्थानीय जैन पंचायत की एक सभा मे बाबू देवकुमार जी द्वारा सगृहीत उनके पितामह प० प्रभुदास जी के ग्रन्थ सग्रह के दर्शन किये तथा उन्हे स्वतन्त्र ग्रन्थागार स्थापित करने की प्रेरणा दी। बाबू देवकुमार जी धर्म एव सस्कृति के प्रेमी थे, उन्होने तत्काल श्री जैन सिद्धान्त भवन की स्थापना वही कर दी। भट्टारक जी ने अपना ग्रन्थसग्रह भी जैन सिद्धान्त भवन को भेट कर दिया।

जैन सिद्धान्त भवन के सवर्द्धन के निमित्त बाबू देवकुमार जी ने श्रवणबेलगोला के यशस्वी भट्टारक नेमिसागर जी के साथ सन् १९०६ मे दक्षिण भारत की यात्रा प्रारम्भ की, जिसमे विभिन्न नगरों एव गांवो मे सभाओं का आयोजन करके जैन संस्कृति की सुरक्षा एव समृद्धि का महत्व बताया। उसी समय अनेक गावों और नगरो से हस्तलिखित कागज एव ताडपत्र के ग्रन्थ सिद्धान्त भवन के लिए प्राप्त हुए तथा स्थानो पर शास्त्रभडारो को व्यवस्थित भी किया गया। इस प्रकार कठिन परिश्रम एवं निरन्तर प्रयत्न करके बा० देवकुमार जी ने अपने ग्रन्थकोश को समुन्नत किया। उस समय यात्राएँ पैदल या बैलगाडियो पर हुआ करती थीं। किन्तु काल की गति को कौन जानता है? १९०८ ई० में ३१ वर्ष की अल्पायु मे ही बाबू देवकुमार जी स्वर्गीय हो गये, जिससे जैन समाज के साथ-साथ सिद्धान्त भवन के कार्य-कलाप भी प्रभावित हुए। तत्पश्चात् उनके साले बाबू करोड़ीचन्द्र ने भवन का कार्य सभाला और उन्होंने भी दक्षिण भारत तथा अन्य प्रान्तो की यात्रा करके हस्तलिखित ग्रन्थो का सग्रह कर सेवा कार्य किया। उनके उपरान्त आरा के एक और यशस्वी धर्मप्रेमी कुमार देवेन्द्र

ने भवन की उन्नति हेतु कलकत्ता और बनारस मे बड़े पैमाने पर जैन प्रदर्शिनियो और सभाओं का आयोजन किया। भवन के वैभव सम्पन्न संग्रह को देखकर डा० हर्मन जैकोबी, श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर आदि जगत् प्रसिद्ध विद्वान प्रभावित हुए तथा उन्होने बाबू देवकुमार की स्मृति मे प्रशस्तियाँ लिखी एवं भवन की सुरक्षा एव समृद्धि की प्रेरणाएँ दीं।

सन् १६१६ मे स्व० बाबू देवकुमार जी के पुत्र बाबू निर्मलकुमार जी भवन के मंत्री निर्वाचित हुए। मन्त्री पद का भार ग्रहण करते ही निर्मलकुमार जी ने भवन के कार्य-कलापो मे गति भर दी। १६२४ मई में जैन सिद्धात भवन के लिए स्वतन्त्र भवन का निर्माण कार्य आरम्भ करके एक वर्ष मे भव्य एव विशाल भवन तैयार करा दिया। तत्पश्चात् धार्मिक अनुष्ठान के साथ सन् १६२६ मे श्रुतपञ्चमी पर्व के दिन श्री जैन सिद्धात भवन ग्रन्थागार को नये भवन मे प्रतिष्ठापित कर दिया। उन्होंने अपने कार्यकाल मे ग्रन्थागार मे प्रचुर मात्रा मे हस्तलिखित तथा मुद्रित ग्रथों का संग्रह किया।

जैन सिद्धात भवन आरा मे प्राचीन ग्रथो की प्रतिलिपि करने के लिए लेखक (प्रतिलिपिकार) रहते थे, जो अनुपलब्ध ग्रन्थो को बाहर के ग्रन्थागारो से मगाकर प्रतिलिपि करते थे तथा अपने संग्रह मे रखते थे। यहां नये ग्रन्थो की प्रतिलिपि के अतिरिक्त अपने सग्रह के जीर्ण-शीर्ण ग्रन्थो की प्रतिलिपि का भी कार्य होता था। इसका पुष्ट प्रमाण ग्रन्थो मे प्राप्त प्रशस्तियाँ हैं। जैन सिद्धान्त भवन, आरा से अनेक ग्रन्थ प्रतिलिपि कराकर सरस्वती भवन बम्बई एव इन्दौर भेजे गये है।

सन् १६४६ में बाबू निर्मलकुमार जैन के लघुभ्राता चक्रेश्वरकुमार जैन भवन के मत्री चुने गये। ग्यारह वर्षों तक उन्होने पूरे मनोयोग से भवन की सेवा की। पश्चात् सन् १६५७ से बाबू सुबोधकुमार जैन को मत्री पद का भार दिया गया, जिसे वे अभी तक पूरी लगन एव जिम्मेदारी के साथ निर्वाह रहे हैं। बाबू सुबोधकुमार जैन भवन के चतुर्मुखी विकास के लिए दृढप्रतिज्ञ है। इनके कार्यकाल मे भवन के क्रिया-कलापो मे कई नये अध्याय जुड़ गये है, जिनसे बाबू सुबोधकुमार जैन का व्यक्तित्व एव कृतित्व दोनो उभर-कर सामने आये है।

जैन सिद्धात भवन, आरा के अन्तर्गत जैन सिद्धान्त भास्कर एव जैना एण्टीक्वायरी शोध पत्रिका का प्रकाशन सन १९१३ से हो रहा है। पत्रिका द्विभाषिक, हिन्दी-अंग्रेजी तथा षाण्मासिक है। पत्रिका में जैनविद्या सम्बन्धी ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक सामग्री के अतिरिक्त अन्य अनेक विधाओ के लेख प्रकाशित होते है। शोध-पत्रिका अपनी उच्चकोटि की सामग्री के लिए देश-देशान्तर मे सुविख्यात है। इसके अंक जून और दिसम्बर मे प्रकट होते हैं।

जैन सिद्धान्त भवन, आरा का एक विभाग श्री देवकुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान है। इसमें प्राकृत और जैनविद्या की विभिन्न विधाओ पर शोधार्थी कार्य कर रहे है। संस्थान मे शोध सामग्री प्रचुर मात्रा मे भरी पड़ी है। संस्थान सन् १९७२ ई० से मगध विश्वविद्यालय, बोध गया द्वारा मान्यता प्राप्त है। वर्तमान मे इसके मानद् निदेशक, डा० राजाराम जैन, अध्यक्ष, प्राकृत-संस्कृत विभाग, हर-प्रसाद दास जैन कॉलिज (मगध वि. वि.) आरा हैं। इस समय संस्थान के सहयोग से १५ शोधार्थी शोधकार्य कर रहे हैं तथा अनेक पी. एच. डी की उपाधियाँ प्राप्त कर चुके हैं।

इस संस्था द्वारा अबतक अनेक महत्वपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इस संस्था के हस्तलिखित ग्रन्थो के सूचीकरण कार्य मे यह दूसरा उपहार 'जैन सिद्धान्त भवन ग्रंथावली, का द्वितीय भाग है। इसमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंस एवं हिन्दी भाषाओ के १०२३ ग्रंथो की विवरणात्मक सूची प्रकाशित है। ग्रंथ को प्रथम भाग की तरह दो खडो मे विभक्त किया गया है। प्रथम खंड मे पाण्डुलिपियो का विवरण रोमन लिपि मे दिया गया है। दूसरे खण्ड मे परिशिष्ट शीर्षक से ग्रन्थो के प्रारम्भिक अंश, अन्तिम अंश तथा प्रशस्तियाँ दी गई है। सूची मे आधुनिक पद्धति से ग्रन्थो का विवरण व्यवस्थित किया गया है। विवरण निम्न ग्यारह शीर्षकों मे प्रस्तुत है—

(१) क्रम संख्या। (२) ग्रन्थ संख्या। (३) ग्रन्थ का नाम। (४) लेखक का का नाम। (५) टीकाकार का नाम। (६) कागज या ताड़पत्र। (७) लिपि और भाषा। (८) आकार सें मी -में, पत्रसंख्या, प्रत्येक पत्र की पंक्ति संख्या एवं प्रत्येक पंक्ति की अक्षर संख्या। (९) पूर्ण-अपूर्ण। (१०) स्थिति तथा समय (११) विशेष जानकारी यदि कोई है।

ग्रन्थावली को सामान्य रूप मे विषय वार निम्नलिखित शीर्षको के अन्तर्गत विभक्त किया गया है –

(१) पुराण-चरित-कथा।

(२) धर्म दर्शन-आचार।

(३) रस छन्द, अलकार काव्य.।

(४) मंत्र-कर्मकाण्ड.।

(५) आयुर्वेद।

(६) स्तोत्र. (७) पूजा-पाठ विधान।

अनेक ऐसे भी ग्रन्थ हैं, जिनका विषय निर्धारण विना आद्योपान्त अध्ययन के सम्भव नही हो सकता है. उन ग्रन्थो को भी इन्ही शीर्षकों के अन्तर्गत व्यवस्थित किया गया है।

क्र० ९९८ से १०९८ के बीच लगभग पचास ऐसे ग्रन्थ हैं जो पूजा से-सम्बन्ध रखते हैं. क्योंकि वास्तव में यह प्रायः व्रत-कथाएँ हैं। ऐसी कथाओ मे पूजा-अर्चना की प्रधानता होती है। इसी के साथ कथा कही जाती है, जिससे जनसामान्य धर्म से प्रभावित होकर आत्मोन्नति की ओर प्रवृत होता है। क्योंकि बाल-बुद्धि लोगों के प्रतिबोध के लिए कहानी ही सबसे अधिक उपयोगी एवं सरल विधा है।

प्रस्तुत सूची में तत्त्वार्थसूत्र, द्रव्यसंग्रह, भक्तामरस्तोत्र, कल्याणमन्दिर स्तोत्र, विषापहार स्तोत्र, सिद्धपूजा आदि की प्रतियाँ बहुसख्यक हैं। क्रम संख्या १३६१ से २०२० तक स्तोत्र एव पूजा-विधान के ही ग्रथ हैं। एक विषय के इतने अधिक ग्रन्थो का एक साथ संग्रह होना, अपने आपमें महत्वपूर्ण है। आयुर्वेद के शारदातिलक सटीक. वैद्यमनोत्सव, योगचिन्तामणि, वैद्यभूषण प्रभृति ग्रंथो की पाण्डुलिपियाँ विशेष महत्व की तथा प्राचीन भी हैं।

अन्य ग्रंथागारो में उपलब्ध हस्तलिखित प्रतियों के सन्दर्भ यथास्थान दिये गये हैं। इसमें जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली भाग —१ के भी सन्दर्भ दिये गये हैं। यह सन्दर्भ प्रतियो के खोजने मे सहयोगी होगे। इससे यह भी ज्ञात होता है कि देशभर के अनेक शास्त्रभण्डारो, मंदिरो तथा संस्थानो मे हस्तलिखित ग्रन्थो की भरमार है। जो अभी तक अप्रकाशित पडे हुए है। उन्हे प्रकाश म लाने की दिशा मे जो प्रयत्न हो रहे है, वे पर्याप्त नही है। विद्वानो, अनुसन्धाताओ, तथा सम्बद्ध सस्थाओं को इसे एक आन्दोलन के रूप आगे बढाने का उपाय करना चाहिए।

ग्रन्थावली के इस भाग को तैयार करने मे डा० गोकुलचद्र जैन, वाराणसी, श्री सुबोधकुमार जैन, श्री अजयकुमार जैन आदि व्यक्तियों का महत्वपूर्ण निर्देशन रहा है। उक्त सभी का हृदय से आभारी हूँ। आशा है भविष्य मे भी सबका निर्देशन एवं सहयोग आशीष पूर्वक प्राप्त होता रहेगा। ग्रंथावली के सम्पादन, संयोजन मे जो त्रुटियाँ हुई हैं, उनके लिए विद्वज्जन क्षमा करेंगे।

ऋषभचन्द्र जैन फौजदार
शोधाधिकारी,
देवकुमार जैन प्राच्य शोध सस्थान
आरा (बिहार)

INTRODUCTION TO SECOND VOLUME

In continuation to my introduction to first volume of *Śrī Jaina Sidhānta Bhavana Granthāvalī,* I have great pleasure in introducing the Second Volume of the same series. Like the First Volume the Second Volume contains descriptions of more than One Thousand Sanskrit, Prakrit, Aprabhraṁśa and Hindi Manuscripts preserved in *Shri Devakumar Jain Oriental Library, Arrah.* It has been prepared strictly according to the Scientific Methodology adopted in First Volume In the introduction to First Volume, I have discussed in detail various points related to the Catalogue in general and *Śrī Jaina Sidhānta Bhavana Granthāvalī* in particular.

The Second Volume is also divided into two parts. In the first part descriptions of manuscripts have been given, and in the second part the text of the opening and closing portions of MSS along with Colophons have been recorded in Devanāgarī scripts. The MSS have been classified under some general heads like Purāna-Carita-Kathā, Dharma-Darśana-Ācāra etc This classification helps a common reader. Those who want to go into details, they should have a keen eye on the contents while looking on the titles. The MSS recorded under the head of *Kathā* (nos 998 to 1026) are the part of *Ācāra* or Pūja-*Vidhāna* and not related with the narrative literature in its strict sense.

The manuscripts recorded in the present volume have their own importance By publication of this volume they have became accessiable to scholars, and now could be best adjudged when utilized for study or critical editions, Here I would like to draw the attention on certain points which seems to me significant to this volume

It has been generally observed by scholars and religious critics that due importance to *Bhakti* and *Karmakānda* (rituals) have not been given in Jaina religion A large number of MSS recorded in the present volume are related to various type of rituals, devotional songs-*Stotras-Stuti-Pūjā Pāṭha, Pratisthā* etc and other related matters. The number and variety of MSS clearly testify that *Bahkti and Karmakānda* occupy an important position in Jaina Tradition. It is true that according to Jainism *Bhakti* and *Kriyākāda* alone can not lead to liberation or *Mokṣa*.

In this volume seven more MSS of Dravyasaṁgraha have been recorded. It shows the popularity of the treatise. All the MSS related to it should be taken into consideration while undertaking a critical study of the Text.

Some important Prakrit and Apabhraṁśa MSS like Samaya sāra (1165–1168, Pravacanasāra (1158–1160), Saṭpāhuḍa (1172–1173), Kārtikeyānuprekṣā (1133) Paramātmaprakāśa (1154, 1155) have also been recorded in this volume.

Seventeen MSS relating to Indian medicine i. e. *Āyurveda* have been mentioned some of which like Aṣṭāṅgahṛdaya of Vāgbhata (1344), Śāraṅgadhara–saṁhitā (1356) o Śāradātilaka (1355), Madanavinoda (1349) deserve special mention.

A good number of MSS is related to stotra literature. Some of them are close to *tantra*. It is true that Tantrism could not be developed in Jainism like some other schools of Indian religions, still some trends can be seen in the works like *Padmāvatīkalpa*, *Jvālāmālinīkalpa*, *Sarasvatīkalpa* etc.

In the end I like to thank the editors and publishers for bringing the Second Volume with in a short time after the publication of first volume. I do hope that the same enthusiasm will continue in preparing and publication of other volumes of the Catalogue.

—Dr. Gokul Chandra Jain

श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

SHRI DEVAKUMAR JAIN ORIENTAL LIBRARY,

JAIN SIDDHANT BHAVAN, ARRAH (BIHAR)

S. No.	Library accession or Collection No. if any	Title of Work	Name of Author	Name of Commentator
1	2	3	4	5
998	Nga/48/15/4	Ananta-Caudaśa-Kathā	Jnānasāgara	—
999	Nga/47/4/43	,, ,, ,,	—	—
1000	Ta/42/50	Ananta-Vrata-Kathā	—	—
1001	Nga/47/4/54	Anantanāth-Kathā	—	—
1002	Nga/411 Jha/	Aṣṭānhikā Kathā	Jnānasāgara	—
1003	Nga/48/15/6	,, ,,	—	—
1004	Nga/47/4/64	Aṭhāi ,,	Bhairondāsa	—
1005	Nga/47/4/47	Ādityavāra ,,	—	—
1006	Nga/40/1	,, ,,	—	—
1007	Nga/41/Ga	,, ,,	—	—
1008	Nga/47/4/48	,, ,,	—	—

Mat. or Subt.	Script	Size in cms. No. of folios or leaves lines per page & No. of letters Per line	Extent	Condition and age	Additional Particulars
6	7	8	9	10	11
P.	D; H Poetry	17 5×13 5 7 14 15	C	Good	
P	D; H Poetry	20 6×18 0 5 16 18	C	Old	
P	D, H Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P.	D; H Poetry	20 6×18 0 6 16 18	C	Old	
P	D, H Poetry	14 5×11 0 6 13.16	C	Old	
P.	D; H Poetry	17 5×13 5 3 14 15	C	Good	
P.	D, H Poetry	20 0×18 0 6 16 18	C	Old	
P	D; H. Poetry	20 6×18 0 11 16 18	C	Old	
P.	D; H Poetry	14 2×9 0 22 9 22	C	Old	
P.	D; H. Poetry	14.5×11.0 3 13.16	C	Good	
P.	D; H, Poetry	20.6×18 0 3.16 18	C	Old	

1	2	3	4	5
1009	Nga/48/25	Ādityavāra Kathā	—	—
1010	Ta/42/45	Ākāśa-Pañcamī Kathā	Jnānasāgar	—
1011	Nga/41 Ta	,, ,, ,,	—	—
1012	Ta/12/1	Bhavişyādatta Kathā	—	—
1013	Nga/40/7	Canda Kathā	Rajācanda	—
1014	Ng/41 (Gha)	Caturdaśī Kathā	Jnānasāgara	—
1015	Nga/40/2	Caturavacanoccārinī Kathā	—	—
1016	Ta/26/1	Dāna-Kathā	Bhārāmalla	—
1017	Nga/47/4/63	Daśa-Lākşnī Kathā	—	—
1018	Nga/47/4/68	,, ,, ,,	Bhairondāsa	—
1019	Nga/41/ Cha	,, ,, ,,	Jnānasāgara	—
1020	Nga/48/15/3	,, ,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H. poetry	23.0×16 7 8 12 29	C	Good	
P.	D, H Poetry	32 3×19 0 3 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	14 5×11 0 9 13 16	C	Old	
P	D, H Poetry	24 2×16 0 68 10 30	C	Good 1948 V S	
P	D, H Poetry	14 2×9 0 31 9 22	C	Good	
P	D, H Poetry	14 5×11 0 8 13 16	C	Good	
P	D, Skt Prose	14 2×9 0 11 9 22	C	Old	
P	D; H Poetry	20 3×17 5 38.14.21	C	Good	
P	D, H. Poetry	20 6×18 0 2 16 18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20 6×18 0 8 16 18	C	Old	
P	D; H. Poetry	14 5×11 0 8.13.16	C	Old	
P.	D; H. Poetry	17.5×13 5 7.14.18	C	Good	

1	2	3	4	5
1021	Ta/42/52	Daśa-lākṣanī-vrata-Kathā	Jnānasāgara	—
1022	Nga/44/16/1	,, ,, ,, ,,	—	—
1023	Ta/27/1	Darśana-Kathā	Bhārāmalla	—
1024	Nga/40/4	Dhama-pāpa-buddhi Kathā	—	—
1025	Ja/60	Dhūpa-daśami Kathā	—	—
1026	Nga/47/4/79	Dudhārasa-vrata ,,	—	—
1027	Ja/53	Hari-vaṁsa Purāna	—	—
1028	Ja/27/1	,, ,, ,,	—	—
1029	Jha/10/3	,, ,, ,,	—	—
1030	Ja/59	Jambū-caritra	—	—
1031	Nga/46/8	Labdhi-vidhāna Kathā	—	—
1032	Ja/6/1	Mahāvira-Purāṇa	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	32.3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D; H Poetry	13 0×10 3 5 9 10	Inc	Old	There are so many opening pages are not available.
P	D; H Poetry	19 7×16.5 48 14 21	C	Good	
P.	D, Skt Prose	14.2×9.0 14 9 22	C	Old	
P.	D; H. Poetry	24 5×10 5 5 8 28	Inc	Good	Its three to twelve pages aae lost.
P.	D, H. Poetry	20 6×18 0 4 16 18	C	Old	
P.	D, Skt./ H Poetry	27 9×17 3 149 14 40	C	Good	
P.	D, Skt / H Prose/ Poetry	21 5×14 4 41 15.38	Inc	Old	The heading of this book his clouvayed
P.	D; H. Prose	26 8×10 5 8.12 37	Inc	Old	It has no opening and clysing.
P.	D, H Poetry	29.4×14 1 22 13 38	C	Good 1933 V S.	Rajyakumāra canda seems to be copiar.
P.	D; H. Poetry	19 0×17 0 5.15.22	C	Old	
P.	D; H. Poetry	30.2×15.0 85.12.49	Inc		Ope pages are missing.

1	2	3	4	5
1033	Nga/37/9	Nemi-nātha-Vivāha	Vinadīlāla	—
1034	Nga/47/4/62	Niskānkṣita-guṇa Kathā	—	—
1035	Ta/42/46	Niśśalyāṣṭamī ,,	Jnānasamudra	—
1036	Nga/41/Jha	Nirdoṣa-saptamī ,,	Jnānasāgara	—
1037	Nga/48/15/8	Pancamī ,,	Surendra-Bhūsana	—
1038	Ja/11	Parśva-purāna	Lālā Candulāla	—
1039	Ja/10	,, ,,	—	—
1040	Nga/41/Cha	Ratnatraya Kathā	—	—
1041	Ta/42/51	,, ,	Jnānasāgara	—
1042	Nga/84/15/5	Ratnatraya-vrata Kathā	,,	—
1043	Nga/44/16/2	,, ,, ,,	—	—
1044	Ta/42/44	Ravivrata ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, H. Poetry	22.0×13.0 6.15.13	C	Old	
P.	D, H Poetry	20.6×18.0 7 16 18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	32.3×19.0 3 33 37	C	Good	
P	D, H. Poetry	14.5×11.0 6.13 16	C	Old	
P	P, H Poetry	17.5×13.5 10 14 15	C	Good	
P.	D; H Poetry	28.0×13.0 144 13.27	C	Good	
P.	D; H Poetry	29.0×14.0 11 12 28	Inc	Good	
P.	D, H Poetry	14.5×11.0 6 13 16	C	Old	
P	D; H Poetry	32.3×19.0 2 33.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	17.5×13.5 5.14 15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	13.0×10.2 11.9.10	Inc	Old	
P.	D; H. Poetry	32.3×19.0 4 33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1045	Nga/48/15/1	Ravi-vrata Kathā	—	—
1046	Ja/34/1	,, ,, ,,	Bhanukīrti	—
1047	Ta/26/2	Rātri Bhojana-tyāga Kathā	Bhārāmalla	—
1048	Ta/42/54	Rohıṇī Kathā	—	—
1049	Nga/48/15/7	,, ,,	—	—
1050	Nga/41/ṭha	Rohiṇī-vrata Kathā	—	—
1051	Ja/62	Roṭa-tīja ,,	Dyānatarāya	—
1052	Ta/42/56	,, ,,	—	—
1053	Nga/46/9/1	,, ,,	—	—
1054	Nga/46/9/2	,, ,,	—	—
1055	Nga/41	Salūnā ,,	Vinodīlāla	—
1056	Nga/46/3	Śīla-Kathā	Malla-sena ?	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	17.5×13.5 4.14.15	C	Good	
P.	D; H. Prose/ Poetry	19.0×14.9 8.11.15	C	Old	
P.	D, H Poetry	20.3×17.5 33.14.21	C	Good	
P	D; H / Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; H Poetry	17.5×13.5 9.14.15	C	Good	
P.	D; H Poetry	14.5×11.0 9.13.16	C	Old	
P.	D; H Poetry	22.3×13.0 9.8.23	C	Good	
P.	D; H Prose	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	
P	D; H. Prose	18.8×17.6 2.17.23	C		
p.	D; H. Poetry	18.8×17.6 3.14.17	C		
P.	D; H, Poetry	14.5×11.0 19.13.16	C	Old	
P.	D; H. Poetry	25.6×16.6 27.13.36	C	Old	

1	2	3	4	5
1057	Ta/28/2	Śila-vrata Kathā	Bhārāmalla	—
1058	Nga/40/3	Śilavati ,,	—	—
1059	Nga/41/Ja	Solahakārana Kathā	Jnānasāgara	—
1060	Nga/46/6	,, ,,	,,	—
1061	Nga/48/15/2	Ṣodaśa-kārana ,,	,,	—
1062	Ta/42/48	Ṣravana-dwādasi ,,	,,	—
1063	Nga/45/1	Saipāla-Caritra	Jivarāja	—
1064	Nga/45/12	,, ,,	—	—
1065	Ta/42/47	Sugandha-daśami Kathā	Jnānasagara	—
1066	Nga/48/15/9	,, ,, ,,	—	—
1067	Nga/47/4/78	,, ,, ,,	—	—
1068	Nga/41	Sugandhadaśami ,,	Jnānasāgara	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H Poetry	19.8×17.2 45.14.23	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	14.2×9.0 50.9.22	C	Old	
P	D; H. Poetry	14.5×11.0 5.13.16	C	Old	
P	D; H Poetry	23.2×15.0 4.16.15	C	Old	
P	D; H. Poetry	17.5×13.5 4.14.15	C	Good	
P.	D; H Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	
P	D; Skt. Prose	24.7×11.2 40.13.37	C	Good	
P,	D, H. Poetry	24.5×11.3 38.15.35	C	Old	
P	D; H. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P	D; H. Poetry	17.5×13.5 4.14.15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 4.16.18	C		
P.	D; H. Poetry	.5 ×11.0 5.13.16	C		

1	2	3	4	5
1069	Nga/40/5	Swarūpa-sena Kathā	—	—
1070	Ta/14/35	Vīra Jinanda	—	—
1071	Ja/34/5	Viṣnu Kumāra ,,	Vinodīlāla	—
1072	Ta/11/1	Arihant -Kevali	Rama-gopāla	—
1073	Ta/6,9	Ārādhanāsāra	—	—
1074	Nga/38/10	Arādhanā-pratibodha	—	—
1075	Ja/1	Artha Prakāṣikā	—	—
1076	Ta/9/1	Ātmānuśāsana	Guna-bhadra	—
1077	Ja/38	Banārasi-Vilāsa	Banarasidāsa	—
1078	Nga/47/4/67	Bāraha-bhāvanā	—	—
1079	Nga/47/15/6	,, ,,	—	—
1080	Ta/6/18	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. prose	14.?×9.0 32 9 22	C	Old	
P.	D; H Poetry	15.2×12 8 3 11.15	C	Old	
P	D; H Poetry	19 0×14 9 19 15 16	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	14 5×11.7 29 9.15	C	Good 1917 V. S.	
P	D; Pkt. Poetry	22 2×14 7 8.18 15	C	Old	
P.	D; H Poetry	15 7×9.0 7.9.22	C	Good	
P	D; H Prose	33.4×18 9 411 13 33	C	Good	The opening pages are damaged.
P.	D; Skt Prose	19.0×14 5 37.15 13	C	Old 1928 V. S.	
P.	D; H. Poetry	22.0×13 1 107.12.31	C	Old	
P.	D; H Poetry	20.6×18.0 2.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	16.5×16.0 2.12.19	C	Old	
P.	D; H, Poetry	22.2×14.7 1.20.17	C	Old	

1	2	3	4	5
1081	Nga/44/13/7	Bisa Tirthaṅkaranāmāvalı	—	—
1082	Ja/15	Brahma-Vilāsa	Bhagavatidāsa	—
1083	Nga/45/7	,, ,,	,,	—
1084	Ta/42/3	Caitya-Vandanā	—	—
1085	Ta/14/3	,, ,,	—	—
1086	Nga/45/10	Cāturmāsa Vyākhyā	—	—
1087	Ja/40	Caudaha-guna-sthāna	—	—
1088	Ja/45/3	,, ,, ,,	—	—
1089	Ja/51/21	Catvārı-dandaka	—	—
1090	Ta/14/42	Cauhisa ,	Daulata-rāma	—
1091	Ja/65/1	,, ,,	,,	—
1092	Ja/23/1	,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	32.5×8.5 3.6.13	C	Old	
P	D; H. Poetry	25.0×12.0 170.11.34	C	Good	
P.	D; H Poetry	26.8×13.9 168.11.33	C	Old 1967 V. S.	
P	D, Skt Poetry	32.3×19.0 1.30.37	C	Good	
P	D; Skt Poetry	15.2×12.6 3.13.18	C	Old	
P	D, Skt. Prose/ Poetry	24.7×11.3 72.13.38	C	Old	
P	D; H Prose	22.0×13.5 63.12.27	C	Old	
P	D; H. Prose	15.0×11.3 8.10.19	C	Old	
P.	D; Pkt Poetry	32.3×20.1 1.13.35	C	Good	
P.	D. H. Poetry	15.2×12.8 6.12.20	C	Good	Other subjects are also written in last pages.
P.	D; H. Poetry	11.5×10.0 10.10.14	C	Good	
P.	D; H. Prose	22.4×14.2 18.17.18	Inc	Old	

1	2	3	4	5
1093	Ja/45/2	Caubisa ṭhāṇā	—	—
1094	Ja/41	Carcā-Saṅgraha	—	—
1095	Ja/8	Carcā-Samādhāna	Bhūdharadāsa	—
1096	Ja/30	,, ,,	—	—
1097	Nga/45/11	Daśāskandha	—	—
1098	Ja/35/6	Dāna-Vāvanī	Dyānatarāva	—
1099	Ja/16/6	,, ,,	,,	—
1100	Nga/37/4	Dāna-śila-tapa-bhāvanā	—	—
1101	Nga/30/2/1	Devagaman	Samantabhadra	—
1102	Ja/41/1	Digambara āmnāya	—	—
1103	Ja/12	Dharma-grantha	—	—
1104	Ja/25	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	15.0×11.3 5.10.20	C	Old	
P	D; H. Poetry	21.2×13.6 148.11.33	C	Old	
P.	D; H Poetry	29.7×14.0 83.11.44	C	Good 1893 V. S.	
P.	D; H. Poetry	20.8×14.2 157.16.17	C	Good	
P.	D; Pkt. Prose/ Poetry	23.4×10.3 42.13.40	C	Old 1735 V. S.	
P	D. H Poetry	18.3×11.5 10.16.15	C	Good	
P	D. H Poetry	23.3×19.0 10.15.18	C	Good	
P	D; H. Poetry	20.3×11.5 13.9.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	19.0×14.8 14.9.26	C	Old	
P.	D; H. Prose	21.2×13.6 2.11.30	C	Old	
P.	D, H. Poetry	12.9×27.4 230.9.19	C	Old	
P.	D; H Prose/ Poetry	22.0×14.4 110.20.14	Inc	Old	Its opening 48 pages and last page are missing.

1	2	3	4	5
1105	Nga/44/8	Dharmāmṛtasâra	—	—
1106	Nga/44'13/4	Dharmâṣṭaka	—	—
1107	Ja/9	Dharma-parîkṣâ	Manohara	—
1108	Ja/14	Dharmaratna	—	—
1109	Ja/13	,, ,, granthā	—	—
1110	Ja/35/8	Dharma-rahasya	Dyānatarāya	—
1111	Nga/30/1	Dharmasâra Satasai	Şíromanıdāsa	—
1112	Ta/61/14	Dıavya-Sangraha	Nemicanda	—
1113	Nga/30/2/2	,, ,,	,,	—
1114	Ta/37	,, ,,	—	—
1115	Ta/4/1	,, ,,	Nemıcanda	—
1116	Ta/6/1	,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Prose/ Poetry	21.0×16 5 60.15.21	C	Good	
P.	D; H. Poetry	13.5×8.5 4.6.13	C	Old	
P.	D; H. Poetry	29.8×15.0 181.12.48	C	Good	
P.	D; H. Poetry	26.9×13.2 181.9.24	C	Good	
P.	P; H. Poetry	26.6×14.0 206.9.24	C	Good	
P	D; H. Poetry	18.3×11 5 10.16 15	C	Good	
P.	D, H Poetry	17 5×14.3 75 13 22	C	Good 1832 V. S.	
P	D; Pkt. Poetry	22.2×14.7 10.23.15	C	Old	
P.	D; H. Poetry	19.0×14.8 5 9 26	C	Old	
P	D;H /Skt. Poetry	16 0×12.0 41.10.16	C	Old	Starting three pages are missing so it has opening
P.	D;H./Pkt. Prose	23.2×19.5 20.13.32	C	Old 1871 V. S.	
P.	D;Pkt./H. Poetry/ Prose	22.2×14.7 49.18 20	C	Old	

1	2	3	4	5
1117	Ja/23	Dravya-Saṁgraha	Nemicandra	—
1118	Nga/16/2	" "	"	—
1119	Ta//14/33	Dvādaśānuprekṣā	—	—
1120	Ja/51/19	Eryā-patha Sāmāyika	—	—
1121	Nga/38/13	Gati-Lakṣana	—	—
1122	Ja/49	Gommata-sāra	Nemicandra	—
1123	Ta/3/46	Gyāna kē aṭh aṅga	—	—
1124	Nga/28/1	Hanavanta anuprēkṣā	Paṇḍita Bacharāja	—
1125	Nga/48/11/5	Jina-gāyatrī trikāla-sandhyā	—	—
1126	Ta/24/3	Jina-guna-sampatti	—	—
1127	Ja/65/7	Jina-mahimā	—	—
1128	Nga/47/4/77	Jēva-rāśi-kṣamā-vaṇī	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Pkt./ H. Prose/ Poetry	22.4×14.2 19 17.15	C	Old	
P.	D; Pkt Poetry	13 0×15.0 6.11.21	C	Good	
P.	D; H. Poetry	15.2×12 8 4.13.16	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	32 3×20.1 2.13.35	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	15.7×9.0 2.9.22	C	Good	
P.	D; H. Prose	36.5×18.7 454.11 38	C	Good	
P.	D; Pkt./ H Poetry	22.5×15 0 3.12 31	C	Good	
P.	D; Pkt. Poetry	14.6×14.1 7.14.19	C	Good	
P	D; Skt. Poetry/ Prose	16.5×13.2 0.10 13	Inc	Old	
P	D; Skt. Poetry	30.2×20 0 3.37.33	C	Old	
P.	D; H. Poetry	11.5×10.0 4.10.14	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 3.16.18	C	Old	

1	2	3	4	5
1129	Nga/40/6	Jnāna-pacisi	Banarasidāsa	—
1130	Ja/23/4	Jnānārnava-Vacanika	Śubhacandra	—
1131	Nga/16/3	Karma-prakṛti-granthā	Nemicandra	—
1132	Ta/17/1	Karma-battisi	—	—
1133	Nga/20,2	Kāratikeyānu preksā	Kārtikeya	—
1134	Ja/51	Laghu-tattvārtha sūtra	—	—
1135	Ta/3/12	Laghu-sāmāyika	—	—
1136	Ta/42/80	,, ,,	—	—
1137	Nga/38/9	Leśyā-Swarūpa	—	—
1138	Ta/4/3	Lilāvati-prakirnaka	Bhāskarācārya	—
1139	Ja/18	Mithyātva Khandana	Padmasāgara	—
1140	Ja/4	Mokṣamārga	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	14.2×9.0 3.9.22	C	Old	
P.	D;Skt./H. Prose/ Poetry	22.4×14.2 40.18 15	C	Old	
P.	D; Pkt. Poetry	13.0×15.0 18.11.21	C	Good	
P	D; H Poetry	15.5×9.5 10 10 19	C	Old	
P.	D; Pkt. Poetry	25 6×15 0 38 15 21	C	Good	
P	D; Skt Prose	32 3×20 1 2 13 34	C	Good	It is also named Arhat pravacana.
P	D; Skt. Poetry	22 5×15 0 2 12 36	C	Good	
P	D; Skt Poetry	32 3×19 0 1.33.37	C	Good	
P	D, Skt / Pkt Poetry	15 7×9 0 2 9 22	C	Good	
P	D; Skt Pros / Poetry	19.3×13.0 167.17.16	C	Old	
P	D; H. Poetry	23.9×10.8 113.9.32	C	Good	
P	D;H./Pkt. Prose/ Poetry	32.1×15.0 224.12.50	Inc	Good	

1	2	3	4	5
1141	Ja/65/5	Mokṣa-mārga paidi	Banārasıdāsa	—
1142	Ta/14/36	,, ,, ,,	,,	—
1143	Ta/6/13	Mṛtyu-mahotsava	—	—
1144	Nga/16/1	Mukti Suktāvali	—	—
1145	Ta/18/11	Navakāra-māhātmya	—	—
1146	Ja/27/5	Naya cakra	Devasena	—
1147	Nga/16/5	,, ,,	,,	—
1148	Ja/41/2	,, ,, Vacanıkā	Hemarāja	—
1149	Nga/28/6	,, ,, ,	Devasena	Hemarāja
1150	Nga/20/3	Nirvāna-kānda	—	—
1151	Nga/20/4	,, ,,	Bhaiyā Bhagavatidāsa	—
1152	Ta/6/22	Panca Viṃśatikā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	11.5×10.0 7.10.14	C	Good	
P.	D. H. Poetry	15.2×12.8 5.11.15	C	Old	
P	D; Pkt. Skt./ Poetry	22.2×14.7 3.20.19	C	Old	
P.	D; H Poetry	13.0×15.0 23.11.21	C	Good	Opening two pages are missing.
P.	D; H. Poetry	11.0×11.0 6 12 17	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	21.5×14.4 12 19.13	C	Old	It is also called Ālāpapaddhati
P.	D, Skt. Prose	13.1×15 0 13.11.21	C	Good	
P.	D; H, poetry	21.2×13 6 17 11.34	C	Old	
P.	D; H. Poetry	13.4×17.6 26.11 19	C	Good 1962	
P.	D; Pkt. Poetry	25 6×15.0 3 15.21	C	Good	
P.	D; H. Poetry	25.6×15.0 3.14.18	C	Good	
P.	D; Pkt. Poetry	22.2×14.7 2.20.20	C	Old	The charts of Mantra and Tantra are in its last pages.

1	2	3	4	5
1153	Ja/45/1	Panca-purmęṣṭhī	—	—
1154	Ta/6/8	Parmātma-prakāśa	Yogīndradeva	—
1155	Nga/16/6	,, ,,	,,	—
1156	Ja/6/3	Parīkṣā-mukha Vacanikā	—	—
1157	Nga/?6/4	Praśna-mālā	—	—
1158	Jha/5/2	Pravacana-sāra	Candrakīrti-mahārāja ?	—
1159	Jha/10/1	Pravacanasāra	—	—
1160	Jha/10/2	,, ,,	Hemarāja	—
1161	Ta/11/2	Prāyaścitta-grantha	Akalańka-swāmī	—
1162	Nga/47/4/70	Pāpa-punya-māhātmya	—	—
1163	Nga/47/4/69	Punya-māhātmya	—	—
1164	Ta/12/2	Samyyktva Koumudī	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Prose	15.0×11.3 9.10.20	C	Good	
P.	D; Apb. Poetry	22.2×14.7 25.19 13	C	Old	
P.	D; Apb. Poetry	13.0×15.0 29.11.21	C	Good	It is also called paramappayāsu.
P.	D; H. Prose	30.2×15.0 1.11.37	Inc	Good	
P.	D; H Prose	20.3×15.8 57 17 19	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	29 8×14 4 27 14.35	C	Old	
P.	D, Skt. Prose/ Poetry	26 6×10 5 14 14 39	Inc	Old	
P.	D; H Prose/ Poetry	26 8×10.5 28 12.47	Inc	Old	
P	D; Skt. Poetry	145.×11 7 6.11 18	C	Good	
P	D; H. Poetry	20.6×18.0 9 16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20.6×18 0 1.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	24.2×16.0 44.10.30	C	Good	

1	2	3	4	5
1165	Nga/39/2	Samayasāra-gāthā	—	—
1166	Ja/37	,, nāṭaka	—	—
1167	Nga/12/1	,, ,,	Banārasīdāsa	—
1168	Nga/42/2	,, ,,	,,	—
1169	Nga/16/8	Samavaśarana	—	—
1170	Nga/16/7	Samudghāta	—	—
1171	Ta/11/8	Saddarśana	—	—
1172	Ta/6/1	Saṭpāhuda	Kundakunda	—
1173	Nga/16/4	,,	,,	—
1174	Nga/47/4/55	Sallekhyābheda	—	—
1175	Ta/14/40	Sāmāyika	—	—
1176	Ta/14/15	,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt./ Pkt. Poetry	15.7×9 0 3.9 22	Inc	Good	
P.	D; H. Poetry	21.0×14 5 81 13.31	C	Old	
P.	D; H. Poetry	15.0×8.0 344 6 16	C	Old 1884 V. S.	
P.	D; H Poetry	15.0×14 0 128.13.19	C	Good 1840 V. S.	
P.	D; H Poetry	13 0×15 0 40 11 21	C	Good	
P	D; H Poetry	13 0×15 0 3.11 21	C	Good	
P.	D, H Poetry	14 5×11 7 2.11 20	C	Good	
P	D; Pkt Poetry	22 2×14 7 35 19 15	C	Old	
P.	D, Pkt. Poetry	13 0×15.0 36 11 21	C	Good	
P.	D; H Poetry	20 6×18 0 2 16 18	C	Old	
P.	D; Skt, Poetry	15.2×12 8 2 12.13	C	Old	
P.	D; Pkt/ Skt. Prose/ Poetry	15.2×12.8 25.11.16	C	Old	

1	2	3	4	5
1177	Ta/42/95	**Sāmāyıkā**	—	—
1178	Ja/51/20	,,	—	—
1179	Nga/19	,,	—	—
1180	Ta/26/3	**Sāṣācāra**	—	—
1181	Ja/45/4	Sātatattva	—	—
1182	Ja/3	Siddhāntasāra	Nathamala	—
1183	Ja/65/3	Sindūra-Prakarana (Sūktımuktavalı)	Somaprabhācārya	Harṣakirti
1184	Ta/9/3	Sindūra-Prakarana		—
1185	Nga/31/2/6	,, ,,	Somaprabhācārya	Harṣakirt
1186	Nga/47/4/76	Śila-Vrata	—	—
1187	Jha/5/1	Śrāvakācāra	Gumānı-Lāla	—
1188	Ta/14/14	Śrāvaka-pratikramaṇa	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Pkt. Poetry	32.3 × 19.0 4.33.21	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	15.7 × 9 2 8.7.18	Inc	Old	
P.	D;Skt. Poetry	16.5 × 13.2 6.12.16	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20.6 × 18 0 2.16 18	C	Old	
P.	P; H Poetry	28 4 × 17 0 2.24 17	C	Good	
P.	D; H. Poetry	19.5 × 12 5 5.9.25	C	Old	
P	D; H Poetry	30.2 × 15 0 43 15.38	Inc	Good	
P.	D, Pkt Poetry	22 2 × 14 7 4 21.21	C	Good	
P.	D; Skt Prose	32 3 × 20.2 10 23.17	Inc	Old	
P.	D; Skt. Prose	22.5 × 13 0 24.18 13	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	20.6 × 18 0 13.16.18	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	13.5 × 8.5 38.6.13	C	Old	

1	2	3	4	5
1201	Nga/48/7	Tatvārtha-sūtra	Umāswāmi	—
1202	Ta/14/24	,, ,,	,,	—
1203	Ta/42/17	,, ,,	,,	—
1204	Nga/38/6	,, ,,	,,	—
1205	Ja/23,2	,, ,,	,,	—
1206	Ta/6/6	,, ,,	,,	—
1207	Ja/27/3	,, ,,	,,	—
1208	Nga/25/6	,, ,,	,,	—
1209	Nga/20/1	,, ,,	,,	—
1210	Nga/17/2/1	,, ,,	,,	—
1211	Nga/20/1/2	,, ,,	,,	—
1212	Ja/33/2	,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt./ Poetry/ Prose	32.3×19.0 3.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×20.1 3.13.35	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	15.8×9.0 2.9.22	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.3×17.5 3.14.21	C	Old	
P.	D; Skt Prose	15.0×11.3 7.10.20	C	Old	
P.	D; H. Prose	32.1×16.0 26.11.47		Good	
P.	D; H. Poetry	11.5×10.0 51.10.14	C	Good	
P,	D; Skt. Poetry	19.0×14.5 19.15.13	C	Old	Pandita Paramānanda seems to be copier.
P	D; H. Poetry	12.3×16.0 21.15.16	C	Good	
P	D; H. Poetry	20.6×18.0 2.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	29.8×14.4 151.12.48	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	15.2×12.8 19.11.16	C	Old	

1	2	3	4	5
1189	Ta/42/94	Śrāvaka-Pratikramaṇa	—	—
1190	Nga/48/6/1	Śrāvaka-Vrata-Sandhyā	—	—
1191	Nga/48/11/4	,, ,, ,,	—	—
1192	Nga/47/4/60	,, ,, Vidhāna	—	—
1193	Nga/25/11	Śrī-pāla-darśana	—	—
1194	Nga/44/19/1	,, ,, ,,	—	—
1195	Ja/6/2	Sudṛṣṭi Taraṅginī	—	—
1196	Ta/6/4	Tattwasāra	Devasena	—
1197	Nga/44/12/1	Tatvārtha-Sūtra	Umā Swāmī	—
1198	Nga/46/12/1	Tatvārthā-sūtra	—	—
1199	Nga/47/4/38	,, ,,	Umā Swāmī	—
1200	Nga/47/4/38	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Prose	15.5×11.6 23.8.20	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	15.2×12 8 19.11.15	C	Old	
P	D; Skt. Prose	32.3×19.0 4.33 39	C	Good	
P.	D; Skt Prose	15 8×9.0 4.9 22	C	Good	
P.	D; H. Prose/ Poetry	22 4×14.2 57.19.15	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	22.2×14 7 9.20 20	C	Good	
P.	D,H./Skt. Prose	21 5×14.4 56.17 13	Inc	Old	
P.	D; Skt. Prose	28 4×17.0 9.24.17	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	25.6×15.0 13 15.21	C	Good	
P.	D,Skt./H. Prose	25.0×17.0 45 20.16	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	29.0×17.8 11 21.17	C	Good	
P.	D; S. Prose	19.7×13.0 10.18.16	C	Old	

1	2	3	4	5
1213	Ja/34/2	Tattvārtha Sūtra	Umāswāmi	—
1214	Ja/27	,, ,,	,,	—
1215	Nga/31/2/2	,, ,,	,,	—
1216	Nga/29/3	,, ,,	,,	—
1217	Ja/2	,, ,, Vacanikā	Jayacanda	—
1218	Nga/32	Trepanakriyā	—	—
1219	Ta/5/12	,,	—	—
1220	Nga/48/26/1	Trikāla-Caturvinśati	—	—
1221	Ta/16/3	Trivarnācāra	Jinasenācārya	—
1222	Ja/5	Trilokasāra	—	—
1223	Ja/1 (Kha)	Vacanikā	—	—
1224	Ta/6/10/Ka	Vairāgya-pacisi	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Prose	19.0×14.9 18.11.15	C	Old	
P.	D Skt. Prose	20.2×14.5 14.15.18	C	Good 1955 V. S.	
P.	D; Skt. Prose	12.3×16.6 3 17 16	C	Good	
P.	D;H /Skt. Prose	13 2×21 0 71.16.13	C	Good	
P	D; H. Prose	32.2×15.3 272.12.56	Inc	Good	
P.	D; H. Prose/ Poetry	25.3×15 0 175.16.18	C	Old	The language of this Mss. is not clear.
P.	D; Skt. Poetry	25 0×15 0 2 26 25	Inc	Old	
P.	D, H poetry	17 5×13.5 3 8 24	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	15.5×9.5 28 9 16	C	Old	It has no heading or opening.
P.	D; H. Prose	31.0×16.2 295.11.59	C	Good	Two pages are damaged.
P	D; H. Prose	33.4×18.9 18.13.33	Inc	Old	
P.	D; H, Poetry	22.2×14.7 2.18.15	C	Old	

1	2	3	4	5
1225	Ja/27/4	Yoga	Śubhacandra	—
1226	Nga/31/2/5	Yogī-rāsā	Jinadāsa	—
1227	Nga/44/19/9	Akṣara Battīsī	Bhagavatīdāsa	—
1228	Nga/47/4/52	,, Vavanī	—	—
1229	Nga/33/7	Anyamata Śloka	—	—
1230	Nga/47/4/44	Aṭhāī-Rāsā	Vinayakīrti	—
1231	Ta/14/32	,, ,,	—	—
1232	Ta/3/49	Bāraha-māsā	Vinodīlāla	—
1233	Nga/47/4/50	,, ,,	—	—
1234	Ja/40/2	Candra-śataka	—	—
1235	Nga/46/2/1	Careā-śataka	Dyānatarāya	—
1236	Nga/46/2/2	Caubola-pacīsī	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Prose	21.5×14.4 50.22.16	C	Old	
P.	D; H. Poetry	12.3×16.6 5.13.14	C	Good	
P.	D; H· Poetry	19.5×12.5 10.8.21	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 4.16.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	23.8×18.2 10.18.21	Inc	Old	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 4.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	15.2×12.8 4.13.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22 5×15.0 4.12.31	C	Good	
P.	D; H· Poetry	20 6×18.0 6.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22.0×13.5 16.13.34	C	Old	
P.	D; H. Poetry	27.0×17.0 12.13.28	C	Old	
P.	D; H. Poetry	27.0×17.0 4.23.28	C	Good	

1	2	3	4	5
1237	Ja/16/7	Dasa-bola-pacisi	Dyānatarāya	—
1238	Ja/35/7	,, ,, ,,	—	—
1239	Nga/46/2/3	Daśa-thānaCaubisi	Dyānatarāya	—
1240	Ja/35/1	Dhāla-gana	—	—
1241	Ja/16/3	,, ,,	—	—
1242	Ta/6/17	Dohā	Rūpa-canda	—
1243	Ja/26	Dohāvali	—	—
1244	Ja/27/2	,,	—	—
1245	Ja/28	,,	—	—
1246	Nga/31/4/10	Dwipancāśatikā	Banarsidāsa	—
1247	Nga/44/11	Futakara-Kāvya	—	—
1248	Ta/9/2	Jnāna-Sūryodaya Nāṭaka	Vādicandra	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	23.3×19.0 6 15.18	C	Good	
P.	D; H. Poetry	18.3×11.5 7.16.15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	27.0×17.0 4.23.28	C	Good	
P.	D; H. Poetry	18.2×11 5 10 16.15	C	Good	
P.	D; H Poetry	23.3×19.0 9 15.18	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.2×14.7 7.18.17	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22 0×15.0 4 18.15	C	Old	
P.	D; H Poetry	21 5×14.4 16.18.18	C	Old	
P.	D; H Poetry	21.0×14.7 4.18.15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	15.3×12.4 13 25.20	C	Old	Opening pages are missing.
P.	D;Skt./H. Prose/ Poetry	13.0×10.0 20.10.15	Inc	Old	
P.	D; Skt/ Poetry	19.0×14.5 25.15.17	C	Old 1928 V. S.	

1	2	3	4	5
1249	Ta/35/7	Jaina-rāso	—	—
1250	Ta/3/44	Jakarī	Bhūdharadāsa	—
1251	Ta/14/34	Jogī-Rāso	—	—
1252	Ta/3/55	Kavitta	—	—
1253	Ta/3/54	,,	—	—
1254	Ja/40/3	,,	Trilokacanda	—
1255	Nga/41/Ka	Kṛpana-Pacisī	—	—
1256	Ta/42/55	Māla-Pacīsī	—	—
1257	Nga/44/20	Nāmamālā	Nandadāsa	—
1258	Ja/65/4	Navaratna-Kavitta	—	—
1259	Nga/31/3/9	Nemi-Candrikā	—	—
1260	Nga/41/ba	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Pkt. Skt. Poetry	15 5×12 0 22.10.19	Inc	Good	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 2.12.31	C	Good	
P.	D; H. Poetry	15 2×12 8 4 14 21	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22.5×15 0 2.12 31	C	Good	
P.	P; H Poetry	22.5×15 0 2 12.31	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22 0×13 5 2 12.31	C	Old	
P.	D, H. Poetry	14 5×11.0 7.13.16	C	Old	
P.	D, H. Poetry	32 3×19.0 2 33.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.7×11.2 26 17 16	C	Old 1806 V. S	It is also called Mānamañjari
P.	D, H. Poetry	11.5×10.0 5.10.14	C	Good	
P.	D; H. Poetry	18 2×13.5 168.14.16	C	Old	The mss. is damaged and very old.
P.	D; H. Poetry	14.5×11.0 6.13.16	Inc	Old	

1	2	3	4	5
1261	Nga/44/10/5	Nemicandrikā	—	—
1262	Nga/37/8	Nemināthā Bārahamāsā	Vinodīlāla	—
1263	Ja/16/4	,, Vivāha	,,	—
1264	Ta/3/47	,, ,,	,,	—
1265	Ja/35	,, ,,	,,	—
1266	Nga/47/4/73	Pakhavārā	Tulasī	—
1267	Ta/3/39	Paramārtha Jakarī	Śrīrāma	—
1268	Nga/46/1	Piṅgala	Śrīdhara	—
1269	Nga/47/4/51	Rājula Pacīsī	—	—
1270	Nga/44/10/4	,, ,,	Vinodīlāla	—
1271	Nga/44/9/2	,, ,,	,,	—
1272	Nga/44/Pa	,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	18.5×13.1 15.13.22	C	Good	
P.	D; H. Poetry	13.0×22.0 6.16.12	C	Old	
P.	D; H. Poetry	23.8×19.0 5.15.18	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 4.12.31	C	Good	
P.	D; H. Poetry	18.2×11.5 6.16.14	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 2.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 2.12.31	C	Old	
P,	D; H. Poetry	30.0×15.8 16.10.37	C	Old	
P	D; H. Poetry	20.6×18.0 7.16.18	C	Old	
P	D; H. Poetry	18.5×13.0 6.13.22	C	Good	
P.	D; H. Poetry	11.0×10.5 11.12.12	C	Good	
P.	D; H. Poetry	14.5×11.0 9.13.16	C	Old	

1	2	3	4	5
1273	Nga/44/19/5	Rājula Pacīsī	—	—
1274	Nga/44/19.2	Rāstā	—	—
1275	Nga/47/4/81	,,	—	—
1276	Ja/65/8	,,	—	—
1277	Ja/40/1	Rūpacanda-Śataka	Rūpacanda	—
1278	Ja/58	Satasaiyā	Vṛndavana	—
1279	Nga/45/5	Samkitadhikāra	—	—
1280	Ta/3/2	Sammeda Śikhara Māhātmya	—	—
1281	Nga/45/8	,, ,, ,,	—	—
1282	Nga/45/6	,, ,, ,,	Lohācārya	—
1283	Ja/46	Śikhara Māhātmya	Lālacanda	—
1284	Nga/46/5/2	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D H. Poetry	19.5×12.5 13.10.19	C	Old	
P.	D; H. Poetry	19.5×12.5 2.9. 5	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 2.16.18	C	Old 1853 V. S.	
P.	D; H. Poetry	11.5×10 0 12.10.14	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.0×13 5 6.12.35	C	Old	
P.	D; H. Poetry	21.3×16.4 131.14.16	C	Old 1953 V S.	
P.	D; H. Poetry	23.5×9.0 31.20.58	C	Old 1702 V. S.	
P.	D; H. Poetry	22 3×15.0 3.9.21	Inc	Old	
P.	D; H. Poetry	24.0×12 2 11.9 25	C	Good	
P.	D; H. Poetry	23.7×15.0 103.9.23	Inc	Old	
P.	D; H. Poetry	19.3×10.6 72.10.28	C	Old 1892 V. S.	All the pages are Damaged.
P.	D; H. Prose	23.1×15.1 70.18.17	C	Good	

1	2	3	4	5
1285	Nga/47/4/45	Solaha-kārana-rāsā	Sakalakīrti	—
1286	Ta/42/53	Śruta-pañcamī-rāsā	—	—
1287	Nga/46/5/1	Srī-pāla-darśana	—	—
1288	Ta/10	Subhāṣitāvalī	—	—
1289	Nga/47/4/49	Bāhubali	—	—
1290	Ta/6/15	Viveka Jakarī	Rūpa-canda	—
1291	Nga/46/2/4	Vyavahāra-pacīsī	—	—
1292	Nga/26/11	Bhaktāmara-stotra-mantra	Mānatunga	—
1293	Nga/26/3	,, ,,	,,	—
1294	Nga//26/9	Caubisa tīrthankara mantra	—	—
1295	Ja/51/15	Gāyatri mantra	—	—
1296	Nga/43/3/1	Ghantā-karṇa-mantra	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 3.10.18	C	Old	
P	D; H. Poetry	32.3×19.0 3.33.37	C	Good	
P	D; H· Poetry	23.1×15.1 2.14.14	Inc	Good	
P	D; Skt. Poetry	15.0×13 0 178.6.14	C	Old	
P	D; H. Poetry	20.6×18.0 7.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22.2×14.7 14.19.16	C	Old	
P.	D; H. Poetry	27.0×17.0 4.23.28	C	Good	
P.	D; H./ Skt. Prose/ Poetry	29 0×17.0 20.24.17	C	Good	Opening pages are missing.
P.	D; H./ Skt. Prose/ Poetry	20.0×16.4 49.13.22	C	Good	It has fourty eight mantra charts.
P.	D,H./Skt. Poetry	29.0×17.0 6 24.17	C	Good	
P	D; Skt. Prose	32.3×20.1 3.13.35	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	17.0×13.0 1.9.18	C	Old	

1	2	3	4	5
1297	Nga/43/6/7	Ghaṇṭā-karṇa-mantra	—	—
1298	Ta/5/6	Homa-Vidhi	—	—
1299	Nga/13,4	Jaina-gāyatrī	—	—
1300	Nga/13/3	Jaina-Saṁkalpa	—	—
1301	Nga/26/7	Jinendra-stotra	—	—
1302	Nga/48/11/7	Kāmadā-Yantra	—	—
1303	Nga/48/6/3	Kriyā-kāṇḍa-mantrā	—	—
1304	Nga/26/8	Mahālakṣmī-ārādhanā	—	—
1305	Ja/51/18	Mantra	—	—
1306	Ta/11/4	,,	—	—
1307	Nga/43/2	,, Saṁgraha	—	—
1308	Nga/48/11/6	Mantra-Yantra	Rāmacandra	—

6	7	8	9	10	11
P	D. Skt. Prose	17.3×13.0 2.13.12	C	Old	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	25.0×15.0 7.25.18	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	24.3×18.3 2.20.17	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	24.3×18.3 1.21.20	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	29.0×17.0 4.24.17	C	Good	
P.	D; H. Poetry	16.5×13 2 2.12.16	C	Old	
P.	D; Skt. poetry/ Prose	15.7×9.2 10.7.18	C	Old	It is so demage that it cannot read and write.
P.	D;H.Skt. Poetry	29 0×17.0 2.24.17	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	32.3×20.1 2.13.35	C	Good	It has mantra charts also.
P.	D; Skt. Prose	14.5×11.7 9.11.22	C	Good	
P.	D; Skt, Prose	16.4×13.4 10.13.16	Inc	Old	
P.	D; Skt. Prose	16.5×13.2 1.11.15	C	Old	

1	2	3		4	5
1309	Ta/3/51	Namokāra-mantrā		Vinodilāla	—
1310	Ta/42/84	Padmāvatī-daṇḍaka		—	—
1311	Nga/43/4/2	,,	Kalpa	Malliṣena	—
1312	Nga/43/6/2	,,	,,	—	—
1313	Ta/42/85	,,	Kavaca	—	—
1314	Ta/42/104	,,	,,	—	—
1315	Nga/48/11/2	,,	,,	—	—
1316	Nga/26/12	,,	,,	—	—
1317	Nga/48/6/2	,,	,,	Rāmacandra	—
1318	Ta/30/2	,,	Mantra	—	—
1319	Nga/43/6/12	,,	,,	—	—
1320	Ta/42/83	,,	Paṭala	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D; H. Poetry	22.5×15.0 1.12.31	C	Good	
P	D; Skt Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	16.3×14.0 11.10.20	C	Old	
P.	D; Skt Prose	17.3×13.0 7.13.12	C	Old	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	16.5×13.2 2.12.17	C	Old	
P.	D;H./Skt. Prose	29.0×17.0 4.24.17	C	Good	
P	D, Skt. Poetry/ Prose	15.7×9.2 6.7.18	C	Old	
P	D;H./Skt. Poetry	20.1×15.6 3.13.20	C	Old	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	17.3×13.0 3.13.13	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1321	Ta/16/6	Pandraha-yantra-vidhi	—	—
1322	Nga/26/2	Pārśwanāthā-stotra-mantra	—	—
1323	Nga/43/6/4	,, ,,	—	—
1324	Nga/26/3	,, ,,	—	—
1325	Nga/48/20	Prāta-gāyatri	Harayaśa-miśra	—
1326	Nga/13/6	Sakali-karana vidhāna	—	—
1327	Nga/45/4	Sāmāyika-vidhi	—	—
1328	Nga/26/14	Śāntinātha-mantra	—	—
1329	Nga/43/6/6	Saraswati-mantrā	—	—
1330	Nga/47/5/7	,, ,,	—	—
1331	Nga/38/14	,, ,,	—	—
1332	Nga/26/4	,, stotra	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Prose	15.5×9.5 8.10.25	Inc	Old	
P	D; Skt. Poetry	29.0×17.0 2.24.16	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	17.3×13.0 3.13.12	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	29.0×17.0 3.14.16	C	Good	
P.	P; Skt Prose	16.0×10.3 37.7.19	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	24.4×18.7 5.21.17	C	Good	
P	D, H. Prose	25.0×10.0 17.15.42	C	Old	
P	D,H./Skt. Prose	29.0×17.0 3.24.17	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	17.3×13.0 3.13.12	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	16.5×16.0 2.12.19	C	Old	
P.	D, Skt. Poetry	15.7×9.00 6.9.22	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	29.0×17.0 2.24.17	C	Good	

1	2	3	4	5
1333	Nga/44/19/8	Solaha-kārana-mantra	--	—
1334	Ta/3/42	Sūtaka vidhi	—	--
1335	Ta/4/11	Tantra mantrā Samgarah	—	—
1336	Nga/20/15	Trivarnācāra-mantra	—	—
1337	Ta/39/18	Vaśikarana-adhikārā	—	—
1338	Ta/39/20	Vaśādhikāra	—	—
1339	Nga/43/8	Vrata-mantra	—	—
1340	Nga/43/6/11	Visarjana ,,	—	—
1341	Nga/48/16	Vivāha-vidhi	--	—
1342	Ta/2/2	Yantra-mantra-samgraha	—	—
1343	Ta/2/3	,, ,, ,,	—	—
1344	Ta/2/1	Aṣṭānga hṛdaya	Vāgbhaṭṭa	—

6	7	8	9	10	11
P.	D Skt. Poetry	19.5×12 5 2.7.18	C	Old	
P.	D, H. Poetry	22 5×15 0 3 12 31	C	Old	
P.	D, Skt Prose	11 5×15 5 161 21 16	Inc	Old	
P	D;H Skt Prose	29 0×17 0 13 24 17	C	Good	
P	D, Skt Prose	20 0×12 0 2 17 12	C	Old	
P	D, Skt Poetry	20 0×12 0 2 16 1	C	Old	
P	D, Skt Poetry Prose	15 5×11 6 2 10 21	C	Old	
P	D, Skt Prose	17 3×13 0 2 12 12	C	Old	
P	D, Skt Prose	13 3×10 2 21 8 14	Inc	Old	1 to 3 and 6 or 7 pages are missing
P.	D, H Prose	20.5×17 1 139.25 22	C	Old	The mantras & tantras charts are availeble in the mss.
P.	D; H Prose	16 5×21 0 52.17.23	C	Old	There are so many yantra & mantrā charts in the mss.
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	28.6×18 5 183.22.24	C	Good	

1	2	3	4	5
1345	Ta/1/2	Cikitsā-śāstra	—	—
1346	Ta/1/1	„ sāra	—	—
1347	Ta/4/2	Jwara-hara-yantra	—	—
1348	Ta/4/6	Kuṭṭaka-karaṇa chāyā vyavahāra	Bhāskarācārya	—
1349	Ta/4/1	Madana-vinoda-nighaṇṭu	Madanapāla	—
1350	Ja/33	Nāḍi-Prakāśa	—	—
1351	Ta/2/1/1	Nidāna	Mādhavācārya	—
1352	Ta/4/9/2	Panca-daśa Vidhāna	—	—
1353	Ta/1/3	Rāma-vinoda	—	—
1354	Ta/4/9	Rūpa-maṅgala	—	—
1355	Ta/4/8	Śāradā-tilaka saṭīka	—	—
1356	Ta/2/1/2	Sārangadhara Saṁhitā	Sārangadhara	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Prose/ Poetry	27.0×11.9 120.13 49	Inc	Old	Closing pages are missing.
P	D; H Prose/ Poetry	19.5×14.7 59 14.29	C	Good	
P	D; Skt. Prose	19.3×13.0 2 14.17	C	Good	
P.	D;Skt./H Prose/ Poetry	19 3×13.0 18 19.19	C	Old	
P	D, Skt. Prose/ Poetry	19.3×13 0 183.14.17	C	Good 1912 V S.	
P	D; H. Prose	19 7×13.0 16.15.11	Inc	Old	
P	D; Skt Poetry	28 6×18 5 64 22 16	C	Old	
P,	D,Skt /H Prose Poetry	13 5×11 5 25 15 15	C	Old	
P	D; H. Poetry/ Prose	26 0×16.3 158 21 14	C	Good 1906 V. S.	
P	D;Skt /H Prose	15 8×13.3 74.13.18	C	Good	
P	D; Skt./ H. Poetry	15 8×13.3 163.13.18	C	Good 1676 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	28.6×18.5 61.23.22	C	Old	

1	2	3	4	5
1357	Ta/1/4	Vaidya-bhūṣaṇa	Nayanasukha	—
1358	Ta/4/10	„ manotsava	Banśīdhara Miśra	—
1359	Ta/1/4/1	Yoga-Cintāmaṇi	Harṣakīrti	—
1360	Ta/2/4	Yūnānī-Cikitsā	—	—
1361	Ta/42/99	Ācārya-bhakti	—	—
1362	Ta/3/50	Ādinātha-stuti	Vinodīlāla	—
1363	Nga/47/4/58	„ ārtī	—	—
1364	Nga/30/2/5	„ stotra	—	—
1365	Nga/47/4/53	Ādityanātha ārtī	—	—
1366	Ja/51/24	Ambikā-devī-stotra	—	—
1367	Nga/26/5	Aṅka-garbha-ṣaḍāracakra	Devanandī	—
1368	Nga/47/4/72	Ārati	Nirmala	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	24.0×16.0 11.34.20	C	Old 1794 V. S.	
P	D; Skt. Poetry	15.8×13.3 81.13.18	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	24.0×16.0 134.22.22	C	Old 1794 V. S.	
P.	D; H. Prose	20.5×17.5 98.23.22	C	Old	
P.	P; Skt./ Pkt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 3.12.31	C	Good	
P.	D; H Poetry	20.6×18.0 2.16.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	19.0×14.8 1.9.26	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 3.16.18	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	32.3×20.0 1.13.35	C	Good 1959 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	29.0×17.0 4.24.17	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 2.16.18	C	Old	

1	2	3	4	5
1369	Ta/18/3	Ārati	—	—
1370	Ta/18/10	„	Dyānatarāya	—
1371	Ta/3/4	„	—	—
1372	Nga/44/17	„ Saṁgraha	—	—
1373	Ta/39/2	Aṣṭaka	—	—
1374	Ta/6/9	Bhajana	—	—
1375	Nga/12/1	Bhajanāvali	Ajita-Dāsa	—
1376	Nga/12/2	„	„	—
1377	Nga/12/3	„	„	—
1378	Nga/16/9	„	—	—
1379	Ja/31	Bhajana-Saṁgraha	Ajita-Dāsa	—
1380	Nga/13/5	Bhaktāmara Stotra	Mānatuṅga	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D. H Poetry	11.0×4.0 2.13 19	C	Old	
P.	D. H Poetry	11.0×11.0 2 12 17	C	Old	
P.	D; H Poetry	22.5×15.0 2 12 32	C	Good	
P.	D; H Poetry	20.0×16.0 4 13 21	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	20.0×12.0 2.19 20	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22.2×1[illegible].7 2 20 17	C	Old	
P.	D, H poetry	25.0×22.0 445 15.24	C	Old	
P.	D, H Poetry	21.0×26.0 25.14 26	C	Good	
P.	D; H. Poetry	27.4×22.0 42.22 26	C	Old	
P.	D; H. Poetry	13.0×15.0 5.16.21	C	Good	
P.	D; H, Poetry	20.5×12.7 12.16 16	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	24.2×18.6 5.21.18	C	Good	

1	2	3	4	5
1381	Nga/26/1/1	Bhaktāmara Stotra	Mānatuṅga	—
1382	Nga/28/2	,, ,,	,,	—
1383	Nga/38/1	,, ,,	,,	—
1384	Ta/3/10	,, ,,	,,	—
1385	Ta/42/63	,, ,,	,,	—
1386	Ta/4/2	,, ,,	,,	—
1387	Nga/46/12/2	,, ,,	,,	—
1388	Nga/45/2	,, ,,	,,	Hemarāja
1389	Nga/47/4/8	,, ,,	,,	—
1390	Nga/48/21/1	,, ,,	,,	—
1391	Ta/9/5	,, ,,	,,	Sivacandra
1392	Ta/14/26	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	29.0×17.0 5 21.16	C	Good	
P	D; Skt Poetry	14.6×14 1 6 13 18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	15 8×9.0 7 9 22	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	22 5×15.0 5 12 18	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32 3×19 0 2 33.37	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	23 2×19.5 7 10 21	C	Old	
P	D; Skt Poetry	22 5×13 0 7 18.13	C	Old	
P.	D;Skt /H. Poetry	25 2×12.1 34 9.34	C	Good 1849 V S.	
P.	D; Skt Poetry	20 6×18.0 6 16 18	C	Old	
P	D; Skt Poetry	16.5×12.5 10 12.12	C	Old	
P	D; Skt. Poetry/ Prose	19.0×14.5 15.19.18	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	15.2×12.8 8.11.15	C	Old	

1	2	3	4	5
1393	Nga/20/5	Bhaktāmara stotra	Mānatuṅgā	
1394	Nga/47/4/15	,, ,,	—	—
1395	Ta/18/13	,, ,,	—	—
1396	Ta/31	,, bhāṣā	Hemrāja	—
1397	Nga/41/2/5	,, Stotra	,,	—
1398	Ta/6,3	,, ,,	,,	—
1399	Ja/35/4	,, ,,	,,	—
1400	Nga/20/6	,, ,,	,,	—
1401	Nga/25/1	,, ,,	,,	—
1402	Ja/52	,, Vacanikā	Mānatuṅga	—
1403	Nga/47	,, Stotra Vacanikā	Mānatuṅga	—
1404	Nga/48/6/7	,, ,,	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P	D; Skt. Poetry	25.6 x 15.0 7.14.16	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6 x 18.0 6 16 18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	11 0 x 11 0 9 12.17	C	Old	
P.	D; H. Poetry	19.5 x 16.1 6.12.25	C	Old	
P.	D; H. Poetry	14.5 x 11.0 12.8.15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.2 x 14.7 5.19 20	C	Good	
P.	D; H. Poetry	18.3 x 11.5 8.16.15	C	Good	
P,	D; H Poetry	25 6 x 15.0 7 16.16	C	Good	
P	D; H. Poetry/	28.4 x 17.0 4.24.17	C	Good	
P	D; H. Poetry	27.5 x 12.5 29.11.38	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.1 x 16.3 47.10.27	C	Good	
P.	D; H. Poetry	15.7 x 9.2 25.7.18	Inc	Very Old	

1	2	3	4	5
1405	Ta/30/4	Bhaktāmara ṭīkā	Jinasāgara	—
1406	Nga/44/13/5	,, stotra	Mānatuṅga	—
1407	Ta/14/16	Bhakti saṃgraha	—	—
1408	Nga/13/7	Bhairavāṣṭaka	—	—
1409	Ta/42/78	,,	—	—
1410	Ta/19/1	Bhairava stotrā	—	—
1411	Ta/9/9	Bhūpāla caturaviṃśati stotrā	Śivacandra	—
1412	Nga/47/4/11	Bhūpāla caubīsī	-	—
1413	Ta/4/6	,, ,,	Bhūpālakavi	—
1414	Ta/42/67	,, ,,	,,	—
1415	Nga/38/5	,, stotra	,,	—
1416	Nga/26/1/6	,, caubīsī stotra	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	20 1×15.6 7.13.20	C	Good	
P.	D;H /Skt. Poetry	13.5×8.5 18.6.13	C	Good	
P.	D; Skt. Pkt. Poetry	15.2×12 8 51 11.15	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	24.2×18.7 1.21.23	C	Good	
P.	P; Skt. Poetry	32.3×19.0 1 33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	10 3×9.5 6 7.8	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	19 0×14.5 11.20.19	C	Old 1927 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	20 6×18.0 5 17.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	23 2×19.5 6.11.20	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	15.7×9.0 6.9.22	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	29.0×17.8 3.21.17	C	Good	

1	2	3	4	5
1417	Nga/25/5	Bhūpāla stotra	—	—
1418	Nga/47/4/12	,, caubīsī bhāṣā	—	—
1419	Nga/47/4/57	Bīsa-viraha-māna-ārati	—	—
1420	Nga/44/10/8	Brahma-lakṣaṇa	—	—
1421	Ta/42/87	Caityālaya stotra	—	—
1422	Ta/42/10/7	Cakreśwarī ,,	—	—
1423	Nga/43/1	,, ,,	—	—
1424	Nga/43/3,5	Candra-prabha ,,	—	—
1425	Nga/48/6/5	,, ,,	—	—
1426	Ta/42/98	Cāritra bhakti	—	—
1427	Nga/48/8/2	Caturviṁśati stotra	—	—
1428	Nga/43/6/8	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	28.4×17.0 2 24.17	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 3.17.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 2.16.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 2 13.22	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	32.3×19.0 1 33.37	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	32.3×19 1 1.33.37	C	Good	
P	D, Skt. Poetry	14.9×11 2 4 8 19	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	17 0×13.0 3 9 20	C	Old	
P	D; Skt Poetry	15.7×9.2 4.7.18	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	32.3×19 0 1 33.37	C	Good	
P.	D; Skt, Poetry	9.6×6.0 6.4.8	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	17.3×13.0 2.13.13	C	Old	

1	2	3	4	5
1429	Nga/43/3/2	Caturvimśati Stotra	—	—
1430	Nga/44/10/2	,, Jina Stotra	—	—
1431	Ta/18/9	Caubisa tirthankara pada	—	—
1432	Ta/42/69	Cintāmani Stotra	—	—
1433	Ja/61	,, Pārśwanātha Stotra	Dyānatarāya	—
1434	Nga/44/10/25	,, ,, ,, ,,	—	—
1435	Nga/47/4/66	Caubisa Jina Ārti	Bhairondāsa	—
1436	Nga/47/4/74	,, ,, ,,	—	—
1437	Ja/23/3	,, Dandaka Vinati	Daulatarāma	—
1438	Nga/47/4/32	Darśana Jnāna Caritra Ārati	Dyānatarāya	—
1439	Ta/6/5	Darṣana-Stuti	—	—
1440	Ta/42/105	Darśanāṣṭaka	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D. Skt. Poetry	17.0×13.0 3.9.21	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 1.11.28	C	Good	
P.	D; H. Poetry	11.0×11 0 11.12.16	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33 37	C	Good	
P.	D;Skt /H Poetry	22 0×13 0 2 13 11	C	Old	
P	D; Skt Poetry	18.5×13.1 4 12 22	C	Old	
P.	D, H poetry	20.6×18 0 2 16 18	C	Old	
P.	D, H. Poetry	20 6×18 0 2 16 18	C	Old	
P	D; H. Poetry	22 4×14.2 6.18.15	C	Old	
P.	D; H / Skt Poetry/ Prose	20 6×18.0 7 16.18	C	Old	
P.	D; H, Poetry	22.2×14.7 2 21.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1441	Ta/42,89	Deva-stavana	—	—
1442	Nga/38/4	Ekibhāva-stotra	Vādirāja	—
1443	Nga/26/1/4	,, ,,	,,	—
1444	Ta/42/66	,, ,,	,,	—
1445	Ta/4/5	,, ,,	,,	—
1446	Nga/44,10/10	,, ,,	,,	—
1447	Nga/47/4/10	,, ,,	,,	—
1448	Nga/44/15	,, ,,	—	—
1449	Nga/48/21/3	,, ,,	,,	—
1450	Ta/9/7	,, ,,	—	Sivacandra
1451	Nga/47/4/12	,, ,,	,,	—
1452	Nga/25/2	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt. Poetry	32.3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	15.7×9 0 5.9.22	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	29 0×17 8 3 21 17	C	Good	
P.	D, Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33 37	C	Good	
P.	P; Skt. Poetry	23 2×19 5 6 11 20	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 4 13.22	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 6×18.0 4 17 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	15 6×9 2 19 7.19	Inc	Old	It has no opening and closing.
P	D, Skt Poetry	16 5×12.5 7.12.12	C	Old	
P.	D, Skt. Prose	19 0×14.5 12 19 19	C	Old	
P.	D, H. Poetry	20 6×18 0 5.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	28.4×17.0 4.24.17	C	Good	

1	2	3	4	5
1453	Nga/26/6	Ganadhara Stuti	—	—
1454	Nga/30/2/4	Gautama-Swāmi Stotrā	—	—
1455	Nga/48/8/1	Ghaṇṭā-Karṇa ,,	—	—
1456	Nga/44/10/6	Gurubhakti	Bhūdharadāsa	—
1457	Ta/14/31	,,	—	—
1458	Ta/3/9	Guruvinati	Bhūdharadāsa	—
1459	Nga/45/3	Guṇāvali	—	—
1460	Ta/9/4	Guṇāṣṭaka	Parmānanda	—
1461	Nga/39	Jaina-pada-Saṁgraha	—	—
1462	Nga/44/10/26	Jinacaitya Namaskāra	—	—
1463	Ja/38/3	Jinadeva Stuti	—	—
1464	Ta/42/7	Jinapañjara Stotra	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt Poetry	29.0×17.0 3.24.17	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	19.0×14.8 1.9 26	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	9 6×6.0 4.4.8	C	Old	
P.	D; H Poetry	18.5×13.1 2 13.22	C	Good	
P.	D; H. Poetry	15.2×12.8 4.12.18	C	Old	
P	D; H. Poetry	22.5×15.0 1.12 36	C	Good	
P.	D; H Poetry	25 0×11.0 18 15 39	C	Old	
P,	D; H Poetry	19 0×14.5 5 14 17	C	Old	
P	D; H. Poetry/	11 0×17.5 183.9.23	Inc	Old	Last pages are missing.
P	D. Skt. Poetry	18 5×13.1 3.13.22	C	Old	
P	D; H. Poetry	22.0×13.0 2.14.32	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1465	Ta/18/16	Jinapanjara Stotra	—	—
1466	Nga/48/18/1	,, ,,	—	—
1467	Ta/42/70	Jinarakṣā Stavana	—	—
1468	Ja/50	Jinasahasranāma	Śikharacanda	—
1469	Ta/3/16	Jinendra darśana Stotra	—	—
1470	Ta/3/38	Jina-darśana	Nawala	—
1471	Ta/3/17	,, ,,	—	—
1472	Nga/26/13	Jwālāmālinī Stotra	Candraprabha	—
1473	Nga/43/3/6	,, ,,	—	—
1474	Nga/43/6/3	,, ,,	—	—
1475	Nga/48/2	,, ,,	—	—
1476	Nga/48/6/8	,, ,,	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	11.0×11.0 4 12 17	C	Old	
P	D; Skt Prose/ Poetry	40 0×11.4 1 52.16	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1 33.37	C	Good	
P.	D; H Poetry	32 2×20.2 90 13.37	C	Good 1957 V. S.	Copied by Bhagawānadatta.
P.	D; Skt Poetry	22 5×15.0 1 12 36	C	Good	
P	D, H. Poetry	22.5×15.0 3.12.31	C	Old	
P.	D; H Poetry	22.5×15.0 2 12.36	C	Good	
P,	D;H.Skt Poetry	29.0×17 0 3.24 17	C	Good	
P	D; Skt. Prose/ Poetry	17.0×13.0 4.9.21	Inc	Old	
P	D; Skt. Prose	17.3×13.0 2.12.11	C	Old	
P	D; Skt. Prose	12.8×9.5 6.10.12	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	15.7×9.2 4.7.18	C	Old	Damaged.

1	2	3	4	5
1477	Nga/48/5	Jwālā-mālinī Stotra	—	—
1478	Ta/42/90	" "	—	—
1479	Nga/26/1/3	Kalyāna-mandira Stotra	Kumudacandra	—
1480	Nga/47/4/7	" " "	"	—
1481	Nga/48/21/2	" " "	"	—
1482	Ta/4/3	" " "	"	—
1483	Ta/42/64	" " "	"	—
1484	Nga/38/2	" " "	"	—
1485	Ta/9/6	" " "	"	Pandit Śivacandra
1486	Nga/44/10/1	Kalyāṇamandir Stotra	Banārasidāsa	—
1487	Ta/18/12	" "	"	—
1488	Nga/25/3	" "	"	—

6	7	8	9	10	11
P.	D. Skt. Prose	14 3×11 2 8.7.18	Inc	Old	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	32.3×19 0 2.33.37	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	29 0×17.8 5 21.17	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	20 6×18.0 6.16.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	16 5×12 5 10.12.12	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	23.2×19.5 7.11.20	C	Old	
P.	D; Skt poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	15.7×9.0 8 9.22	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	19.0×14.5 16 20.19	C	Old	
P.	D; H. Poetry	18.5×13.0 5.11.28	C	Good	
P.	D; H, Poetry	11.0×11.0 8 12.17		Old	
P.	D; H. Poetry	28.4×17.0 3.24.17	C	Good	

1	2	3	4	5
1489	Nga/47/4/16	Kalyāṇa-mandira	—	—
1490	Nga/44/13/3	" "	—	—
1491	Nga/43/6/7	Kṣetrapāla Stotra	—	—
1492	Ta/42/106	" "	—	—
1493	Nga/48/4	" "	—	—
1494	Ta/42/103	" "	—	—
1495	Nga/26/1/8	Laghusahasranāma	—	—
1496	Nga/47/4/5	" " "	—	—
1497	Ta/18/8	" " "	—	—
1498	Nga/41/Na	" " "	—	—
1499	Nga/13/8	Lakṣmī Stotra	—	—
1500	Ta/42/76	" " "	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 5.16.18	C	Old	
P.	D; H Poetry	13.5×8 5 12 6.13	C	Old	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	17 [illegible]×13.0 5 13.13	C	Old	
P.	D, Skt. Poetry	32 3×19.0 2.33 37	C	Good	
P.	P; Skt. Poetry	16.4×10.0 3 7 18	C	Old	
P	D, Skt. Poetry/ Prose	32 3×19 0 2.33 37	C	Good	
P	D; Skt Poetry	29 0×17 8 5.21 17	C	Good	
P	D, Skt. Poetry	20 6×18.0 7 16.18	C	Old	
P	D; Skt Poetry	11 0×11.0 5 12 13	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	14 5×11 0 3 13 16	C	Old	
P.	D, Skt. Poetry	24 3×18.0 2 21 20	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	32.3×19 0 1.33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1501	Nga/26/1	Lakṣmī-Stotra	—	—
1502	Nga/44/4	Mahāvīra-Ārati	—	—
1503	Ta/30/8	Maṇḍaloddhāra Stotra	—	—
1504	Ta/3/41	Mangala Ārati	Dyānatarāya	—
1505	Nga/43/6/5	Maṇibhadra Stotra	—	—
1506	Ta/42/77	Maṅgalāṣṭaka	—	—
1507	Ta/39/23	Mangala-jina-darśana	Rūpacandra	—
1508	Ta/3/7	Munīśwara Vinatī	Bhūdharadāsa	—
1509	Nga/26/1/7	Namaskāra	Śrīpāla	—
1510	Nga/47/4/4	,,	,,	—
1511	Ta/42/102	Nandīśwara-Bhakti	—	—
1512	Nga/47/2	,, ,,	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P	D; Skt. Poetry	29.0×17.7 1.24.16	C	Good	
P	D; H. Poetry	21 0×16.0 3 13.14	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	20 1×15.0 2 13 20	C	Good	
P.	D; H Poetry	22.5×15 0 2 12 31	C	Old	
P	D, Skt H Prose Poetry	17 0×13 0 5.13 11	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P.	D, H Poetry	20 0×1? 0 1.24 18	Inc	Old	
P,	D; H. Poetry	22.5×15.0 2.12.31	C	Good	
P	D, H Poetry	29.0×17.8 3 21 17	C	Good	
P	D; H Poetry	20 6×18 0 3.16.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 3 33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Pkt. Poetry/ Prose	20.2×15.8 8.10.27	C	Old	

1	2	3	4	5
1513	Ta/6/12	Naraka Vinati	Gunasāgara	—
1514	Nga/48/14	Nārāyana-lakṣmi-stotra	—	—
1515	Ta/42/74	Nava-graha-stotra	—	—
1516	Ta/42/39	,, ,,	—	—
1517	Ta/18/14	Navakāra-dhāla	—	—
1518	Nga/43/6/9	,, Stotra	—	—
1519	Ta/42/79	Navakāra-mantrā-Stotra	—	—
1520	Nga/47/4/65	Neminātha Ārati	Bhairondāsa	—
1521	Nga/48/6/4	Neminātha Stotra	—	—
1522	Nga/38/11	Nijāmani	Brahma Jinadāsa	—
1523	Ta/42/100	Nirvāna Bhakti	—	—
1524	Ta/6/11	,, Kānda	Bhagavatidāsa	—

6	7	8	9	10	11
P.	D. H. Poetry	22.2×14.7 4.18.15	C	Old	
P	D; Skt. Poetry/ Prose	13.8×12.0 29.10 13	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32 3×19.0 1.33.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; H Poetry	11 0×11.0 4.12.17	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	17.3×13.0 3.13.13	C	Old	
P	D; Skt poetry	32 3×19.0 1 33.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20 6×18.0 1.16.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	15.7×9.2 3.7.18	C	Old	The mss. is totely damaged.
P.	D; H. Poetry	15 7×9.0 7.9.22	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.2×14.7 3.18.15	C	Old	

1	2	3	4	5
1525	Nga/44/19/6	Nirvāna-Kānda	Bhagavatidāsa	—
1526	Nga/47/4/35	,, ,,	,,	—
1527	Nga/47/5/11	,, ,,	,,	—
1528	Ja/35/3	,, ,,	,,	—
1529	Nga/25/7	,, ,,	,,	—
1530	Nga/26/1/11	,, ,,	,,	—
1531	Ta/6/21	,, ,,	—	—
1532	Nga/48/26/6	,, ,,	—	—
1533	Nga/26/1/10	,, ,,	—	—
1534	Nga/33/5	,, ,,	—	—
1535	Nga/47/4/34	,, ,,	—	—
1536	Ta/47/5/10	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	19.5×12.5 5 10 27	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20 6×18.0 3.16 18	C	Old	
P.	D; H Poetry	16 5×16 0 4 12.19	C	Old	
P.	D; H. Poetry	18.2×11 5 3 16.15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	28 4×17.0 2 24.17	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	29 0×17.8 2 26 26	C	Good	
P	D, Pkt. Poetry	22 2×14.7 3.18 21	C	Old	
P.	D; Pkt Poetry	16 5×13 5 3 8.24	C	Good	
P.	D; Pkt Poetry	29 0×17.8 2 23.16	C	Good	
P.	D; Pkt Poetry	22 7×15.7 3 18.15	C	Good	
P	D; Pkt, Poetry	20.6×18.0 3 16.18	C	Old	
P.	D; Pkt Poetry	16.5×16.0 3.12.19	C	Old	

1	2	3	4	5
1537	Ta/44/20	Nirvāna Kāṇda	—	—
1538	Ta/3/35	,, ,,	Bhaiyā Bhagavatidāsa	—
1539	Nga/44/13/1	,, ,,	—	—
1540	Nga/26/1/12	Oṁkārastuti	—	—
1541	Nga/47/4/61	Pada	—	—
1542	Nga/47/5/8	,,	—	—
1543	Ta/18/15	,,	Kusalsuri	—
1544	Ta/14/38	,,	—	—
1545	Ta/30/3	,,	—	—
1546	Ta/28/2	,,	Amicanda	—
1547	Ta/27/2	,,	Jinadāsa	—
1548	Nga/44/13/9	,,	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P	D; H. Poetry	22 5×15 0 5.12 31	C	Old	
P	D; Skt Poetry	13 5×8 5 4.6 13	C	Good	Starting three pages are missing.
P.	D; Skt Poetry	29 0×17 8 2 23 17	C	Good	
P	D; H. Poetry	20.6×18.0 3.16.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	16.5×16 0 1.12 19	C	Old	
P	D; H. Poetry	11 0×11.0 4 12 17	C	Old	
P,	D; H Poetry	15 2×12 8 2.12 21	C	Old	
P	D; H. Poetry	20 1×15.6 2 13 20	C	Old	
P	D; H. Poetry	19.8×17.2 1.14.18	C	Good 1948 V. S.	
P.	D; H. Poetry	19.7×16.5 2.14.21	C	Good 1948 V. S.	Copied by Amīcanda.
P.	D; H. Poetry	13.5×8.5 3.6.13	Inc	Old	

1	2	3	4	5
1549	Nga/48/23/6	Pada	—	—
1550	Nga/48/4	,,	—	—
1551	Nga/44/19/7	,,	—	—
1552	Nga/37/2	,,	—	—
1553	Ta/3/84	,,	—	—
1554	Ja/65/6	,,	Jagarāma	—
1555	Nga/37/13	,,	Ramcandra	—
1556	Ja/65	,,	Jagarāma	—
1557	Ja/65/2	,,	—	—
1558	Nga/37/12	,,	Vṛndāvana	—
1559	Ja/29	,,	—	—
1560	Nga/31/1	Padasaṅgraha	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D. H. Poetry	16.8×12.8 1.11.12	C	Old	
P.	D; H. Poetry	13.5×12.0 2.8 12	C	Good	
P.	D; H Poetry	19.5×12.5 3.9 23	Inc	Old	
P.	D; H. Poetry	17.4×11.0 5.7.17	C	Good	
P.	D; H Poetry	22 5×15.0 6.12.31	C	Good	
P.	D; H. Poetry	11.5×10.0 53 10.14	C	Good	
P	D; H. poetry	22 0×13.0 8 15.13	C	Old	
P.	D; H. Poetry	11 5×10 0 59.10.14	C	Good	
P.	D; H. Poetry	11.5×10 0 4 10.14	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22 0×13.0 4.14.13	C	Old	
P.	D; H. Poetry	21.1×14.0 3 15.15	Inc	Old	Closing is missing.
P.	D; H. Poetry	14.8×14.8 82.13.15	C	Good	

1	2	3	4	5
1561	Ja/21/1	Pada saṁgraha	—	—
1562	Ja/21/2	Pada vinatí	—	—
1563	Nga/25/12	Pada-hajūrē	Dyānatarāya	—
1564	Nga/37/10	Pada holí	—	—
1565	Ja/51/14	Padmāvati aṣ to ttara śatanāma	—	—
1566	Nga/43/6/1	Padmāvati stotra	—	—
1567	Nga/48/11/3	,, ,,	—	—
1568	Ta/39/5	,, ,,	—	—
1569	Ta/42/82	,, ,,	—	—
1570	Ta/30/5	,, ,,	—	—
1571	Ja/51/17	,, ,,	—	—
1572	Nga/25/15	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	20.0×15.3 12 11.14	Inc	Old	Closing is missing.
P.	D; H. Poetry	22.8×18 2 31.16.13	Inc	Old	Last pages are missing.
P.	D; H. Poetry	28.4×17 0 0.24.17	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.0×13.0 4.15.13	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32 3×20.1 2 13 35	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	16 3×13.0 10 13 12	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	16 5×13 2 8 13.16	C	Old	
P	D; Skt Poetry	20 0×12 2 5 19 20	C	Old	
P.	D. Skt. Poetry	32 3×19.0 2.33 37	C	Good	
P	D; Skt Poetry	20 1×15.6 2 13.20	C	Good	
P	D; Skt Poetry	32 3×20.1 1 13 35	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	28 4×17.0 22 24.17	C	Good	

1	2	3	4	5
1573	Nga/25/9	Padmāvati stotra	—	—
1574	Ja/51/12	,, sahastranāma	—	—
1575	Nga/48/11/1	,, ,,	—	—
1576	Nga/46/13	,, ,,	—	—
1577	Ta/42/36	,, ,,	—	—
1578	Ta/39/15	,, ,,	Sevārāma	—
1579	Nga/44/12/2	,, vinati	—	—
1580	Nga/48/1/4	,, ,,	—	—
1581	Nga/44/17	Padmanandipanca-vimśatikā	Padmanandi	—
1582	Nga/43/3/3	Pānco-namaskāra stotra	—	—
1583	Ta/16/4	,, ,,	—	—
1584	Nga/44/10/11	Parameṣṭhi stotra	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H Poetry	28.4×17 0 3 24 17	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	32 3×20 1 7.13 35	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	16.5×13.2 14.12.17	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	13.0×11.6 1.7.10	Inc	Old	Only first page is available.
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19 0 3 33 37	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	20 0×12 0 14 22 17	C	Old 1827 V S.	
P.	D, Skt / H. Poetry	32 3×20 2 3 23.17	C	Old	
P.	D; H Poetry	14.0×11 7 8.10.15	C	Old	
P.	D; H. Prose	11 0×10.2 12 11.9	Inc	Good	
P.	D, Skt. Poetry	17.0×13 0 5 9 19	C	Old	
P	D, Skt Prose	15.5×9.5 13.8 17	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 2.13.22	C	Good	

1	2	3	4	5
1585	Ta/6/2	Paramānanda stotra	—	—
1586	Nga/44/10/15	" "	—	—
1587	Ta/42/86	Pārśwanātha stotra	—	—
1888	Ta/42/74	" "	—	—
1589	Nga/48/6/6	" "	—	—
1590	Nga/43/3/4	" "	—	—
1591	Nga/30/2/3	" "	—	—
1592	Nga/41/2/8	" "	Dyānatarāya	—
1593	Ta/3/53	" stuti	Vinodilāla	—
1594	Ta/42/92	" stotra	—	—
1595	Ta/18/5	Pārśwanāthāṣṭaka	—	—
1596	Ta/30/1	" "	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt Poetry	22.2×14.7 2.18 20	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 3 13.22	C	Good	
P	D, Skt. Poetry	32 3×19.0 1.33 37	C	Good	
P	D; Skt Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	15 7×9 2 3.7 18	C	Old	The mss. is totely damaged.
P.	D, Skt. Poetry	17 0×13 0 2.9.18	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	19 0×14 8 3 9 20	C	Old	
P.	D,Skt /H Poetry	14 5×11 0 3 9 17	C	Good	
P	D; H Poetry	22 5×15 0 2 12 31	C	Good	
P	D; Skt Poetry/ Prose	32.3×19.0 2.33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	11.0×11 0 3.13.19	C	Old	
P.	D;H /Skt. Poetry	20.1×15.6 3.13.20	C	Old	Starting one to eleven Pages are missing.

1	2	3	4	5
1597	Nga/47 4/56	Pārśwajina-ārati	Bhairoadāsa	—
1598	Nga/48/20	Pratyaṅgirā-siddhi-mantra-stotra	—	—
1599	Ta/42/81	Ṛṣi-maṇḍala Stotra	—	—
1600	Nga/31/1/7	,, ,,	—	—
1601	Nga/47/4/17	,, ,,	—	—
1602	Nga/26/10	,, ,,	—	—
1603	Nga/13/5	,, ,,	—	—
1604	Nga/31/2/3	Sādhū-Vandanā	Banārasidāsa	—
1605	Ta/42/16	Sahasra-nāma-stotra	Jinasena	—
1606	Nga/26/1/13	,, ,, ,,	,,	—
1607	Ta/19/2	,, ,, ,,	,,	—
1608	Ta/14/25	,, ,, stavana	Āśādhara sūri	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 2 16.18	C	Old	
P.	D; Skt Poetry/ Pros	17 9×18.5 24 7.22	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	12.3×16 6 7 16 14	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	20 6×18 0 7 16 18	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	29 0×17 0 4.24 17	C	Good	
P	D, Skt. Poetry/ Prose	15 4×12 3 26 13 15	Inc	Old	Opening first page is missing.
P	D; H Poetry	12 3×16.6 4 18 16	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 4 33 37	C	Good	
P	D; Skt Poetry	29 0×17.8 6 23 17	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	10.3×9.5 54.7.9	C	Good	Sixteen pages have no folio and paging.
P.	D; Skt Poetry	15.2×12.8 14.11.15	C	Old	

1	2	3	4	5
1609	Ta/18/7	Sahasra-nāma-stotra	Jinasena	—
1610	Nga/31/2/8	,, ,, ,,	—	—
1611	Ta/29	,, ,,	—	—
1612	Ta/42/68	Samantā-bhadra-stotra	—	—
1613	Ta/3/5	Sammeda-śikhara-stuti	—	—
1614	Ta/39/16	Sammedācala stotra	—	—
1615	Nga/48/13	Sandhyā	—	—
1616	Nga/47/4/58	Śantijine ārati	—	—
1617	Ja/29/1	Śanti-stuti	—	—
1618	Ta/42/73	Śāntināthāṣṭaka	—	—
1619	Ta/3/11	Śāradāṣṭaka	Banārsidāsa	—
1620	Nga/44/10/20	Śāradā stūti	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt Poetry	11 0×11.0 26.10.10	Inc	Old 1842 V. S.	
P.	D; H Poetry	12 3×16.6 9.16 16	Inc	Old	Last śataka is missing.
	D; H. Prose	19.5×15 0 50 12.19	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 4 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	22 5×15 0 1.5 35	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20 0×12.0 3 21.18	C	Old	
P	D, Skt. Poetry/ Prose	16 0×10 2 11 6 19	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 2 16 18	C	Old	
P.	D; H Poetry	21.1×14 0 2.12 14	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D; H Poetry	22.5×15 0 2 12.35	C	Good	
P.	D: Skt. Poetry	18.5×13.1 5.13.22	C	Old	

1	2	3	4	5
1621	Ta/42/18	Saraswati stuti	Malaya Kirti	—
1622	Ta/42/75	„ stotra	—	—
1623	Nga/48/9	„ „	—	—
1624	Ta/40	Śāstra Vinati	—	—
1625	Ta/42,96	Siddha-bhakti	—	—
1626	Ta/18,17	Sitā-Vinati	—	—
1627	Nga/41/2/7	Śrīpāladarśana	—	—
1628	Nga/37/1	Ś.ipāla Vinati	Sripālarāja	—
1629	Ta/42/97	Śruta-bhakti	—	—
1630	Ja/16/1	Stotra	—	—
1631	Nga/47/4/31	Sthāpanā Ārati	—	—
1632	Ja/32	Stuti	Haridāsa	—

6	7	8	9	10	11
P.	D. Skt Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32 3×19 0 1 33.37	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	14.7×11 7 6 14 12	C	Old	
P.	D; H Poetry	13 7×9.7 3 11 10	C	Old	
P	D; Skt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P.	D; H Poetry	11 0×11 0 13 9.8	C	Good	
P.	D, H poetry	14.5×11 0 5 9 15	C	Good	
P.	D, H Poetry	9 8×15 7 5 13 11	C	Good	
P.	D; Skt / Pkt. Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	23 3×19 0 4 15.18	C	Good	
P.	D; H Poetry	20.6×18 0 2.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	19.5×15 0 5.15.21	C	Good 1965 V. S.	

1	2	3	4	5
1633	Ta/42/88	Suprabhāta stotra	—	
1634	Ja/51/16	Sūrya-sahasra-nāme	—	—
1635	Nga/47/4/26	Swayambhū stotra	—	—
1636	Ta/42/10	,, ,,	—	—
1637	Ta/3/30	,, ,,	—	—
1638	Ta/14/23	,, ,,	—	—
1639	Ja/29/4	Vinati	—	—
1640	Nga/25/8	,,	—	—
1641	Nga/37/11	,,	Vrndavana	—
1642	Ja/45/5	,,	Bhūdharadāsa	—
1643	Ta/3/40	,,	—	—
1644	Ta/42/29	,,	Jnánaságara	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt Poetry	32.3×19.0 1 33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×20.1 3 13 35	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20 6×18.0 3.16 18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32 3×19.0 1 33.37	C	Good	
P.	P; Skt Poetry	22.5×15.0 3 12 31	C	Good	
P	D; Skt Poetry	15 2×12.8 20.11.15	C	Old	
P.	D, H Poetry	21 1×14 0 16 13 13	C	Good	
P.	D, H. Poetry	28 4×17 0 3 24 17	C	Good	
P.	D; H Poetry	22 0×13 0 5 15 14	C	Old	
P.	D; H. Poetry	15.0×11.3 3 10 23	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 1.12 31	C	Old	
P.	D; H. Poetry	32.3×19.0 2.33 37	C	Good	

1	2	3	4	5
1645	Nga/48/1/3	Vinati	—	—
1646	Ta/30/6	,,	Harşakīrti	—
1647	Nga/48/23/5	,,	—	—
1648	Nga/44/19/3	,,	—	—
1649	Nga/44/12/3	,,	—	—
1650	Nga/47/4/75	,,	Bhūdharadāsa	—
1651	Nga/44/10/7	,,	—	—
1652	Ta/3/8	Vinati-tribhuvana swāmī	—	—
1653	Nga/44/10/9	Vişāpahāra stotra	Dhananjaya Kavi	—
1654	Nga/38/3	,, ,,	,,	—
1655	Nga/26/1/5	,, ,,	,,	—
1656	Nga/48/21/4	,, ,,	,,	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	11.7×14.0 5.10.15	C	Old	
P.	D; H Poetry	20.1×15 6 2.13.20	C	Good	
P.	D; H Poetry	16 8×12.8 3 11 12	C	Old	
P.	D; H Poetry	19.5×12.5 3 10 19	C	Old	
P.	D; H Poetry	32.3×20 4 4.23 17	C	Old	
P	D; H. Poetry	20 6×18.0 5.16.18	C	Old	
P	D; H. Poetry	18.5×13.1 2 13 22	C	Good	
P.	D, H Poetry	22 5×15.0 2.12.31	C	Old	
P	D; Skt Poetry	18.5×13 1 5 13 22	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	15.8×9.0 6 9.22	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	29.0×17 8 4 21.17	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	16.5×12.5 8.12.12	C	Old	

1	2	3	4	5
1657	Ta/9/8	Viṣāpahāra stotra	Dhanañjaya Kavi	—
1658	Ta/4/4	" "	"	—
1659	Ta/42/65	" "	"	—
1660	Nga/47/4/9	" "	"	—
1661	Nga/44/10/3	" "	—	—
1662	Nga/47/4/14	" "	—	—
1663	Nga/44/12/4	" "	—	—
1664	Nga/44/13/2	" "	—	—
1665	Nga/25/4	" "	—	—
1666	Ja/35/5	" "	—	—
1667	Ja/16/4	" "	—	—
1668	Nga/47/4/6	Vrhat-sahastra-nāma	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D Skt. Poetry	19.0×14.5 13.19.20	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	23.2×19 5 6.11 20	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19 0 2 33 37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.6×18.0 5.16.17	C	Old	
P.	D; H Poetry	12 5×13 1 4.12.23	C	Good	
P.	D; H Poetry	20 6×18.0 5.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	32.3×20 2 4 23.17	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	13 5×8.5 13.6.13	C	Old	
P.	D; H Poetry	28.4×17 0 4 24 17	C	Good	
P.	D; H. Poetry	18.3×11.5 5 16.15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	23.3×19 0 4.15.18	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.6×18.0 13.16.14	C	Old	

1	2	3	4	5
1669	Nga/47/8/3	Vṛhat-svayambhū	Samanta-bhadra	—
1670	Nga/43/70	,, ,, stotra	,,	—
1671	Nga/26/1/9	,, ,, ,,	,,	—
1672	Ta/42/101	Yoga bhakti	—	—
1673	Nga/30/2/7	Abhiṣēka-vidhi	—	—
1674	Nga/47/5/1	Ādinātha-pūjā	—	—
1675	Nga/41/Ta	,, ,,	—	—
1676	Nga/41/Dha	Ādityawāra-pūjā	—	—
1677	Nga/27/3	Ādityavāra-Udyāpana	Viśvabhūṣana	—
1678	Ta/39/22	Ākṛtrima-caityālaya-Ārati	—	—
1679	Ta/3/22	,, ,, Arhya	—	—
1680	Nga/26/2/8	,, ,, pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt./ H. Poetry/ Prose	20.8×16.3 18 15.18	C	Old	
P.	D; Skt./ H. Poetry/ Prose	17 6×13 0 22 12.21	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	29.0×17 8 13 23 17	C	Good	
P.	D; Pkt./ Skt. Poetry	32.3×19 0 1.33.37	C	Good	
P.	D, Skt. Poetry	19.0×14 8 1 9.26	Inc	Old	It has no closing.
P	D, Skt. Poetry	16.5×16 0 4.12.19	C	Old	
P.	D, H Poetry	14.5×11 0 6 13 16	C	Old	
P	D;Skt /H Poetry	14 5×11 0 2 13 16	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	27 3×17 6 15 10 31	C	Good	
P.	D; Pkt Poetry	20.0×12 0 1 24.18	C	Old	
P	D; Skt, Poetry	22 5×15 0 1 12 32	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	30.3×17 5 2.16.16	C	Good	

1	2	3	4	5
1681	Ta/42/30	Ananta-jina-pūjā	—	
1682	Ta/42/49	Anantā-pūjā-vidhi	—	—
1683	Ja/51/22	,, ,, ,,	—	—
1684	Nga/44/10/12	Ari-hanta-dakṣiṇī	—	—
1685	Ta/39/6	Aṣṭabījakṣara-pūjā	—	—
1686	Ta/14/28	Aṣṭānhikā-pūjā	—	—
1687	Ta/35/6	,, ,,	—	—
1688	Ta/42/26	,, ,,	—	—
1689	Nga/47/8/15	,, ,,	—	—
1690	Ta/3/33	,, ,,	Dyānatarāya	—
1691	Nga/47/4/24	Aṭhāī-pūjā	,,	—
1692	Nga/27/5	Bāhubali-pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry/ Prose	32.3×19.0 2 33 37	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	32.3×20.1 2.13.35	C	Good	
P.	D; H Poetry	18.5×13.1 4.13.32	Inc	Good	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	20 0×12.2 4.19 20	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	15 2×12.8 12.12.18	C	Old	
P.	D; Skt./ Pkt Poetry	15 5×12 6 11 10 16	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32 3×19.0 3.33 37	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	20.8×16 3 22 15.17	C	Old	
P.	D;Skt /H Poetry	22 5×15 0 7 12.31	C	Old	
P.	D; H Poetry	20.6×18.0 8.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	18.5×30.5 6 21.20	C	Good	

1	2	3	4	5
1693	Nga/47/8/7	Bāhubali-muni-pūjā	—	—
1694	Nga/47/4/53	Bhairo-rāga	—	—
1695	Ja/38/1	Bisā-Tirthankara arghya	—	—
1696	Ta/3/25	Bisa-Virahamāne-pūjā	—	—
1697	Nga/48/12/2	,, ,, ,,	—	—
1698	Ta/14/5	,, ,, ,,	—	—
1699	Nga/48/23/1	,, ,, ,,	—	—
1700	Nga/47/4/21	,, ,, ,,	—	—
1701	Nga/41/2/2	Bisa-Vidyamāna-pūjā	—	—
1702	Nga/26/2/11	Bisa-Tirthankara-jakari	—	—
1703	Nga/47/3/80	Bisa-Virahamāna ārati	—	—
1704	Nga/48/26/5	Bisa-Tirthankara-Jayamālā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D. H Poetry	20.8×16.3 4.16 21	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20.6×18 0 1 16 18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22 0×13 1 9.12 27	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	22 5×15.0 4 12 32	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	13 5×12 0 4 8 12	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	15.2×12.8 3.13.16	C	Old	
P.	D; Skt poetry	16.8×12 8 4 11 18	C	Old	
P.	D, H. Poetry	20 6×18 0 5.16.17	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	14.5×11 0 4 9 17	C	Good	
P.	D; H Poetry	30 3×17 5 2 16 16	C	Good	
P.	D; H Poetry	20.6×18.0 1.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	16.5×13.5 2.8.24	C	Old	

1	2	3	4	5
1705	Nga/47/5/4	Candra-prabha-pūjā	—	—
1706	Nga/17/1/1	,, ,, ,,	Ajitadāsa	—
1707	Ta/42/15	Cāretra-pūjā	—	—
1708	Ta/14/11	,, ,,	Narendrasena	—
1709	Nga/47/4/30	,, ,,	,,	—
1710	Ta/39/7	Caturaviśati-yakṣinı-pūjā	—	—
1711	Ta/39/8	,, mātrkā pūjā	—	—
1712	Ta/39/9	Caturanıviśatı-tirthankara-pūjā	—	—
1713	Nga/33/1	,, ,, ,,	—	—
1714	Nga/33/2	,, ,, ,,	—	—
1715	Ja/34/4	,, ,, ,,	—	—
1716	Nga/47/7	,, ,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	16.5×16.0 5.12.19	C	Old	
P.	D; H. Poetry	25.0×15.0 3.19.21	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	15.2×12.8 9.12.16	C	Old	
P.	P; Skt Poetry	20.6×18.0 0.16.18	C	Old	
P	D; Skt Poetry	20.0×12.2 4.20.15	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	20.0×12.2 4.20.20	C	Old	
P	D, Skt. Poetry	20.0×12.2 4.20.20	C	Good	
P.	D,H /Skt. Poetry	23.4×15.0 21.19.14	C	Good	Its two opening pages are damaged. Copied by Rāmcandra
P.	D; H. Poetry	22.5×13.4 4.16.12	C	Good	
P.	D; H. Poetry	19.0×14.9 3.15.20	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	18.0×14.1 100.13.13	C	Old	

1	2	3	4	5
1717	Ta/14/13	Caturavimśati-jina Jayamālā	—	—
1718	Nga/41/ṇa	Caubisa-tirthankara-pūjā	—	—
1719	Nga/48/3	,, ,, ,,	—	—
1720	Ja/55	,, ,, ,,	—	—
1721	Ta/13	,, ,, ,,	Caudharī Rāmacanda	—
1722	Nga/46/10	Caubiśi pūjā	—	—
1723	Nga/38/8	Caturavimśati tirthankara pada	—	—
1724	Ta/5/4	Cintāmaṇi-pūjā	Śambhūnātha	—
1725	Ta/24/6	,, pārśwanātha pūjā	Jnānasāgar	—
1726	Nga/47/8/16	,, ,, ,,	—	—
1727	Ta/39/1	,, ,, ,,	—	—
1728	Ta/42/38	,, ,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D;H./Pkt. Poetry	15.2×12.8 3.11.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	14.5×11 0 5.13 16	C	Old	
P.	D; H Poetry	40 9×15.8 2 40 15	C	–	
P.	D; H Poetry	35.0×18.0 71.11.30	C	Good	
P.	D; H. Poetry	15.0×13 3 113.10 22	C	Good	
P.	D; H Poetry	19 0×17.8 4.13.20	C	Good	
P.	D; H. Poetry	15 7×9 0 3.9 22	C	Good	
P,	D; Skt Poetry	25.0×15 0 10.24 16	C	Good 1793 V. S.	
P	D; Skt Poetry	30.2×20.0 16 37.33	C	Old 1819 V, S.	
P	D; Skt Poetry	20.8×16 3 6.16.15	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	20.0×12.2 2.19.20	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1729	Ta/39/13	Cintâmani Jayamāla	—	—
1730	Nga/48/26/2	Darśana-pāṭha	—	—
1731	Nga/44/13/8	,, ,,	—	—
1732	Ta/35/1	,, ,,	—	—
1733	Ta/42/61	,, pūjā	—	—
1734	Ta/42/13	,, ,,	—	—
1735	Nga/47/4/28	,, ,,	Narendrasena	—
1736	Ta/3/29	Daśalākṣanī ,,	Dyânatarāya	—
1737	Nga/47/4/25	,, ,,	,,	—
1738	Nga/44/10/14	,, ,,	Brahma Jinadāsa	—
1739	Ta/14//8	,, ,,	—	—
1740	Ta/42/59	,, ,,	Dyānatarāya	—

6	7	8	9	10	11
P.	D;Pkt / H./Skt. Prose	20.0×12.0 1 23.19	C	1825 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	16 5×13.5 2 8.24	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	13.5×8.5 4 6 13	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	15.5×12 6 2 10.16	C	Old	
P	D; H. Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×00.0 2.33.37	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	20 6×18 0 6 16 18	C	Old	
P.	D;Skt /H Poetry	22 5×15 0 7.12 31	C	Good	
P.	D,Skt /H Poetry	20 6×18 0 15 16 18	C	Old	
P.	D; Skt / H. Poetry/ Prose	18.5×31 1 4 13 22	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	15.2×12.8 16.12 12	C	Old	
P.	D; H. Poetry	32.3×19 0 2.33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1741	Ta/42/9	Daśa-lākṣaṇī-pūjā	—	—
1742	Ta/35/5	,, ,, ,,	—	—
1743	Ta/38/1	,, ,, Jayamālā	—	—
1744	Ta/24/2	,, ,, Vratodyapana	—	—
1745	Ta/39/10	Digpālārcana	—	—
1746	Nga/26/2/2	Deva-Pūjā	Ājādhara Sūri	—
1747	Nga/25/14	,, ,,	—	—
1748	Nga/14/4	,, ,,	—	—
1749	Ja/45	,, ,,	—	—
1750	Nga/27/2	,, ,,	—	—
1751	Nga/26/2/13	,, ,,	—	—
1752	Nga/41/2/1	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt Poetry	32.3×19.0 3.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	15.5×12 6 3.10 15	C	Old	
P.	D; Skt / Pkt. Poetry	14.5×12.5 15 8.13	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	30.2×20.0 5 37 33	C	Old	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	20 0×12.2 3.19 20	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	30 3×17 5 5.16.16	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	28 4×17 0 6 24 17	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 8×26 0 13 14 25	C	Good	
P.	D, H / Skt Poetry/ Prose	15.0×11 3 36 11 33	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	26 0×17 7 8 20 16	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	30.3×17.5 2.19.13	Inc	Good	
P.	D; Pkt./ Skt. Poetry	14.5×0.11 17.9.16	C	Good	

1	2	3	4	5
1753	Ta/3,18	Devapūjā	—	—
1754	Nga/44/2	,,	—	—
1755	Nga/47/4/18	,,	Dyānatarāya	—
1756	Nga/44/3	,,	—	—
1757	Ta/14/4	,,	—	—
1758	Ta/16,1	,,	—	—
1759	Ta/18/?	,,	—	—
1760	Nga/48/19	,,	—	—
1761	Nga/48/23/1	,,	—	—
1762	Ta/35/2	,,	—	—
1763	Nga/44/10/16	,,	—	—
1764	Nga/48/12/1	,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D Skt. Poetry	22.5×15 0 5.12.36	C	Good	
P.	D, Pkt / Skt. Poetry/ Prose	20.5×16.0 9 15 17	Inc	Old	
P.	D;Skt /H Poetry	20 6×18.0 12 16 18	C	Old	
P.	D; H / Skt. Poetry/ Prose	20 0×16 0 26.14 19	C	Old	
P.	D, Pkt./ Skt. Poetry	15.2×12 8 10.12.16	Inc	Old	
P.	D; Skt Poetry/ Prose	15.5×9.5 11.6.18	Inc	Old	
P.	D; Pkt / Skt Poetry	11.0×11 0 13 13.19	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	16 1×10 1 8.8.26	C	Old	
P.	D;Skt /H Poetry	16 7×1 9 12 10 16	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	15 5×12 6 7.10 16	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	18 5×13.1 5.13.22	C	Old	
P.	D; Pkt. Poetry	13.5×12.0 17.8.13	C	Good	

1	2	3	4	5
1765	Ta/42,2	Deva-pūjā	—	—
1766	Ta/3/19	Deva-jayamālā	—	—
1767	Ta/5/10	Deva-pratiṣṭhā Vidhi	—	—
1768	Nga/48/1/2	Dharanendra-pūjā	—	—
1769	Ta/39/3	,, ,,	—	—
1770	Ja/51/11	,, ,,	—	—
1771	Ta/3/36	Garbha Kalyāṇaka	Rūpacanda	—
1772	Ja/57	Giranāra-pūjā	—	—
1773	Nga/48/24	,, ,,	—	—
1774	Nga/47/8/11	,, ,,	—	—
1775	Ta/3/21	Gurū-jaya-mālā	—	—
1776	Nga/14/7	Guru--pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Pkt./ Skt Poetry	32.3×19.0 3 30.37	C	Good	
P.	D; Pkt. Poetry	22.5×15 0 2 12 31	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	25.0×15 0 3 27.20	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	13.7×12.0 89.10 13	C	Old	
P.	P; Skt Poetry	20.0×12.2 4.19 20	C	Old	
P	D; Skt Poetry	32.3×20 1 1.13.35	C	Good	
P.	D; H Poetry	22.5×15.0 2.12 31	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20 8×16.4 10.15.21	C	Good	
P.	D; H Poetry	16 2×9.5 8 6 21	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20.8×16.3 6.15 17	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 2.12.32	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.8×26 0 7.14 25	C	Good	

1	2	3	4	5
1777	Nga/41/2/4	Guru-pūjā	Vinodilāla	—
1778	Nga/47/9/42	,, ,,	—	—
1779	Ta/14/39	,, ,,	—	—
1780	Ta/42/8	,, ,,	Brahma Jinadāsa	—
1781	Nga/44/10/19	,, ,,	—	—
1782	Ta/18/6	,, ,,	—	—
1783	Nga/26/2/5	,, ,,	Brahma Jinadāsa	—
1784	Ta/3/27	,, ,,	Hemarāja	—
1785	Nga/48/1/5	Homa-Vidhi	—	—
1786	Ta/24/4	Jala-yātrā-Vidhi	—	—
1787	Ta/5/7	Jinayajna Vidhāna	—	—
1788	Nga/25/10	Jinavara Vinati	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D;Pkt./H. Poetry	14.5×11.0 6.9.17	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20 6×18.0 4 16.18	C	Old	
P.	D; Skt./ Pkt Poetry	15 2×12 8 3.14 19	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2 33.37	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	18 5×13.1 4 13 22	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	11 0×11.0 4 13 19	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	30.3×17 5 3.16.16	C	Good	
P,	D; H. Poetry	22 5×15 0 5 12.31	C	Good	
P	D, Skt. Poetry/ Prose	14.0×11.7 12 10.12	C	Old	
P	D; Ski. Poetry/ Prose	30.2×20 0 1.37.33	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	25.0×15.0 68.21.17	Inc	Good	
P.	D; H. Poetry	28.4×17.0 2 24.17	C	Good	

1	2	3	4	5
1789	Nga/47/5/2	Jina-guṇa-sampati-pūjā	—	
1790	Ta/3/26/1	Jina-vāṇī-pūjā	Brahma Jinadāsa	—
1791	Nga/47/8/13	Jambū-swami-pūjā	—	—
1792	Ja/63	,, ,,	—	—
1793	Nga/44/10/22	Jaya-mālikā-pūjā	—	—
1794	Nga/47/4/29	Jnāna-pūjā	—	—
1795	Ta/14/10	,, ,,	Narendrasena	—
1796	Ta/42/14	,, ,,	—	—
1797	Nga/17/1/3	Jwālā-mālinī-pūjā	—	—
1798	Nga/43/6/10	,, ,,	—	—
1799	Nga/47/8/17	,, ,,	—	—
1800	Ta/42/40	Jyeṣṭha-jinavara-pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	16.5×16.0 6.12.19	C	Old	
P.	D;Skt./H. Poetry	22.5×15.0 6.12.31	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.8×16.3 8.15.17	C	Old	
P.	D;Skt./H. Poetry	16.7×12.8 11.8.22	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 2.13.22	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	20.6×18.0 5.16.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	15.2×12.8 7.12.16	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	25.0×15.0 5.20.21	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	17.3×13.0 7.13.13	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	20.8×16.3 2.15.17	Inc	Old	
P.	D; H / Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1801	Nga/48/26/4	Kalaśābhiṣeka	—	—
1802	Nga/41/Ka	Kalikuṇḍa-pūjā	—	—
1803	Nga/47/4/40	" "	—	—
1804	Ta/42/22	" "	—	—
1805	Nga/44/10/18	" pārśwanātha--pūjā	—	—
1806	Ta/14/12	" " "	—	—
1807	Nga/26/2/6,7	" " "	—	—
1808	Ta/24/1	Kanjikā-vratodyāpana	Paṅdita Naṅdarāma	—
1809	Nga/14/3	Karma-dahan-pūjā	—	—
1810	Ta/42/24	Kṣmā-vani "	—	—
1811	Ta/30/9	Kṣetrapāla "	Viśwasena	—
1812	Ta/41/28	" "	Subhacaṅdra	—

6	7	8	9	10	11
P.	D Skt. Poetry	16.5×13 5 5 8 24	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	14 5×11.0 2.13 17	C	Old	Opening pages are missing.
P	D; Skt. Poetry	20 6×18.0 3 16 18	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	32.3×19 0 2.33.37	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	18.5×13 1 4 13.22	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	15 2×12.8 4 12 15	C	Old	
P.	D, Skt. Poetry	30 3×17 5 5 16 16	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	30 2×20 0 2 37 33	C	Old	
P	D; Skt Poetry	20 8× 0 0 23 14 25	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	32.3×19 0 2 33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20 1×15.6 26 13 20	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32 3×19.0 0 33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1813	Ta/39/12	Kṣetra-pāla-pūjā	—	—
1814	Ta/30/7	,, ,,	—	—
1815	Ta/42/31	,, ,,	Viśwasena	—
1816	Nga/43/6/16	,, ,,	Vijayapāla	—
1817	Nga/41/Dha	,, ,,	—	—
1818	Ja/51/8	,, ,,	—	—
1819	Ta/42/23	Labdh-vidhāna-pūjā	—	—
1820	Nga/47/9/3	Laghu-karma-dahana-pūjā	—	—
1821	Nga/47/9/1	Laghu-pañcakalyānaka-vidhāna	—	—
1822	Ja/29/2	Mahāvira arghya	—	—
1823	Nga/78/26/3	Maṅgala	—	—
1824	Ta/42/91	Mantra-vidhi	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D. Skt. Poetry	20.0×12.0 4 19 20	Inc	Old	
P.	D; Skt. Poetry	20 1×15.6 3 13 20	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 6 33 37	C	Good	
P.	D;Skt /H. Poetry	17.3×13.0 3.13 13	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	14 5×11.0 15 13 16	C	Old	
P	D; Skt Poetry	32 3×20 1 3 13 35	C	Good	
P	D, Skt poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P.	D; H Poetry	20 5×15 9 7 13 19	C	Good 1928 V. S.	
P	D; H Poetry	20.5×15.9 12.13 29	C	Good	
P	D; H Poetry	21 1×14 0 1 12 13	C	Old	
P	D; H. Poetry	16 5×13.5 5 8.24	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1825	Nga/31/2/7	Mokṣa-paidi	Banarasidāsa	—
1826	Nga/29/2	Nandīśwara-pūjā	—	—
1827	Nga/28/5	,, ,,	—	—
1828	Nga/44/10/23	,, dvipa-pūjā	—	—
1829	Nga/47/8/8	Navagraha-pūjā	—	—
1830	Nga/27/1	,, ,,	—	—
1831	Nga/36/1	,, ,,	—	—
1832	Ja/51/7	,, ,,	Jinasāgar	—
1833	Nga/46/7	,, ,,	—	—
1834	Ta/39/11	,, ,,	—	—
1835	Nga/47/4/41	Navakāra-panca-triṁśat-pūjā	—	—
1836	Ta/20/1	Nava-pada-kalaśa-pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	12 3×00.0 4 16.16	C	Good	
P.	D; H. Poetry	13 2×21.0 34 17 11	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	14 6×14 1 23 12 15	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	18.5×13 1 4.13 22	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20 8×16 3 28 16 21	C	Old	
P.	D;Skt /H Poetry	26 0×16 7 20 19.16	C	Good 1913 V. S.	
P.	D,Skt /H Poetry	13 6×17 8 32 9 26	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32 3×20 1 4 13.35	C	Good	It contains chart of nine grahas.
P.	D; Skt /H Poetry	23 2×15.0 24 16.15	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	20.0×12.0 3 19 20	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	20 6×18.0 4.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	10 9×9 6 25.7.13	Inc	Old	Page no one to thirty seven are missing.

1	2	3		4	5
1837	Nga/44/19/4	Neminātha Jayamālā		—	—
1838	Ta/14/37	Nhavana-pūjā		—	—
1839	Ta/42/11	,,	,,	—	—
1840	Nga/47/4/37	,,	kavya	—	—
1841	Nga/47/5/13	Nirvāna pūjā jayamālā		—	—
1842	Nga/44/9/1	,,	,,	—	—
1843	Nga/47/4/33	,,	,,	—	—
1844	Nga/33/4	,,	,,	—	—
1845	Ta/42/21	,,	,,	—	—
1846	Nga/44/10/27	,,	,,	Bhagavatidāsa	—
1847	Ta/14/30	,,	,,	—	—
1848	Nga/47/5/5	,,	,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	19.5×12.5 2 10.19	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	15 2×12 8 9.12.18	Inc	Old	Closing is missing.
P.	D; Skt.* Poetry	32 3×19 0 3.33.37	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	20 6×18 0 3.16 18	C	Old	
P.	P; Pkt. Poetry	16.5×16.0 3.12.19	C	Old	
P.	D; Skt / Pkt. Poetry	11.0×10 5 8 11.12	C	Good	Sixteeng opening pages are missing.
P.	D; Pkt./ Skt. Poetry	20 6×18 0 4 16.18	C	Old	
P	D; H. Poetry	22.7×15.7 2.18 16	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	32.3×19.0 1.33 37	C	Good	
P.	D;Skt./H. Poetry	18.5×13.1 4.13.22	C	Old	
P.	D; Skt./ Pkt. Poetry	15.2×12.8 5.12.17	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	16.5×16.0 3.12.19	C	Old	

1	2	3	4	5
1849	Ta/42/42	Nirvāna-pūjā	—	—
1850	Nga/47/8/5	Nirvāna-kṣetra-pūjā	—	—
1851	Nga/47/8/1	,, ,, ,,	—	—
1852	Ta/3/34	,, kalyānaka ,,	—	—
1853	Ta/3/37	,, ,,	Rūpacanda	—
1854	Nga/36/2	Nitya-niyama-pūjā	—	—
1855	Nga/37/5	Pada-Lāvanī	—	—
1856	Ta/39/4	Padmāvatī-pūja-vidhāna	—	—
1857	Ja/51/13	,, ,,	Cārūkīrti	—
1858	Ta/42/35	,, ,,	—	—
1859	Ta/42/37	,, ,,	—	—
1860	Ta/39/14	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D; H. Poetry	32.3×19.0 2.33.33	C	Good	
P.	D; H Poetry	20.8×16 3 7.15.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20 8×16 3 2 15.18	C	Old	
P.	D;H./Skt. Poetry	22.5×15.0 4 12.31	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22 5×15.0 1 12 31	C	Old	
P.	D;Skt /H. Poetry	17.8×13 7 24.14 15	C	Good	
P.	D; H Poetry	20 8×13 0 4 14 12	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	20.0×12.2 2 19.20	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	32.3×20 1 4.13 35	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 3.33.37	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20 0×12.0 8 20.16	C	Old	

1	2	3	4	5
1861	Nga/43/6/15	Padmāvatī-pūjā	—	
1862	Nga/41/4	,, ,,	—	—
1863	Ja/51/9	,, vratodyāpana	—	—
1864	Nga/41/1	Pancabālayati-pūjā	—	—
1865	Ta/33	Pañca kalyānka-pūjā Pātha	Bhagawāna Prasād	—
1866	Nga/47/4/2	Panca-kalyānaka-pāṭha	Rūpacanda	—
1867	Ta/42/1	,, ,, ,,	,,	—
1868	Nga/14/2	,, ,, Pūjā	—	—
1869	Nga/47/4/82	,, ,, ,,	—	—
1870	Nga/26/2/1	,, ,, dohā	—	—
1871	Ta/5/1	,, ,, pūjā	—	—
1872	Nga/47/8/6	Pañca-kumāra-pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	17.3×13.0 5.13.13	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	14.5×11.0 4.13.16	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	32.3×20.1 5 13.35	C	Good	
P.	D; H. Poetry	16.0×9.5 6.7.25	C	Good	
P	D; H. Poetry	19.7×15 8 44 17.16	C	Good	
P	D; H Poetry	20.6×18.0 8 18 21	C	Old	
P.	D; H Poetry	32 3×19 0 3 30.37	C	Good	
P	D; Skt Poetry	20 8×26 0 24 14.25	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.6×18.0 28.16.21	C	Old	
P.	D; H. Poetry	30.3×17.5 21.16.16	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	25.0×15.0 17.28.21	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20.8×16.3 4.16.21	C	Old	

1	2	3	4	5
1873	Ja/57/3	Panca-kumāra-vidhāna	—	—
1874	Ta/18	Panca-mangala-pāṭha	—	—
1875	Nga/25/13	,, ,, ,,	Rūpacanda	—
1876	Nga/41/2	,, ,,	,,	—
1877	Ja/26/1	,, meru pūjā	—	—
1878	Ta/3,32	Panca ,, ,,	Dyānatarāya	—
1879	Nga/47/4/23	,, ,,	,,	—
1880	Nga/44/10/21	,, ,,	—	—
1881	Ta/42/25	,, ,,	Bhūdhardāsa	—
1882	Nga/47/8/14	,, ,,	—	—
1883	Ta/42/57	,, ,,	Dyānatarāya	—
1884	Ja/57/4	Panca-parmeṣṭi-Arghya	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D. Skt. Poetry/ Prose	32 3×20.1 2.13.35	C	Good	
P.	D;Skt /H. Poetry	11.0×11.0 9.13 19	C	Old	
P.	D; H. Poetry	28 4×17 0 4.24 17	C	Good	
P.	D; H, Poetry	14 5×11.0 14 8.19	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22 0×15 0 22 18.14	C	Old	
P	D;Skt./H Poetry	22.5×15.0 4 12.31	C	Good	
P	D, H poetry	20 6×18 0 6 16 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	18 5×13.1 2 13.22	C	Old	
P	D;Skt./H Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	20 8×16.3 13 15.17	C	Old	
P.	D; H. Poetry	32.3×19.0 0.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×20.1 1.13.35	C	Good	

1	2	3	4	5
1885	Ta/3,23	Panca-parmeṣṭhi Jayamālā	—	—
1886	Ta/33/2	,, ,, Pātha	—	—
1887	Ta/5/8	,, ,, Pūjā	Dharmabhūṣana	—
1888	Nga/47/9/2	,, ,, ,,	—	—
1889	Nga/33/3	,, ,, ,,	—	—
1890	Nga/14/1	,, ,, ,,	Yaśonandi	—
1891	Nga/37/7	Pārśwanātha Kavitta	—	—
1892	Nga/48/1/1	,, Pūjā	—	—
1893	Nga/47/5/9	,, ,,	—	—
1894	Ja/51/10	,, ,,	—	—
1895	Ja/51/5	,, ,,	—	—
1896	Nga/47/4/3	Prabhāti-Maṅgala	Rūpacanda	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Pkt. Poetry	22.5×15.0 2 12.33	C	Good	
P.	D; H. Poetry	19.7×15.8 4 17.16	Inc	Good	
P.	D; Skt. Poetry	25.0×15.0 15.23.15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.5×15.9 8.13 19	C	Good	
P	D;Skt /H Poetry	23 5×14 5 18 16 11	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	20 8×26 0 39 14 25	C	Good	
P.	D; H Poetry	12.0×18 3 4 17 17	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	13 7×12 0 14 10.14	C	Old	1 to 11 pages are missing.
P.	D; H Poetry	16.5×16.0 5.12.19	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×20 1 4.13 35	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	32 3×20 1 3.13.35	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 2.16.18	C	Old	

1	2	3	4	5
1897	Ta/42/34	Pratiṣṭhā-tilaka	Narendra Sena	—
1898	Ta/3/52	Pūjā-māhātmya	Vinodīlāla	—
1899	Nga/44/2	„ Saṁgraha	—	—
1900	Ja/19	„ „	—	—
1901	Ja/29/5	„ Vidhāna	—	—
1902	Nga/46/4	Punyāha-Vācana	—	—
1903	Ja/51/2	„ „	—	—
1904	Nga/48/19	„ „	—	—
1905	Nga/43/6/14	„ „	—	—
1906	Ta/3/1	„ „	—	—
1907	Nga/46/11/1	„ „	—	—
1908	Nga/44/5	Puṣpānjali Pūjā	Lalitakīrti	—

(Pūjā-Pāṭha-Vidhāna)

6	7	8	9	10	11
P	D Skt. Poetry	32 3×19.0 15.33.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 2.12 31	C	Good	
P.	D; H. Poetry	18 5×13 5 102 13 26	Inc	Old	The Mss. is not in order.
P.	D; H. Poetry	23 7×15.0 27.20.17	C	Good	
P	D; H. Poetry	21.1×14 0 119 13 13	C	Good	
P	D; Skt Poetry	36 0×19 0 5 12 44	C	Good	
P	D; Skt Poetry/ Prose	32 3×20 1 4 13 34	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	16 8×14 0 16 10.15	C	Old	
P.	D, Skt. Prose/ Poetry	17 3×13 0 5 13 13	C	Old	
P	D; Skt. Poetry/ Prose	21.0×10.9 16 8.18	C	Good 1866 V. S.	
P	D; Skt Prose	36.4×19.0 1.12.39	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.5×15.5 3.12.26	C	Good	

1	2	3	4	5
1909	Ja/34	Ratnatraya-Pūjā	Dyânatarâya	—
1910	Ta/42/62	,, ,,	,,	—
1911	Ta/42/12	,, ,,	—	—
1912	Ta/3/31	,, ,,	Dyānatarāya	—
1913	Nga/41/Kha	,, ,,	—	—
1914	Nga/47/4/27	,, ,,	Dyānatarāya	—
1915	Ta/14/9	,, ,,	Narendra Sena	—
1916	Ta/38/2	,, Jayamālā	—	—
1917	Ja/34/3	Ravivrata-Udyāpana	Viśvabhūṣana	—
1918	Nga/47/4/1	,, Pūjā	—	—
1919	Ta/42/33	,, ,,	—	—
1920	Nga/48/10	Ṛṣi-maṇḍala Pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	19.0×14.9 3.15.15	C	—	
P.	D; H. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 4.12.31	C	Good	
P.	D;Skt /H. Poetry	14.5×11.0 5.13.17	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	20.6×18.0 3.16.18	C	Old	
P	D, Skt. Poetry	15.2×12.8 9.1 15	C	Old	
P	D; Skt Poetry	14.5×12.5 6.8.13	Inc	Old	
P	D; Skt. Poetry	19.0×14.9 11.17.16	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	20.6×18.0 4.18.21	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	12.0×16.5 7.13.14	C	Old 1818 V. S.	Hemarāja seems to be the copier of this Mss.

1	2	3	4	5
1921	Nga/47/3	Ṛṣi-maṇḍala Pūjā	—	—
1922	Ta/5/5	,, ,,	—	—
1923	Nga/13/1/2	,, ,,	—	—
1924	Nga/22	Sahasranāma ,,	Śikhara-Canda	—
1925	Ja/51/1	Sakalī-Karaṇa	—	—
1926	Ta/16/2	,, ,, Vidhi	—	—
1927	Ta/16/5	,, ,, ,,	-	—
1928	Nga/44/6	,, ,, ,,	—	—
1929	Nga/38/15	Samādhi-maraṇa	Dyānatarāya	—
1930	Ja/17	Sāmāyika Pāṭhā	Jayacanda	—
1931	Nga/36/3	,, Vacanikā	,,	—
1932	Ta/6/20	Samavaśarṇa	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	20.0×16.0 25.13.20	C	Good 1956 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	25.0×15.0 18.25.20	C	Good	There are four pages blank.
P	D; H. Poetry	24.4×18.5 25.21.20	C	Good	
P.	D; H. Poetry	27.0×17.6 8.14.35	C	Good 1942 V. S.	
P	D; Skt Poetry/ Prose	32.3×20.1 2.13.34	C	Good	
P	D, Skt. Poetry/ Prose	15.5×9.5 18.6.18	Inc	Old	Last pages are missing.
P	D, Skt. Prose	15.5×9.5 22.9.25	C	Old 1921 V. S.	
P	D; Skt Poetry/ Prose	20.0×16.0 9.13.14	C	Good 1955 V. S.	
P.	D; H Poetry	15.7×9.0 3.9.22	C	Good	
P.	D; H. Poetry	23.5×11.0 59.9.29	C	Good	
P	D; H. Poetry	20.0×12.0 76.15.12	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.2×14.7 1.13.18	Inc	Old	Closing pages are missing.

1	2	3	4	5
1933	Nga/31/2/4	Samavasarana	—	
1934	Ta/39/21	Sammedācala Pūjā	—	—
1935	Ta/42/41	Sammeda-Śikhara Pūjā	Rāmcandra	—
1936	Nga/33/6	,, ,, ,,	—	—
1937	Ja/33/6	,, ,, ,,	—	—
1938	Ta/3/14	,, ,, ,, Vidhāna	Gangādāsa	—
1939	Nga/47/8/10	,, ,, Pūjā	—	—
1940	Nga/47/8/4	,, ,, ,,	—	—
1941	Nga/44/10/24	,, ,, ,,	—	—
1942	Nga/47/8/2	Samuccáya-Caubis-Pūjā	—	—
1943	Ja/56	Śāntinātha-Pūjā	—	—
1944	Nga/46/12/3	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	12 3×16 3 14 13.14	C	Good 1974 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	20 0×12 0 2 24.18	C	Old 1819 V. S.	
P.	D; H. Poetry	32.3×19 0 3 33 37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	23 9×13 3 9 18 12	C	Good	
P	D; H Poetry	19 0×14.9 24 12 17	C	Old 1920 V. S.	
P	D; Skt Poetry	22 5×15.0 8 12.36	C	Good	
P	D, H Poetry	20 8×16 3 16 15 17	C	Old	
P	D; H Poetry	20 8×16 3 21 15.18	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	18.5×13.1 5 13 22	C	Old	
P.	D; H Poetry	20.8×16.3 4 15.18	C	Old	
P	D; H. Poetry	28 8×15.0 9.22 20	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.5×13.0 5.18.13	C	Old	

1	2	3	4	5
1945	Nga/47/4/39	Śānti-pāṭhā	—	—
1946	Ta/3/24	,, ,,	—	—
1947	Nga/48/23/4	,, ,,	—	—
1948	Ta/42/4	,, ,,	—	—
1949	Nga/43/6/18	Śānti-Cakra-pūjā	—	—
1950	Nga/43/4/1	Śāntidhārā	—	—
1951	Ta/42/88	,,	—	—
1952	Nga/46/11/2	,,	—	—
1953	Ta/42/27	Saptarṣi-pūjā	—	—
1954	Ta/14/41	,, ,,	—	—
1955	Ta/41	,, ,,	—	—
1956	Nga/26/2/34	Saraswati-pūjā	Brahma Jinadāsa	—

6	7	8	9	10	11
P	D. Skt Poetry	20.6×18.0 3 16.18	C	Old	
P.	D. Skt Poetry	22 5×15.0 1.12.00	C	—	
P	D; Skt Poetry	16 8×12 8 3 11.12	C	Old	
P.	D; Skt, Poetry	32 3×19 0 1.33 37	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	17 3×13.0 7 13 13	C	Old	
P	D, Skt. Poetry/ Prose	16 3×14 0 3 11.20	Inc	Old	Last page is missing.
P	D, Skt. poetry/ Prose	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D; Skt Prose	36 4×19 0 2 12 39	C	Good	
P.	D, Skt. Poetry	32 3×19 0 3 32 37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	15 2×12.8 3 12.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	12.5×8.6 5.9 19	Inc	Old	
P.	D;Skt /H Poetry	30.3×17.5 4.16.16	C	Good	

1	2	3	4	5
1957	Ta/42/19	Śāstra-pūjā	Dyānatarāya	—
1958	Ta/39/19	,, ,,	Malayukīrti	—
1959	Nga/41/2/6	,, ,,	—	—
1960	Nga/47/4/36	,, ,,	—	—
1961	Ta/14/29	,, ,,	—	—
1962	Nga/14/8	,, ,,	—	—
1963	Ta/3/20	,, Jayamālā	—	—
1964	Nga/47/8/12	Satrunjayagiri-pūjā	Viśvabhūṣana	—
1965	Nga/14/6	Siddha-pūjā	—	—
1966	Nga/44/10/17	,, ,,	—	—
1967	Ta/35/3	,, ,,	—	—
1968	Ta/14/6	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; Skt, Poetry	20 0×12.0 2 24.17	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	14.5×11 0 7.9.17	C	Good	
P.	D;Skt./H. Poetry	20 6×18.0 5.16.18	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	15.2×12.8 5 12 13	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	20 8×26 0 4 14 25	C	Good	
P	D; Skt Poetry	22 5×15 0 2.12 33	C	Good	
P,	D; Skt. Poetry	20.8×16 3 16 16.15	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	20 8×26 0 6.14.25	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	18 5×13.1 7.13.22	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	15.5×12.6 5.10.16	C	–	
P.	D; Skt. Poetry	15 2×12.8 6.12.15	C	Old	

1	2	3	4	5
1969	Ta/18/4	Siddha-pūjā	—	—
1970	Nga/47/4/19	,, ,,	Khuśālacanda	—
1971	Nga/41/2/3	,, ,,	—	—
1972	Ta/3/26	,, ,,	Khuśālacanda	—
1973	Nga/48/23/3	,, ,,	—	—
1774	Nga/48/18/2	,, ,,	—	—
1975	Nga/48/12/3	,, ,,	—	—
1976	Ta/42/6	,, ,,	—	—
1977	Nga/26/2/9	,, ,,	—	—
1978	Ja/29/3	,, ,,	—	—
1979	Ja/51/6	,, ,,	—	—
1980	Ta/3/13	Siddha-kṣetra-pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D Skt. Poetry	11 0×11.0 4 13.19	C	Old	
P.	D;Skt /H Poetry	20 6×18 0 6.16 18	C	Old	
P	D; Skt Poetry	14.5×11.0 7.9.17	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22 5×15.0 7 12.32	C	Good	
P	D, Skt. Poetry	16.8×12 8 6 11.12	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	16.0×10 1 5 9 21	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	13 5×12 0 6.8.12	C	Good	
P	D; Skt Poetry	32 3×19 0 1 33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	30 3×17 5 3.16.16	C	Good	
P.	D; H Poetry	21.1×14.0 3.12.10	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	32 3×20.1 1.13.35	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.5 2.12.36	C	Good	

1	2	3	4	5
1981	Ja/54	Siddha-cakra-pūjā	—	—
1982	Ta/20/2	,, ,,	—	—
1983	Nga/27/4	Siddha-kṣetra-pūjā	—	—
1984	Ta/42/43	,, ,, ,,	—	—
1985	Nga/44/14	Śikhara-vilāsa-pūjā	—	—
1986	Nga/28/3	Śīla-vattīsī	—	—
1987	Nga/47/6	Siṁhasana-pratiṣṭhā	—	—
1988	Nga/41/ṭha	Śītalanātha-pūjā	—	—
1989	Ta/20/3	Snāna-pūjā-vidhi	—	—
1990	Nga/14/9	Solaha-kārana-pūjā	—	—
1991	Ta/35/4	,, ,, ,,	—	—
1992	Ta/38/3	,, ,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	18 6×11.4 113.22.22	C	Good 1965 V. S.	
P.	D; H. Poetry	10.9×9 6 40.8.11	Inc	Good	Last pages are missing.
P.	D; Skt. H	18.5×30 6 6.21.22	C	Good	
P.	D; H. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D, H. Poetry/ Prose	15 5×9 5 9 8 26	Inc	Old 1942 V. S.	Opening tweenty pages are missing.
P.	D, App. Poetry	14 6×14.1 7 13.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	18.7×14 5 20 14 16	C	Old 1955 V. S.	
P.	D; H. Poetry	14.5×11 0 6 13.16	Inc	Old	
P.	D; H. Poetry	10.0×00.0 26.8 12	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.8×26.0 5.14.15	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	15.5×12.6 4.10.15	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	14.5×12.5 13.11.18	Inc	Old	Closing is missing.

1	2	3	4	5
1993	Ta/14/7	Solaha-kārana-pūjā	—	—
1994	Nga/44/10/13	,, ,, ,,	—	—
1995	Nga/47/4/22	,, ,, ,,	Dyānatarāya	—
1996	Ta/3/28	,, ,, ,,	—	—
1997	Ta/42/7	Ṣodaśa-kārana ,,	—	—
1998	Ta/39/17	Solaha-kārana ,,	—	—
1999	Ta/42/58	,, ,, ,,	Dyānatarāya	—
2000	Nga/29/1	,, ,, ,,	—	—
2001	Ja/44	,, ,, ,,	Dyānatarāya	—
2002	Nga/47/5/3	Sonāgiri-pūjā	—	—
2003	Ta/3/3	Stavana Jayamālā	—	—
2004	Ta/42/93	Swādhyāya-pāṭha	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	15.2×12.8 4.12.16	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	18 5×13 1 6 13 22	C	Good	
P	D; H. Poetry	20 6×18.0 5.16.18	C	Old	
P.	D;Skt /H. Poetry	22.5×15.0 5 12 31	C	—	
P	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2 33 37	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	20 0×12 0 3 21.18	Inc	Old	
P.	D; H Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P.	D; H Poetry	13 0×19 7 33 15 15	C	Good	
P.	D, H. Poetry	18 0×11.5 4.7.18	C	Good 1965 V. S.	
P.	D; H. Poetry	16.5×16 0 6 12.19	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	22.0×15.0 2.12.30	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
2005	Nga/17/1/2	Śyāmala-yakṣa-pūjā	Ajita Dāsa	—
2006	Ta/42/32	Tattvārtha-sutrāṣṭaka-jayamālā	—	—
2007	Ja/9/7	Terahadwipa-pūjā	—	—
2008	Nga/47/8/9	Tina-loka-saṁvandhi-pūjā	—	—
2009	Ta/5/11	Tisa-caubisi ,,	—	—
2010	Ta/5/3	,, ,, ,,	Bhāvaśarmā	—
2011	Ta/5/2	Udyāpana	—	—
2012	Nga/47/5/10	Vardhamāna-pūjā	Vṛndāvana	—
2013	Ja/20	Vartamāna caubisi-pāṭhā	,,	—
2014	Ta/39	,, ,, pūjā	—	—
2015	Ta/24/5	,, jinanāma	—	—
2016	Nga/14/5	Vidyamāna-bisa-tirthankara pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D. H. Poetry	25 0×15.0 4.19.21	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32 3×19.0 1.33.37	C	Good	
P.	D; H Poetry	29 8×15 5 111 14.31	Inc	Old	Closing para is missing.
P.	D; H Poetry	20 8×16.3 7 15 18	C	Old	
P	D, Skt. Poetry	25.0×15 0 5 28 25	C	Good	
P	D, Skt. Poetry	25 0×15 0 29 25 16	C	Good	
P.	D, Skt. poetry	25 0×15 0 5 28.20	C	Good	The chart of tirthankara is on its last page
P.	D; Skt Poetry	16.5×16 0 6 12 19	C	Old	
P	D,H /Skt. Poetry	23 3×19 0 64.18.23	C	Good 1952 V. S.	Published.
P.	D; H. Poetry	22.6×13.8 100 12.36	C	Good 1890 V. S.	Copied by Raghunātha Sharmā.
P.	D; Skt. Poetry	30.2×20.0 16.37.33	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	20.8×26 0 3.14.25	C	Good	

1	2	3	4	5
2017	Nga/26,2/10	Vidyamāna bisa-Tirthaṅkara-pūjā	—	—
2018	Nga/24	" " pūjā vidhāna	Śikharacanda	—
2019	Ta/42/5	" " "	—	—
2020	Ta/11/5	Vrata-Vidhāna	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt./ Pkt. Poetry	30.3×17.5 5,16.16	C	Good	
P.	D: H. Poetry	29.0×17.0 49 21 16	C	Good 1929 V. S	
P.	D; Skt Poetry	32.3×19.0 2.33 37	C	Good	
P.	D: H. Poetry	14.5×11.7 12 11.22	C	Good	

परिशिष्ट

१- पुराण, चरित, कथा

९९८. अनन्त चौदश-कथा

Opening : श्री जिनवर चौबीसोंनमो, सारद प्रनमो अघनीगंमो ।
भावै गनधर प्रनमो पाय, भावैं वदो श्री गुरराय ॥

Closing : जे कोइ इह व्रत भावैं करैं, ते नर मुक्तरमण कर धरैं।
श्री भूषन पद प्रनमो सही, कथा ग्यानसागर मुनि कही॥५६॥

Colophon : इति अनतव्रत कथा समाप्तम् ।

९९९. अनन्तचौदश-कथा

Opening : देखें, क्र० ९९८ ।

Closing : देखे क्र० ९९८ ।

Colophon : इति श्री अनत चौदश जी कथा समाप्तम् ।

१०००. अनन्तव्रत कथा

Opening : अनत देव वदौ सदा, मनमैं कर बहु भाव ।
सुर असुर सेवत सदा, होइ मुकति परभाव ॥१॥

Closing : तब इह कथा करी चितलाइ, तैसी शास्त्र मैं करी बनाइ।
विध पूरब पालैं जो कोइ, ताको मुक्ति निहचै करि होइ
॥३५॥

Colophon : इति अनंतव्रत कथा ।

१००१. अनन्तनाथ कथा

Opening : वृषभ आदि चौवीस जिन, नमूं ताहू सिरनाय ।
हू मैं गुरु गौतम नमूं, तीजै सारद माय ॥

Closing : वतन लालपुर जानीयो श्रावगधर्म जु सोय ।
पढ़ैं पढ़ावैं मनधरैं ताकूं सुजगत होय ॥६६॥

Colophon : इति श्री अनंत चौदस की कथा समाप्तम् ।

१००२. अष्टान्हिका कथा

Opening : श्री जिन सारद गणधरपाय, ---- - .... - ।
व्रत अष्टान्हिका कथा विचार, भाखूं आगमनें अनुसार ॥१॥

Closing : ए व्रत जै नरनारी करैं, ते भवसागर से तरैं ।
श्री भूषण गुरुपद आधार, ब्रह्म ज्ञानसागर कहे इह सार॥५३।

Colophon : इति श्री अठाई व्रत कथा सम्पूर्णम् ।

१००३. अष्टान्हिका कथा

Opening : यादव वंसि नेमकुमार, भाव धरि वंदो भवतार ।
कहो अष्टान्हिका सार ॥१॥

Closing : तस दिक्षित बोले ब्रह्मचारी हरखनिधि सिखामण सारी ।
भणो सुणो नरनारी ॥१६॥

Colophon : इति नंदीश्वर व्रत कथा सपूर्णम् ।

१००४. अठाईकथा

Opening : पंचपरमेष्टी चरन कूं धारगै निस दिन ध्यांन ।
सो मेरी रक्षा करो आतैं होय कल्यान ॥

Closing : श्रावग धर्म सुजान, बतन लालपुर जानियो
भैरों कही बखान, भव्य जन सुनियै चित्त दे ॥७६॥

Colophon : इति श्री भैरों जी कृत अठाई रासा समाप्तम् ।

१००५. आदित्यवार-कथा

Opening : रिसहणाह प्रणमौं जिनंद जा प्रभाव मन होय आनंद,
प्रणमौं अजित प्रणासैं पाप दुख दालिद भव हरै संताप ॥

Closing : कर्म्म मिथ्यौ कारण मत भई तब यह धर्मकथा मन ठई ।
मनधर भाव सुनै जो कोय सो नर स्वर्ग देवता होय ॥

Colophon : इति श्री आदित्यवार कथा जी समाप्तम् ।

१००६. आदित्यवार-कथा

Opening : देखें, १००५ ।

Closing : कमभय कारण इह मति भई तउ या धर्म्म कथा अरतई ।
मूर्ति धरि भाव सुणैं जो कोइ सो नर स्वर्ग देवता होई ॥

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथ गुण-महिमा युक्त रविवार व्रत कथा संपूर्णम् ।

१००७. आदित्यवार-कथा

Opening : श्री सुखदायक पास जिनेस । प्रणमौ भव्यपयोज दिनेस ॥

Closing : यह व्रत जो नरनारी करैं, सो बहु नहि दुरगति परैं ।
भाव सहित सुरनरसुख लहै, बार बार जिन जी यो कहै ॥२५

Colophon : इति श्री रविव्रत कथा समाप्ता ।

१००८. आदित्यवार-कथा

Opening : देखें, क० १००७ ।

Closing : देखें, क० १००७ ।

Colophon : इति श्री रवि कथा जी लघु समाप्तम् ।

१००६. आदित्यवार-कथा

Opening : प्रथम सुमिरि जिन चौबीस, चौदह सै त्रेपन जु मुनीस ।
सुमिरौ सारद भक्ति अनंत, गुरु देवेन्द्र जु कीति महंत॥१॥

Closing : रविव्रत तेज प्रताप भई लछिमी फिरी आई
कृपा करि धरनेंद्र और पद्मावती आई ः।

जहाँ···· ···तहाँ रिद्धि सब छौर जू पाई
मिले कुटुम परिवार भले सज्जन मन भाई।
पढे सुने जे प्रात उठि नरनारी जु सुबुद्धि,
तिनको धरनेंद्र पद्मावति देहि सर्वथा सिद्धि ॥

Colophon : इति श्री रविवार कथा सम्पूर्णम्।

१०१०. आकाश-पंचमी-कथा

Opening : पडिवा प्रथम कला घट आगी, परम प्रतीत रीत रस पागी।
प्रतिपदा परम प्रीत उपजावै, वह प्रतिपदा नाम कहावै ॥

Closing : काष्टासंघ सरोज प्रकाश, श्री भूषण गुरु धर्म निवास।
तास शिष्य बोले चंग, ब्रह्म ज्ञानसागर मन रंग ॥

Colophon : इति आकाश पंचमी कथा

१०११. आकाश-पंचमी-कथा

Opening : श्री जिनसासन पय अनुसरू गणधर निज वंदिन करू।
साध सत प्रणमूं पाय, जे हयी कथा अनोपम थाय ॥१॥

Closing : देखे—क्र० १०१०।

Colophon : इति श्री आकाश पंचमी व्रतकथा समाप्तम्।

१०१२. भविष्यदत्त-कथा

Opening : स्वामी चंद्रप्रभु जिननाथ, नमोचरण धरि मस्तक हाथ।
लांछन बन्यो चंद्रमा जासु काया जाल अधिक प्रकासु ॥१॥

Closing : यह कथा संपूरन भई, सकल भव्य को मंगल भई।
पढ़े सुने जो करे बखाण, सो पावे शिवपुरि पद थाण ॥
॥११६॥

Colophon : इति श्री श्रुतपंचमी कथा भवसुदत्त चरित्र संपूर्णम् । संवत् १८४८ वर्षे मिति पौस वदि ६ श्री पार्श्वचंद्र सूरि गछौ श्री गुरुजी श्री १०८ श्री चंद्रभाण जी तत् शिष्य लिख्यतु आसिरदारमल्लेन श्री मफातपुरनगरमध्ये चतुरमासकृतम् ।

१०१३. चंदकथा

Opening : सिद्धि सुबुद्धि दातार तुम गौरीनंदकुमार ।
चंद कथा आरम्भ कीयो सुमति दियो अपार ।।

Closing : उजुघरेवा अचपना जोग, तीजो और परमला भोग ।
.... आपणो राज ।।

Colophon : इति चंदकथा सपूर्णम् ।

१०१४. चतुर्दशीकथा

Opening : देखो क्र० ६६८ ।

Closing : देखे- क्र० ६६८ ।

Colophon : श्री चतुर्दशी व्रत कथा समाप्तम् ।

१०१५. चतुर्वचनोच्चारिणी कथा

Opening : विक्रमादित्योरूप परदेशिद्विजाच्चतुर्वचनानि ।
वादयति यस्तस्मात् हारयित्वा तमेव परिणमति ।।

Closing : चतुर्वचनां महोत्सवेन परिणीय स्वनगरे समानीय भोगा-
नुभवन् कुर्वन् शर्म्मणाकालं महाश्रेयो युवतो अभूत् ।

Colophon : इति चउबोली कथा सपूर्णम् ।

१०१६. दानकथा

Opening : देव नमौं अरहंत सदा अरु सिद्ध नमूं उन को चितलाई,
सूरि अचारज को प्रनमौं, प्रणामौं जु उपाध्याय के नित पाई ।

साधुनमौं निरग्रन्थ मुनी गुरु, परम दयाल महा सुखदाई,
नि पंच गुरु एत में सुनमूं इनकूं सुमरैं भवताप नसाई
॥१॥

Closing : दान कथा पूरण भई, पढ़ें सुनें सब कोय ।
दुःख दरिद्र नासैं सबैं, तुरत महासुख होय ॥७६॥

Colophon : इति श्रीदानकथा भारामल्लकृत सपूर्णम् ।
देखें—(१) जै० सि० भ० ग्र० I, क० २९ ।

१०१७. दशलाक्षणी कथा

Opening : धर्म जु दश लांछन कहै तिनको करूं बखान ।
जो जिय निहचै चित्त धरै ताको होय कल्यान ।।१।।

Closing : इह विध व्रत नर जो करै, पावै शिव पद थान ।
बूढ़े दुख संसार के, भैरौं कहै बखान ।

Colophon : इति श्री दसलाक्षणी कथा समाप्तम् ।

१०१८. दशलाक्षणी कथा

Opening : ऋषभनाथ प्रणमू सदा गुरु गनधर के पाय ।
तीन भवन विख्यात है सब प्रानी सुखदाय ।।१।।

Closing : सत्रह सै इक्यावनवा भादव मास सुखसार ।
शुक्ल तिथ त्रयोदशी शुभ रविवार विचार ॥६१॥
भूला चूका होय जो लीजौ सुकवि सुधार ।
मोह दोस दीजो नहीं करी जु भव हितकार ॥६२॥

Colophon : इति श्री दसलाक्षणी कथा समाप्तम् ।
देखें—(१) जै० सि० भ० ग्र० I, पृ० २८ ।

१०१९. दशलाक्षणी कथा

Opening : प्रथम नमन जिनवरने करूं, सादर गणधर पद अनुसरूं ।
दसलाक्षिण व्रतकथा विचार, भाषूं जिन आगम अनुसार।१।।

Closing : भट्टारक श्री भूषणधीर, सकलशास्त्र पूर्ण गम्भीर ।
तस पद प्रणमी बोलैसार, ब्रह्म ज्ञानसागर सुविचार ।।५५।।

Colophon : इति श्री दसलाक्षणी कथा सम्पूर्णम् ।

१०२०. दशलाक्षणी कथा

Opening : देखें— क्र० १०१९ ।

Closing : देखें—क्र० १०१९ ।

Colophon : इति श्रीदसलाक्षणी व्रत कथा संपूर्णम् ।

१०२१. दशलाक्षणीव्रत कथा

Opening : देखें—क्र० १०१९ ।

Closing : देखें—क्र० १०१९ ।

Colophon : इति दशलाक्षणी व्रत कथा ।

१०२२. दशलाक्षणीव्रत कथा

Opening : — ....
पंचामृत अभिषेक उदार ।
जिन चौबिस सतरमो भंडार,
अष्ट विध पूजा करो परकार ।।१७ ।

Closing : देखें—क्र० १०१९ ।

Clolophon : इति श्री दसलाक्षीणी व्रत कथा समाप्तम् ।

१०२३. दर्शनकथा

Opening : नमों देव अरहंत पद, नमौं सारदामाय ।
नमौं गुरु निरग्रन्थ जे, अघहर मंगल दाय ।।

Closing : दरसन कर पूरन भयौ मनोवति कौ सुखदाय ।
तास कथा फल पायकैं सुभ गति लई सिवदाय ।।५७०।।

Colophon : इति श्री दरसन कथा सम्पूर्णम् ।

विशेष— २०१६ पर उल्लिखित पद के Author भारामल्ल है। लगता है कि पद इसी से संयुक्त है अतः इसका भी लेखक भारामल्ल को ही होना चाहिए है।

१०२४. धर्म-पापबुद्धि कथा

Opening : अयोध्यानगरे राजासिंहसेनो राज्य करोति ।
तन्मन्त्रीबुद्धिसेनो धर्म्मन्याय मंत्र करोति ।
राजा दुराचारासत्यपरधनदारहरणलक्षणान्याय विदधाति ।

Closing : ... ... तपो विधाय यथा स्व स्वर्गेषु जग्मु ।
सदैव धर्मबुद्धि करणीया । सर्वलोकस्वायमुपदेश. ।

Colophon : इति धर्मपापयुक्तयो. कथा सपूर्णम् ।

१०२५. धूपदशमी कथा

Opening : पच परम गुरु वदन करू, ताकरि मम अघ सब हरू ।

Closing : श्रुतसागर ब्रह्मचार को ले पूरव अनुसार ।
भाषासार बनायके सुखत खुशियाल अपार ।।१४३।।

Colophon : इति सपूर्णम् । संवत् १९४८ भादवा सुदी २ लिखाइत खेमराज जी लिखितं मदनगोपाल ने कलकत्ता जैन मंदिर मध्ये ।

१०२६. दुधारसव्रत-कथा

Opening : प्रथम नमौं श्रीवीरजिनंद वदौं सदगुरु पद अरविंद ।
जासु प्रसाद कहू शुभकथा, गोतम गणधर भाषी यथा ।।

Closing : श्रेणक आगल गोतम स्वामि एह कथा भाषी अभिराम ।
ए दुधारस व्रतनी कथा चद मर्न मैं भाषी तथा ।।४३।।

Colophon : इति दुधारस जी की कथा समाप्तम् ।

१०२७. हरिवंशपुराण

Opening : सिद्धं सपूर्ण तत्वार्थं सिद्धे कारणमुत्तमम् ॥
प्रशस्त दर्शनज्ञान चरित्रप्रतिपादनम् ॥

Closing : सकोडी कर चरणे उग्रग्रीवा अहो मुहादि ॥
ढीज सुहपावें लहो त सुह पावेहि तुह्य हु जनए ॥

Colophon : इतिश्री हरीवंस पुराण की भाषा चौपाई बंध सपूर्णम् ।
देखें, जे० सि० भ० ग्र० I, क्र० ४६ ।

१०२८. हरिवंशपुराण

Opening : देखें, क्र० १०२७ ।

Closing : और अरिष्ठा पांचवीं नरक उस विषे इद्रन की भूमि की मुटाई कोस ३ । और श्रेणीबद्धो की कोस ४ । और प्रकीर्णको की कोस सात ७॥ २१॥

Colophon : अनुपलब्ध

१०२९. हरिवंशपुराण

Opening : महावीर बहुश्रुत विराजै श्रुतकेवली जिनश्रुतका व्याख्यान करै और वा मंडप के समीप चार मंडप ·· ·· ।

Closing : ··· देखते मनुष्य होय निरंजन पद पावेंगी मातश्री पटरानी गोरी · ··· – ।

Colophon : अनुपलब्ध

१०३०. जम्बूचरित्र

Opening : श्री अरिहंत नमो सदा, अरी न आवै पास ।
अष्टकर्म दूरे टले आठो गुन परकास ॥

Closing : उपर रवा मुवराम ते, श्रीनीमधर देव ।
भाव भगति चित लायके सब जन करते सेव ।५२३।।

Colophon : इति जबूचारित्र जौ सम्पूर्णम् । लिखित राज्य कुमारचद आरामपुर नगरे स्वगृहं संवत् १६३३ मिति वैशाख शुक्ल सप्तम्यां ७ तिथौ रविवासरे निजरठनार्थं पुन: भव्यजीव पठनार्थम् । शुभमस्तु कल्याणमस्तु ।

१०३१. लब्धिविधानकथा

Opening : प्रथम नमौं श्री जिनवर पाय दूजै प्रणमौं सारदमाय ।
लब्धि विधान तणी सुभ कथा भाषू जिन आराम छै यथा ।१।।

Closing श्री भूवन गगनारक गीर .. ... होगी सीव ।।५६

Colophon : इति श्री लब्धि विधान कथा समाप्तम् ।

१०३२. महावीर-पुराण

Opening · इण विधि कहिनी जबु कुमार मुनि सो कहयौ निरधार ।
मागी के पिवनू ऊकनारी मरनू वाहिलयौ ततकार ।२१।

Closing : यातै श्री जिनराज के चरण कमल सिरनाय,
राखौ भवि उरक वि तै सुरग मुक्ति पदपाय ।।६३।।

Colophon : इत्यार्षे त्रिषष्टिलक्षणमहापुराणसंग्रहे भगवद्गुणभद्राचार्य प्रणीतानुसारेण श्रीउत्तरपुराणस्य भाषायां श्रीवर्द्धमानपुराण परिसमाप्तम् । इति श्री उत्तरपुराण समाप्तम् । शुभ सम्वत् १८६६ शाके १७३४ मासोत्तममासे शुक्लेपक्षे त्रयोदश्यां बुधवासरे पुस्तकमिद पूर्णम् । रघुनाथ सर्मणे लेखि पटनपुरमध्ये मध्य निवसति । लेखक पाठकयो मंगलमस्तु ।

१०३३. नेमिनाथ विवाह

Opening : एक समे जो समुद्र विजै छारि कामधनेम को व्याह रचो है,
गावत मगलाचार बधु कुल में सबके जो उछाह मचो है,

मैल चढावन को जुबती अपने-अपने कर थाल सचो है,
नैग करें सत्र ब्याहन को घर मंडप चित्र विचित्र खिचो
है ।१।।

Closing : नैम कुमार ने श्री गली घो दिन छपन लो छदमस्त रहो है,
केवल ज्ञान भएव प्रभु को तब आठवां भूत महानुमहो है,
सात सैं वर्ष विहार कीद्दो उपदेश ते धर्म महानुमहो है,
निर्वाण गये मुनि पाच से छपन लाल विनोदिने संग
गही है ।

Colophon : इति श्री नेमनाथ जी काव्याहुला सम्पूर्णम् ।

१०३४. निःकांक्षित-गुण कथा

Opening : प्रनमूं आदि जिनेंद्र को फुन गुरु गौतमराय ।
सारदमाय प्रसादतें करूं कथा मन लाय ।।१।।

Closing : निःकांक्षित गुण की कथा भै मैं कही बखान ।
जो निहर्षै कर पाल है, पावै शिव पद थान ।।

Colophon : इति निःकांक्षितगुन कथा समाप्तम् ।७६।।

१०३५. निशल्याष्टमी कथा

Opening : देखे, क्र० १०३६ ।

Closing : कीर्तीमय कलावरचंद, श्री भूषण गुरु परमानन्द ।
तस पद पंकज मधु करतार, ज्ञानसमुद्र कथा कहैं
विचार ।।६६।।

Colophon : इति निशल्याष्टमी कथा ।
विशेष— इसमें निर्दुख सप्तमी कथा भी है ।

१०३६. निर्दोषसप्तमी कथा

Opening : श्री जिनचरण कमल अनुसरू, सारद निज गुरु मनमेंधरूं ।
निरदोष सप्तमीकी कथा, बोलो जिनआगम छै यथा ।१।।

Closing : ए व्रत जे नरनारी करैं, ते नर भवसागर उत्तरैं ।
अजर अमर पद अविचल लहै, ब्रह्मज्ञानसागर इम कहैं।।४१।

Colophon : इति श्री निरदोष सप्तमी कथा समाप्तम् ।
देखें, जै० सि० भ० ग्रं० I, क० ७८ ।

१०३७. पंचमी कथा

Opening : वंदो श्री जिनराज के, चरण कमल गुणहीर ।
भव सागर तारण तरणं, शरण हरण पर पीर ।।१।।

Closing : हस्तिकर्णपुर में यह रची, श्री सुरेन्द्रभूषण रची ।
यह विधि व्रतपाले जो कोई, सो नरनारी अमर
पद होई ।।८०।।

Colophon : इति पचमी कथा समाप्ता ।

१०३८. पार्श्वपुराण

Opening : मोहं महातम दलन दिन तप लक्ष्मी भरतार,
ते पारस परमेस हो उ सुमति दातार ।१।।

Closing सवत् सत्रह में समैं और नवासी लीय ।
सुदि असाढ तिथि पंचमी ग्रन्थ समापत कीय ।।

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथ पुराण भाषा सम्पूर्णम् ।
श्री पार्श्वपुराण जी बाबू महावीर प्रसाद मनोहरदास के
वास्ते लेखक लाला चंदुलाल लिखा सन् १२६३ साल सलोनो
के रोज पूरा हुआ ।
देखें जै० सि० भ० ग्र० I, क० ६१ ।

१०३९. पार्श्वपुराण

Opening : बीज सरिव फलभोगवं जो किसान जगमाहि ।
त्यो चक्री नृप सुख करैं धर्म बिसारैं नाहि ।।

Closing : सोलह कारण भावना परमपुन्य को खेत ।
भिन्न असी लहो तीर्थङ्कर पद हेत ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१०४० रत्नत्रयकथा

Opening : श्री जिन चरण कमल नमूं , सारद प्रणमी अघ निगमूं,
गौतम केरा प्रणमूं पाय, जेहथी बहुविधि मगल थाय ॥१॥

Closing यामें मणि माणिक्य भडार पद-पद मगल जयजयकार ।
श्री भूषणगुरु पद आधार, ब्रह्मज्ञान बोले सुविचार ॥४५॥

Colophon : इति श्री रत्नत्रयकथा सम्पूर्णम् ।
देखे, जै० सि० भ० ग्र० I क्र० १०३।२

१०४१· रत्नत्रयकथा

Opening देखें, क्र० १०४० ।
Closing . देखे, क्र० १०४० ।
Colophon : इति रत्नत्रय कथा ।

१०४२· रत्नत्रय-व्रत-कथा

Opening : देखे, क्र० १०४० ।
Closing देखे, क्र० १०४० ।
Colophon : इति श्री रत्नत्रयकथा संपूर्णम् ।

१०४३. रत्नत्रय-व्रत-कथा

Opening : देखें, क्र० १०४० ।

Closing : कुजवरनि ते — — होए ।
व्रत दुनीया ले नर सोऐ ।
पुण्या तणो सच भंडारं
पर भव पाव मोक्षि उवार ॥२७॥

Colophon : नही है ।

१०४४. रविव्रतकथा

Opening : श्री सुखदायक पास जिनेश, प्रणमौं भव्य पयोज दिनेश ।
सुमरो सारद पद अरविंद, दिनकर व्रत प्रगटो सानंद ।१।

Closing : करम रेख कारण मति मंद, तव इहु धर्म कथा अरु ठंद ।
मनि धरि भाव सुणै जो कोइ, सो नर स्वर्ग देवता
होइ ॥१४८॥

Colophon : इति रविव्रत कथा ।
देखें, जै० सि० भ० ग्रं० I क्र० १०५ ।

१०४५. रविव्रतकथा

Opening : देखे, क्र० १०४४ ।

Closing : यह व्रत जो नरनारी ··· भांनु कीरति मुनिवर यों
कहै ॥२४॥

Colophon इति रविव्रत कथा सपूर्णम् ।

१०४६. रविव्रतकथा

Opening . चौवीसतीर्थंकर जी कू नमस्कार कर मैं रोटतीज कथा
प्रग कहिए है । इह जंबूदीप है तामैं भरत क्षेत्र है तामैं आर्य खण्ड
है, चम्पापुरी नाम नगरी बसै है ।

Closing · देखे, क्र० १०४५ ।

Colophon इति रविव्रत कथा संपूर्णम् ।
विशेष—इसमें रोटरीज व्रत कथा भी सम्मिलित है ।

१०४७. रात्रिभोजन-त्याग-कथा

Opening : समोसरन सोभा सहित, जगत पूज्य जिनराज ।
नमूं त्रिविध भव उदधि कौं त्यारन विरद जिहाज ॥१॥

Closing कथामांहि चउपई - करै कवि वीनती ॥१८॥

Colophon : इति रात्रि भोजन कथा तथा नागसिरी चरित्रनी भोजन त्याग व्रतकथा समाप्तम् । मिति पौह शुक्ल पररस १५ । संवत् १९५१ का । शुभ लिखयत अनीचद श्रावक जैरावान पाटम का वासी ।

१०४८. रोहिणी-कथा

Opening : वासपूज्य जिन नत्वा कथा वक्ष्ये जिनागमात् ।
दुर्गंधा च व्रतनाप्नुद्रोहिणी पुण्यरोहिणी ॥

Closing श्रीगौतममुखकथा श्रुत्वा श्रेनिकः सहर्षेप्रहमागता ।
अन्योपि कोपि रोहिणी विधान करोति नारि वा नरो
वा सेवविधान प्राप्नोति ॥

Colophon : इति रोहिणी कथा ।

१०४९. रोहिणी-कथा

Opening : वासुपुज्य जिनराज भवदधि तरण जिहाज सम ।
भव्य लहे सुव्र साज नाम लेत पातिक हरे ॥

Closing : रोहिनि व्रतु पाल जो कोई, सो नर नारि अमर पद होई ।
मन वच काय सुध जो धरै क्रमते मुक्ति वधु सुख भरै ॥

Colophon : इति रोहिनी कथा समाप्तम् ।

१०५०. रोहिणी-व्रत-कथा

Opening : वासुपूज्य जिनराज कौ वंदो मन वच काय ।
ता प्रसाद भाषा करौं सुनौ भविक चित लाइ ॥

Closing : जो यह व्रत निहचै धरै, करै रोहिणी माय।
निहचै थिर मन जो धरै, तो जीव मुक्ति होय ।।७६।।

Colophon : इति श्री रोहिणीव्रतकथा समाप्तम् ।
देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ११०।

१०५१. रोटतीज-कथा

Opening : चौबीसो जिन को नमो श्री गुरु चरण प्रभाव ।।
रोटतीज व्रत की कथा कहो सहित चित चाव ।।

Closing : गणधर इद्र न करि सके तुम विनती भगवान ।
द्यानत प्रीति निहारिके कीजै आपसमान ।।

Colophon ; इति सम्पूर्णम् ।

१०५२. रोटतीज-कथा

Opening : — इह जबू द्वीप है तामै भरत क्षेत्र है, तामै आर्य खड है,
धन्यपुरी नाम नगरी बसै है ।

Closing और जो कोइ भव्य स्त्री या पुरुष रोटतीज व्रत करै
भलि गति पावै ।

Colophon : इति रोटतीज व्रत कथा ।

१०५३. रोटतीज-कथा

Opening : देखे, क्र० १०५२ ।

Closing . देखे, क्र० १०५२ ।

Colophon : इति रोटतीज कथा समाप्ता ।

१०५४. रोटतीज-कथा

देखे, क्र० १०५२ ।

Closing · देखें, क्र० १०५२ ।

Colophon : इति रोटतीज कथा समाप्तम् ।

१०५५. सलूनाकथा

Opening : प्रथमहि प्रथम जिनेन्द्र चरण चित लाइए,
प्रथम महाव्रत धर्म सुताहि मनाईए ।
प्रथम महामुनि लेव सुधर्म धुरधरी,
प्रथमधर्म प्रकासन प्रथम तीर्थ करो ॥

Closing : मुनि उपसर्ग निवारनी कथा सुनें जो कोय ।
करूणा उपजै चित्त में दिन मंगल होय ॥१८॥

Colophon : इति श्री विनोदीलालकृत श्री सलूना कथा समाप्तम् ।

१०५६. शीलकथा

Opening : पार्सनाथ परमातमा वंदौ जिनपद राइ ।
मोही धर्मवाश न करौ कहौ कथा मनलाइ ॥१॥

Closing : सील कथा पूरी भई पढ़ें सुनें नित सोई ।
दुख दरिद्र नासें सबै तुरत महा सुख होई ॥५६॥

Colophon ; इति श्री सील कथा मल्लसेनाचार्यकृत संपूर्णम् ।

१०५७. शीलव्रतकथा

Opening : प्रथमही प्रणमौं श्री जिनदेव ... ... जिनराज अनूप ।१।

Closing : जो देखी सोई लिखी सुद्ध असुद्ध न जान ।
पंडित अरथ विचारिकैं पढियौ सुद्ध सुजान ॥५३॥

Colophon : इति सील कथा संपूर्णम् ।

विशेष—पद भी जो २०१८ पर उल्लिखित है इसी से सम्बन्धित है। अतः इसका भी लेखक भारामल्ल ही होना चाहिए। दोनो ग्रंथों को

पढने से ऐसा लगता है कि पहले कथा वगैरह लिखने के बाद पद लिखने की परिपाटी हो।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० १२८।

१०५८. शीलवतीकथा

Opening : जीवितादप्यधिकत्वेन पालितो नियमोऽनुभंगाय भवेत्।

Closing : ततोऽनर्थमूलं त विप्र शीलवती ' मत्कृत्य बहुमानात्सद-कृतवान्।

Colophon : इति शीलवती कथा सपूर्णम्।

१०५९. सोलहकारणकथा

Opening : श्री जिन चौविसौ नमू, सारद प्रणमि अवनिगमू।
निज गुरु केरा प्रणमू पाय, सकल मत प्रणमी सुखथाय।१।

Closing : यामे सकल भोग सयोग, टलै आपदा रोग वियोग।
श्री भूषण गुरु पद आधार, ब्रह्मज्ञानसागर कहे सार।३६।

Colophon : इति श्री सोलहकारण कथा समाप्तम्।

१०६०. सोलहकारणकथा

Opening : देखे, क्र० १०५९।

Closing : देखें, क्र० १०५९।

Colophon : इति सोलहकारण कथा सपूर्णम्।

१०६०. शोडशकारणकथा

Opening : देखें, क्र० १०५९।

Closing : देखें, क्र० १०५९।

Colophon : इति षोडशकारण कथा संपूर्णम् ।

१०६२. श्रावणद्वादशीकथा

Opening : प्रथम नमूं श्री जिनवर पाय, प्रणमूं गणधर सारद माय ।
सद् गुरु पद पंकज मन धरुं, सार कथा बारसनी करूं ।।१।।

Closing : रोग सोग संतापह टलै, मनवांछित फल पूरण मिलै।
श्री भूषण सुत दाए लहै, ब्रह्मज्ञानसागर हम कहै ।।

Colophon : इति श्रवणद्वादशी कथा ।

१०६३. श्रीपालचरित्र

Opening : प्रणम्य सिद्धचक्रं च सद्गुरुं निजमानसे ।
श्रीपालचरित्र वक्ष्ये सुगमं शिष्यहेतवे ।।

Closing : जीवराजेन रचितं श्रीपालचरितं शुभम् ।
प्रोतसुन्दरेनाशुलिखित श्री सद्गुरुप्रसादतः ।।

Colophon : इति श्रीपालचरित्रे गद्यबंधे चतुर्थ प्रस्तावः । शुभं भूयात् ।
स० १६०५ रा० मि० आसोज शुक्ल त्रयोदशी दिवसे मंगलवारे लिपी
कृतेयं प्रतिः श्री विक्रमपुर मध्ये चउम्मासीस्थिताः ।

१०६४. श्रीपालचरित्र

Opening : श्री अरिहंत अनंतगुण, धरीयें हिय मे ध्यान ।
केवल ध्यान प्रकाश कर दूर हरण अग्यान ।।१।।

Closing : कहै जिन हरष भविक नर सुण ज्यो नवपद महिमा मुणिज्यो रे ।
गुण पंचासैं ढालें गुणिज्यों निज पति कठिण लुणिज्यो रे ।।

Colophon : इति श्रीपाल महाराजा चोपई समाप्तम् ।

१०६५. सुगंधदशमी-कथा

Opening : श्री जिन शारद मन मैं धरुं सद गुरु नै नित वदन करु ।
साधु सत पद ववों सवा, कथा कहू दशमीमी मुदा ॥१॥

Closing : ए व्रत जे नर नारी करैं, ते भवसागर वेगैं तरे ।
छाई पाप सकल सुख भरैं, ब्रह्मज्ञानसागर उच्चरैं ॥

Colophon : इति सुगध दशमी कथा ।

देखें, जैं० सि० भ० ग्र० I, क्र० १४५ ।

१०६६. सुगंधदशमी कथा

Opening : सुगंध दशमी व्रत सुनि कथा, वर्द्धमान प्रकाशी यथा ।
पुरब देश राजग्रह नाम, श्रेणिक राज करे अभिराम ॥१॥

Closing : हेमराज वीयन यो कही विश्व भूषण प्रकाशी मही ।
मनवचकाय सुनै जो कोई, सो नर स्वर्ग अपर पति होई ॥३७॥

Colophon : इति सुगंधदशमी कथा समाप्ता ।

१०६७. सुगंधदशमी-कथा

Opening : देखें, क्र० १०६५ ।

Closing : देखे, क्र० १०६५ ।

Colophon : इति श्री सुगधदशमी कथा जी समाप्तेम् ।

१०६८. सुगंधदशमी-कथा

Opening : देखे, क्र० १०६५ ।

Closing : देखें, क्र० १०६५ ।

Colophon : इति श्री सुगध दशमी कथा समाप्तम् ।

१०६९. स्वरूपसेनकथा

Opening : कौसांबीवास्तव्यो राजाजयसेनो जयावती प्रियंस्तस्यपुत्र-
द्वयमभूत् । ज्येष्ठो रूपसेनो लघुर्देवसेनः ।

Closing : सूरसेनोपितया सहससारिक सुखमनुभूय
प्राते स्वरूपेण स्वपत्न्या सहितो दीक्षाम् ।।
आर्हायालोचितदुःखकर्म्मा ··· ··· आससाद ।।

Colophon : इति मिथे स्वरूपसूरसेन कथा सपूर्णम् ।

१०७०. वीरजिणंद

Opening : वीर जिनंद समोस राजी वद मेघकुमार,
सुण देसण वइरागीउ जी इह संसार असार रि माई उन
मनि देह मुझ आज ।।१।।

Closing : तप तन सो शीलहागइ जी
पहुतो अनुत्र विमाण वीर चरण नित सेवसइ जी
ते पामसि भव पार हु स्वामी अम्ह० ।।

Colophon : इति वीर जिणंद समाप्त. ।

१०७१. विष्णुकुमारकथा

Opening : देखें– क्र० १०५५ ।

Closing : विष्णु कुमार मुनिंद्र की करनी कथा रसाल सुनो ।
भव्य जैन भाव सो कही विनोदीलाल मुनि उपसर्ग निवा-
रनी कथा सुनो ।
जो कोई करुना उपजै चित मैं दिन दिन मंगल होय ।

Colophon : इति श्री विष्णु कुमार की कथा सम्पूर्ण ।
देखें, जै० मि भ० ग्र० I, क्र० १५१ ।

१०७२. अरिहंतकेवली

Opening : श्रीमद्वीरजिनं नत्वा वर्द्धमानं महोत्सवम् ॥१॥

Closing : वैरिणां वैरमुक्तश्च मित्रबांधवहेतवे ।
धर्मवृद्धिर्भवेस्तुभ्य सर्वथानात्रसंशय: ॥३ ।

Colophon : इति तकारादि चतुर्थप्रकरणम् ।
इति अरहंत केवली संपूर्णम् । संवत् १६१७ मिति चैत्रकृष्ण १० । बुधवासरे लिप्यीकृत ब्राह्मण रामगोपाल वासी मोजपुर कालकलेपुर मध्ये लिखी । शुभं भूयात् ।

१०७३. आराधनासार

Opening : विमलयरगुणसमद्धं सिद्धं सुरसेण वंदियं ।
सिरसा णमिऊण महावीरं वोच्छ आराधनासार

Closing : अमुणियतच्चेणइमं भणियं जं पि देवसेणेण ।
सोहं त कमुतिवा अंविऊ जइ पवयण विरुद्धं ॥

Colophon : इति आराधनासारसमाप्त: ।
देखें—जै० सि० भ० ग्र०, I, क्र० १६५ ।

१०७४. आराधना प्रतिबोध

Opening : श्री जिनवर वाणी नमेवि गुरुनिर्ग्र थ पाय प्रणमेवि ।
कहुं आराधना सुविचार संक्षेपिसारो उद्धार ॥१॥

Closing : जे सुर्णे नरनारी जे जाइ भवनेपार ।
श्री दिगम्बर इति कह्यो विचार आराधना प्रतिबोधसार ॥

Colophon : इति आराधनाप्रतिबोध संपूर्ण: ।

१०७५. अर्थप्रकाशिका

Opening : बहुरि ज्ञानकूं अल्पाक्षर करि प्रधान
कह्या तोहू, अल्पाक्षर तैं पूज्यपणा प्रधान है। अर दर्शन पूज्य है।

Closing : धरतो भव्यनि उर विषैं स्याद्वाद उज्जास।
यातैं निज परतत्व सरिव होय जु अर्थ प्रकाश॥

Colophon : इति श्री तत्वार्थ सूत्र की अर्थप्रकाशिका नाम वचनिका समाप्त।
शुभं भवतु। कल्याणमस्तु।

१०७६. आत्मानुशासन

Opening : वीर प्रणम्य भववारिनिधिप्रपोतमुद्योतिताऽखिलपदार्थमनल्पपुण्यम्,
निर्वाणमार्गमऽनवद्यगुणप्रबंधं आत्मानुशासनमहं प्रवरं प्रवक्ष्ये॥

Closing : श्री नाभेयोजिनोभूयाद् भूयसे श्रेय सेसवः।
जगद्ज्ञान जलेयस्यद याति कमलाकृति॥

Colophon : इति श्री गुणभद्राचार्य कृत आत्मानुशासन काव्य प्रबंध सपूर्णम्।
लिखित पंडित परमानंदेन ढकैत नामनगरे, संवत् १९२८
का मार्गसिरमासे कृष्णपक्षे तिथौ दशम्यां गुरुवासरे उपाध्याय
विद्व वरिष्ठ श्री १०८ भट्टारक राजेन्द्रकीर्तिजित् पठनार्थं
परमानंद शुभंभूयात्। श्रीरस्तु।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० १३२।

१०७७. बनारसी विलास

Opening : प्रथम सहस्रनाम सिन्दूर प्रकरधाम बावनी सवैया वेद निरनै
पंचासिका।
बैसठि सिला का मारग ना करम की प्रकृति कल्यान मंदिर
भाउबंदन नुवाभिका।

पैंडीकर्म्म छतीसी पिब्बइ ध्यान बतीसी आध्यात्म बतीसी
पचीसीग्यान रासिका ।
सिव की पचीसी भवसिन्धु की चतुरदसी अध्यात्म कागति
षोडस निवासिका ।.१॥

Closing , सम्रह् में एकोतरे समै बंत सितपाख ।
तुतिया सो पूरन भई यह बनारसी भाष ॥

Colopohn : इति बनारसी विलास संपूर्णं । शुभंभूयात् सवत् १८६० माघोसमे मासमाहमासे शुक्लेपक्षे एकादश्या सोमवासरे । पुस्तकमिद रघुनाथ शर्मणे लेखि । पट्नपुर मध्ये आलमगज निवास । पुस्तक सख्या श्लोक अनुष्टुप तीनहजार छसै (३६००) लिखि आरे में बाबू परमेष्ठी सहाय का ।

१०७८· बारह भावना

Opening : पच परम पद वद हूँ, मन वच सीसनिवाय ।
भावैं बारह भावना, निज आतम लव लाय ।।

Closing . भूला चूका होय जो, भव्य जन लेहू सुधार ।
मोह दोस दीजै नही, भैरो कहैं बिचार ।।
श्री जिन धरम न विसारियैं ॥

Colophon इति श्री बारह भावना जी समाप्तम् ।

१०७९ बारह भावना

Opening : राजा राणा क्षत्रपति हाथिन के असवार ।
मरना सबको एकदिन अपनी अपनी वार ॥१॥

Closing : जचि सुरतरु देय सुख चिनन चिंता रैन ।
बिन जाचे बिन चितये धर्म सकल सुख देन ॥

Colophon · इति बारह भावना सम्पूर्णम् ।

१०८०. बारह भावना

Opening : आदिदेव जिनमें नमो, वदो गुरु के पय ।
बरनौं बारह भावना सुनऊ चतुर चित लाय ॥१॥

Closing : जहाँ संवर तहाँ निर्जरा, जहाँ आश्रव तहाँ बंध ।
इतनी कला विवेक की और बात संबंध ॥१५॥

Colophon : इति ।

१०८१. बीस तीर्थंकर नामावली

अक्षरमात्र पदस्वरहीन व्यंजनसंधिविवर्जितरेफम् ।
साधुभिरत्र मम क्षन्तव्य को न विमुह्यति शास्त्रसमुद्रे ॥

Closing : नियमप्रभ जी, वीरसेन जी, महाभद्र जी, जयदेव जी, अजीत-वीर्य जी ॥२०॥

Colophon : इति श्री वीसतीर्थंकर के नाम संपूरण ।

विशेष-- इसी में भविष्यत चौबीसी भी अन्तर्भूत है ।

१०८२. ब्रह्म विलास

Opening : प्रथम प्रणमि अरिहत बहुरि श्री सिद्ध नमिज्जै ।
आचारिज उवज्झाय तासु पदवदन किज्जै ।
साधु सकल गुणवंत संतयुग्रा लखि बंदौ ।
श्रावक प्रतिमा धरन करन नमि पाप निकदौ ।
सम्यक्कवंत स्वसुभावधर जीव जगत महिहो ।
जित तित नित त्रिकाल बदत भविक भाव सहित सिर नाईनित ॥१॥

Closing : बहुत बात कहियै कहायनी यहै जीव त्रिभुवन कौं धनी ।
प्रगट होइ जब केवल ग्यान सुद्ध सरूप वहै भगवान ॥

Colophon : इति श्री भैयाभगौतीदास कृत ब्रह्मविलास सम्पूर्णम् । भाषा-

मासे उत्तमफाल्गुनमासे तिथौ ६ गुरुवारक दिन पुस्तकसमाप्तम्। लिख्यत काशीमध्ये राजमंदिरसीतला घाट देवि के दरवाजा। लिख्यत गौड़ ब्राह्मण शिवलालक हस्त लिखत जोसीवर वर जीवण। पुस्तक लाला शंकरलाल जी लिखाईत पठनार्थं उपकारार्थ श्री भगवान समर्पणमस्तु। ग्रंथ सख्या ४८०० ।

मंगल लेखकानां च पाठकानां च मंगलम्।
मंगल सर्वलोकानां भूमिपतिर्मंगलम्॥
देखें—(१) जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० १८६।

१०८३. ब्रह्म विलास

Opening : देखें, क्र० १०८२।

Closing : देखें, क्र० १०८२।

Colophon : इति श्री भैयाभगोती दासकृत ब्रह्मविलास संपूर्णम्। श्री संवत् १८६७। शाके १७३२ मासाना मासे उत्तम माघ मासे शुक्लपक्ष तिथौ। १५। भृगुवासरे पुस्तक समाप्त भई। लिख्यत गौड़ ब्राह्मण शिवलाल काशीमध्ये राजमंदिर सीतलाघाट। पुस्तक लाला मनुलाल जी की पठनार्थ परोपकारार्थम्।
यादृश पुस्तक ... ...न दीयते ॥१॥
लेखिनी पुस्तिका ... सर्वदा ॥२॥
जले रक्ष थले — पुस्तक ॥४॥
ग्रंथ संख्या ४८०० बारहजारआठ सौ
पत्र संख्या—१६८॥ श्री पार्श्वनाथाय नमः।
मंगलं लेखकानां च पाठकानां च मंगलम्।
मंगल सर्वलोकानां भूमिभूपतिर्मंगलम्।

१०८४. चैत्यवंदना

Opening : वर्षेषु वर्षान्तरपर्वतेसु नंदीश्वरे यानि च मंदिरेषु ।
यावन्ति चैत्यायतनानि लोके, सर्वाणि वंदे जिनपुंगवानाम् ॥१॥

Closing : णवकोडि — .... अकिट्टिमा वंदे ॥

Colophon : इति चैत्य वदना ।
देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १२७ ।
(३) रा० सू० IV, पृ० ३८४, ३८७, ४३२ ।

१०८५. चैत्यवंदना

Opening : सद्भक्त्या देवलोके रविशशिभुवने व्यंतराणां निकाये,
नक्षत्राणां च निवासे ग्रहगणपटले ताराकाणां विमाने ।
पाताले पन्नगेन्द्रस्फुटमणिकिरणध्वस्त सान्द्रांधकारे,
श्रीमत्तीर्थंकराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ॥

Closing : जन्म-जन्म-कृत पापं जन्मकोटिमुपार्जितम् ।
जन्ममृत्युजरामूल हन्यते जिनवंदनात् ॥१२॥

Colophon : इति सपूर्णम् ।
देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० ११२ ।

१०८६. चातुर्मासव्याख्या

Opening : स्मार स्मारं स्फुरद्ज्ञानधामजैन-जगतम् ।
कार कारं कर्माभोजे गौरव प्रणितिं पुनः ॥१॥

Closing : अक्षयादितृतीयायाः व्याख्यान सौख्यप्राप्तनम् ।
अलेखि सुगमं कृत्वा क्षमाकल्याणपाठकैः ॥१॥

Colophon : इत्यक्षयातृतीया व्याख्यानम् । ग्रंथाग्रमनुमानतः श्लोका सप्तति ॥६०॥

विशेष – इसमें चतुर्मास के साथ ही अष्टान्हिका व्याख्या, दीपाली-व्याख्या, सौभाग्य पंचमी व्याख्या, ज्ञानपचमी व्याख्या, मौन-एकादशी, पौष- दशमी व्याख्या, मेरु तेरस व्याख्या, होलिका व्याख्या अक्षयतृतीयादि व्याख्या का समावेश किया गया है।

१०८७. चौदहगुण स्थान

Opening : गुण आत्मीक परिनाम गुणी जीव नाम पदार्थ ते आत्मीक परिनाम तीन जात के। शुभ, अशुभ, शुद्ध तिन ही परिनाम ३ मापक चौदह स्थानक जीवन जाननाम्।

Closing : जथा पाषाणनें सर्वथा भिन्न भया सुवर्ण नि: कलंक शोभै त्यौं अपनी अनंत शक्ति करि विराजमान केवलग्यान ॥१॥ केवल दर्शन ॥२॥ अनंत वीर्य ॥३॥ छाइक सम्यक्त ॥४॥ चैतन्य मात्र ॥५॥ ···· ···· ·· परमात्मा कहीये।

Colophon : यह चौदह गुन स्थान का स्वरूप संक्षेप मात्र वर्णन जिनवानी अनुसार कथन कर पूरन किया।
देखे जै० सि० भ० ग्र०, क्र० १०४।

१०८८. चौदह गुणस्थान

Opening : निम मुक्ति के स्थान जाने कीं इहु चौदहु सीढी है सो प्रथम मिथ्याति गुन स्थान ही में यह जीव अनादिकाल में पड़ा आया है तहाँ कछु भी इसको अपनाकला बुरा होने का ग्यान नहीं हुआ सो मिथ्यात का पांच प्रकार का भेद है —

Closing : जन्म मर्न इत्यादिक ससार का अनेक दुखकर रहित हुआ, अजर अमर कों प्राप्त हुआ।

Colophon : इति श्री चौदहगुणस्थान की चरचा सम्पूर्णम्। समाप्तम्। शुभमस्तु।

१०८६. चत्वारिदंडक

Opening : चत्तारिमंगलं अरिहंतमंगलं सिद्धमंगलं ।
साहुमंगलं केवलीपण्णत्तोधम्मोमंगलं ।।१।।

Closing : चंदेहिनिम्मलयरा आचेइं अहिय पगासंता ।
सायर इवगंभीरा सिद्धसिद्धि मम दिसतु ।।८।।

Colophon : इति थोस्सामिदंडक संपूर्णम् ।

१०६०. चौबीस दण्डक

Opening : वंदौं वीर सुधीर कौ महावीर गंभीर ।
वर्द्धमान सन्मति महादेव देव अतिवीर ।।

Closing : अंतहकरण जु सुख होय, जिन धरमी अभिराम ।
भाषा कारण करण कूं, भाषी दौलतराम ।।५७।।

Colophon : इति संपूर्णम् ।

१०६१. चौबीस दण्डक

Opening : देखें— क्र० १०६० ।

Closing : देखें—क्र० १०६० ।

Colophon : इति श्री चौबीस दंडक चौपाई संपूर्णम् ।

१०६२. चौबीस दण्डक

Opening : प्रथम दंडकनि के नाम तहाँ नारक १, भवनवासी देव १०,
ज्योतिषी १, व्यंतर १, वैमानिक १, पृथ्वी १, अप १, तेज १,
वायु १, ···· · ··· ·· ।

Closing : ... — ....तेजकाय वायुकाय विषेभी उपजे है ऐसे चौबीस दंडकनि का कथन लिख्या सो त्रिलोकसार ... .. आदि ग्रन्थनि ते सोधि करि लेवे ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१०९३. चौबीसठाणा

Opening : गइइंदियं च काए जोए वेए कषायणाणेय ।
सयमदसणलेस्सा भविया समत्तसण्णिआहारे ॥१॥

Closing : अपकाय । वायकाय । तेजकाय । पृथ्वीकाय ।
वनस्पती । बेइन्द्री । तेइन्द्री । चौइन्द्री । जलचर ।
पंखी । चौपदा । उरपद । देव । नारकी । मनुष्य ।

Colophon : इति श्री चौबीस ठाना की चरचा सम्पूर्णम् । मिति पौष कृष्ण बुधवार । सम्वत् १८७४ ।

दोहा— करि कटि ग्रीवा नयनदुख तनदुख बहुत सुजान ।
लिख्यौ जाति अति कठिन तैं सब जानत आसान ॥
शुभंभवतु ।

१०९४. चर्चा-संग्रह

Opening : धर्म्माधुरधर आदि जिन, आदि धर्म्म करतार ।
जमूं देवअघरण तै सब विधि मंगलसार ॥१॥

Closing : एक-एकपाखंडी के उपरि एक एक अप्छरा नृत्य करें ऐसे सर्व मिलि सताईस कोड होय छै ऐसा जानना ।

Colophon : इति चर्चासंग्रह समाप्तम् । शुभं भवतु ।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० १६१ ।

१०६५. चर्चासमाधान

Opening : जयोवीरजिन चंद्रमा उर्दअपूरब जासु ।
कलिजुग काले पाव में कीनो तिमिर विनास ।।१।।

Closing : देवराजपूजतचरण असरण सरण उदार ।
बहु सब्व मगलकरन प्रियकारणि कुमारि ।।१६।।

Colophon : इति चरचा समाधान ग्रंथ भूधरदास कृत समाप्तः ।। संवत् १८६१ । माघ शुक्ल ११ ।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० क्र० १९६ ।

१०६६. चरचासमाधान

Opening : देखें, क्र० १०६५ ।

Closing : देखें, क्र० १०६५ ।

Colophon : इति श्री चरचा समाधाननाम ग्रंथ सम्पूर्णम् । संवत् १८४१ समये अषाढमासे शुक्लपक्षे शुभदिने इदं पुस्तक लेखनीयम् ।

१०६७. दशास्कंध

Opening : नमः सर्वज्ञया तेण कालेणं तेण समएणं समणे भगवान महावीरे ।
... ... — ... ... ।

Closing : वम्सावा सम्पादया सवियाण कप्पई नियन्थाणं
वा · ... ... तथ्येववायणवेत्तय ।।

Colophon : इच्चेयं सगच्छरियं थेरकप्पं अहासुत्तं अहाकप्प अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणव फासित्ता पालित्ता सोभित्ता तीरित्ता किट्टित्ता आराहित्ता आणा अणुपालित्ता आच्छगइया समणा निग्गंथा तेणेव भवग्गहेणेणं सअत्थं सहेउयं सवागरणं ···· ···
इति वेमि पज्जो सवणाकप्पो सम्मत्ते दसासु असकंधस्स अट्ठम-

ज्ञायण ग्रंथाग्रं श्लोक १२१६ संवत् १७३५ प्रथम ज्येष्ठमासे कृष्णपक्षे सौम्यवारे सप्तमीकर्मवाह्यां श्रीमत् बृहत् खरतरगच्छा तुच्छ युगप्रवरपदधर भट्टारक १०४ श्रीजिनचन्द्रसूरिणादाना शिष्येण विनयवता क्षमासमुद्रेण कल्पसूत्रप्रतिलिखति स्म श्रीराज द्रंगे श्री।

१०९८. दानबावनी

Opening : वंदो अरि जिनंद व्रत तीरथ परगारयौ।
णमो श्रेयंस नरिंद दान तीरथ अभ्यास्यौ॥

Closing : रतनत्रै आभरन विराजै वीरनंद गुरु गुन समुदाय।
तिनके चरन कमल जुग सुमिरत भयो प्रभावज्ञान अधिकाय।
तब श्री पद्मनदनै कीने दान प्रकाश काव्य सुखदाय।
पद्मनंद बसात दानबावनी द्यानत राय॥

Colophon : इति श्री दानबावनी सम्पूर्णम्।

१०९९. दानबावनी

Opening : देखें, क्र० १०९८।

Closing देखे, क्र० १०९८।

Colophon : इति श्री दानबावनी सम्पूर्णम्।

११००. दान-शील-भावना

Opening : प्रथम जीनेसर पाय नमीं यामी सुगुरु पसाय।
दान शील तप भावना बोली सुबहु संवाद॥१॥

Closing : दान शील तप भावना रच्यौ संवाद भणतां गुणतां भावसुरि।
गेद्धि समृद्धि सुप्रसादोरे धर्म हीयेधरो॥१॥

Colophon इति श्री दान शीलतप भावना सम्पूर्णम्।

११०१. देवागम

Opening : देवागमभोयान चामरादिविभूतय. ।
मायाविष्वपि दृश्यते नातस्त्वमसि नो महान् ॥१॥

Closing : जयति जगति ···· ··· समुपासते ॥

Colophon : इति श्री समन्तभद्रपरमाहंताचार्यविरचित देवागमसूत्रं सपूर्णम् ।

दोहा : श्री देवागम ग्रंथ को पौष कृष्ण नव जान ।
··· ··· ···· एक परमान ॥१॥
लिपिपूरन पुस्तक कियो शुभमुहुर्त शनिवार,
हरिदास सुत अजित को आरा देन मझार ॥२॥
सो जयवंतो नित रहो जब लग सूरजचंद,
यह जिन सासन त्रिजग हित पूरन सिव सुखकंद ॥३॥
शुभं भूयात् । शुभम् ।
देखे, जै० सि० भ० ग्रं० I, क्र० ४५४ ।

११०२. दिगम्बरआम्नाय

Opening श्री भद्रबाहु स्वामी पीछे दिगम्बर संप्रदाय मे केतेक वर्ष अगनि के पाठी रहे ।

Closing संप्रदाय में जथावत आचार का भी अभाव ही है जा कही होय सो दूर क्षेत्र मे होयगा, परन्तु मोक्षमार्ग की प्ररूपणा तो प्रवनी के महात्म तैं वर्तै है ।

Colophon : इति दिगम्बर आम्नाय ।

११०३. धर्मग्रंथ

Opening : मंगल लोकोत्तम नमो श्री जिन सिद्ध महंत ।
साधु केवली कथित वर शरन शरण जयवंत ॥

Closing : स्याद्वाद् आगम निर्दोष अन्य सर्व ही है जु सदोष।
स्याग दोष गुण धरे विचार हेतु विनय ध्यान निर्धार ।।

Colophon : इति श्री धर्मरत्न संपूर्णम् ।

११०४. धर्मग्रन्थ

Opening : .... दोऊनिका न्यारा-न्यारा मानना ।

Closing : ... — एकेन्द्रिय तो सर्वत्र हैं ही, अर कर्मभूम "

Colophon : अनुपलब्ध ।

११०५. धर्मामृतसार

Opening : अनंतर अविनासी भगवान ऋषभपुराण पुरुषोत्तम तिनिकूं
प्रणाम करि महापुराण की पीठिका प्रगट करिए है ।

Closing : अर नाभिराज कमल मंडित तलाव की उपमाकूं धरें उदय
होणहार भगवान रूप सूर्य तांकि अभिलाषा करता निरंतर
निरखता संतापरमउदयरूप अतुलधर्म को धारताभया ।

Colophon : श्री श्री श्री ।

११०६. धर्माष्टक

Opening : मैं देव निति अरिहंत चाहूं सिद्ध कौ सुमरण करौ ।
मैं सुर गुरु मुनी तीन पदवय साध पद हिरदै धरौ ।। १।।

Closing : यह भावना उत्तम सदा प्रभु तुम सुनो जिनराज जी,
तुम कृपानाथ अनाथ धानत दया करनी न्याव जी ।
दुष्ट कर्म विनाश ज्ञान प्रकाश मोकूं कीजिए,
करि सुगति गमन समाधि मरण सुभगति चर्ण की दीजिये ।।८।।

Colophon : इति धर्मचाष्टक भाषा सम्पूर्णम् ।

११०७. धर्मपरोक्षा

Opening : पणमूं अरहंत देवगुरु निरगंथ दयाधरम ।
भवदधितारण अवर सकल मिथ्यात मणि ॥

Closing : भनत गुनत यह भावरि अहनिसि होइ आ ऽ न्द ।
धरमसुण्यातैं उपजै यामैं परमाणन्द ॥७५॥

Colophon : इति श्री धर्म्मपरीक्षा भाषा मनोहरकृत सम्पूर्णम् । शुभ संवत् १८७१ । शाके १७३६ पौष शुक्ल नवमी भृगुवासरे । पुस्तकमिदं सम्पूर्णमेति । लेखकाक्षर रघुनाथ पाण्डेय पट्टनपुर मध्ये गायघाट स्थाने ।

११०८. धर्मरत्न

Opening : मंगल लोकोत्तम नमों श्री जिन सिद्ध महंत ।
साधु केवली कथितवर धरम शरण जयवंत ॥१॥

Closing : श्रुतकेवलि गुरु के अवगाढ केवलि प्रभु के परम अवगाढ़ ।
आत्मानुशासन के माहि, इति दस भेद सुकथन कराही ॥

Colophon : नहीं है ।

११०९. धर्मरत्न ग्रन्थ

Opening : देखें—क्र० ११०८ ।

Closing : धर्मरत्न की ज्योति फैलो यहुं दिस
जब तक शिव मारग उद्योत जयवतो वर्तो सदा ॥

Colophon : नहीं है ।

१११०. धर्मरहस्य

Opening : पचनि में कहिये परमेश्वर पचहु अक्षर नामदिये ते।
ऊ नमकार सबै सिश ऊपर पर्चनि ते उतपत किये ते।
लोक अलोक त्रिकाल मे नाहि कोई तीन की समदेष हिये ते।१।

Closing : धर्म पचास व विस्तउ भंजनत भरत विराग स्वज्ञान कथा है।
आपनि औरनि को हितकार पढो नरनार सुभाव तथा है।
अक्षर अर्थ की भूलि परि जहाँ सोध तहाँ उपकार जथा है।
द्यानत सज्जन आप विपरित होय वारधि शब्द मथा है।

Colophon : इति धर्मरहस्य कवित्त बावन सम्पूर्णम्।

११११. धर्मसार सतसई

Opening : वीर जिनेश्वर प्रणमु देव, ...
... — सुमिरत जाके पाप नसाय।१०॥

Closing : गुन धीर – ... .. बल वीर ॥१०१॥

Clolophon : इति श्री धर्मसार भट्टारक श्री सकलकीरत उपदेशात् पंडित सीरोमण दास विरचिते श्री पंचकल्याणक महिमा मयूरम लिखत धरमसनेही नै। इति श्री धरमसार ग्रंथ सपूर्ण। सवत् १८३२। शाके १६९७ मीति वैसाष शुदि सोमवासरे सपूर्ण।

१११२. द्रव्यसंग्रह

Opening : जीवमजीवं दव्वं जिणवरवसहेण जेण णिद्दिट्ठं।
देविंदविंदवंदं वंदे तं सव्वदा सिरसा॥

Closing : दव्वसंगहमिणं मुणिणाहा दोससंचयचुदासुदपुण्णा।
सोधयंतु तणु सुत्तधरेण णेमिचंदमुणिणा भणियं ज॥६०॥

Colophon : इति श्री नेमिचंदविरचित द्रव्यसग्रहं समाप्तम् ।
देखें, कै० रि० भ० ग्र० I, क० २११ ।

१११३. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखे—क० १११२ ।
Closing : देखे—क० १११२ ।
Colophon : इति मोक्षमार्गप्रतिपादक. तृतीयोध्याय. इति श्री द्रव्यसंग्रह जी समाप्तम् ।

१११४. द्रव्यसंग्रह

Opening : वर प्राणपरित्यागो न वर मानखंडनम् ।
प्राणक्षये क्षण दुख मानखंडे दिने दिने ।।६।।
Closing : देखे—क० १११२ ।
Colophon : इति मोक्षमार्गप्रतिपादक तृतीयोध्याय. । इति द्रव्यसंग्रह समाप्तः

१११५. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखे, क० १११२ ।
Closing : संवत् सत्रह सौ इकतीस । माघ सुदी दसमी शुभ दीन ।।
मगलकरण परम सुखधाम । द्रव्यसग्रह प्रति करु प्रणाम ।।
Colophon : इति श्री द्रव्यसंग्रह कवित्तबंध संपूर्णम् । सवत् १८७१ पोष शुक्ल एकादस शनिवार को लिखा ।

१११६. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखें, क० १११२ ।

Closing : .... विरुद्ध भावटाली करी साचो सूत्र भाव कास्यो छइ जिणइ ॥

Colophon : इति धर्मार्था पव्वतनु बालावोधे द्रव्यसंग्रह सूत्र समाप्तम् ।

१११७. द्रव्यसंग्रह

Opening : तहां प्रथम या ग्रंथ की पीठिका अैसें को या ग्रंथ मे तीन अधिकार है तहां पहिला तो षट्द्रव्यपंचास्तिकाय की प्ररूपणा का अधिकार है तहां आदिगाथा तो मंगल अर्थ है तहां एक गाथा उक्तं च सब इंद्र के सभ्या का है। ... ... ।

Closing : मंगल श्री अरहृत वर, मंगल सिधि सुसूरि ॥
उपाध्याय साधु सदा, करो पाप सब दूरि ॥१॥

Colophon : इति श्री द्रव्यसंग्रह ग्रंथ समाप्ता: ।

१११८. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखें, क्र० १११२ ।

Closing : देखें, क्र० १११२ ।

Colophon : इतिद्रव्यसंग्रहसूत्र समाप्तम् ।

१११९. द्वादशानुप्रेक्षा

Opening : जिणवर वाणि ... — सुणऊ जीव सुलक्षणा ॥१॥

Closing : .... रयणत्तय गुणु ॥

Colophon : इति द्वादशानुप्रैक्षा समाप्ता ।

११२०. ईर्यापथ सामयिक

Opening : ॐ नि: संसीहं जिनानां सवनमनुपमं श्रीपरीतैंतिभक्त्या, स्थित्वास्थानितिथ चरणपरिणतोत: सर्मर्हस्तयुगमम् ।

भाले संस्थाप्यबध्या मम दुरितहरं कीर्तिमः शक्रवंद्यम्,
निवादूरं सदान्त क्षयरहितममुज्ञानभानु जिनेन्द्रम् ॥
Closing : पापिष्ठेन दुरात्मना जडधियां मायाविनालोभिना,
रागद्वेषमलीमशेषमनसादु अकर्म्मणं निर्मितम् ।
त्रैलोक्याधिपते जिनेंद्रभगवन् श्रीपादमूलेंधुना,
निदाङ्करंमहं भजामि सततं निवृत्तये कर्मणाम् ॥
Colophon : इति ईर्यापथ सम्पूर्णम् ।

११२१. गतिलक्षण

Opening : स्वर्गच्युतानामीहजीवलोके चत्वारिनित्यमुदयं वसंति ।
दानप्रसंगो मधुरा च वाणी देवार्चनं सद्गुरु सेवन च ॥
Closing : बह्वाशी नैव संतुष्टो, मायालुप्तप्रपंचकः ।
मूढस्व पलालश्चैव तिर्यग्योन्या भतोनरः ॥
Colophon : इति गतिलक्षणं समाप्तम् ।

११२२. गोम्मटसार

Opening : वंदौं ज्ञानानंदकर नेमिचंद गुनकंद ।
माधव वंदित विमलपद पुण्य पतोनिधिनंद ॥१॥
Closing : अपर्याप्त में मिश्रगुणस्थान नांही तातैं कृष्ण लेश्या का मिश्र
गुणस्थान विर्षे देव किया तीन वति हैं इत्यादिक यथा सम्भव
अर्थ आभिप्रायनिकरि कहिए हैं, अर्थ सोजानना ········ ।
Colophon : इति आचार्य गोम्मटसार द्वितीयनाम पंचसंग्रह ग्रन्थ की जीव-
तत्त्व प्रदीप का नाम संस्कृत टीका कै अनुसारि सम्यग्ज्ञान
चंद्रिका नाम्मा भाषा टीका ··· — ··· ।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I. क्र० २४४ ।

११२३. ग्यान के आठ अंग

Opening : विजन वेपसमवह । · — ··· नमुजंवन ॥

Closing : ऐसे ग्यान के आठ अंग हैं सो धर्मात्मा जीवन करि धारवे योग्य हैं।

Colophon : इति ग्यान के अष्टअंग सम्पूर्णम् ।

११२४. हणवन्त अणुप्रेक्षा

Opening : सिद्धाणिजोय जीव वणस्सई कालू पुग्गलाच्चेव।
सव्वमलोगागास छच्चेव अणतया भणिया ॥

Closing : इयवारियाउ मुणेवि — ... — ... ...
.... — राहवेण सइंसुअडालेहिं ॥

Colophon : इति हणवन अणुप्रेक्षा समाप्तम् । पंडित बछराजू लिखितम् ।

११२५. जिन गायत्री त्रिकाल संध्या

Opening : अथोच्यते त्रिवर्णाना शौचाचारविधिक्रमं ।
प्रातरेव समुत्थाय स्मृत्वास्तुत्वा जिनेश्वरम् ॥१॥

Closing : — संध्योपासनं ॥६॥ चेति सप्तकर्मणि क्रमेण कुर्यादि० नित्यदाहि नमो हैन भगवन् ... ... अर्हं बलप्रियोर्घामि स्वाहा ।२॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ।

११२६ जिनगुणसम्पत्ति

Opening : मस्तुवं सर्वदा देवं गोपेशं गोपति परम् ।
दर्शनादर्पणं पश्यन् त्रैलोक्य द्विगुणायते ॥१॥

Closing : इति व्रतमहिमान विदितपुराण संकिलिख्य भो विबुधजना: ।
कुरुत सलील व्रतमतिरम्य शिवसौख्य यदि प्राप्नुमना. ॥७॥

Colophon : इति जिनगुणसम्पत्ति विधानं समाप्त: । श्रीरस्तु कल्याणमस्तु । शुभमस्तु ।

११२७. जिनमहिमा

Opening : श्री जिनवर नाम की महिमा अगम अपार ।
धरि प्रतीति जे जपत, ते सफल करत अवतार ।।

Closing : अद्‌भुत अतिसै तुम धरे वीतराग निज लीन ।
पूजक सहजें उच्चह्वै निंदक सहजै हीन ।।७।।

Colophon : इति जिनमहिमा सपूर्ण ।

११२८. जीवराशि क्षमावाणी

Opening : हिवरागी पद्मावती जीवराश खिमावै ... ।
... ... जे मैं नीक विराधिया ।।

Closing : रामवयराडो जे सुनै · ... ... तत्तकाल ।।३२।।

Colophon : इति जीवराशि सिक्षावाणी समाप्तम् ।

११२९. णनपचीसी

Opening : सुरनरतिर्यग्योनि मैं निरहै निगोदिभवंत ।
महामोह की नींद मैं सोए काल अनंत ।।१।।

Closing : कहे उपदेश वाणारसी चेतन अब कछु चेति ।
आप समझावे आप कू जपै कर्म के हेति ।२५।।

Colophon : इति श्री ज्ञान पचीसीसंपूर्णम् ।

११३०. ज्ञानार्णव-वचनिका

Opening : पिउस्थं पदस्थं च रूपस्थ रूपवर्जितम् ।
चतुर्धाध्यानमाम्नात भव्यराजीवभास्करैः ।।१।।

Closing : अक्षर पदकूं अर्थ रूप ले ध्यान मैं,
जे ध्यावै उस मंत्र रूप एकता नमें,

ध्यान पदस्थ जु नाम कह्यो मुनीराज नै ।
जे या मैं ह्व लीन लहै निज काज मैं ।।१।।

Colophon : इति श्री शुभचन्द्राचार्य विरचित योगप्रदीपाधिकार ज्ञानार्णव-नाम संस्कृत ग्रन्थ की देश भाषामय वचनिका विषै पदस्थध्यान का प्रकरण समाप्त भया । श्रीरस्तु ।

११३१. कर्मप्रकृति ग्रथ

Opening : पणमिय सिरसा णेमि गुणरयणविहूसण महावीरं
सम्मत्तरयणणिलय पयडिसमुकित्तण वोच्छ ८६ ।।१।।

Closing : पाणवधादीसु रदो जिण पूयामुक्खमग्गविग्धयरो ।
अज्जेइ अंतराय ण लहइ ज इच्छिय जण ।।

Colophon : इति श्री नेमिचन्द्र सिद्धान्तदेव विरचितायां कर्म्मप्रकृतिग्रंथः समाप्तः ।
देखें, जि० र० को०, पृ० ७२ ।

११३२. कर्म-बतीसी

Opening : पर्म निरंजन परम गुरु परम पुरुष परधान ।
वन्दौ परम समाधिमय भयभंजन भगवान ।।१।।

Closing : यह परमारथ पथ गुन, अगम अनंत बखान ।
कहत बनारसी दास इम जथा सकत परवान ।।३२।।

Colophon इति ध्यान बतीसी सपूर्णम् ।

११३३. कार्तिकेयानुप्रेक्षा

Opening : तिहुवणतिलयं देव वंदित्ता तिहुअणिदपरिपुज्जम् ।
वोच्छं अणुवेहाओ भविय जणाणंदजणणीओ ।।

Closing : मुनि श्रावक के भेदतैं, धरमदोय परकार ।
ताको सुनि चिन्तो सतत, गहि पावो भवपार ॥

Colophon : इति स्वामि कार्तिकेय अनुप्रेक्षा समाप्तम् मिति चैत सुदि ७ संवत् १९३८ वार मंगल ।
इति श्री

११३४. लघुतत्त्वार्थसूत्र

Opening : दृष्ट येन चराचर केवलज्ञान चक्षुषा ।
प्रणमामि महावीरं वदे कांतं प्रवक्षते ॥१॥

Closing : त्रिविधो मोक्षमार्गहेतवाः ।१३। पंचविधनिर्ग्रंथाः ॥१४॥ त्रिविधा सिद्धा. ।१५॥ द्वादशसिद्धस्यानुयोगनामानि ।१६॥ अष्टौरेसिद्धगुणाः ॥१७। द्विविधा सिद्धा. ॥१८॥ वैराग्य चेति ॥१९॥

Colophon इति लघुतत्त्वार्थं सम्पूर्णम् ।
विशेष – इसके पहले हेत्र में ही लिखा है कि अब 'अर्हत्प्रवचन' कहेंगे। अतः इसका नाम भी यही होना चाहिए।
देखें—जै० सि० भ० ग्र०, I, क्र० २८० ।

११३५. लघुसामायिक

Opening : शुद्धज्ञानप्रकाशाय लोकालोकैकभावने ।
नम श्रीवर्द्धमानाय वर्द्धमानजिनेसिने ॥१॥

Closing एवं सामायिक सम्यक् सामायिक खंडित ॥
वर्तनामुक्तिमानस्य कस्य पूर्णयतेर्मनः ॥१४॥

Colophon : इति श्री लघु सामायिक सम्पूर्णम् ।

११३६. लघु सामायिक

Opening : सिद्धवस्तुवचो भक्तया सिद्धान्प्रणमतः सदा ।
सिद्धकार्यः शिव प्राप्तः सिद्धि ददतु नोव्ययम् ॥१॥

Closing : देखें, क्र० ११३५ ।

Colophon : इति लघु सामयिकम् ।
देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ३६६ ।

११३७. लश्या स्वरूप

Opening : आर्तरौद्रसदाक्रोधी मत्सरीधर्मवर्जितः ।
निर्दयोवैरसंयुक्त ·· कृष्णलेश्याधिकोनरः ।१।

Closing : किन्हाए जाई नरयं नीलाए थावरो होई कानुट्ठाए तिरिय गई ।
पीताए मानुसो होई, पो माए देव गइ सुक्काए पावई सासय ठाण

Colophon : इति लेश्य स्वरूपं सम्पूर्णम् ।

११३८ लीलावती प्रकीर्णक

Opening : प्रीति भक्तजनस्य यो जनयते विघ्न निर्विघ्नस्मृतस्तंवृ दारकवृ द वंदितपदं नत्वामतगाननम् ।
पाटीं सदणितस्य वच्मिचतुरप्रीतिपदास्फुटां संक्षिप्ताक्षरकोमला-मलपदैर्लालित्पलीलावती ।.१॥

Closing : ··· ··· एक का बोलवाला रहा रहन दे और सोलह रहन दे असा अंक राखैं और मिटाय डालें । अब एकका भाग सोलह मैं देइ पाये सोलह दश अंक के सोलह दाडिय पायें ।

Colophon : इति भास्कराचार्य विरचितायां गणित - - लीलावत्यां प्रकीर्णकानि समाप्ता ।

११३९. मिथ्यात्व खण्डन

Opening : प्रथम सुमरि अरहंत कौ सिद्धन कौ धरिघ्यान।
सरस्वती सीस नमाइकें, बंदी गुरु जु ग्यान ॥

Closing : ग्रथ अनूपम रच्यौ यह है ग्रंथिनि की सारिथ।
भूरिष हाथि मदेहु भवि अधिक जतन सौं राखि ॥

Colophon : इति मिथ्यात्व खण्डन सम्पूर्णम्। शुभ संवत् १८७९ मीति चैत्र सुदि ।६। रविवासरे उपदेश ब्रह्मपद्मसागर जी लिखित अनुश्रावक आरा नगर।
श्रीरस्तु।

विशेष— इसके बाद एक छप्पय भी दिया हुआ है।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क० २८५।

११४०. मोक्ष मार्ग

Opening : मगलमय मगलकरण वीतराग विज्ञान।
नमो ताहि जाते भए अरहतादि महान् ॥

Closing : जैसे बाहरे कैं भी हस्त पदादि अग होहैं। परन्तु जैसे मनु क्षेते से न होहै। तैसे मिथ्या दृष्टिनि कैं भी व्यवहार रूप निसकि-तादि अंग हो है, परन्तु जैसे निश्चय की सापेक्षा लिए सम्यक्र्कै होइ तैसे न हो है।

Colophon : नहीं है।

११४१. मोक्षमार्ग पैडी

Opening : इयक समे रुचिवंत जौ गुरु अकउहै सुनमल्ल।
जो तुम अदर चेतना वहै तु साटी अल्ल ॥१॥

Closing : भव थिति जिनकी घटि गई तिनकौं यह उपदेश ।
कहत बनारसीदासयो मूढ़ न समुझेलेस ।।२२।।

Colophon : इति मोक्षमार्ग पैडी समाप्ता ।

११४२. मोक्षमार्ग पैंडी

Opening : देखें, क्र० ११४१ ।

Closing : देखें, क्र० ११४१ ।

Colophon : इति मोक्षपैडी संपूर्णः ।

११४३. मृत्यु महोत्सव

Opening : मृत्युमार्गेप्रवृत्यस्य वीतरागो ददातु मे ।
समाधिबोधिपाथेय यावन्मुक्तिपुरीपुरम् ।।

Closing : स्वर्गैश्वर्यविचित्रनिर्म्मलकुले सस्मर्यमानाजनैः,
भूत्वा मुक्तिविधायिनां बहुविधिं वाक्षानुरूप फलम् ।
भुक्त्वा भोगमहर्निशं परकृतं स्थित्वा क्षणमण्डले,
पात्रावेशविवर्जनामिवमृतं संतो लभन्तिस्तत ।।

Colophon : इति मृत्युमहोत्सव सम्पूर्णम् समाप्ता ।
देखें, जै० सि भ० ग्र० I, क्र० २७० ।

११४४. मुक्तिसूक्तावली

Opening : देवलोक ताको घर आगन राजा ऋद्धि सेवैतसुपाय ।
ताके तन सौभाग्यादि गुन केलि विलास करि नित आय ।।
सो नर उतरत भवसागर निरमल होइ मोक्षपद पाय ।
दरब भाव विधि सहित बनारसि जो जिनवर हरजिमन लाइ
।।१।।

Closing . सोनहसैइक्यानवै रितुग्रीष्म वैशाख ।
सोमवार एकादशी कर नक्षत्र सितपाख ॥१०४॥

Colophon : इति मुक्तिमुक्तावली भाषा समाप्ता ।
श्रीः सवत् १६६८ वर्षेकार्त्रिकादिप्रतिपदायां शनिवासरे श्री आगरामध्ये लिखित लेखकेन केनचित् । लेखक पाठकयोः शुभंभवतु । इति श्री ।

विशेष—. इस ग्रन्थ की अन्तिम पंक्ति के अनुसार सवत् १६६१ है लेकिन Colophon में १६६८ लिखा है ।

११४५. नवकार महात्म्य

Opening : ब्राह्मी ॥१॥ चदनवालिका ।२। भगवती राजीमति ।३। द्रूपदी ।४। कौशल्या ।५। मृगावति ।६। ··· ·· ··· ।

Closing : अरि करि हरिसाइण डाइण भूत वेताल,
सवि पाप प्रणासै थास्यै नगलमाल ।
इण सुमरण सकट दूरि टलइ ततकाल,
जपै जिनगुण प्रभू सूरिवर सीस रसाल ॥७॥

Colophon : इति श्री नवकार माहात्म्यसिकाय समाप्तम् ।

विशेष - इसमे सोलह सतियों के नाम भी दिये गये है ।

११४६. नयचक्र

Opening : गुणाना विस्तरं वक्ष्ये ······ ···· – ।
नत्वावीरजिनेश्वरम् ·· – – — ।

Closing : तत्र संश्लेषरहित वस्तुसबंधविषयः नयचरितामद्भूतव्यवहार. यथा देवदत्तस्य धनमिति श्लेषसहितवस्तुसंबंध ··· यथा जीवस्यशरीरमिति ।

Colophon : इति सुखबोधार्थमालापद्धतिः । श्री देवसेनपंडितविरचिता नयचक्रपरिसमाप्ताः ।

११४७. नयचक्र

Opening : देखें, क्र० ११४६ ।

Closing : देखें, क्र० ११४६ ।

Colophon : इति सुखबोधार्थमालापद्धति श्री देवसेनपंडित विरचिता । इति श्री नयचक्र समाप्तम् ३०६ श्लोक अनुष्टुप निश्चयेन । इति श्री ।

११४८ नयचक्र वचनिका

Opening : बंदो श्री जिन के वचन स्यादवाद नयमूल ।
ताहि सुनत अनुभव तहाँ है मिथ्या निरमूल ॥१॥

Closing : सत्रह सै छब्बीस के सवत् फाल्गुन मास ।
उजली तिथि दशमी जहाँ कीनो वचन विलास ॥

Colophon : इति श्री नारायणदास हेमराज कृत नयचक्र वचनिका समाप्तम् । देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० २९६ ।

११४९ नयचक्र वचनिका

Opening : देखे, क्र० ११४८ ।

Closing : देखें, क्र० ११४८ ।

Colophon : इति श्री नयचक्र पंडित नरायनदास उपदेशशिष्य हेमराज कृत सामान्य वचनिका संपूर्णम् । इति श्री नयचक्र जी की वचन का सम्पूर्णम् । मिति ज्येष्ट वदि ६ । बुधवार । सवत् १९६२ मु। चदेरी ।

११५०. निर्वाणकाण्ड

Opening : अठ्ठावयम्मि उसहो चंपासवास्सपुज्जजिणणाहो ।
उज्जत णेमिजिणो पावासणि व्वुवो महावीरो ॥१॥

Closing जोइपठयतियालं णिव्वुई कंकपीभावसुद्धीए ।
भुंजिनरसुरसुक्‍ पठइ सो लहइ णिव्वाण ॥

Colophon . इति सम्पूर्णम् । शुभ ।

११५१. निर्वाण काण्ड

Opening : वीतराग वंदौ सदा, भाव सहित सिरनाय ।
कहुँ काण्ड निर्वान की, भाषा विविध बनाय ॥१॥

Closing : सवत् सत्रह सै एक ताल, आश्विन सुदी दशमी सुविशाल ।
भैया वदन करे त्रिकाल, जै निर्वानकाण्ड गुणमाल ॥२२॥

Colophon इति निर्वाणकाण्ड भाषा सम्पूर्णम् ।
श्री शुभ इति ।

११५२. पंचविंसतिका

Opening : सअमलमायउ सिद्ध सिद्धगति हयगिरनदपुज्जं ।
णेमि ससिगुरवीर पणमिय तिथ सुद्धिभवमहणं ।

Closing मोहाकुमुइणि चद भवदुहसायरण जाण पत्तमिण ।
धम्म विलाससुहदं भणिद जिणदासवम्हेण ।।२६॥

Colophon : इति धर्मंव्यंसतिका लिख्य संम्पूर्ण करी ।

११५३. पंच परमेष्टी

Opening : इस जीव के समार में पांच ही परमइष्ट है । तातैं इनको पंच
परमेष्ठि कहिए । तिनका स्वरूप सामान्ययनं लिखिए । — ।

Closing : वस्त्र का त्याग ।१। दतवन का त्याग । खडे होय अहार ले ।१। लघु भोजन एक बेर ले । एव सप्त ए अठाईस गुन साधु महाराज जी का कहया ।

Colophon : इति श्री समुच्चय पंचपरमेष्टी की चर्चा स्वरूप सपूर्णम् ।

११५४. परमात्मप्रकाश

Opening : चिदानंदैकरूपाय जिनाय परमात्मने ।
परमात्मप्रकाशाय नित्य सिद्धात्मने नमः ।

Closing : परमपयगयाण भासओदिव्वकाउ,
भणति मुनिवराण मुक्खदो दिव्व जोउ ।
विसयसुहरयाण दुल्लहो जोहु लोए ।
जयउ सिवमग्गो केवलो कोप्टिवोहो ।।३४६।।

Colophon : इति श्री योगीन्द्रदेवविरचित परमात्मप्रकाश, समाप्त ।

११५५. परमात्मप्रकाश

Opening : देखें, क्र० ११५४ ।

Closing देखें, क्र० ११५४ ।

Colophon : इति परमात्मप्रकाश: समाप्त. । ग्रन्थाग्र ४५१ श्लोक अनुष्टुप ।
श्री । श्रीरस्तु । लेखकपाठकयो: शुभ भूयात् ।

११५६. परीक्षामुख वचनिका

Opening : श्रीमत् वीर जिनेस रवि, तम अज्ञान नसाय ।
शिवपथ वरतायो जगति, वदो मैं तसु पाय ।।१।।

Closing : ... कोटि जीव तुल्य कौन गणना मैं गणिये तौउ हम इस ग्रंथ की टीका करे हैं सो जैसे नदी का जल नवीन घट बिषेकिछुथा-

लिये सोह शीतल होय पीने वाले को पुरुषनि के चित को प्रिय लागे तैसे तिस प्रभाचन्द्र के वचन ही अपूर्व --- --- ।

Colophon . नही है ।

देखें, जं० सि० भ० ग्र० , क० ४६८ ।

११५७. प्रश्नमाला

Opening : आदि अन चोबीसलों वदौ मन वच काय ।
भव्यन को उपदेश दें करो मगलाचार ॥१॥

Closing । इस प्रश्नमाला को अपने कंठ मे पहिरे ते भव्यात्मा कल्यान के वांछित सुबुधी जुग भोमो मे सोना पावेगे । ऐसी जान इस प्रश्नमाला को धारण करहु ॥

Colophon . इति श्री हिप्टतारगनाम ग्रथमध्ये अनेक ग्रथान के अनुसार प्रश्नमाला कथन वरननो नाम सधि संपूर्णम् ।

विशेष-- इसके बाद एक दोहा भी दिया गया है ।

११५८. प्रवचनसार

Opening । सर्व्वव्याप्येकचिद्रूपस्वरूपाय परात्मने
स्वोपलब्धिप्रसिद्धाय ज्ञानानंदात्मने नमः ॥१॥

Closing । व्याख्येयं किल विश्वमात्मसहितं — एकं परं चित् ॥

Colophon : इति तत्त्वप्रदीपिका नाम प्रवचनसारवृत्ति समाप्तम् । शुभ अस्तु । संवत् १६६२ वर्षे फाल्गुनमासे कृष्णपक्षे ५ शनीवासरे काष्टामधे नदीतट " भट्टारक श्री रामसेन्यान्वये तदनुक्रमेण भट्टारक श्री चंद्रकीर्ति भट्टाराजकीर्त्ति तस्य शिष्य ब्रह्मधन जी स्वहस्तेनालिखितम् । शुभं भुयात् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क० ११२ ।

११५९. प्रवचनसार

Opening : देखें—क्र० ११५८।

Closing : देखें—क्र० ११५८।

Colophon : अनुपलब्ध।

११६०. प्रवचनसार

Opening : स्वयं सिद्ध करतार करैं निज करम सरम ... .
... ... एक विध अजरअमर

Closing : — मूर्तिक पदार्थ को जानै है अति चपल है अनतज्ञान की महिमा ते गिरा है अत्यन्त विकल है महामोह ... - ।

Colophon : नहीं है।

११६१. प्रायश्चित्त ग्रन्थ

Opening : जिनचन्द्रं प्रणम्याहमकलंक. समन्तत ।
प्रायश्चित्त प्रवक्ष्यामि श्रावकाणा विशुद्धये ॥

Closing : प्रायश्चित्त य: करोत्येव देव जाने दोषे तत्प्रशात्यर्थमार्य
रास्ट्स्यासौ भूमि: यस्यात्यमोपि स्वस्ताचास्यावस्थित
र्त तनोति ॥९०॥

Colophon : इति अकलंकस्वामिनिरूपित प्रायश्चित्तग्रन्थं संपूर्णम्।
देखें—जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ३२१।

११६२. पाप-पुण्य माहात्म्य

Opening : वर्द्धमान जिनवर नमूं, मन वच सीस नवाय।
फुन गुरु गोतम को नमूं, जातैं पातक जाय ॥१॥

Closing : सत्रै मै इक्यानवै, पोष सुदी तिथ दूज।
सुभ नक्षत्र पूरन करी, जिन वानी कूं पूज ॥
जे नर सुर धर गावहीं, तथा सुनै मन लाय।
जिनवांनी सरधा करै अंत सिद्धगत जाय ॥६॥

Colophon : इति अष्टद्रव्य सेती जिन पूजा करी समाप्तम्।

११६३. पुण्य माहात्म्य

Opening पूरब पुन्न कियो जिन सोय, नेरा वस्तु जु प्रापत होय।
मानुष जनम जु पावै थाय, उत्तम कुल मै उपजै आय ॥१॥

Closing : शक्र समान तपस्या करै, बुट्ट बादमीसै तप करै,
इतने गुन निरमल जिस जोय, तासौं नमस्कार मम सोय ॥८॥

Colophon : इति श्री पुण्य महात्तम समाप्तम्।

११६४. सम्यक्त्व कौमुदी

Opening : परम पुरुष आनन्दमय चेतनरूप सुजान।
नमी सिद्ध परस्मा जग परकाशक भान।

Closing : चन्द सुर पानी .. तब लग जैन प्रकाश ॥८६॥

Colophon : इति श्री सम्यक्त्व कौमदी कथा सादा जोधराज गोदीका बिरचिते उदितोदय भूप अर्हदास सवादिकसर्ग गमनवरनननाम एकादश परिच्छेद। इति श्री सम्यक्त्व कौमदी सम्पूर्णम्। संवत् १८४६ वर्षे मिति ज्येष्ट सुदि ३ वार मंगल श्रीपार्श्वचंद्र सूरि गच्छे श्री १०८ श्री चंद्रभाण जी तत् शिष्य लिखत्तु ज्ञासिन्दारमल्लेन श्री सफातपुर नगरमध्ये।
देखें, जैं० सि० भ० ग्र०] क्र० ११४।

११६५. समयसार गाथा

Opening : वीतरागं जिनं नत्वा ज्ञानानंदैकसंपदः ।
वक्ष्ये समयसारस्य वृत्ति तात्पर्यसंज्ञिकाम् ॥१॥

Closing : सुद्धोसुद्धादेसो णायव्वो परमभावदरिसीहिं ।
ववहारदेसिदो पुणजेहुअपरमे ठिदा भावे ॥१२॥

Colophon : इति समयसार गाथा सम्पूर्णम् ।

११६६. समयसार नाटक

Opening : करम भरम जग तिमिर हरन खग उरग लखन पगसिव मग
दरसी ।
निरखत नयन भविक जल बरखत हरखत अमित भाविक
जन दरसी ॥
मदन कदन जित परम धरम हित सुमिरत भगति भगत
सवदरसी ।
सजल जलद तन मुकुट सपत फन करम दलन जिन नमन
बनारसी ॥१॥

Closing : मर्मसार आतमदरब नाटक भाव अनंत ।
सोहै आगम नाम मैं परमारथ विरतंत ॥७२७॥

Colophon : इति श्री परमागमसमैसारनाटकनाम सिद्धान्त सपूर्णम् । श्रीरस्तु ।
कल्याणमस्तु । शुभंभवतु ।
देखें, जै० सि० भ० ग्रं० I, क० ३४२ ।

११६७. समयसार नाटक

Opening : देखें, क० ११६६ ।
Closing : देखें, क० ११६६ ।

Colophon : इति श्री परमागम समैसार नाटक नाम सिद्धान्त समाप्तम्।
सवत् १८८४ भादो शुक्ल तेरस सोमवासरे जवाहरमल्ल
स्वाध्याय हेतवे ।

११६८. समयसार नाटक

Opening : देखें, क० ११६६ ।
Closing : देखें, क० ११६६ ।
Colophon : इति श्री नाटक समयसार सम्पूर्णम् ।
रघ्रचद्र वसु ससि अवधि भादव सित ससिवार ।
द्वितिया तिथि पोथी उभय पूरन भई सवार ॥१॥
समयसार नाटक अगम ब्रह्मग्यांत विश्राम ।
पढ़त सुनत सुपर्स उपजै भावित आसाराम ॥२॥
सवत् १८४० कातिग शुक्ल १ रवि दिने लिखितं मट्टकमरामेण
पठनार्थमात्मागमः । शुभंभवतु ।

११६९. समवशरण

Opening : समोसरण मंडित नमो परमागम जिनरूप ।
सुरनरपति वंदित चरण, महिमा अगम अनूप ॥१॥
Closing : इह विधि श्री जिनराज जगनायक सासुत मुकत ।
अहिनिसि मगलकाजे पढत सुनत सव कहुकरो ॥३०॥
Colophon : इति श्री समोसरणभेद ।

११७०. समुद्घात

Opening : सातसमुद्घात कहै वेदना समुद्घात ॥१॥ कषाय समुद्घात ॥२॥
मारणांतिक समुद्घात ॥३॥ वैक्रिय समुद्घात ॥४॥ तैजस
समुद्घात ॥५॥ आहारक समुद्घात ॥६॥ केवलि समुद्घात॥७॥

Closing : अट्ठावीस योजन एकसो अट्ठावीस धनुष सष्ठ्योत्तर अंगुल इतनी जबूद्वीपकी परिधि।

Colophon : नहीं है।

११७१. षट्दर्शन

Opening : शिवमत बोध सुवेदमत नैयायिक मत पक्ष।
मीमांसकमत जैनमत षट् दरसन पर लक्ष ॥१॥

Closing : रायपवानी ६ पुनीनचावन १० लोचन वडवा ११ घरघरमी १२ कवित १३ राधा १४ वृषभनचावन १५ पेपजेवाई १६।

Colophon : अनुपलब्ध।

११७२. षट्पाहुड

Opening : काउण णमोयार जिणवरवसहस्स वड्ढमाणस्स।
दसणमग्गं वोच्छामि जहा कम्म समासेण ॥

Closing : अरहंतो सुत्तमना ---- ... पुणा केरिय अण ॥८८॥

Colophon : इति श्री कुदकुंदाचार्य विरचित शीलप्राभृतं समाप्तम्। संवत् १७६५ वर्षे वैशाखमासे शुक्लपक्षे ति १ द्वादसी १२ मंगलवार श्रीराम।

११७३. षट्पाहुड

Opening : देखें, क्र० ११७२।

Closing : एवं जिण पण्णत्त मोक्खस्स य पाहुडं सुभत्तीए।
जो पढइ सुणइ भावइ सो पावइ सासयं सुक्खं ॥

Colophon : इति श्री कुन्दकुन्दाचार्यविरचितं मोक्ष-पाहुड षष्ठ समाप्तम्।

११७४. षट्लेश्याभेद

Opening : कृष्ण नील कापोतले पीत पदम सुक जान ।
सुभ असुभ जु कर्म के ए षट् भेद बखान ।।

Closing : यह षट् विध लेश्या कही सुनौ भविक दे कांन ।
असुभ जान निर वारियें भैरो कही बखान ।।

Colophon : इति श्री षट् लेश्या आरती ।

११७५. सामायिक

Opening : देखें क्र० ११३६ ।

Closing : देखे, क्र० ११३६ ।

Colophon : इति संपूर्णम् ।

११७६ सामायिक

Opening : पडिक्कमामि भंते इरिया वहियाणं विराहणाए अगागुत्ते अ इगमणे ।

Closing : गुरुवः पातु वो नित्य ··· मोक्षमार्गोपदेशका ।

Colophon : इति सामायिक समाप्तम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ३६५ ।

११७७. सामायिक

Opening : देखें—क्र० ११७६ ।

Closing : देखे—क्र० ११७६ ।

Colophon : इति सामायिकम् ।

११७८. सामायिक

Opening : देखें, क्र० ११३६ ।

Closing : देखें—क्र० ११३६ ।

Colophon : इति लघु सामायिक संपूर्ण । आध्य १०८ वीजे ।

११७६. सामायिक

Opening : नमः श्रीवर्द्धमानाय सिद्धं तकलिलात्मने ।
सालोकाना त्रिलोकाना यद्विद्यादर्पणायते ।।१।।

Closing : अथय पौर्वाह्निकदेववदनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण,
सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावंदनास्तवसमेतम् ।

Colophon : इति लघुसामायिकसंपूर्णम् ।

११८०. सापाचार

Opening : वंदौ देव युगादि जिन, गुरु गणधर के पाय ।
सुमरू देवी सारदा, रिद्ध सिद्ध वरदाय ।।१।।

Closing : मगल भगवान वीरो मगल गौतमो गणी ।
मगलं कुंदकुंदाद्यो, जैनधर्मोस्तु मगलम ।।

Clolophon : इति सापाचार जिनमत की संपूर्णम् ।

११८१. साततत्त्व

Opening : जीव ।१। अजीव ।२। आस्रव ।३। बंध ।४। संवर ।५।
निर्ज्जरा ।६। मोक्ष ।७। एहि साते तत्त्व है इनमें पुन्य और
पाप मिलिके नौ पदारथ कहिए हैं ।

Closing : इस पाप का सरूप बिचार कर कै त्यागनां जोग है। एही नौ पदारथ समान रूप कहा। विशेष ···· निर्वर्त होय है ।१।।

Colophon : इति श्री सातत्तत्व नव पदार्थ की चरचा सक्षेप मात्र जनाया है सो सपूर्णम्। शुभं भवतु।

११८२. सिद्धान्तसार

Opening : तीन जगतपति जिनको धर्मराज के नायक शिवसुखदायक हैं। इस पचगुरु कौं प्रणाम करि कैं आवै भवन उदधिकौं कथन सुनौं भाव् अवै ।।१।।

Closing : जे इह मध्य सुलोक विर्वे जिनराज के मदिर है अषखण्डन। श्री निर्वाण सुभूमि जहाँ न समोक्ष भये करिकर्म विखण्डन। जेइ सर्वंबकी अनजाणये सबको करि भूषित आनन। तै इम सायक देहु मुझै करि जोरि करो सबकौं नित वंदन ।२५।।

Co'ophon : इति श्री सिद्धान्तसार दीपक महाग्रथे भट्टारक श्री सकलकोति प्रणीतानुसारेण नथमलकृत भाषायां मध्यलोक वर्णनोनाम दसमोध्यायाधिकार ।।१०।।

११८३. सिंदूर-प्रकरण (सूक्तिमुक्तावली)

Opening : सोभित तप गजराज सीस सिंदूर पूरव विशेष।
···· ··· ·· – बनारसि जोरि कर ।।

Closing : सोरह सै इक्यानवै रितु ग्रीष्म वैशाख।
सोमवार एकादशी कर नक्षत्र सितपाख ।।३।।
नामसूक्तिमुक्तावली द्वाविंशति अधिकार।
शतसि लोक परवान सव इति ग्रंथ बिस्तार ।।४।।

Colophon : इति श्री सिंदूरप्रकरण सुक्तिमुक्तावलीनाम ग्रंथ समाप्तम् । संवत् १८०३ वैशाख सुदी १४ वृहस्पतिवासरे लिखित यति लालचन्द पठनार्थं लाला गोवरधनदासजी ।

विशेष — दि० जि० ग्र० र०, के अनुसार इसके लेखक सोमप्रभाचार्य है तथा टीकाकार हर्षकीर्ति है ।

११८४. सिन्दूर-प्रकरण

Opening : सिंदूरप्रकरस्तपकरि ···· ··· ···· पार्श्वप्रभो पातु वः ।

Closing : किं जानै बहुभिः करोति हरिणी ··· ·· यानिर्भया ॥

Colophon : इति सिंदूरप्रकरणम् सम्पूर्णम् । लिखितं पठितं परमानन्देन मिति चैत्र कृष्णे पचम्या शुक्रवासरे रात्री श्री जिनचैत्यालये संवत्सर १६२८ का । शुभ भूयात् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ५२६ ।

११८५. सिंदूर प्रकरण (सूक्तिमुक्तावली)

Opening : देखें क्र० ११८३ ।

Closing : देखे, क्र० ११८३ ।

Colophon : इति सिन्दूरप्रकरण सूक्तिमुक्तावलीनाम ग्रंथ सम्पूर्णम् ।

११८६. शीलव्रत

Opening : समजुधीय चतुर ··· ··· ··· परनारिसौं ॥१॥

Closing : सीयन्न गुण कहणकौ ···· ···· वखानै ॥

Colophon : इति श्री सील कथा समाप्तम् ।

११८७. श्रावकाचार

Opening : राजत केवलज्ञान · — सहज सुभाव ॥१॥

Closing : .... एक सर्वज्ञ वीतराग का वचन ताते तू अंगीकार । कर और ताके अनुसार देवगुरुधर्म का सरूप अंगीकार कर श्रद्धान कर ।

Colophon : इति कुदेवादि का वरनन सपूर्ण । इति श्रावकाचार ग्रंथ संपूर्णम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ३८३ ।

११८८. श्रावक प्रतिक्रमण

Opening : जीवप्रमादजनिताः प्रचुराप्तदोषा,
यस्मात्प्रतिक्रमणतः प्रलय प्रयाति ।
तस्मात्तदर्थममलं मुनिबोधनार्थम्,
वक्ष्ये विचित्रभवकर्मविशोधनार्थम् ॥

Closing : अक्खरपयत्थहीनं मत्ताहीन च ज मए भणियं ।
त खमउ ... दुक्खक्खय दितु ॥

Colophon : श्रावकप्रतिक्रमणं समाप्तम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ३७६ ।

११८९. श्रावक प्रतिष्ठाक्रमापण

Opening : देखें, क्र० ११८८ ।

Closing : देखें क्र० ११८८ ।

Colophon : इति श्रावकप्रतिक्रमापणम् ।

११९०. श्रावकव्रतसंध्या

Opening : अपवित्रः पवित्रो .... अमुच्यते ॥

Closing : श्रीमत्सिद्धजिनं प्रणमामि सततं ज्ञानामृतं भूषणम् ।
वंदे श्री जिनसेवकं प्रतिदिनं संध्या त्रिकाल कुरु ।।

Colophon : इति श्री सध्या संपूर्णम् ।

११६१. श्रावकव्रतसंध्या

Opening : देखें, क्र० ११६० ।

Closing : देखें, क्र० ११६० ।

Colophon : इति जैनसंध्या सपूर्णम् ।

११६२. श्रावकव्रतविधान

Opening : बारा व्रत श्रावग तने, तिनको करूं बखान ।
जो जिय निहचै चित्त धरै ताको होय कल्यान ।।१ ।

Closing : बरत जु बारै इम कहै, सुनौ भविक दे कान ।
सो निहचै घर पालीयो मेरो कहै बखान ।।

Colophon : इति श्रावक व्रत समाप्तम् ।

११६३. श्रीपालदर्शन

Opening : ॐ नमः सिद्ध मन धरसंत, उदघाटे जुगपाट तुरंत ।
बार बार भरम भजिगयो, पुन्यहि फलतैं वरसनभयो ।

Closing : तीर्थङ्कर वंदो जिनदेव सीतलनाथ करोपद सेव ।
शुद्धभाव जाके मन भयो सम्यकदृष्टि मुकतहि गयौ ।।

Colophon : इति श्रीपालदर्शन सम्पूर्णम् ।

११६४. श्रीपालदर्शन

Opening : देखें, क्र० ११६३ ।

Closing : देखें, क० ११६३ ।
Colophon : इति श्रीपाल दरमन सम्पूर्णम् ।

११६५. सुदृष्टि तरंगिणी

Opening : जैसे जे मुनि सम्यक सहीत चारित्र के धारक थे सो कोई कर्म की जोरा वरी तैं मोह की प्रबलता करि सम्यक राजपद छूटि गया हो — ।

Closing : आगे अक्षर ज्ञान कहीए है सो उह प्रजाय समास के अन्तभेद में एक भेद और मिलाइए तब अक्षर ज्ञान है सो वह अर्थाक्षर नाम ज्ञान है सो ए सर्व श्रुतिज्ञान के समेष में भाव यह अक्षर ज्ञान है ।

Colophon नहीं है ।

११६६. तत्त्वसार

Opening : झाणग्गिदट्ठकम्मे णिम्मलसुविसुद्धलद्धसब्भावे ।
णमिऊण परमसिद्धे सुतच्चसारं पवोच्छामि ॥

Closing : सोऊण तच्चसारं रइयं मुणिणाहदेवसेणेण ।
जो सद्दिट्ठी भावइ सो पावइ सासयं सोक्खं ॥

Colophon : इति तत्त्वसार समाप्तः ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क० ६६६ ।

११६७. तत्वार्थसूत्र

Opening : त्रैकाल्यं द्रव्यषटकं — — सर्वैः सुधेदृष्टिः ॥

Closing : तवयणं वयधरण ~ ··· निवारेइ ॥

Colophon : इति दशाध्याय सूत्र उमास्वामी कृत सपूर्णम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ४०४ ।

११९८. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखें - क्र० ११९७ ।

Closing : देखें, क्र० ११९७ ।

Colophon : इति तत्वार्थसूत्र सपूर्णम् ।

११९९ तत्वार्थसूत्र

Opening : देखें, क्र० ११९७ ।

Closing : तत्वार्थसूत्रकर्त्तार ··· उमास्वामीमुनीश्वरम् ॥

Colophon : इति उमास्वामिकृत तत्वार्थसूत्र समाप्तम् ।

१२००. तत्वार्थसूत्र

Opening : देख, क्र० ११९७ ।

Closing : ··· ···धर्मास्तिकायाभावात् ॥८॥ क्षेत्रकालगतिलिङ्गतीर्थचारित्र-प्रत्येकबुद्धबोधितज्ञानावगाहनांतरसंख्या ।

Colophon : इति तत्वार्थाधिगमो मोक्षशास्त्रे दशमोऽध्याय. ।

१२०१. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखें, क्र० ११९७ ।

Closing : देखें, क्र० ११६६ ।

Colophon : इति श्री तत्वार्थ उमास्वामीकृत सूत्र जी समाप्तम् । सवत् १६२७ मीति भाद्रपद कृष्ण पक्ष ।८। चद्रवामरे लिखित नीलकठ दासशर्माऽह । श्रीकृष्णाय नमः ।

१२०२. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : मोक्षमार्गस्य नेतार भेत्तारकर्मभूभृताम् ।
ज्ञातार विश्वतत्त्वाना वन्दे तद्गुणलब्धये ।।

Closing : देखें क्र० ११६७ ।

Colophon : इति तत्वार्थसूत्र समाप्त. ।

१२०३. तत्त्वार्तसूत्र

Opening : देखें क्र० ११६७ ।

Closing : देखें, क्र० ११६६ ।

Colophon : इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे सूत्र समाप्तम् ।

१२०४. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखें, क्र० ११६७ ।

Closing : देखें, क्र० १२०६ ।

Colophon : इति तत्वार्थसूत्र सम्पूर्णः ।

१२०५. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखें क्र० ६१ ७ ।

Closing : तपश्चरण करिवो, व्रत धरिवो, संयम शरणको करिवो ·······
···· ··· चतुरगति के दुख ते छूटे।

Colophon : इति समाप्ता।

१२०६. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखे, क्र० ११६७।
Closing : देखें, क्र० ११६७।
Colophon : इति।

१२०७. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखे क्र० ११६७।
Closing : देखें, क्र० १२०५।
Colophon : नहीं है।

१२०८. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखे, क्र०, ११६७।
Closing : अरिहंतभासियत्थं गणहरदेवेहिं गंथियं सम्मं।
पणमामि भत्तिजुत्तो सुदणाणमहोवहं सिरसा।
Colophon : इति सम्पूर्णम्।

१२०९. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखें, क्र० ११६७।
Closing : णवमे सवरनिज्जर दसमे मोक्खं वियाणेहि।
इय सत्ततच्चभणिय, दहसुत्ते मुणिदेहि ॥६॥

Colophon : इति श्री उमास्वामि विरचित तत्वार्थसूत्र समाप्तम् ।
सवत्सर १६३७ । मिति माघ वदी १२ वार बृहस्पति । इति ।

१२१०. तत्त्वार्थसूत्र

Opening देखे, क्र० ११६७ ।

Closing : देखे, क्र० १२०५ ।

Colophon : नहीं है ।

१२११. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखे, क्र० ११६७ ।

Closing : देखें, क्र० ११६६ ।

Colophon : इति श्री दशाध्यायसूत्र उमास्वामीकृत सम्पूर्णम् ।

१२१२. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखे, क्र० १२०२ ।

Closing : देखे, क्र० १२०० ।

Colophon इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोऽध्याय. समाप्त: ।।

१२१३. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखे, क्र० ११९७ ।

Closing : देखे, क्र० १२०० ।

Colophon : इति तत्वार्थधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोऽध्याय: समाप्त: ।

१२१४. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखे, क्र० ११६७ ।

Closing : देखें, क्र० ११६७ ।

Colophon : इति सूत्रदशाध्याय समाप्तम् । श्रावणमासे शुक्लपक्षे तिथौ ८ भोमवासरे, संवत् १६५५ श्रीरस्तु ।

१२१५. तत्वार्थसूत्र

Opening : देखें, क्र० १२०२ ।

Closing : पढमे पढम णियमा विदिए विदिय च मज्झकालम्मि ।
जपुण खाईयमस्म जम्मि जिणा तम्मि कालम्मि ।

Colophon : इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोध्यायः समाप्तः । श्री पटणा-मध्ये साहब बिलदास तस्य पुत्र साहभगवतिदास तस्य पुत्र आलम-चन्द पठनाय सम्वत् १७७२ वर्षे कार्तिक कृष्ण नवमी तिथौ सोम दिने सम्पूर्णम् ।

१२१६. तत्वार्थसूत्र

Opening : देखें क्र० ११६७ ।

Closing : देखें, क्र० १२०५ ।

Colophon : इति श्री समाप्तः ।

१२१७. तत्वार्थसूत्र वचनिका

Opening : श्री वृषभादि जिनेश्वर अंत नाम शुभवीर ।
मनवचकाय विशुद्ध करि वन्दौं परम शरीर ।

Closing : समयसार अध्यातमसार प्रवचनसार रहमि मनधार ।
पंचासतिकाया ए तीस, नाटकत्रयी कहावै पीस ।
तत्वारथ सूत्तर की टीका, सर्वारथसिद्धि नाम सुठीक
दूजीन तत्वारथ वार्तिक श्लोकरूप वार्तिक तार्तिक ।

Colophon : नहीं है ।

१२१८. त्रेपनक्रिया

Opening : अस्पष्ट ।

Closing : अस्पष्ट ।

विशेष— यह ग्रंथ एक गुटका है जो बहुत ही अस्पष्ट है । बीच के पत्र भी अपठनीय है ।

१२१९. त्रेपनक्रिया

Opening : जय जय जय णमोस्तु णमोस्तु णमोस्तु ।
... ... सव्वसाहूणं ।

Closing : अस्पष्ट ।

Colophon : अस्पष्ट ।

१२२०. त्रिकाल चतुर्विंशति

Opening : निर्व्वाण जी ।१। सागरजी ।२। महासाधु जी ।३। विमल प्रभु जी ।४। सुद्धाय जी ।५। श्रीधर जी ।६। श्रीदत्त जी ।७। अमलप्रभ जी ।८।

Closing : कदर्प्प जी ।२०। जयनाथ जी ।२१। श्री विमल जी ।२२। दिव्यवाद जी ।२३। अनंतवीर्यजी ।२४।

Colophon : इति त्रिकाल चतुर्विंशति का नाम सम्पूर्णम् ।

१२२१. त्रिवर्णाचार

Opening श्रैलोक्ययात्रां चरितुं प्रवीणा धर्मार्थकामा प्रभवति यस्याः ।
प्रसादतो वर्तत एव लोके सारस्वति सा हरतात्मनोहं ।।१।।

Closing : सारस्वत्या प्रमादेन काव्य कुर्वन्ति पंडिता ।
ततस्सैषा समाराध्या भक्त्या शास्त्रे सरस्वति ॥

Colophon : इत्यार्षे श्रीमद्भगवन्मुखारविंदविनिर्गते श्रीगौतमर्षिपादपद्माराधकेन श्री जिनसेनाचार्येन विरचिते त्रिवर्णाचारे उपासकाध्ययनसारोद्धारे ग्रहिधर्मदेवपूजा निरूपणीयोनाम पचमं पर्व्व: ।

१२२२. त्रिलोकसार

Opening : त्रिभुवनसार अपार गुन गायक ·· ·· ।
·· · श्री अरहत महत ॥१॥

Closing : सुखनाम निराकुलता का है । निराकुलता वीतराग भावनितै हो है । तातै परम वीतराग भावरूप शुद्वात्म रूप जनित परम आनद की प्राप्ति करहु ।

Colophon : इति ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क० ४२८ ।

१२२३. वचनिका

Opening : वदो श्री वृषभादि जिनधर्मतीर्थकरतार ।
नमं जासपद इद्रमत शिवमारग रुचिधार ॥१॥

Closing : हे करुणानिधान मेरी रक्षा करहु । तव भगवान कहते भये । हे राम शोक न करि, तू चर्म देव हैकै एक दिन वासुदेव महित इन्द्र की नाई पृथ्वी का राज करि । जिनेश्वर का व्रत धरि ।

Colophon : नही है ।

१२२४. वैराग पचीसी

Opening : रागादिक दोषन तजैं, वैरागी जो देव ।
मन वचसीसनवाय के,कीजैं तिनकी सेव ॥

Closing : एक सात पचास मैं सब बर सुखकार।
पोष सुकल तिथि धर्म , जै जै निसपतिवार ॥

Colophon : इति श्री वैराग्य पचीसी सम्पूर्ण।

१२२५. योग

Opening : यह आत्मा ससार अवस्था मे जीवात्मा कहावै है और जब यह ही अपनी अतरग बाह्य स्वरूप द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव रूप सकल सामग्री के पावै है।

Closing भाल आदि दश ध्यान मैं ध्येय थापि मन लाए।
प्रत्याहार जु धारणा यह ध्यान विधिसार ॥१॥

Colophon : इति श्री शुभचन्द्र आचार्य विरचित योगम्।

१२२६. योगीरासा

Opening : आदि पुरुष युग आदि ··· आदि जती आदि नाथो।
आदि जगत गुरु जोग नयामिउ। जय जय जय जगनाथो

Closing . योगीरासा सीखो रे श्रावक दोस न कोई लीजै।
जिणदास त्रिविध करि जपई सिद्धह सुमिरण कीजई।

Colophon : इति योगी रासा सम्पूर्णम्।

देखे, रा० सू० III, पृ० ४२।

१२२७. अक्षर वत्तीसी

Opening : कहे करम बस कीजै, कनक कामिनी दृष्टि न दीजै ॥

Closing : यह अक्षर वत्तीसिका रची भगवती दास।
बाल ख्याल कीनौ कछु लही आतम परगास ॥

Colophon : इति अक्षर बत्तीमी सम्पूर्णम् ।

१२२८. अक्षर बावनी

Opening : ॐ सु अलप परब्रह्म को धरौ सदाचित ध्यान ।
जा प्रमाद निहचैं मनुज होत सुकृत को थांन ॥१॥

Closing : हरष होत प्रभू दरस तैं लहत अनेक अनद ।
लक्ष्मी चद्र समान जस सुविध सीस सुखचद ॥४५४॥

Colophon : इति श्री अक्षर बावणी जी समाप्तम् ।

१२२९. अन्यमत श्लोक

Opening : अहिंसा सत्यमस्तेय त्यागो मैथुनवर्ज्जनम्
पञ्चस्वेतेषु धर्म्मेषु सर्वे धर्मा प्रतिष्ठता ॥१ ।

Closing : अनुदिने नगरा देवस्य महर्षयो मार्हर्षिभि जुहैया जनकस्य
जतस्य सायणा रक्षा भवतु शान्तिर्भवतु तुष्टिर्भवतु वृद्धिभवतु
स्वस्तिर्भवतु श्रद्धाभवतु ······ ॥

Colophon नही है ।

१२३० अठाईरासा

Opening : वरत अठाई जे करैं ते पावै भवपार प्राणी ।
जंबूद्वीप सुहावणो लष योजन विस्तार प्राणी ॥१॥

Closing : मन वच काया जे पढै ते पावैं भवपार ।
विनयकीरत सुखसू भनैं जनम सफल संसार प्राणी ॥

Colophon इति श्री अठाई रासजी समाप्तम् .

१२३१. अढाईरासा

Opening : देखें, क्र० १२३० ।
Closing : देखें, क्र० १२३० ।
Colophon : इति अढाई पूजा रासौ संपूर्णम् । शुभ भवतु ।

१२३२. बारहमासा

Opening . विनवे उग्रसेन की लाडिली ··· समुझावहु मोहि ये हे
नगरी ॥१॥
Closing बारह मास पूरे भये " प्रनि उतर लाल विनोदि गाई ।
Colophon इति बारहमासा समाप्तम् ।

१२३३. बारहमासा

Opening देखे– क्र० १२३२ ।
Closing : देखे—क्र० १२३२ ।
Colophon : इति श्री बारहमासा जी समाप्तम् ।

१२३४. चंद्रशतक

Opening : अनुभौ अभ्यास मैं निवास शुद्ध चेतन कौ,
अनुभौ सरूप शुद्धबोध को प्रकाश है ।
अनुभौ अनूप रूप रहत अनत ग्यान,
अनुभौ अतीत त्याग ग्यांन सुख रास है ।
अनुभौ अपार सार आपही कौ आप जानें
आपही मैं व्यापदीसै जामें जड़ नास है ।

अनुभौ अरूप है सरूप चिदानन्द चंद,
अनुभौ अतीत आठ कर्म सो अकास है ॥१॥

Closing : गुण ठाणो मिथ्यात अवृत तन छुटै ग्यारगत
सासादन गुण थान नरक तजि होई तीन रत।
मिश्र षीन सजोग तहाँ जीव मरहि न कोई
सुनि अजोग गुन थान छुटै प्रगटै सिव सोई
सपत सेव गुण थे छुटे एक गत देव की
कह्यो अरथ गुरु ग्रंथ मै सति वचन जिन सेवकी ॥

Colophon : इति श्री बंदशतक समाप्तम्।

१२३५. चर्चाशतक

Opening : जै सरवग्य अलोक लोक इक अडवत देवै।
हसतामल ज्यो हाथ लीक ज्यों सरव विशेवै।
छरो हर्व गुणपरज काल त्रय वर्तमान सम।
दर्पण जेम प्रकाश नाश मल कर्म महातम।
परमेष्ठी पांचो विघनहर मगलकारी लोक मैं।
मन वच काय मिरनायभुव आणद सौं यौ द्योक मैं ॥१॥

Closing : चरचा मुख सो भनै सुनै प्रानी जहि कानन।
केई सुने धरि जाहि नाहि भाषै फिरि आनन।
तिनि को लखि उपगार सार यह सतक बनाई।
पठत सुनन ह्वै बुद्ध सुद्ध जिनवानी गाई।
इसमे अनेक सिद्धान्तको मथन कथन द्यानत कहा।
सब मांहि जीवको नाम है जीव भाव हम सरदहा ॥१०४॥

Colophon : इति चरचा शतक समाप्तम्।

१२३६. चौबोस पचीसी

Opening : दरव खेत अरुकाल भाव दरव षट तरु नव।
ग्यायिक दीनदयाल सो अरिहंत नमों सदा।

Closing : कवित्त बनाए सावनि सुनाए मन आए गाए गुन ग्यान ।
घरथा कूप अनूपम बानी हुसभूप चिद्रूप निसान ।
गोमटसार धार द्यानत नैं कारन जीव तत्व सरधान ।
अक्षर अरथ अमिल जो देखौ लेखो सुद्ध छिमा उर आन ॥२५॥

Colophon : इति दरब चौबोल पचीसी संपूर्णम् ।

१२३७. दसबोल पचीसी

Opening : छप्पय —एक सरूप अभेद दोय ······ · ।
· ··· जिह तिह विध भवजल तरी ॥१॥

Closing : वृषभसेन गुणसेन ·· — यह पुद्गलमग्जायहं ॥२५॥ ।

Colophon इति दसबोल पचीसी सपूर्णम् ।

१२३८. दसबोल पचीसी

Opening : देखें, क्र० १२३७ ।

Closing देखे, क्र० १२३७ ।

Colophon इति दसबोल पचीसी सम्पूर्णम् ।

१२३९. दशथान चौबीसी

Opening : रिषभदेव रिषभदेव छोर गभीर धीर धुनि ।
चार वीस जगदीश ईश ते ईस दुगुन गुन ।
सुरग ठांम निज नाम मातपुरतात वरन तन ।
आव काय सुभचिह्न मुकुत आसन दस वरनन ।

असगाय पुन्न उपजाय बुद्ध पाय करो मगल अमर।
सिरनाय नमो जुग जोर कर भो जिनद भो तापहर ॥१॥

Closing : जै जै मल्ल ब्रह्मचारिज अटल बल सकल बनाए।
एक एक जिन स्वाम नाम वस दस गुन गाए।
सुनत सुनत चित चुनत धुनत दुख सतत प्रानी।
धानतराय उपाय गाय जिन पाय कहानी।
गद जनम जरामृत नहि मग एक उवदविगर।
सिरनाय नमौ जुग जोरि कर भो जिनद भौ तापहर ॥३०॥

Colophon : इति श्री दसथान चौबीसी सपूर्णम्।

१२४०. ढालगग

Opening : देव धरम गुरु वदिके कहू ढाल गण सार।
जा अवलोके बुद्धि उर उपजे सुभ करतार ॥१॥

Closing : अब जनमै नाही या भवमाही मदके माई सबजानी।
तुमको जो ध्यावै तुमपद पावे कवी कहावै अधिकानी ॥६२॥

Colophon : इति श्री ढालगण सम्पूर्णम्। श्रीरस्तु।

१२४१. ढालगण

Opening : देखे, क० १२४०।
Closing : देखे, क० १२४०।
Colophon : इति श्री ढालगण सम्पूर्णम्।

१२४२. दोहा

Opening : अपनो पद न विचार कैं अहो जगत के राइ।
भवबन छाय कहा रहे सिवपुर सुधि विसराइ ॥१॥

Closing : रूपचद सद्गुरुनिकौ, अनु बलिहारी जाइ ।
आपुन वे सिवपुर गए, भव्यनु पथ दिखाई ।।१०१।।

Colophon : इति श्री पडित रूपचद विरचिते दोहरा परमारथी समाप्ता ।
शुभं भवतु ।

१२४३. दोहावली

Opening : जिनक वचन विनोदते प्रगटे शिवपुर राह ।
ते जिनेद्र मगल करो नितप्रति नयो उछाह ।।१।।

Closing : जो सम्यक्त सहित ··· सोना और सुगन्ध ।।

Colophon : नही है ।

देखें, जै सि० भ० ग्र० I, क्र० ५०८ ।

१२४४. दोहावली

Opening : देखें, क्र० १२४३ ।

Closing : देखें, क्र० १२४३ ।

Colophon : नही है ।

विशेष— चार जगह दोहावली शीर्षक देकर दोहे लिखें गये हैं । चारो में चार-चार पत्र है जिनमे एक समान दोहे दिये गये है ।

१२४५. दोहावली

Opening : देखें, क्र० १२४३ ।

Closing : देखें, क्र० १२४१ ।

Colophon : नही है ।

१२४६. द्विपञ्चाशतिका

Opening : अतिसूछिम करि ... . लेपये छानियें ।।२२।।

Closing : बावन कवित एतौ मेरी मतिमान लए ।
हस के सुभाइ ग्याता गुण गहि लीजियो ।।४५२।।

Colophon : इति श्री बनारसीदास नामांकित द्विपंचाशतिका समाप्ता ।

१२४७ फुटकर-काव्य

Opening : अब हम देव का सरूप जिन सिद्धान्त के अनुसार वर्णन करते हैं सो सर्व सभासद सज्जन महासयो कू श्रद्धान करण योग्य है ।१।।

Closing : देहे निर्ममता गुरौ विनयता नित्य श्रुताभ्यासता ।
चारित्रोज्वलतामहोपशमता संसारनिर्वेदता ... .. ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१२४८. ज्ञानसूर्योदयनाटक

Opening : अनाद्यनतरूपाय पंचवर्णात्मिमूर्त्तये ।
अनतमहिमाप्राप्त सदाकार: नमोस्तु तै ।।१।।

Closing : अस्पष्ट ।

Colophon : इति श्रीवादिचद्र आचार्यकृत श्री ज्ञानसूर्योदयनाटक सपूर्णम् श्री पाठकाना शुभ भूयात् । श्रीरस्तु कल्याणमस्तु लिखित पडित परमानदेन मिति माघ कृष्ण तिथौ तृतीयाया रविवासरे सवत् १६२८ का लक्ष्मणपुरसमीपे पैतुरनगरे जिन चैत्यालये ।

देखे, रा० सू० III, क्र० ८६ ।

१२४६. जैन-रासौ

Opening : अर्हंता छियाला सिद्धा अट्ठे सूर छतीसा ।
उज्झाया पणवीसा अट्ठाईसा हवेई साहूण ।।

Closing : जे नर आप घात कर मरौ होइ तिरजंच चिहूं गति फिरौ।
संसारा दुख भोगवौ दिख आपु धनुरौ घाई ···· ···· ॥

Colophon : अनुपलब्ध।

रा० सू० III, पृ० १४१,

१२५०. जकड़ी

Opening : अब मन मेरे बे सुनि सुनि सिख सयानी।
जिनवर चरनो बे करि करि प्रीत सज्यानी॥

Closing : धन्य धन्य सतगुर के नायक सब सुखदायक तिहुंपन में।
जिन सो समक्ष परी सब भूवर सदा सरन इस भाव बन में॥

Colophon : इति सिस्य जकड़ी सपूर्णम्।

१२५१. जोगीरासो

Opening : आदि पुरुष जो आदिज गोत्तमु, आदि जति आदिनाथो।
आदि जगत गुरु जोग पयासिउ जय जय जय जगनाथो॥

Closing : योगीय रसौ सिखहु रे श्रावग दोसुण को लीजै।
जो जीनदास हंत्रि विधि हिए सिखह सुमिरणु कीजै॥४२॥

Colophon : इति जोगीरासु समाप्ता।

रा० सू० III, पृ० १६५।

१२५२ कवित्त

श्री जिनराज गरीबनेवाज सुधारन काज सबै सुखदाई।
दीनदयाल बड़े प्रतिपाल दया गुनमाल सदा सिरनाई॥
दुरगति टारन पाप निवारन हौ भवतारन की भवताई।
बारबार पुकार करौ जन की विनती सुनिए जिनराई॥

Colophon : इति श्री नंददासेन कृता मानमजरी नाममाला सपूर्णम् । शुभम् अस्त । पाठकस्य शुभ भूयात् । संवत् १८०६ । शाके १६७१ ।। पौष वदि अष्टमी गुरुवासरे पुरैनिआ नगरे फतेहपुर ग्रामे श्री खेदु पाण्डेय पुस्तकमिदं लेखि ।

१२५८. नवरत्न-कवित्त

Opening : धन्वतरि छिपनकअमरघटकर्प्पवेताल ।
वररुचि-सकु-वराहमिहरकालिदासनवलाल ।।।१।।

Closing . कुलवंत पुरुष कुलविधि तजै वधु न मानै वन्धु हित ।
सन्यास धरिधन सग्रहै ए जग में मूरख विदित ।।

Colophon इति नवरत्न कवित्त समाप्त ।

१२५९. नेमिचन्द्रिका

Opening . अस्पष्ट ।

Closing . अस्पष्ट ।

विशेष-- यह ग्रंथ एक गुटका है, जो बहुत ही अस्पष्ट है । बीच के कुछ पत्र पढे जा सकते हैं ।

१२६०. नेमिचद्रिका

Opening : आदिचरण हिरदै धरौ, अजित चरणचित लाइ ।
सभव सुरत लगाइकै अभिनदन मनु लाइ ।।१।।

Closing : तौ होई ब्याह को साज काज बहुविधि सो कीन्हो ।
देस देस प्रति नृपति सबनि को ˮ ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१२६१. नेमिचंद्रिका

Opening : देखें, क्र० १२६० ।

Closing : नेम चंद्रिका ज पढ़ै जाको पुन्य प्रकाश ।
आसकरन लघु वीनवै जिनवानी को दास ॥२१६॥

Colophon : इति नेमचद्रिका सपूरन ।

१२६२. नेमिनाथ बारहमासा

Opening : देखे, क्र० १२३२ ।

Closing : देखे, क्र० १२३२ ।

Colophon : इति श्री नेमनाथ राजुलमती का बारहमासा प्रतीकुनर सपूर्णम् ।

देखे, रा० सू० III, पृ०

१२६३. नेमिनाथ विवाह

Opening : एक समै जो समुद्र विजै द्वारका मह नेम को व्याह रचो है ।
गावत मगलचार वधू कुल में सपके जो उछाह मचो है ।
तेल चढावन को युवति अपने अपने कर थाल मच्यो है ।
नेग करे सब ब्याहन को घर मंडप चित्र विचित्र खिचो है ।

Closing : नेम कुमार ने जोग लियो दिन छप्पन लो छद्मस्त रहो है ।
केवलज्ञान भयो प्रभु को तब आठविभु तम दान मही है ।
सात से बर्ष विहार कियो उपदेशते धर्म महा मही है ।
निर्वान गये गुनि पाँच से छप्पन लाल विनोदिक ने सग गही है ।

Colophon : इति श्री नेमिनाथ का ब्याहुला समाप्तम् ।

देखे रा सू० III, पृ० ८४ ।

१२६४. नेमिनाथ विवाह

Opening : देखे, क्र० १२६३ ।

Closing : देखें, क्र० १२६३ ।

Colophon : इति श्री नेमनाथ का ब्याहुला सम्पुर्णम् ।

१२६५. नेमिनाथ विवाह

Opening : देखें, क्र० १२६३ ।

Closing : देखें, क्र० १२६३ ।

Colophon : इति श्री नेमनाथ का व्याहुला समाप्त ।

१२६६. पखवारा

Opening : पड़िवा पथम कला घटि जागी परम प्रतीत रोग रस पागी ।
प्रति प्रतिपदा प्रीत उपजावै वहै प्रतिपदा नाम कहावै ।।१।।

Closing : पूर्ण्यो पूरण ब्रह्म विलासी पूरण गुण पूरन परगासी ।
पूरण प्रभुता पूरण वासी कहै जती तुलसी वनवासी ।।

Colophon : इति पखवाराजी समाप्तम् ।

१२६७. परमार्थजकड़ी

Opening : अरहंत चरन चित ल्यावो, फुनि सिद्ध सिव कर ध्यावो ।
वंदी जिन मुद्राधारी निर्ग्रंथ जती अविकारी ।।१।।

Closing : न अघाय यौं होरमै तिस दिन ए कछि नहूं ना चुके ।
नहि रहै बरज्यो बरजदेख्यो बार बार तहां धुके ।
श्री जिन सिद्धान्त सरोज सुंदर ताहि मध्य लगाईए ।
रामकृष्ण ग्लाज याकी कीए एही सुख पाईए ।।८।।

Colophon : इति श्री रामकृन जकरी संपूर्णम् ।

देखे, रा० सू III, पृ० १३७ ।

१२६८. पिंगल

Opening : मुरलीधर श्रीधर सुकवि मानि महामन मोद ।
कवि विनोद को यहु कियो उत्तम छंद विनोद ।।१।।

Closing : रूपक घनाक्षरी मे गुर लघु नियमन वतिस वरन वर रचिये चरन चारि ।
कीजै विसरामतित आठ आठ अक्षर पै अन एक लघु तौ नियम करि करि धारि ।
या विधि सरस भाग गुण गुरु सेसनाग कीनो कविराजनि के काज बुद्धि कै विचारी ।।
भाषा सिंधु तरिवेको आग्रे छंद करिवेको पिंगल बनायो पढ़िये मे सुद्ध कै सुरि ।।

Colophon : इति श्री कवि विनोद मुरलीधर श्रीधर कृतो वर्नवृत्त परिच्छेदो-नाम षोडसमो विनोद ।

दोहा— श्रीरणा परया पत्थ रस रस बसु ससिवामक ।
सुभ भद्रा मित पक्ष दिण अगारक मतिवक ।।१।।
अपर च — तिथितनिदुभ पुनर्बसुबेला लाभ विराजु ।
राम सहाय लिखितमिद पिंगलग्रथ सुमाजु ।।२।।
इति श्री पिंगल समाप्तम् । शुभम् अस्तु ।

१२६६. राजुल-पचीसी

Opennig . प्रथम सुमरो अरिहत देव ···· सौं विनती करी ।।

Closing : यह लाल विनोदी गावै सुनत सब जन गहवरे
राजुलपति श्री नेमि जिन सब संघ को मंगल करे ।२६।।

Colophon : इति श्री राजुल पचीसी जी समाप्तम् ।

देखे, रा० सू० III, पृ० ८५, १३१, १४६ ।

१२७०. राजुल-पचीसी

Opening : देखें, क्र० १२६६ ।

Closing : देखो, क्र० १२६६ ।

Colophon : इति राजुल पचीसी संपूरन ।

१२७१. राजुल-पचीसी

Opening : सुनु भविजन हो प्रथम ही प्रथम जिनेन्द्र चरन चित ल्याइए ।
सुनु भविजन हो सारद गुरु हि मनाइ जादो राय गाईए ॥१॥

Closing : गावै विनोदीलाल हरषित भविक जनन सुनावई ।
और गावै नर नारी मोउ अमर पद पावई ॥२५॥

Colophon : इति राजुल पचीसी संपूर्णम् ।

१२७२. राजुलपचीसी

Opening : देखें, क्र० १२६६ ।

Closing : देखे, क्र० १२६६ ।

Colophon : इति श्री राजुल पचीसी समाप्तम् ।

१२७३. राजुलपचीसी

Opening : वंदी वे प्रथमही ... राजमनि जस गाई मो जीवे ॥

Closing : अस्पष्ट ।

Colophon : इति सपूर्णम् ।

१२७४. रिस्ता

Opening : कीऐ श्रीनायक तीनी हिए व्यापत है ।
तिहारे दर्शन .... पाप नासत है ॥

Closing : गहे जिननाथ को — जागे है ॥

Colophon इति रेखता समाप्तः ।

१२७५. रिस्ता

Opening : मुझे है चाव दर्शन का निहारोगे तो क्या होगा ।
गही अब तो सरन तेरी उबारोगे तो क्या होगा ।।

Closing : हरो दुख मो समा अबही, लगा जू संग साग है ।
प्रभु यह अरज चित्त धरियें नवल वेरा तुम्हारा है ।

Colophon : इति रेषता । इति श्री पूजा जी की पोथी जी समाप्तम् । संवत् १८५३ शाके सत्रै सै अठारै आश्विन सुदी ६ वार बुद्ध को लिपकरी नजबगढ मध्ये पूज्य रिषि श्रीश्री पूज्य रिषि महाराज जी पेमारिष जी शिष्य हसराज जी तत् शिष्य रामसुख लिखापितम् ।

१२७६. रिस्ता

Opening : मेरा मन महावीर सो लगा ।
खडे हाथ जोर के आए, दरस टुक दीजिए हमको ।
सरन है आज जिनवर का ।।१।।

Closing : एक बुरा कुगुर उपदेश सुणै मति माना ।
तेरी अलप उमर खिरि जाय नरक उठ जाना ।।

Colophon : इति समाप्तम् ।

१२७७. रूपचन्दशतक

Opening : अपनो पद न विचारहू, अहो जगत के राय ।
भव बन छाया कहा रहे, सिवपुर सुधि विसराय ।।१।।

Closing : रूपचंद सद् गुरुनिकी जनु बलिहारी जाई ।
आपुन वे सिवपुरी गए, भव्यन पथ दिखाई ।।१०७।।

Colophon : इति श्री पाण्डे रूपचद शतक समाप्तम् ।

१२७८. सतसइया

Opening : श्री गुरनाथ प्रसादतें होय मनोरथ सिद्ध ।।
— — ज्यौ तरू वेलि दल फूल फलन की वृद्धि ।।

Closing : आई अवधि विवेक की देखो कोन अनषाय ।।
काग कनक कै पीतरै हस अनादर भाय ।।

Colophon : इतिश्री वृदावन जी कृत सतसइया चैत्र शुक्ल १५ संवत् १९५३ गुरुवार आठ बजे रात्रि को आरामपुर मे बाबू अजित दास के पुत्र हरीदास ने लिखकर पूर्ण किया ।

विशेष--- डा० नेमिचन्द्र शास्त्री कृत तीर्थङ्कर महावीर और उनकी आचार्य परम्परा नामक पुस्तक मे वृन्दावन की प्रवचनसार, तीस चौबीसी पाठ, चौबीसी पाठ, छन्दशतक, अर्हत्पाशाकेवली वृन्दावनविलास आदी ग्रंथो का उल्लेख है लेकिन सतसइया का कोई उल्लेख नही है ।

१२७९. समकिताधिकार

Opening : श्री ॐकार हियइ धरी लहि सरसनि सुपसाय ।
समकित गुण फल वर्णउ इह पर भवि सुखदाय ।।१।।

Closing : विजय दशमी श्री मूठापुर वर सघ सुकल सुखदाई जी ।
वाचक मानव दइ सुखदायक सुणता लील वधाई जी ।।

Colophon : इति समकिताधिकार श्री अरहदास सबन्ध. । सवत् १७०२ वर्षे भाद्रपद मासे शुक्लपक्षे दशम्या दिन गुरुवार लिखित श्री काला कुन्है ग्रामे । शुभ भवतु न: सदा श्री । श्री ।

१२८०. सम्मेदशिखर माहात्म्य

Opening : श्री जिनवर के पूजोपद सरस्वति सीस नवाय ।
गनधर मुनि के चरन नमि भाषा कहो वनाय ।।६।।

Closing : ब्यालीस मुनी अनागार। मुक्त गये जग के आधार ॥
पाहि कूट को हरस न करे। कोड उपवास तनो फलभरे ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१२८१. सम्मेदशिखर माहात्म्य

Opening : देखे, क० १२८२।

Closing : समोसरण में जायके वंदे वीर जिनेन्द्र ।
अहो नाथ तुम दरसन तें कटै करम के फंद ॥८४

Colophon : नहीं है ।

१२८२. सम्मेदशिखर माहात्म्य

Opening : श्री मसेवित चरण कमल जुग सब सुख लाइक ।
श्री मिवलोक विलोक ज्ञानमय होत सुनाईक ।
अनमित सुख उद्योत कर्म्म वैरी घनघाइक ।
ज्ञान भान परगास पद सब सुखदाइक ।
ऐसैं महत अरिहृत जिनन्द निसि दिन भावसो ।
पाओ प्रमाण अविचल सदन वीतराग गुन चावसो ॥१॥

Closing : बीस हजार वरष बीतत मानसीक तह असन करत ।
दस दुनि पखवारे गए परिमल सहि ··· ··· ···· ॥

Colophon : Missing.

१२८३. शिखरमाहात्म्य

Opening : पंचगुरु को नमो दोकर सीसनवाय ।
श्री जिन भाषित भारती तांको लागो पाय ॥१॥

Closing : रेवा सहर मनोग वर्में श्रावग भव्य सब।
आदित्य ऐश्वर्ययोग तृतीय पहर पूरण भयो ॥३७॥

Colophon : इति श्री सम्मेद शिखरमहात्म्ये लोहाचार्यानुसारेण भट्टारक श्री जगत्कीर्ति तच्छिष्य लालचंद विरचिते सुवरवरकूटवर्णनो नाम एकविंशतिम. सर्गः समाप्तः । सम्पूर्णमिति ।

दोहे — सम्वत् अष्टादश शतक वानवे अधिक सुजान।
फाल्गुन कृष्ण अष्टमी बुधे पूरण भये गुणखान ॥ ॥
रघुनाथ दूज के लिखे भव्यन के धर्म काम।
वाचें सुनें सद्दहै पावें सर्व सुखधाम ॥

१२८४. शिखरमाहात्म्य

Opening : अजितनाथ सिद्धवर कूट। अस्सी कोडि एक अरब चौवन लाख मुनि सिद्ध भये बतीस कोटि उपास का फल इस कूट के दर्शन का फल है।

Closing : पार्श्वनाथ सुवर्णभद्रकूट। सम्मेदशिखर सुवर्ण कूट ते पार्श्वनाथ जिनेंद्रादि मुनि एक करोड़ चौरासी लाख पैंतालीस हजार सात सौ ब्यालीस मुनि सिद्ध भये इस कूट के दर्शन ते सोरा करोड उपास का फल है।

Colophon : अनुपलब्ध।

१२८५. सोलहकारणरासा

Opening : वीर जिनेस्वर नमसकरी ··· ·· ··· जहाँ हेमप्रभ घन यसा ॥१॥

Closing : सकलकिरत ए रासा कीयो ए सोलह कारण।
पढ़ै गुणै जे संभलै तिण शिव सुहकारण ॥७॥

Colophon : इति सोलहकारण रासा जी समाप्तम्।

१२८६. श्रुतपंचमीरासा

Opening : वरत अठाई जे करै ते पावै भवपार प्राणी ।
जबूद्वीप सुहामणो लष योजन विस्तार प्राणी ॥१॥

Closing : नरनारी जे रास सुणै, मन वच रुचि गावहि ।
सुख संपति आणंद लहै, वछित फल पावहि ॥१०१॥

Colophon : इति श्रुतपचमी रासा।

विशेष—इसके साथ अठाई रासा भी है ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ५१६ ।

१२८७. श्रीपालदर्शन

Opening : ॐ नमः सिद्धे मनधर सत उदघाटे जुग पाट तुरन्त ।
उघटवार भरम भजि गयो पुण्य फलै दरसन तुम भयो ॥१॥

Closing : बिनुथुलै सोहै प्रतिबिंब भवि जन प्रीति बाढै अनत ।
अजयना — .... ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

देखें, रा० सू० III, पृ० १४३ ।

१२८८. सुभाषितावली

Opening : सारात्सार प्रवक्ष्यामि कथित ग्रथकोटिभि ।
परोपकाराय पुण्याय पापाय परपीडनम् ॥१॥

Closing : मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत् ।
आत्मवत् सर्वभूतेषु पश्यति तद्विदो विदुः ॥

Colophon : नहीं है ।

१२८९· बाहुबलि

Opening : दोऊ सूर महासुभट भरतबाहुबल वीर ।
अति साज चले रण लरिवेकौं अतिधीर ॥

Closing : सत्रै सं चलहोत्तरं भादौ सुदि सुभवार ।
सुकल पक्ष तेरस भनी गावै मंगल च्यार ।

Colophon : इति श्री भरत बाहुबलि भाषा समाप्तम् ।

१२९०. विवेक-जकड़ी

Opening : चेतन तेरो वानौ चेतन दानौं चेतन तेरी जाति वेवेही
हातै मति खोई जाति बिगोई रह्यो प्रमादनि भाति वेवेहो ॥

Closing : कुदकुद आचारज गुरुवयणहि मूरख चितन सभालं ।
आपन औगुण सहज सुनिर्मल जो जिनदास सुपालै ॥

Clolophon : इति विवेक जकरी ।

१२९१. व्यवहारपचीसी

Opening : सम्यग् पदधारी तीनलोक अधिकारी क्रोध लोभ परिहारि ऐसो
महाराज है ।
सबकौ समान गिना राग दोष भाव बिना नाही पास तिना सक-
सौ को सिरताज है ।
ताही को बषाण्यौ धर्म्म सोई सांच सोई पर्म और को कह्यो
अधर्म झूठ को समाज है ।
सिवपुर बाट के वटाउनि को संबल है सुख को दिवैयो महाकाज
मांहि नाज है ॥१॥

Closing : चाहत धन सतान .... आनताहि वहे है ॥२६॥

Colophon : इति श्री व्यवहार पचीसी समाप्तम् ।

१२६२. भक्तामरस्तोत्र-मंत्र

Opening : इत्थ यथा तव विभूतिरभूजिनेंद्र धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य । यादृक् प्रभादिनकृत: प्रहतान्धकार तादृक्कुतोग्रहणस्य विकाश-नोपि ॥ ॥

Closing : श्री भक्तामरजी की महिमा बहुत भारी है भारी जानना यामे जेति सिद्धि अरु मत्र है सो सपूर्ण सिद्धि मंत्र उपकार के वास्ते एक एक काव्य के एक-एक मत्र का थोडा-थोडा फल विध सुधा लिखा ऐसा जानना ।

Colophon : इति श्री भक्तामरनामा श्री आदिनाथ स्वामी का स्तोत्र श्री मान-तुंगाचार्य विरचित समाप्त: ।

१२६३. भक्तामरस्तोत्र-मंत्र

Opening : भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणामुद्योतक दलितपापतमोवितानम् । सम्यक प्रणम्य जिनपादयुग युगादा वालवन भवजले पतितां जनानाम् ।

Closing : ऋद्धि मंत्र जपिवा यत्र पूजनात् अष्टोत्तरशत् जाप नित्य कीजै दिन ४६ सर्व वस होवें जिसको नामचितै सो वस होवै व्रत कीजै ।।४८।।

Colophon : कुछ नही है ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ५५५ ।

१२६४. चौबीस-तीर्थंकर-मंत्र

Opening : ॐ ह्रीं श्री चक्रेश्वरी अप्रतिचक्रे फुट विचकाउरूभेईमवा सर्व-शान्ति कुरू कुरू स्वाहा ।

Closing : अमोघ लक्ष्मी मिले ताज संग्राम व्यापार सर्वत्र जय होय
तथा वार ७ नित्य स्मरण करना सर्वकार्य सिद्धि होय ॥

Colophon : इति मंत्र सम्पूर्णम् ।

१२६५. गायत्रीमंत्र

Opening : ॐ भूर्भवः स्व तत् सवितुर्वरेण्य भर्गोदेवस्य धीमही धीयोयोनः
प्रचोदयात् ।

Closing : मृतप्राणायाम प्रवर्तकेन तीर्थङ्करदेवेन वृषभसेनादिगौतमांते
गणेशमहर्षिणा गायत्रीछदमा गायत्रीसमाख्यनाऽनेन दिव्यमंत्रेण
त आदि ब्रह्माण तुष्टु दुरितिसंक्षेपेण ननु निरूपितः

Colophon : इति गायत्रीव्याख्या सम्पूर्णम् ।

१२६६. घंटाकर्णमंत्र

Opening : ॐ घंटाकर्णो महावीर. सर्वव्याधिविनाशका. ।
विस्फोटकभय प्राप्तिः रक्ष रक्ष महाबल ॥१॥

Closing : नकाले मरणं तस्य न च सर्पेण दस्यते ।
अग्नि चोरभयं नास्ति ॐ ह्रीं श्री घंटाकर्णो नमोऽस्तुते ॥४॥

Colophon : इति घटाकर्ण मंत्र ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ५६५ ।

१२६७. घंकाकर्णमंत्र

Opening : देखें, क्र० १२६६ ।

Closing : देखे क्र० १२६६ ।

Colophon : इति घटाकर्ण मंत्र ।

१२६८. होमविधि

Opening : श्री शांतिनाथममरासुरमर्त्यनाथ
भास्वति किरीटमणिदीधिति पादपद्मम् ।
त्रैलोक्यशांतिकरणं प्रणवं प्रणम्य
होमोत्सवाय कुसुमांजलिमुक्षपामि ॥

Closing : शांतिनाथ नमस्कृत्य सर्वविघ्नोपशांतये ।
सर्वभव्योपशांत्यर्थं होमायमुच्यते ॥

Colophon : इति होमविधान सम्पूर्णम् ।

१२६६. जैनगायत्री

Opening : आनादिनिधन मंत्र पचत्रिंशत् तदक्षरम् ।
पचाक्षरमिति ब्रूयात् चतुर्दशमथापि च ।।३।।

Closing : अनादिनिधनो मंत्रो गायित्रीमंत्रसंयुता ।
नित्य च जाप्यते योऽय महामंगलदायकम् ।।१०।।

Colophon : इति श्री जैनगायित्री सम्पूर्णम् ।

१३००. जैनसंकल्प

Opening : ॐ यजमानाचार्यप्रभृतिभव्यजनानां स धर्मश्रावणाया-
रोग्येश्वार्याभि: वृद्धिरस्तु ··· ··· ··· ।

Closing : ··· ··· देवोहं अमुकमंत्रस्य सत्यष्टोत्तर ··· ··· अमुक
लाभाय जपं करिष्ये ।

Colophon : नहीं है ।

१३०१. जिनेन्द्र-स्तोत्र

Opening : तनो गधकूटीमध्ये जिनेन्द्राय हररःमयीम् ।
पूजयामास गधार्घ रभिषेकपुर सरम् ।।

Closing : लक्ष्मीवानभिषेकपूर्वकमसो श्रीवज्रजधो विभुः
द्वात्रिशमुकुटप्रबधमहितक्ष्माभृत् सह ··· ।

Colophon : इति स्तोत्र समाप्तम् ।

१३०२. कामदा-यत्र

Opening : दिवाली के रात को लिखना भोजपत्र पर अप्टगन्ध सो
भुजा मे बाध राखै ।

Closing : अगर मिश्री घी इन सबकी धूप देय ।

Colophon : लिखतं मुन्नीलाल दिल्ली वाले ।

१३०३. क्रियाकाण्डमंत्र

Opening : ॐ भूर्भुवः स्व अर्ह असि आउसा सम्यक्दर्शनज्ञानचारित्रिधारिकेभ्यो
नम. । बार १०८ नित्य जपिये ।

Closing : मध्यम तर्जनीऽनामिका अगरीनिजीवन स्वाम ।
अगुष्ठासो जपमाल कवि गुणी एक बहुतास ।।

Colophon : नही है ।

विशेष— यह ग्रंथ इतना पुराना एव सडा हुआ है कि पढ़ा नही जा
सकता ।

१३०४. महालक्ष्मी

Opening : मत्र— ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्मी सर्वसिद्धि कुरू कुरू
स्वाहा ।।

Closing : दिन २१ तक जप करना, धूप षेवना गुगुल, अगर, तगर, नाग-रमोथा, छरुछड़ीला, कचूर, गिरीदाख, बदाम छोहारा, मिश्री घी, का होम करना लक्ष ॥१२५०००। सर्वसिद्धि होय शत्रुभय मिटे लक्ष्मी मिले ।

Colophon : कुछ नही है ।

१३०५. मंत्र

Opening : ॐ नमो वृषभनाथ मृत्युंजयाय सर्वजीवशरणाय परममंत्राय पुरुषाय चतुर्वेदायतताय ...
.... मम सर्व कुरु-कुरु स्वाहा ॥१॥

Closing : ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय हंसमहाहंस: परमहंस: कोहंम: अर्हंहंस पक्षिमहाविषक्षि ह्लू फट् स्वाहा ।

Colophon : इति मंत्र सम्पूर्णम् ।

१३०६. मंत्र

Opening : ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीपार्श्वनाथाय धरणेंद्रपद्मावतीसहिताय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल महाग्निस्थंभय-२ ॐ क्रो प्रो प्री प्र. ठ ठ स्वाहा ।

Closing : अभिषेक मुंद्धि तिहका नाना तलै न्हावै-उपवास १०० एक भक्त करैं जु पाली पाषी देय वें का हाथ को अहार लेणूं नही ।

Colophon : इति सपूर्णम् ।

१३०७. मंत्रसंग्रह

Opening : ॐ ह्रों ह्री हूँ ह्रौ ह्रँ ह्र: असिआउसाय नम अपराजित मंत्रोय विघ्न नासय नासय कुरू कुरू स्वाहा ।

Closing : ॐ छो छो छों छः अस्मिन्पात्रे अवतर अवतर स्वाहाः ।
विधि ॥ पेड़ा ३ ॥ बार १०८ ॥ मत्रसो पठको आनाही-
बोनेता ....।

Colophon : नही है।

१३०८. मंत्रयंत्र

Opening : ॐ क्रो क्रौं क्रौ क्रो क्रो मही अमुकी नामान्याः पतस्याः सर्वत्र-
जयसौभाग्य प्रियवल्लभत्व पतिपूजादिसौख्य ... . – ।

Closing : .... नीबू को चूहा के बिलमें गाडिये उपर जूती तीन
नाम लेके मारिये दिन तीन ताई जूती मारिये नाम लेता जाईये ।

Colophon इति मत्र यत्र समाप्तम् ।

१३०९. नमोकारमंत्र

Opening : कहा सुर तरु कहा चित्रावलि कामधेनु कहा रसकुप कहा पारस
के पान ते ।
कहा रसपायें औ रसायन कमाये कहा कौन काज होते तेरो
लक्ष्मी के आगे ते ॥

Closing कान्हबल धाईवेको कान्ह के कमाईवे को कान्हबल लगावे को
काहु के उधार के ।
कहत विनोदीलाल जपतहो तिहुकाल मेरे है अतुलबल मत्र नव-
कार को ॥

Colophon : इति णमोकार मत्र माहात्म्य समाप्तम् ।

१३१०. पद्मावतीदडक

Opening : ॐ नमो भगवते त्रिभुवन संकरी ।
सर्वाभरणभूषिते पद्मासने पद्मनयने ॥१॥

Closing : जृंभे ह्रीं मोहनीय हिलि हिलि ... ... मां रक्ष पद्मे ॥८॥
Colophon : इति पद्मावती चक्र संपूर्णम् ।

१३११. पद्मावतीकल्प

Opening : कमठोपसर्गदलन त्रिभुवननाथं प्रणम्य पार्श्वजिनम् ।
वक्ष्येभीष्टफलप्रदभैरवपद्मावतीकल्पम् ॥१॥
Closing : अपराजितेर्के वा अमुकी मोहय-मोहय स्तंभिनी ... ...
मम वश्य कुरु-२ स्वाहा ।
Colophon : नहीं है ।

१३१२ पद्मावतीकल्प

Opening ॐ अस्य श्री पद्मावती मंत्रस्य सुरासुरविद्याधर-नागेन्द्र-महाऋषि-
पतिर्वृद्धगायत्री छद श्री पद्मावती देवता कमलबीज वाग्भव
शक्तिप्रणवकीलक मम धर्मार्थकाममोक्षार्थ जपे विनियोगः ।
Closing : जृंभे ह्रौं मोहनीय हिलि हिलि रमणे मर्द मर्द प्रमर्द दुष्टे
निकाधिकारे दह दह दहने हेन ... ह्रां ह्री
ह्री ह्रूं प्रसन्ने-प्रहसित वदने रक्ष मां देवि पद्मे ।
Colophon : इति श्री पद्मावतीपटल पद्मावतीकल्प समाप्तम् ।

१३१३. पद्मावतीकवच

Opening : देखे, क्र० १३१२ ।
Closing : इद कवचं ज्ञात्वा पद्मया स्तौति यो नरः ।
कल्पकोटि शतेनापि न भवेत्सिद्धिदायिनी ॥१८॥
Colophon : इति पद्मावती कवचम् ।

१३१४. पद्मावतीकवच

Opening : ॐ अस्य श्री पद्मुखी पद्मावतीकवचस्तोत्रस्य श्रीरामचन्द्रऋषिकृत अनुष्टुपछन्दः पद्मुखीपद्मावती देवता ॐ अं मुनिसुव्रति इति बीज ॐ चिन्तामणिपार्श्वनाथ इति शक्ति ॐ धरणेन्द्र इति कीलक श्री रामचन्द्र तव प्रसादसिद्धयर्थं सकललोकोपकारार्थे पद्मुखीपद्मावती स्तोत्र जपे विनियोगः।

Closing : नववार पठेन्नित्य राजभोग समाचरेत् दसवार पठेन्नित्य त्रैलोक्य ज्ञानदर्शनम्।
एकादश पठेन्नित्य सर्वसिद्धिर्भवेश्वरः कवचस्मरणनैव महाबल-
·मन्वितम्।

Colophon इति पद्मुखीपद्मावतीकवच सम्पूर्णम्।

१३१५. पद्मावतीकवच

Opening : ॐ अस्य श्री मन्त्रराजस्य परमदेवता पद्मावतीच·णांबुजेभ्यो नमः।

Closing . ॐ ह्रीं श्री पद्मावत्यै महाभैरवी नमः।

Colophon : इति पद्मावतीकवच संपूर्णम्।

१३१६ पद्मावतीकवच

Opening : देखे - क्र० १३१४।

Closing साक्षात् शिव पद का दाता ये इष्ट मंत्र है, नित्य जपने से सर्व मंगल होय है।

Colophon : नहीं है।

१३१७. पद्मावतीकवच

Opening : देखें, क्र० १३१४ ।

Closing : देखें, क्र० १३१४ ।

Colophon : इति श्रीराचचन्द्रऋषिकृत पचमुखीपद्मावती कवच ममाप्तेम् ।

१३१८. पद्मावतीमंत्र

Opening : ॐ णमो जिणाण ह्री ह्री ह्रो ह्रूँ ह्रो ह्रः ।

Closing : अथवा म ग्र के जाप दे लाल वस्त्र पहेर लीजे ।

Colophon : इति श्री पद्मावतीदेवी मत्र सपूर्णम् ।

१३१९. पद्मावतीमत्र

Opening : ॐ आं क्रों ह्रीं श्री पद्मावती देवी ह्रूँ क्ली ह्री नमः । जाप्य ३००००० कीजे ।

Closing : अत्रमाहनतुजनाभवृषभ — कालछया नित्यश ॥

Colophon : इति पद्मावती स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१३२०. पद्मावतीपटल

Opening : ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथधरणेद्रमहिलाय ... त्रैलोक्य महारिणा चामुंडा ।

Closing : ह्रा ह्री प्ली प्लू ह्रा ह्रा .. पद्मावती धरणी धरणींद्र आज्ञापयति स्वाहा ।

Colophon : इति पद्मावती पटल संपूर्णम् ।

१३२१. पन्द्रहयंत्र-विधि

Opening : आदसरै की चाल है मणों की घोड़े की चाल पहली सु नवकों हूँ मैं भरियै एक अंकसुं माड़ कै नव अक सु माड कै नव अक लिखियै नव को हुं में इसकी विशेष विधि कहियै दस वार लिखै तो लोक सर्वमोहित हुवै बीस वेर लिखै तो आर्वण हुवै तीस बार लिखै तो पृथ्वी में जय पावै ।

Closing : दग्धामाषतोल चैव शर्कराघृतसयुतैम् ।
कृष्णपक्षे तु चाष्टम्या वर्ति दत्वा मविरकं ? ॥४३॥

१३२२. पार्श्वनाथस्तोत्र-मंत्र

Opening : श्रीमद् वेन्द्रवंदामलमुकुटमणिज्योतिषा चक्र ।
········· पार्श्वनाथोत्र नित्यम् ॥

Closing : इत्य मंत्राक्षरोत्थं वचनमनुपम पार्श्वनाथस्य नित्यम् ।
··· - स्तौति तस्येष्टसिद्धि ॥

Colophon . इति पार्श्वनाथ स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१३२३. पार्श्वनाथस्तोत्र-मंत्र

Opening : ॐ नमो चन्डोग्र पार्श्वनाथ-तीर्थंकराय धरणेन्द्रपद्मावती सहिताय ।

Closing ·· - घोरोपसर्गविनाशनाय ह्रूं फट् स्वाहा ।

Colophon : इति चन्डोग्रपार्श्वनाथस्तोत्र सपूर्णम् ।

१३२४. पार्श्वनाथस्तोत्र-मंत्र

Opening : पार्श्वं यः पातुवो नित्य जिनः परमशंकरः ।
नाथः परमशक्तिश्च शरण सर्वं ·— ॥

Closing : त्रिसध्य यः पठेन्नित्यं नित्यमाप्नोति सश्रिय। ।
श्रीपार्श्वपरमात्मे ससेवध्व भोवुधासुकृत् ॥

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथस्तोत्र समाप्तम् ।

१३२५. प्रातगायत्री

Opening : पार्वत्युवाच देवेधिदेव देवाधिश्वदेवश परमेश्वर. पुरातनः वदुरत्रपरयाप्रोस्याविप्राणो मधि वदन मद्भक्ताना हितार्थाय वराण परमेश्वर सन्यासध्यानयुक्त च सूर्याध्यादि सुमाधन ।

Closing : इनि महावाक्य ॐ गायत्री चैकपदी द्विपद्री चतुस्पद्यपदसिनहि पद्यस नमस्तेतुरीयाय पदाय तुसीय पदर्शिताय नमो नमः एव चतुर्थाश्रमेन गृहस्थाना प्रसगेन प्रदर्शित ॥

Colophon : अथ प्रातगायत्री विधये सपूर्ण समाप्त. । सवत् १८२५ कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे ६ शनिवासरे पुस्तक लिख्यते हरयस मिश्र । कासि जी मे लिखी ।

१३२६. सकलीकरणविधान

Opening : स्नानानुस्नानशुद्धोधृतशितसुद्धोऽान्तरीयोत्तरीय,
सकल्पाचम्य प्राणामिति तममृत परिसेचन तर्पण च ।
आचम्या तस्य शुद्धि पुनरपि सतत शान्तमत्र षडागम्,
दिवस ज.पाऽिव.र परमजपयुत्त स्तोत्रदिक्.स्वयभु· ॥

Closing : ॐ णमो अरिहंताणं णमोसिद्धाण णमो आयरियाण ।
णमोउवज्झायाण णमो लोए सव्वसाहूण ।
इति पचपद जपेत् ।

Colophon . जिनवरदासस्य पठननिमित्ते लिखित टीकारामेन आरानगर मध्ये शुभम्भूयात् लेखक-पाठकयो आयुरारोग्यमस्तु ।

१३२७. सामयिकविधि

Opening : विधिपूर्वक पडिलेहण उपगरण प्रमार्जित स्थानकइ स्थापनाचार्य थापितई ।

Closing : ज्ञानपचमी तपग्रहण कुजमालाविधिः ॥२७॥ पासहपडिकमणा वावण विधि ॥२८॥ इत्यादि ।

Colophon : नहीं है ।

१३२८. शान्तिनाथ-मंत्र

Opening ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्त्तये, ॐ नमो शान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्व्वपापप्रणाशाय ।

Closing : सपूर्ण जप सख्या अडतालीस लक्ष प्रमाण निष्टा मना जपे पश्चात् सपूर्ण सिद्धि स्वयमेव पावै ।

Colophon : नहीं है ।

१३२९. सरस्वती-मंत्र

Opening : ॐ अर्हन्मुखकमलनिवासिनी पापार्हमक्षयंकरी
... ... मम विद्यासिद्धि कुरु-कुरु स्वाहा ।

Closing : ॐ ह्री श्री क्लीं महालक्ष्मी नम धारकस्य भाण्डागार ऋद्धि वृद्धिअनधसपूर्ण पूरय पूरय प्रताप विजयी कुरु कुरु स्वाहा ।

जाप सवालक्ष १२५००० दशास होम पचामृत को करें तो प्रभाव वृद्धि होय।

Colophon : इति विजयप्रतापमंत्र सम्पूर्णम्।

१३३०. सरस्वतीमंत्र

Opening . ॐ ह्री श्री वाग्वादनी सरस्वतो सारदा वुद्धिवर्द्धनी देवी कुरु कुरु स्वाहा।

Closing : इति। मंत्र अष्टोतर शत नित्य जपेत् विद्या प्रकास होइ।

Colophon नही है।

विशेष— इसमे मात्र एक ही मंत्र है।

१३३१. सरस्वतीमंत्र

Opening : ॐ ह्री श्री क्ली ब्लौं वद वद वाग्वादिनी भगवति सरस्वति परमब्रह्म मुखोद्भूते श्रुतांगिदेवि द्वादशांगेयो नम। मम विद्या-प्रसाद कुरु तुभ्य नम. ॥१॥

Closing : ॐह्री अर्हं णमोपादाणुसारिण ॥८॥
ॐ ह्री अर्हं णमो संभिन्न सोदराणम् ॥९॥

Colophon : नही है।

१३३२. सरस्वतीस्तोत्र

Opening : ॐ ऐं ह्री श्रीं मंत्ररूपे विबुधगननुतेदेवदेवेन्द्रवंद्ये।
.... — मनसि सदा सारदे तिष्ठदेवी ॥१॥

Closing : ॐ ह्री क्ली क्रूं श्रीं ह्री रों नमः लक्ष जापते सिद्धि होय।

Colophon : इति सारदा स्तुति।

१३३३. सोलहकारण मंत्र

Opening : ॐ ह्री दर्शनविशुद्धये नमः ।

Closing : ॐ ह्री प्रवचनवत्सलत्वाय नमः ।

Colophon : सपूर्णम् ।

१३३४. सूतक-विधि

Opening : इम सूतक देव जिनद कहे, उत्पति विनास द्विभेद लहै ।
जनमैं दस वासर को गनिए, मरिहै तब बारह को भनिए ।।१।।

Closing : ग्रथ सस्कृत तैं यहै भाषा कीनीसार ।
जो मन समय उपजै देखो मूलाचार ।।२४।।

Colophon : इति श्री मृतक विधि समुच्चय सूतक विधि सपूर्णम् ।

१३३५. तंत्रमंत्रसंग्रह

Opening : ॐ ह्रिं ह्री ह्रं ह्र ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः असिआउसा सम्यग्दर्श-
नज्ञानचारित्रेभ्यो ह्री · ···· नमः आचार्य श्रीरविसेनकस्य
रक्षा दृष्टिदोषनाश कुरु-कुरु स्वाहा ।

Closing : ॐ ह्रीं एकमुखी रुद्राक्षस्य शिवभांडागारे स्थिताय मम ईप्सितं
पूरय पूरय श्री आकर्षय दुष्टारिष्ट निवारय निवारय ॐ ह्रीं
नमः पीतपुष्पैर्जाप १०००० पश्चाद् नैवेद्य दसास होम एकमु-
मुखी रुक्षास ··· – ।

१३३६. त्रिवर्णाचार मंत्र

Opening : ॐ ह्रां ह्रिं ह्री ह्रु ह्रू ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रो ह्रः असिआउसा
सम्यग्दर्शनज्ञानिचारित्रेभ्यो ह्री नमः ।

Closing : लिखे उत्तराभिमुखी पद्मासन बीत पुष्पते पूजे ।
७२००० प्रयोग लक्ष्मी के वास्ते ।

Colophon : इति कुबेर मंत्र ।

१३३७. वशीकरण-अधिकार

Opening : अथात संप्रवक्ष्यामि ' प्रशस्यते ॥

Closing : राज्ञां कुले विवादे च अपेक्षास्त्यत्र संशयः ।
मानोन्नतिर्भवेत्तस्य यत्रराजप्रसादत. ॥

Colophon : इति ।

१३३८. वश्याधिकार

Opening : अतः परं देवि तत्र ब्रवीमि दौर्भाग्यहृ वृणि च कामिनीनम् ।
यत्राणि सौभाग्यविवर्द्धनानि संमोहनानि प्रियकामुकानाम् ॥

Closing : सुभगारूपपन्ना पति प्रियवरा भवेत् ।
ललिताख्य महामंत्रं स्त्रीणा सौभाग्यकारकम् ॥

Colophon : इति ।

१३३९. व्रत-मंत्र

Opening : ॐ ह्रीं असिआउसा दसपूर्व्वीण सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा ।

Closing : पत्र नैव करीय दारवटपे दोषो वसंतस्य किम्,
बिंदु नैव पतन्ति चातक मुखे मेघस्य किं दूषणम् ।
नालोकाय विपस्मते यदि दिवा सूर्य्यस्य किं दूषणम् ।
यत्पत्र विधुना ललाटलिखते तन्मार्यतंकक्षयः ॥१॥

Colophon : श्रीरस्तुमिदं शुभं भवतु ।

१३४०. विसर्जन-मंत्र

Opening : सुधाक्षतप्रसवसकुलरत्नदीपैः मानिक्यरत्नमयकांचनभाजनस्थैः ।
श्री ज्वालिनीचरणतामरसद्वयाग्रे सन्मगलार्त्तिकमहं त्ववतार-
यामि ॥१॥

Closing : जयजय जगदंबे ज्वालिनिस्रष्टबिंबे गजगमनविलंबे नागयुगेध्र-
नितंबे ।
हृतघनुजगदंबे भालखण्डेन्दुबिंबे नतजनुविकरवं याहिमक्तावलंबे ॥

Colophon : इति विसर्जन संपूर्णम् ।

१३४१. विवाह-विधि

Opening : या मदन गच्छेत् मंडपे तोरणान्विते ।
कन्याया जननी वेगादागत्य पूजयेद्वरम् ॥१॥

Closing : कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे ।
चपायां वसुपूज्यसज्जिनपते सम्मेद " ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१३४२. यंत्रमंत्रसंग्रह

Opening : गद्यं हिमनमिरपुरे मदीयनेत्रद्वो निवास कुरुदिव्यनेत्रं
गृहास्व वन्हि च पूजा ।

Closing : चौदश अदीतवार के दिन मंद आंखमें मैल जैतो मदपाणी
भवति ।

Colophon : इति सपूर्णम् ।

१३४३. यन्त्रमंत्रसंग्रह

Opening : ॐ मं म खं खं पि पि रं र क्रां क्रा ध्री ध्रीं अमुकस्यो ध्याग्य-२,
मारय-मारय चूग्य-चूग्य बुद्धि भृ मैं कुरु-२ स्वाहा । "

Closing : षट्मनुत्री विसहरी एक सहस्र ... बार सात पठनै तमाचो मारो जै सर्प विष उतरै ।

Colophon : नहीं है ।

१३४४. अष्टांगहृदय

Opening : इति ह्यस्माद्गुरात्रेयादयो महर्षयः
जातमात्र विशाध्यो स्वास्वालसैंधसर्पिषा ।
प्रसूतिक्लेशितं चानुबला तैलेन सेचयेत्
अश्मनोर्वादनं चास्य कर्णमूले समाचरेत् ॥

Closing : चिकित्सित हित पथ्य प्रायश्चित्तं भिषग्जितम् ।
भेषज शमनं शस्तं पर्यायैः स्मृतमौषधम् ॥

Colophon : इति चिकित्सिते द्वाविंशोऽध्यायः । इति वाग्भट्टविरचितायां अष्टांगहृदयसंहितायां चिकित्सास्थानं चतुर्थं समाप्तम् ।

देखें, रा० सू० III, पृ० २४६ ।
जि० र० को०, पृ० १६ ।

१३४५. चिकित्साशास्त्र

Opening : शंखा होनी पुरानंईइ लीजइ । दूधसू पीजइ सर्वे रोग जाइ ॥१॥

Closing : बिन्दु आठ कइ द्रोण प्रमाण, दुई द्रौंणे इक सूर्य को मान ।
दोई सूर्य की द्रोणी इक लाखी, बिन्दु द्रोणी इक खारी दाखी ॥

Colophon नहीं है ।

विशेष— इसकी लिपि भिन्न २ लोगो द्वारा लिखी गई है जिससे यह संग्रह ग्रंथ मालूम पड़ता है ।

१३४६. चिकित्सासार

Opening : च्यारिटाकनि लोफर ल्याइ । तीनि पाव जल मैं औटाइ ॥
अरध रहे जल से छिनवाइ । खाड टांक चालीस मिलाइ ॥
ताको नरम बिमाम बनाइ । घोट डइसो सीसे पाइ ॥
दसरती ली लोफर नित । हर सिर पीर कास ज्वरपित ॥

Closing : सांस की दवा—धतूरा पंचांग कूट के चिलम में पीवें हुक्के की तरह सुं सास जाय हुचकी जाय, पेट दरद जाय ।

Colophon : नहीं है ।

१३४७. ज्वरहर-यंत्र

Opening : ज्वरेत्यादिना केवलं ज्वरकृतदाहमेव नोपशामयति किन्तपरा ।१।

Closing : इदं ज्वरहरं यंत्र मया प्रोक्तं तवानघे ।
उपकाराय लोकानां साधूनां च हिताय वै ।
गोप्यं त्वया सदा भद्रे साधुभ्या नैव गोपयेत् ॥२२४॥

Colophon : इति ।

१३४८. कुट्टककरण छाया व्यवहार

Opening : भाज्यो ···· वुष्टमुछिष्टमेव ॥१॥

Closing : शुद्धिर्जातो गुणएवराशिस्त्वेनांगीकृतः ॥१४॥
पंचगुणी ॥७० ॥ हर ॥६३॥ हृतशेष ॥१४॥ दशगुणे ॥१४०॥ हर ॥६३॥ हृतशेष ॥१४॥ एक बहुत्वे गुणनामैक्य भाज्यं अजाणामैक्यमथ प्रकल्प्यसाध्यम् ॥

Colophon : इति भास्कराचार्य विरचितोलीलावत्यां कुट्टकाध्याय. समाप्ता ॥

१३४९. मदनविनोद निघंटु

Opening : बीजं श्रुतीनां सुघनं मुनीनां बीजं जडाना महदादिकानाम् ।
आग्नेयमस्त्र भवपातकाना किंचिन्महश्यामलमाश्रयामि ॥१॥

Closing : .... यो राजा मुखतिलकः कट्टारमल्लस्तेन श्रीमदननृपेण निर्मिते च ग्रंथेन्मदनविनोदनाम्नि सपूर्णो ' ---- प० गुणगणमिश्रकोऽय ॥

Colophon . इति श्री मदनपाल विरचिते मदनविनोदे निघटौ मिश्रपवर्गस्त्रयोदश ॥१३॥ इति मदनविनोदे निघटौ समाप्तम् ।
सवत् १९१२ का० सु० लिखावित श्री मानसिघ जी ... --
पठनार्थं लिख्योस्यो लालखाजादन ॥

१३५०. नाड़ीप्रकाश

Opening : नाडी तीन प्रकार के है । इगला चद्रमा है सो बाया है । पिंगला सूर्य है सो दाहिना है । दोनो चले सो सुख मन है । कृष्ण पक्ष सूर्य का है । शुक्ल पक्ष चद्रमा का है ।

Closing : दो नव भृकुटी श्वेत श्रवन पाँच तारका जान ।
तीन नाक जीह्वा एके का सभेद पहचान ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१३५१. निदान

Opening : प्रणम्य जगदुत्पत्तिस्थितिसंहारकारकम् ।
स्वर्गापवर्गयोद्वारे त्रैलोक्ये शरणं शिवम् ॥१॥

Closing : ग्रहण्यां समधातु. समग्निश्च समदोऽमलंक्रियः
प्रसन्नात्मेंद्रियं मनाः स्वस्थमित्यभिधीयते ॥

Colophon : इति निदान ग्रं समाप्त । शुभमस्तु । संवत् २७५६ ।

विशेष— यह ग्रंथ माधव निदान मालूम होता है, जिसके लेखक माधवाचार्य हैं।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० ११८ ।

१३५२. पंचदशविधान

Opening : अथातः संप्रवक्षामि सुन्दरीयंत्रमुत्तमम् ।
तदकं तु प्रवक्षामि श्रृणु यत्नेन साम्प्रतम् ॥१॥

Closing : इनगीपुगन करके नो राजा-प्रजा सर्वसकारी सिद्ध होय ।

Colophon : नही है ।

१३५३. रामविनोद

Opening : सिद्धि बुद्धि दायक सकल गवरि पुत्र गणेश ।
विघ्न विनाशन सुखकरन हरखाधारि प्रणमेश ॥

Closing : द्रोनि मनक को बार ' — राम विनोदी विनोद सौ ॥

Colophon : इति श्री रामविनोद भाषा समाप्तम् । सवत् १६०६ मासोतमे मासे वैशाषमासे शुक्लपक्षे द्वितीयाया बार भोमबारे का लिखि के सपूर्ण भई मितन्त गोती सघई लाला छेदीलाल तस्य पुत्र उजागर लाल तस्य पुत्र जेठे रतनलाल लघुपुत्र बदलीदास ने पोथी लिखी पठनार्थ अपने हित हेतबे बस अग्रवाल का है ।
यादृश पुस्तक — — दीयते ॥१॥
जलं रक्षेत् ··· ··· पुस्तकम् ॥२॥

१३५४. रूपमंगल

Opening : जमालगोटा अर मिरच बराबरी आदी का रस मैं गोली करे मिरच प्रमाण संध्या प्रातः खाय ।

Closing : नित्यज्वरवालानं दीजै पाडी का मूत्रसू ने जरावा ताने दीजै त्रिब-
कार मसूं चोथावालाने दीजै इति सर्वज्वर जाय ।

Colophon : इति मंगलरूप संपूर्णम् । शुभं भूयात् ।

१३५५. शारदा-तिलक सटीक

Opening : श्री तीर्थेश जिनाधीश केवलज्ञानभास्करम् ।
प्रणम्याभ्युदये ध्यात्वा वक्ष्ये मूत्रपरीक्षणम् ॥१ ॥

Closing : पानट २ सुपेदकथट २ अफीमटं १ इकत्र कर गोली करनी मासे
१ प्रमाण तदलोदकेन समाप अतिसार जाति ।

Colophon : इति श्री सारदातिलक ग्रंथ समाप्तम् । लिखितमिदं नित्या-
नन्देन नारनौल मध्ये लिखायतं पंडितजी श्री चेतनदास जी-
कस्मिन्सम्वत्सरे सवत् १६७६ का० वर्षे कातिक सुक्ल २ गुरुवा-
सरे अलिखदिदं पुस्तकं यथा स्यात् तथा । श्रीरस्तु

१३५६. सारंगधर संहिता

Opening : श्रिय मदयाद्भवतां पुरारिर्यदंगतेज प्रसरे भवानी ।
विराजते निर्मलचन्द्रिकाया महौषधीव ज्वलिता हिमाद्री ॥१॥

Closing : विविधमगदाति दरिद्रया ि नाशन याहन्निमरि चकार वियोगरत्नैः ।
विलसतु शारंगधरस्य संहिता सा कविहृदयेषु सरोजनिर्मलेषु ॥

Colophon : इति श्री दामोदरसूनुना शारङ्गधरेण विरचितायां संहितायां
चिकित्सास्थाने नेत्रप्रसादनकर्मविधिरध्याय. समाप्तोयमुत्तर खंड।

१३५७. वैद्यभूषण

Opening : सिव सुत पद प्रणमित सदा रिद्ध सिद्ध नित देइ ।
कुमति विनासन गुनाकर मदन सुदन करेइ ॥

Closing : वैद्य ग्रंथ प्रमाण सब ढूढ़ लिया तस लोक ।
छह से सही सब जरा का आधार ।।

Colophon : इति श्री केशवदासपुत्रेण नयनसुखेन विरचिते वैद्यमहोत्सवे स्त्री पुरुष रोग चिकित्सा सप्तम समुद्देश समाप्ता। सवत् १७६६ वर्षे मिती आषाढ़ सुदि १५ मगलवार लिखित पूज्य स्थिविर जी ऋषि श्री गणेश जी तत्शिष्यणी लिखित आर्यापुण्यालो शुभ भवति ।

१३५८. वैद्यमनोत्सव

Opening : प्रणम्य नित्य शिवसूनुमृद्धिद सिद्धि ददातिविनयानि धिय ।
कुबुद्धिनाश सुमति करोति मुद तथा मगलमेव कुर्य्यात् ।।१।।

Closing : चतुभिराटकै द्रोण कलसोप्यत्वणोमत: ।
उन्मनश्च घटोराशि. द्रोणपर्यायवाचक. ।।६।।

Colophon : इति परिभाषा। इति श्री वैद्यमनोत्सव मन्निश्रविरचित वैद्य-मनोत्सव सपूर्णम्। सवत् १६७६ मिति पौष कृष्ण सप्तम्या गुरुवासरे नारनौलमध्ये कायस्थपुरे लिखितमिद पुस्तक नित्यानद ब्राह्मणेन लिखायत पडित श्री चेतनदास जी। श्रीरस्तु ।

१३५६. योगचिंतामणि

Opening : यत्र विश्वासमायांति तेजांसि च तमांसि च ।
महीयस्तदय वंदे चितानदमयमहम् ।।

Closing : यथा योगप्रदीपोस्ति पूर्वं योगशतं यथा ।
तथैवायं विजयता योगचिन्तामणिश्चिरम् ।।

Colophon : इति श्रीमन्नागपुरीयतपोगणनायक श्रीहर्षकीर्तिसूरि सकलिते वैद्यकसारो श्रीयोगचिंतामणी सार संग्रहे मिश्रिकाध्याया सप्तमा

समाप्ता। इति श्री योगचिंतामणि शास्त्र समाप्ता।
सूत्रार्थं मिलिनेन प्रथमान ६५०० सवत् रामगणोदधित् प्रमिते सवत् १७६४ वर्षे मार्गशीर्षमासे कृष्णपक्षे तिथौ एकादश्या सोमवारे लिखितम्। पूज्य श्री ऋशि स्थिवीर जी श्रीगणेश जी पूज्य आर्या जी श्री राजो जी लिखितम्।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ५६६।

१३६०. यूनानी चिकित्सा

Opennig विघन विघ्न) विनासन देवकूँ, प्रथम करुं परनाम ॥१॥

C'osing हरतान३ अरद ८ दिरम,सुर्ग ८ दिरम, करूरुवाई ८ दिरम माजू २० दिरम, जगार ४ दिरम, कुट ३ दिरम, फटकडी ४ दिरम, अकाकिया २॥ दिरम, गुलनार ३ दिरम कूट छान कैं बीच गिरके कं गलावै २ हप्ते बीच धूप के रखै बाद कर्म करै।

Colophon नहीं है।

१३६१· आचार्य-भक्ति

Opening सिद्धगुणस्तुतिनिरता उद्धूतरूषाग्निजालबहुलविशेषान्।
गुप्तिभिरभिसपूर्णान् मुक्तियुत सत्यवचनलक्षितभावान्॥

Closing : इच्छामि भंते आयरियभत्तिकाउस्सग्गोकउ तस्सालोचेउ सम्मणाण सम्मदंसणसम्मचरित्त जुत्ताण, पंचविहाचाण्ण आयरियाग आयागादिसुदणाणो वदेसियाणं उवझायाणं तिरयणगुण पालणरयाण सव्वसाहूणं णिच्चकालं अच्चेमि, पुज्जमि वंदामि। सुगइगमण समाहिम णं जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झ॥

Colophon : इति आचार्य भक्ति:।

देखे, जि० र० को०, पृ० २५।
जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६०१।

१३६२. आदिनाथ स्तुति

Opening : जाके चरनारविंद पूजत सुरिंद इन्द्र देवन के वृंदचंद
सोभाअतिभारी है।
कहत विनोदीलाल मन वच तिहु काल ऐसे नाभिनंदन को
वंदना हमारी है ॥१॥

Closing : तुम तो जिनंददेव जगते ....
.... त्रिभुवननाथ गति मेरि या बनाई है ॥

Colophon : इति श्री आदिनाथ स्तुति समाप्तम्।

१३६३ आदिनाथ आरती

Opening . आदिनाथ तुम जगदाधार, भवसागर उतारन पार।
मैं तुम चरन कमल को दास, आदिनाथ मेरी पूरो आस ॥१॥

Closing तुम अनंत गुन है प्रभु कैसे पाऊ पार।
भारी कर मानो धरी भैंगो कहै बखान ॥७॥

Colophon : इति श्री आदिजिन आरती समाप्तम्।

१३६४. आदिनाथस्तोत्र

Opening आदिनाथ जगन्नाथं पार्श्वं वंदे गुणाकरम् ॥१॥

Closing : तद्गृहे कोटिकल्याणश्रीर्विलसति लालया।
क्षुद्रोपद्रवभूतादि नश्यते व्याधिवेदना ॥७॥

Colophon : इति श्री आदिनाथ स्तोत्र संपूर्णम् ।
देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६४६ ।

१३६५. आदित्यनाथ-आरती

Opening : आदि जिनेश्वर महि परमेश्वर त्रिभुवनपति जिन आदिभयौ ।
नाभिराम मरुदेवी नदन नगर अयोध्या जनम लीयो ।।

Closing : जो जिनवर ध्यावै भावना भावै मन वच काया भाव धरे ।
पाप निकदन भवय भजन मुक्तिवरागणा सो वरए ।।२२।।

Colophon इति श्री आदिनाथ जी की आरती समाप्तम् ।

१३६६. अम्बिकादेवीस्तोत्र

Opening ॐ ह्रीं जय जय परमेश्वरी अंबिके अभ्रगतेमहासिंहयानस्थिते ·
सर्वलक्षणलक्षितागे जिनेन्द्रस्य भाते कले निस्कले
निर्मले नि प्रपचे ।

Closing : अविरतानलवन्ना मादृशा भवतीत्यशः
श्रीधर्मकल्पलतिके प्रसिद्धवरदेविके ।।४।।

Colophon : इति अंबिकादेवी स्तोत्र सम्पूर्णम् शुभमस्तु पौषमासे शुक्लपक्षे
तिथौ ४ श्री संवत् १९५ ।

१३६७. अंकगर्भषडारचक्र

Opening : सिद्धप्रियै प्रतिदिन प्रतिभासमानै:,
जन्मप्रबधमथनैःप्रतिभासमानै ।
श्रीनाभिराजतनुभूपदवीक्षणेन,
प्रापेजनै- तनुपदवीक्षणेन ।।

Closing : तुष्टि देशनया जनस्य मनसे .... सतामीशिताः ॥

Colophon : इति श्रीदेवनंद्याचार्य कृत चौवीस महाराज ..... काव्य महा-स्तोत्र सपूर्णम् ।

देखे, जि० र० को०, पृ० १ ।

जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६०२ ।

१३६८. आरती

Opening : जैं जैं जैं श्री आदिजिनेश्वर जुगला धरम निवारण जू ।
नाभिराय मरुदेवी नन्दन ससार सागर तारण जू । जैं जैं० ॥१॥

Closing : जे पढ़ै पढावै मन सुद्ध ध्यावै इह आरत सू सफल भया ॥१२॥

Colophon : इति श्री निर्म्मल कृत आरती समाप्तम् ॥

१३६९. आरती

Opening : अष्टदरबकरसत्र एकठा जीमणा आरती मसाहो ।
जिन जी के चरण चढाइ श्री जिन पूजो जा भाव सौं ॥१॥

Closing : इयणर देवे णिय सुयसत्यिय जिणचउवीस विसा भत्तिया
ए जिणवर जो अणुदिणुत्तापइ सो ससारिनपछइ आवइ ॥१॥

Colophon : इति आरती सपूर्णम् ।

१३७०. आरती

Opening : आरती श्री जिनराज तुम्हारी
करम दलन संतन हितकारी ॥ आर० ॥
सुर नर असुर करत तुम सेवा
तुम हो सब देवनि के देवा ॥ ॥१॥ आर० ॥

Closing : छवी इग्यारह प्रतिमाधारी
श्रावक वदित आणदकारी । इ० ।
सातमी आरती श्री जिनवाणी
द्यानत स्वर्ग सुगति सुखदाणी ॥४॥ इ० ॥

Colophon . इति आरती सपूर्णम् ।

१३७१. आरती

Opening : आरती श्री जिनवीर की सुनि पीय श्रेणिकराई ।
जनम जनम सुख पाइये दुरित सकल मिटि जाई ॥१॥

Closing जिन आरती कीजै · ···· गति महित निकलक ॥

Colophon : इति आरती समाप्तम् ।

१३७२. आरती संग्रह

Opening : आरती कीजै स्वामी नेम जिनद की ।
सब सुखदायक आनद कद की ॥ टेक ॥

Closing : जय-जय आरती शान तुम्हारी ।
तोरे चरन कमल की मैं जाव बलिहारी ॥

Colophon ; इति आरती श्री शान्तिनाथ की सम्पूर्णम् ।

१३७३. अष्टक

Opening : पयतीर्थनिम्नगादि दिव्यमोदजीवनैः
कुंकुमादि गंधसार चंदनादिमिश्रितै. ।
कामधेनुकल्पवृक्षचिंत्यरत्नयंत्रकम्
स्वर्गमो. सं.्.न् सं .ारण जजे ॥१॥

Closing : इत्थं श्रीजिनराजमार्गविदित ·· ·· वामर प्रत्यहम् ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१३७४. भजन

Opening : सुर तरनी परिरोहि सउरे लाधउ नरभवसा ।
आलइ जनम महारजो काई करजोरे मनमाहि विचार कि ॥१॥

Closing : आरम छाडो आतम रे, पीय मजम रस पूरि ।
सिद्ध वधू सउजिम रमउ इम दौलह रे श्री जिनदेव कमूर बि ॥
॥ चेतो रे चित प्राणी ॥१४॥

Colophon : इति सज्झाय समाप्ता ।
बडे न हुजउ गुन बिना, बिरद बडाई पाई
कहत धतूरे सू कनक, गहनौ गढ्यो न जाई ॥१॥
कनक कनक तें सौगुनौ, मादकता अधिकाई
इनि पाइयै बोराइ जगु उहि खाइ बोराई ॥२॥

१३७५. भजनावली

Opening : अवश्यावश्यानी त्रिजगजननी शान्तिरूपे,
तुही आधारा रासुजस तव जगमे अनूपे
नहि पारावारा गुन सुजस अरू च स्वरूपे ।
तुही कर्त्ता धर्त्ता नृपहि पहर काहि भूपे ॥१॥

Closing : पनकारनि सुखहारनि दुखदुर्गति ग्रहवरने बरना ॥
जसु की माय अजितहू कि तुहि काहि उपजन वरना ॥७३३॥

Colophon : इति सम्पूर्णम् ।

१३७६. भजनावली

Opening : ध्यान मे जिनके सभी आराम होना चाहिए ॥
हवस सब अब की दफा सब काम होना चाहिए ॥१॥

Closing : मनमानता वरदान की दातार तु ही है ।
तजिरी सदैव कसीस अजित को नूर ये ही है ॥

Colophon : नहीं है ।

१३७७. भजनावली

Opening : जै जै जै जिन चद वद दुख दहने वारा,
भी॰ भयकर हार सार सुख सपति सारा ।
दीनानाथ अनाथ नाथ सब जिय हितकारी,
असरन सरन सहाय होत जन सुनत पुकारी ॥१॥

Closing : भुजवारि उदार भडार अपार ।
मनी सुखसार समस्त भरो वो ।
दरसे परसे पद पंक जई ।
सुखधाम सुदाम ललाम सहो वो ॥

Colophon : नही है ।

१३७८. भजनावली

Opening : करो जी मेहर जिनराज ।

Closing : अज्ञानवंत अनंत चेतन शुद्ध अप्पा जोवही ।
असरान परी क्या कँहू जी ... ॥

Colophon : नही है ।

१३७९. भजन

Opening : छल सुज सम हि भाव ही कोरत को नहि अत ।
भागे भारी भोर हरी जहाँ जहाँ सुमिरन्त ॥

Closing : जिनराजदेव कीजिये मुझ दीन पं करूना ।
भवि वृंद कों अब दीजिये यह शील का शरना ।

Colophon इति श्री शीलमहातम जी भाषा वृन्दावन कृत सम्पूर्ण ।

विशेष— इसमें भजन के अलावा 'सील महातम' वृंदावन कृत भी संकलित है

१३८०. भक्तामरस्तोत्र

Opening भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा-
मुद्योतकं दलितपापतमोवितानम् ।
सम्यक्प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा-
वालम्बनं भवजले पततां जनानाम् ॥१॥

Closing : *स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्रगुणैर्निबद्धां,
भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ।
धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्रम् ।
तं मानतुंग मवशा समुपैति लक्ष्मी ॥४८॥*

Colophon : इति श्री भक्तामरस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६०.

१३८१ भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३८० ।

Closing : देखें, क्र० १३८० ।

Colophon : इति भक्तामर सम्पूर्णम् ।

१३८२. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३८० ।

Closing : देखें, क्र० १३८० ।

Colophon : इति श्रीमानतुंगाचार्य विरचितं भक्तामरस्तवन समाप्तम् ।

१३८३. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क० १३८० ।
Closing : देखे क० १३८० ।
Colophon : इति श्री मानतुगाचार्य विरचित भक्तामरस्तोत्रसमाप्तम् ।

१३८४. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क० १३८० ।
Closing . देखे, क० १३८० ।
Colophon : इति भक्तामरस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१३८५. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क० १३८० ।
Closing : देखे, क० १३८० ।
Colophon : इति भक्तामरस्तोत्रम् ।

१३८६. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क० १३८० ।
Closing : देखे, क० १३८० ।
Colophon . इति भक्तामरस्तोत्रम् संपूर्णम् ।

१३८७. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क० १३८० ।
Closing : देखें—क० १३८० ।
Colophon : इति श्री भक्तामर संस्कृत जी समाप्तम् ।

१३८८. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३८० ।
Closing : भक्तामर टीका सदा पढ़ै सुनै जो कोई ।
हेमराज मिव सुख लहै तस मनवांछित होई ।।१।।
Colophon : इति श्री भक्तामरस्तोत्रस्य टीका पंडित श्री रंगविमल लिपिकृता सम्पूर्णम् । भादो सुदि ७ शनिवासरे । संवत् १८४६ ।

१३८९. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३८० ।
Closing : देखें, क्र० १३८० ।
Colophon इति श्री भक्तामर संस्कृत जी समाप्तम् ।

१३९०. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३८० ।
Closing : देखें, क्र० १३८० ।
Colophon : इति श्री मानतुंगाचार्य विरचिते भक्तामर स्तोत्रसंपूर्णम् ।

१३९१. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३८० ।
Closing : अस्मिन् लोके य पुरुष. तां मालां कंठगता अजस्रं निरंतर धत्ते धारयति तं पुरुषं मानतुंगं इव सा लक्ष्मी: समुपैति या लक्ष्मी: मानतुंगेन प्राप्ता सा लभते ।
Cloophon : इति श्री भक्तामरस्तोत्रस्य पंडित शिवचन्द्ररचित बालावबोध टीका समाप्ता ।
मिति फाल्गुन-शुक्लादारभ्य चैत्रकृष्ण द्वितीयायां पंडित शिवचन्द्रेण कृता इयं संपूर्णम् ।

१३६२. भक्तामरस्तोत्र

Opening देखें, क्र० १३८० ।
Closing : देखें, क्र० १३८० ।
Colophon : इति श्री भक्तामरस्तवनं समाप्तम् ।

१३६३. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३८० ।
Closing : देखें क्र० १३८० ।
Colophon : इति श्री भक्तामरस्तोत्र संस्कृत श्रीमानतुंगाचार्य कृत सम्पूर्णम् ।

१३६४. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें. क्र० १३६५ ।
Closing : देखें, क्र० १३६५ ।
Colophon : इति श्री भाषा भक्तामर जी समाप्तम् ।

१३६५. भक्तामरस्तोत्र

Opening : आदि पुरुष आदीस जिन, आदि सुविधि करतार
धरमधुरधर परम गुरु नमो आदि अवतार ॥१॥
Closing : भाषा भक्तामर कियौ हेमराज हित हेत
जे नर पढ़ैं सुभाव सौं ते पावैं शिव खेत ॥४६॥
Colophon : इति श्री भक्तामर स्तोत्रभाषा बंध संपूर्णम् ।

१३६६. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३६५ ।

Closing : देखे, क्र० १३६५ ।
Colophon : इति श्री भक्तामर जी स्तोत्र सपूर्णम् ।

१३९७. भक्तामरस्तोत्र

Opening देखे, क्र० १३६५ ।
Closing : देखे, क्र० १३६५ ।
Colophon : इति भाषा भक्तामर जी सम्पूर्णम् ।

१३९८. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३६५ ।
Closing : देखे, क्र० १३६५ ।
Colophon : इति श्री भक्तामर की भाषा समाप्ता ।

१३९९. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३६५ ।
Closing : देखे, क्र० १३६५ ।
Colophon . इति भक्तामर स्तोत्र भाषा समाप्तम् ।

१४००. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३६५ ।
Closing : देखे, क्र० १३६५ ।
Colophon : इति श्री भक्तामर जी स्तोत्रभाषा समाप्तम् । मिति वैशाख बदि १४ सवत् १९३९, वार आदित्यवार । शुभम् श्री ।

१४०१. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३६५ ।

Closing : देखें, क्र० १३६५ ।

Colophon : इति श्री भाषा भक्तामरस्तोत्र समाप्तम् ।

१४०२. भक्तामर वचनिका

Opening : देव जिनेश्वर वंदिकरि वाणी गुरु उर लाय ।।
स्तोतर भक्तामरतणी करुँ वचनिका भाय ।।
मानतुंग वरसूरतें रच्यो भक्ति उर धारि ।।
श्री जिनेन्द्र अनुभावतैं बंधन भरै उतारि ।।

Closing : संवत्सर शत अष्टदश सत्तरि विक्रमराय ।।
कातिक वदि बुद्ध द्वादसी पूरण भई सुभाय ।।

Colophon : इति श्री मानतुंग आचार्यकृत भक्तामर नाम देशभाषामय वच-
निका समाप्त ।।

१४०३. भक्तामर वचनिका

Opening : देखें क्र० १४०२ ।

Closing : देखें, क्र० १४०२ ।

Colophon : इति श्री मानतुंगाचार्यकृत भक्तामरनाम देशभाषामय वचनिका
समाप्तम् ।

१४०४. भक्तामरस्तोत्र

विशेष—यह पूर्णत जीर्ण-शीर्ण है ।

१४०५. भक्तामर-टीका

Opening : जो देवनमृमुगुटि सुभरत्नकांति तीर्तोविकास करि ते जिनपाद दीप्ति ।
जो पाप रूप तम घोर समूल छेदी नेदी बुडो भव जली जनहो जुगादि ॥१॥

Closing : म डूरा मनात भरला मुनि शक मुति तो स्तोत्र पाठवदल गुरु पुन्यकीर्ति ।
मीजोलहा विनमिले जिनसागराना करी क्षमा नविती बुध पडितान्ना ॥५०॥

Colophon : इति श्री देवेन्द्रकीर्ति प्रियशिष्य जिनसागर कृत भक्तामर स्तोत्र महाराष्ट्रभाषा सपूर्णम् ।

१४०६. भक्तामरस्तोत्र

Opening : धराम् निकल ता मदिर जाणो ।
जदि रसता माहि उच्चार करणो ॥

Closing : देखे, क० १३८० ।

Colophon : इति श्री मानतुग नामा आचार्य विरचित आदिनाथ देवाधिदेव भक्तामरस्तोत्र सपूर्णम् ।

१४०७. भक्तिसंग्रह

Opening : सिद्धान् उद्धूतकर्मप्रकृतिसमुदयान् भावोपलब्धि. ॥

Closing : सुगइ गमण समाहिमरण जिणगुणसंपत्ति होऊ मज्झं ।

Colophon : इति सप्तभक्तय: समाप्ता: ।

विशेष — इसमे सिद्धभक्ति, श्रुतभक्ति, चारित्रभक्ति, आचार्यभक्ति, निर्वाणभक्ति, योगभक्ति, नदीश्वर भक्तियां संकलित है ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क० ६४० ।

१४०८. भैरवाष्टक

Opening : अतितीक्ष्णमहाकाय कल्पांतपवनोपम् ।
भैरवाय नमस्तुभ्य मानमद्रतमोहर ॥

Closing : अपुत्रो लभते पुत्र बद्धो मुंचति बंधनात् ।
राज्यचोरभय नैव भैरवाष्टककीर्त्तनात् ॥११॥

Colophon : इति श्री भैरवाष्टकस्तोत्र सपूर्णम् ।
देखे — जैं० सि० भ० ग्र०, I, क्र० ६३५ ।

१४०९ भैरवाष्टक

Opening : देखे, क्र० १४०८ ।

Closing : चाहै तो १ लाख जाप करै दिन ३ उपवास के पारने चूर, मावा, हलवा, लाल वस्त्र, लाल माला, कनेर का फूल करणा तेज प्रताप आदि करे ।

Colophon : इति भैरवाष्टकम् ।

१४१०. भैरवस्तोत्र

Opening : य य य यक्षरूप दशदिसचरित भूमिक पायमानम्,
स स स सहारमूर्तिशिरमुकुटजटाशेषर चद्रबिम्बम् ।
द द द दीर्घकाय विकृतनखमुख उर्ध्वरोम करालम्,
प प प पापनाश प्रणमतशतत भैरव क्षेत्रपालम् ॥

Closing : भैरवाष्टकमिदं पुण्य छ. मास पठते नर: ।
स याति परमस्थानं यत्र देवो महेश्वर: ॥६॥

Colophon : इति क्षेत्रपाल स्तोत्र संपूर्णम् ।

१४११. भूपाल-चतुर्विशति-स्तोत्र

Opening : श्रीलीलायतन महीकुलगृह ········ जिनाघ्रिद्वयम् ॥

Closing : हे देव अद्य मया गम्यते ···· पुन पुन बार बार दर्शन भूयात् ।

Colophon ; इति श्री पडित शिवचद्रनिर्म्मापित भूपालचतुर्विशतिकाया: बालावबोध टीका सपूर्णम् । मिति फाल्गुन शुक्लादारभ्य चैत्र कृष्ण द्वितीयाया पडित शिवचद्रेण कृता इय पचस्तोत्र टीका सम्पूर्णम् समाप्तम् । श्री । मिति चैत्रकृष्ण सप्तम्यां सोम-वासरे सवत्सर १९२७ का सम्पूर्णम् लिखित पडित परमानंदन पठनार्थम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र I, क्र० ६४२ ।

१४१२. भूपाल-चौबीसी

Opening : देखे, क्र० १४११ ।

Closing : दृष्टस्त्व जिनराज ······ भूयात्पुनर्दर्शनम् ॥

Colophon : इति श्री भूपालचौबीसी समाप्तम् ।

१४१३ भूपाल-चौबीसी

Opening : देखे, क्र० १४११ ।

Closing : देखे, क्र० १४१२ ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१४१४. भूपाल-चौबीसी

Opening : देखे, क्र० १४११ ।

Closing : देखें, क्र० १४१२ ।

Colophon : इति भूपाल चतुर्विंशतिका ।

१४१५. भूपालस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४११ ।
Closing : उपसम इव मूर्तिललित – — – चरिष्टमोयस्यधि-
न्वंति वाचः ।।२७।।
Colophon : इति श्री भूपालस्तोत्र समाप्तः ।

१४१६. भूपाल-चौबीसी-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४११ ।
Closing : देखें, क्र० १४१२ ।
Colophon : इति श्री भूपालचौबीसी सम्पूर्णम् ।

१४१७. भूपालस्तोत्र

Opening : परमातम सम्यक वरन परमभावना सार ।
श्रीभूपाल बरेस कवि करत सुपर हितकार ।।१।।
Closing : यह विधि श्री जिन विमल करि भूपाल थुति नरिंद ।
जग जीवन जीवन लष्यौ हीर अवाध अनिंद ।।२७।।
Colophon : इति भूपाल चौबीसी सम्पूर्णम्

१४१८. भूपाल-चौबीसी-भाषा

Opening : देखें, क्र० १४१७ ।
Closing : देखें, क्र० १४१७ ।

Colophon : इति भूपाल चौबीसी भाषा जी समाप्तम् ।

१८१९. बीस विरहमान-आरती

Opening : आरती कीजै बीस जिनंद की, विदेह क्षेत्र थानक सुखकंद की ।
श्रीमंदर जुगमंदर स्वामी, बाहु सुबाहु प्रभु शिवगामी । आरती॥

Closing : अजितवीर्य प्रभु है सिरनामी, भैरो सरन चरन तुम स्वामी ।।आरती

Colophon इति श्री बीस विरहमान जी की आरती समाप्तम् ।

१८२०. ब्रह्म-लक्षण

Opening : ब्रह्मचर्यं भवेमूल सर्वेषां ब्रह्मचारिणाम् ।
ब्रह्मचर्यस्य भंगेन व्रत सत्रनिरथकम् ॥

Closing : वृष्टिपूत ... — ... नवम ब्रह्मलक्षणम् ॥

Colophon : नहीं है।

१८२१. चैत्यालय-स्तोत्र

Opening : इष्ट जिनेंद्रभवन भवतापहारी ... प्रकरराजविराजमानम् ।१।।

Closing : द्रष्टमपाय मणिकाचनचित्रतुंग सकलचन्द्रमुनिंद्रदकम् ।।१०।।

Colophon : इति चैत्यालय स्तोत्रम् ।

१८२२. चक्रेश्वरी-स्तोत्र

Opening : श्रीचक्रेचक्रभीमे ललितवरभुजे लीलया दोलयन्ति,
चक्र विद्युत्प्रकाशं ज्वलितसतमुखं खखगेंद्राद्यरूढे ।
तत्वैरुद्भूतभावे सकलगुणनिधे त्वं महामंत्रमूर्ते
क्रोधोदित्यप्रतापे त्रिभुवनमहिमायाति मां देविचक्रे ॥१॥

Closing : यं स्तोत्र मत्रकप पठितिजमतो भक्तिपूर्व्वं शृणोति,
त्रैलोक्य तस्य वस्य भवति बुद्धजने वाक्पटुत्वं च दिव्यम् ।
सौभाग्यं स्त्रीषु मध्ये खगपतिगमने गौरितत्वप्रसादात्,
डाकिन्यो गुह्यगावाद् इह दधति भय चक्रदेव्यास्तवेन ॥८॥

Colophon : इति चक्रेश्वरी स्तोत्रम् ।

देखे, रा० सू० IV, ३८४, ३८७ ।

दि० जि० ग्र० र०, पृ० १२३ ।

१४८३. चक्रेश्वरी-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४२२ ।

Closing : देखें, क्र० १४२२ ।

Colophon : ईति चक्रेश्वरी स्त्रोत्रं सम्पूर्णम् ।

१४२४. चन्द्रप्रभ-स्तोत्र

Opening : प्रभुभव्यराजीवराजीदिनेशं शुभ शकरं सुन्दरं श्रीनिवेशम् ।
सुरैर्दानवैर्मानवैः नित्तसेव जिन नौमि चंद्रप्रभ देवदेवम् ॥

Closing : चन्द्रप्रभ नौमि यदंगकान्ति जोत्स्नेति मत्वा द्रवेतेदुकांतात्
चकोरयुथंप्यवति ? स्फुटति कुष्टोपि पक्षे किलकैरवनानि ॥

Colophon : इति श्री चद्रप्रभुस्वामी स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ।

१४२५. चन्द्रप्रभ-स्तोत्र

विशेष— यह पूर्णतः जीर्ण-शीर्ण है ।

१४२६; चारित्र-भक्ति

Opening : येनेद्रान् भुवनत्रयस्य विलसत्केयूरहारांगदान्,
भास्वन्मौलिमणिप्रभाप्रविसरोत्तु गोत्तमांगान्नतान् ।
स्वेषां पादपयोरुहेषु मुनयश्चक्रुः प्रकामं सदा,
वदे पचतपतमद्यनिगदन्न चाण्मभ्यर्चितम् ।।१।।

Closing : इच्छामि भंते चरित्तमतिकाउस्सग्गो काउ तस्सा लाचेउ ...
.. .. — . — जिणगुणसपत्ति होउ मज्झ ।।

Colophon . इति आचोना चरित्र भक्ति ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६५१ ।

१४२७. चतुर्विंशति-स्तोत्र

Opening : आदौ नेमिजिनं नौमि सभव सुविधि तथा ।
धर्मनाथं महादेवं शाति शातिकर सदा ।।१।।

Closing : सकलगुणनिधान यत्रमेत विशुद्धं,
हृदयकमलकोषे धीमता ध्येयरूपम् ।
जगति विदिततत्वौ य· स्मरेत् शुद्धचित्तौ,
भवति सुखनिधान मोक्षलक्ष्मीनिवासम् ।।

Colophon : इति चतुर्विंशति-स्तोत्रम् ।

१४२८. चतुर्विंशति स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४२७ ।

Closing : देखें, क्र० १४२७ ।

Colophon : इति चतुर्विंशतिस्तोत्रम् ।

१४२९. चतुर्विंशतिस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४२७।

Closing : देखें, क्र० १४२७।

Colophon : इति चतुर्विंशतिः स्तोत्रम्।

१४३०. चतुर्विंशति-जिन-स्तोत्र

Opening : आदिनाथ जगन्नाथं अरनाथं तथानमि।
अजित जितमोहारिं पार्श्वं वद गुणागरम् ॥१॥

Closing : भवभिसुखमनेक तस्य यो मानवश्च
विमलमतिर्मनिद्य स्तोत्रमेतद्वितद्रः।
पठति परमभक्त्या प्रातरूत्थाय शश्वत,
मुनिरभिकृतभक्तिर्मेघराजो बभाण ॥८॥

Colophon इति श्री चतुर्विंशति जिनान स्तोत्र समाप्तम्।

१४३१. चौबीस-तीर्थंकर-पद

Opening : अब मोहि तारो दीनदयाल सब ही मत देखे।
मैं जित तित तुमही नाम रसाल ॥१॥ अब ॥

Closing : पाठक श्री सिद्धिवर घन सदगुरु विलास,
पाठक तिहि विध मो श्री जिनराज मल्हाए। ५॥ इहि० ॥

Colophon : इति श्री चौबीस तीर्थंकराणां पदानि सपूर्णम्।

१४३२. चिन्तामणिस्तोत्र

Opening : किं कर्पूरमयं सुधारसमयं किं चन्द्ररोचिर्मयम्,

किं लावण्यमय महार्मणिमय कारूण्यकेलिमयम् ।
विश्वानदमय महोदयमय शोभामयं चिन्मयम्,
शुक्लाध्यानमय वपुर्जिनपते भूयाद्भवालबनम् ।।१।।

Closing : इति जिनपति पार्श्वपार्श्वाख्य यक्षम् ।
प्रदलित दुरीतोघ-प्रीणीत प्राणसध्यम् ।
त्रिभुवनजिनवाध्य दानचिन्तामणीस,
शिवपदतरुबीज व्याधिबीजं ददातुम् ।।१२।।

Colophon : इति चिंतामणि स्तोत्रम् ।

१४३३. चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-स्तोत्र

Opening : नरेन्द्र फणेन्द्र सुरेन्द्र अधीश सतेन्द्रं सुपूज्य नमो नाथसीस
मुनिन्द्र गणेन्द्रं नमो जोरिहाथ नमो देवि चितामणि पार्श्व-
नाथम् ।।

Closing : गणधर इन्द्र न करि सके तुम विनती भगवान ।।
द्यानत प्रीति निहारके कीजे आप समान ।।

Colophon : इति सम्पूर्णम् ।

१४३४. चिंतामणिपार्श्वनाथ–स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४३२ ।

Closing : मदनमदहर. श्री वीरसेनस्य शिष्यैः
सुभगवचनपूरै राजसेनप्रणुतै. ।
जपति पठति नित्य पार्श्वनाथाष्टक य ,
स भवति शिवभूम्यां मुक्तिसीमंतिनीशः ।।

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथाष्टकं समाप्तम् ।

१४३५. चौबीस-जिन-आरती

Opening : रिषभ आदि चौबीस जिन लक्षन लेहु विचार ।
जो कछु सुने सु कहत हूं, भव्य जन लेहु सुधार ।

Closing : लक्षन जिनवर के कहे भव्यजन लेहु सुधार ।
भूला चूका फिर धरौ भैरो कहै विचार ।।

Clolophon : इति श्री चौबीस जिन लक्षन आरती ।

१४३६. चौबीस-जिन-आरती

Opening : अतिपरमपवित्र जनितसुचित्र वरविचित्रमगलकरणम् ।
प्रणमामि जिनेन्द्र प्रणतशतेन्द्र भवसमुद्रतारणतरणम् ।।१।।

Closing : परमजिनेश्वरा भुविपरमेश्वरा कालत्रयकल्याणकरा ।
मघप्रनवत चरणभजत विस्तरन्तु मगलमधिरा ।।

Colophon : इति चौबीस जिन चिह्न आरती समाप्तम् ।

१४३७. चौबीस-दंडक-विनती

Opening : वदो वीर सुधीर को महावीर गभीर ।
वर्द्धमान सनमत नमो, महादेव अतिधीर ।।१।।

Closing : अताकरन जो सुद्ध होय जिन धरमी अभिराम ।
भाषा कारन करन को, भाषो दौलतराम ।।५६।।

Colophon : इति श्री चौबीस दडक विनती संपूर्णम् ।

१४३८. दर्शन-ज्ञान-चारित्र-आरती

Opening : सम्यक दरसन ग्यांन व्रत, इन बिन मुकत ना होय ।
अंधपंग अरु आलसी जुदे जलै दवलोग्य ।।

Closing : इय अम्बु विघारवि भवमय हारवि,
करि विचित्त सुयसस्स मणु ।
भवि भवियण घण्णउ सुह संपण्णउ
लहइ सग्गु मोक्खविसयलु ॥

Colophon : इति रत्नत्रयपूजा जिमावाणी समाप्तम् ।

१४३९. दर्शन-स्तुति

Opening : देखे, क्र० ११६३ ।

Closing : देखे, क्र० ११६३ ।
शुद्ध भाव ताके मन भयौ सम्यक दृष्टी मुकति हि गयौ ॥

Colophon : इति दर्शन स्तुतिसमाप्तम्

१४४०. दर्शनाष्टक

Opening : आद्यामवत्सफलता नयनद्वयस्य, देव त्वदीय चरणाम्बुजवीक्षणेन ॥
अद्यस्त्रिलोकतिलक प्रतिभासनो मे, संसारवारिधिरियं चुलक प्रमाणम् ॥

Closing : अद्याष्टक पठेद्यस्तु गुणैर्नंदितमाधवः ।
तस्य सर्वार्थसंसिद्धि जिने० ॥११॥

Colophon : इति दर्शनाष्टकम् ।

१४४१. देवस्तवन

Opening : श्रीमद्देवपतिप्रसन्नमुकुट-प्रद्योतरत्नप्रभा,
या सा पातु सदा प्रसन्नवदना पद्मावतीभारती ।
संसारागमदोषविस्तरगतः सेवासमीपस्थित ॥१॥

Closing : इन्द्रमपि भगवति वृत पुष्पालंकारलकनम् ।
स्तोत्र कठं करोति यस्य दिव्यश्रीस्त समाश्रयति ॥३६॥

Colophon : इति देवस्तवनम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क० ६५७ ।

१४४२. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : एकीभाव गत इव मया य. स्वय कर्मबधो,
घोर दुःखं भवभवगतोदुर्निवार. करोति ।
तस्याप्यस्य त्वयि जिनरवे भक्तिरून्मुक्तचेत्,
जेतु शक्यो भवति न तया कोपरस्तापहेतु ॥

Closing : वादिराजमनुशाब्दिकलोके, वादिराजमनु तार्किकसिंह ।
वादिराजमनु काव्यकृतस्ते, वादिराजमनु भव्यसहाय ॥२६॥

Colophon : इति श्री वादिराज विरचिते श्री एकीभावस्तोत्रसमाप्त ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क० ६५८ ।

१४४३. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखें, क० १४४२ ।

Closing : देखें क० १४४२ ।

Colophon : इति श्री एकीभावस्तोत्र सपूर्णम् ।

१४४४. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखें, क० १४४२ ।

Closing : देखें, क० १४४२ ।

Colophon : इति एकीभावस्तोत्रम् ।

१४४५. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखे, क० १४४२ ।
Closing : देखे, क० १४४२ ।
Colophon इति श्री वादिराजमुनि विरचिते एकीभावस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

१४४६. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखे, क० १४४२ ।
Closing : देखे, क० १४४२ ।
Colophon : इति एकीभावस्तोत्रं समाप्तम् ।

१४४७. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखें, क० १४४२ ।
Closing : देखें, क० १४४२ ।
Colophon : इति श्री एकीभावं स्तोत्र समाप्तम् ।

१४४८. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखे, क० १४४२ ।
Closing : धूपैसुगंध कृष्णागरुचंदनोघो ।
कृत सुगंध कृतसारमनोहरानी ।। तीर्थकरा०।।
Colophon : अनुपलब्ध ।
विशेष— एकीभाव के पहले भूपाल चतुर्विंशति करीब १०-११ पत्र में है ।

१४४९. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखे, क० १४४२ ।

Closing : देखे, क्र० १४४२ ।

Colophon : इति वादिराजमुनिकृतं एकीभावस्तोत्र समाप्तम् ।

१४५०. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४४२ ।

Closing : विद्वास. अक्षरमात्रापदस्वरहीनं सोध्यता अल्पज्ञानेन बालोपकाराय केवल मया रचिता न तु ज्ञानगर्वेण ।

Colophon : इति एकीभाव टीका सपूर्णम् ।

१४५१. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : वादिराज मुनिराज को बढतो मुहित उद्गार ।
स्वरूप रूप अनुभो कथा, कहत सुपर हितकार ॥

Closing : वादिराज मुनिराज अनुशाब्दिक तार्किक लोक ।
काव्यकार महकार जग जीवन हीर बुधोक ॥

Colophon : इति श्री एकीभाव भाषा जी समाप्तम् ।

१४५२. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४५१ ।

Closing : देखे, क्र० १४५१ ।

Colophon इति श्री एकीभाव सपूर्णम् । श्री ।

१४५३· गणधर-स्तुति

Opening : इति प्रमाणभूतेय वक्तृ श्रोतृ परंपरा ·· महाधियम् ।

Closing : स्वश्रुवद्भिरोवेन मुनिवृंदारकं रस्नदा ।
प्रसादितो गणेद्रोभूद्भक्तिग्राह्या हि योगिन ॥

Colophon : सम्पूर्णम् ।

१४५४. गौतमस्वामी-स्तोत्र

Opening ॐ नमस्त्रिजगन्नेतु वीरस्याग्रजसूनवे ।
समग्रलब्धिमाणिक्य रोहणार्यद्रभूतये ॥१॥

Closing : इति श्री गौतमस्तोत्रं तेस्मरतोन्वहम् ।
श्री जिनप्रभसूरिस्त्वं भवसर्वार्थसिद्धये ॥८॥

Colophon : इति श्री गौतमस्वामिस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१४५५. घंटाकर्ण-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १२६६ ।

Closing : देखें, क्र० १२६६ ।

Colophon : इति घटाकर्ण स्तोत्रम् ।

संदर्भ के लिए भी देखें, क्र० १२६६ ।

१४५६. गुरुभक्ति

Opening : बंदौ दिगम्बर गुरु चरन जग तरन तारन जानौं ।

जे भरम भारी रोग को है राजवैद्य समान ॥
जिनके अनुग्रह बिन कहुं नही कटै करम जजीर ।
ते साधु मेरे उर बसौ मेरी हरौ पातक पीर ॥

Closing : करजोरी भूधर विनवै कब मीलेवै मुनीराज ।
आस मन की तब पुरै मेरे सरे-सगले काज ॥
ससार विषम विदेह मैं बिना कारन वीर ।
ते साधु मेरे मन बसौ मेरी हरौ पातक पीर ॥८॥

Colophon : इति गुरु भगती संपूरन ।

१४५७. गुरुभक्ति

Opening : ते गुरु मेरे उर बसै ते भव जलधि जिहाजु ।
आप तिरै पर तारहि, अैसे श्री ऋषिराज । ते गुरु ॥

Closing : देखे, क्र० १४५६ ।

Cloophon : इति गुरुस्तुति सपूर्णम् ।

१४५८. गुरुविनती

Opening : देखें, क्र० १४५७ ।

Closing : वे गुर चरन जहां धरैं जग मैं तीरथ होय ।
सो रज मम माथे लगे भूधर मांगै एह ॥१४॥

Colophon : इति विनती सम्पूर्णम् ।

१४५९. गुणावलि

Opening : श्री अरिहंत अणत गुण, सेवइ सुरनर इंद ।
पाय कमल जसु प्रणमतां, लहीयैं परमाणद ।।१।।

Closing : श्रीखेम साखैं सोभता वा शांति हरष मुणिद,
तसु सीस कहै जिन हर्ष मुनि गुरु नामैं हो दिन-२ आणद ।।

Colophon इति श्री गुणावली चौपई सम्पूर्णम् ।

१४६०. गुणाष्टक

Opening : गुणाधीश योगी मुनि ··· सकल जन के काम शरते ।।

Closing : सुनो गामें धाते ·················· आदि परमा ।।

Colophon : इति परमानन्द कृत गुणाष्टक सम्पूर्णम् ।

विशेष— गुणाष्टक के बाद कुछ फुटकर श्लोक सकलित हैं ।

१४६१. जैनपदसंग्रह

Opening : णमो अरिहंताण, णमो सिद्धाण, णमो आयरियाण ।
णमो उवज्झायाण, णमो लोए सव्वसाहूण ।।
एसो पच णमुक्कारो सव्वपावप्पणासणो ।
मंगलाण च सव्वेसिं पढम हवइ मगलम् ।।

Closing : ये रे सावलिया तेरा नाम जप छुट जात भव भांवरिया ।
— — जो भवसागर से तरिया । येरे ।।

Colophon : नही है ।

१४६२. जिनचैत्य-नमस्कार

Opening : सद्भूवत्या देवलोके रविशशिभुवने व्यंतराणा निकाये,

नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपटले तारकाणां विमाने ।
पाताले पन्नगेन्द्रस्फुटमणिकिरणे ध्वस्तसांद्रांधकारे,
श्रीमतत्तीर्थ कराणा प्रतिदिवसमह तत्र चैत्यानि वदे ॥१॥

Closing : इन्द्रं श्री जैन चैत्य स्तवमिदमनिश ·· ··· प्रणमता चित्त-
मानदकारी ॥

Colophon : इति श्री जिनचैत्यनमस्कार समाप्त. ।
देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १३२ ।

१४६३. जिनदेव स्तुति

Opening : जिनराजदेव कीजिये मुक्त दीन पै करूना ।
भविवृ द को अब दीजिये यह शील का शरना ॥ टेक ॥
सुचिशील के धारा मे जो स्नान करे है ।
मन कर्म को सो धोय के सिवनार वरे है ॥ टेक ॥
व्रतराज सो वेताल व्याल काल हरे है,
उपसर्ग वर्ग घोर कोट कष्ट टरे है ॥ जिनराज ॥१॥

Closing : जस सील का कहने मे थका सहस वदन है ॥
इस सील से भव पाय भगाकर मदन है ।
यह सील ही भविवृंद को कल्यान प्रदन है
दस पैड ही इस पैंड से निर्वानि सदन हैं ॥१४॥ टेक ॥

Colophon : सम्पूर्णम् ।

१४६४. जिनपंजर-स्तोत्र

Opening : ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हद्भ्यो नमो नमः । ॐ ह्रीं श्री अर्हं
सिद्धेभ्यो नमो नम । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं आचार्य्येभ्यो नमो

नम. । ॐ ह्री श्री अर्ह उपाध्यायेभ्यो नमो नमः । ॐ ह्री श्रीं अर्हं श्री गौतमस्वामि प्रमुख सर्वसाधुभ्यो नमो नम ॥१॥

Closing : श्री रुद्रपल्लीय वरेण्य गच्छे देवप्रभाचार्यपदाब्जहस. ।
वादीन्द्रचूडामणिरेव जैन जीयादसौ श्रीकमल प्रभाख्य ॥

Colophon : इति जिनपंजर स्तोत्र समाप्तम् ।

देखें, जैं० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६७६ ।

१४६५. जिनपंजर-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४६४ ।

Closing : वात सकुन्छ य ... मनोव छिनपूर्णाय ॥२४॥

Colophon : इति जिनपंजरस्तोत्र सम्पूर्णम् । पंडित अजयचन्द्र ।

१४६६. जिनपंजर-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४६४ ।

Closing : अस्पष्ट ।

Colophon : इति वज्रपिंजरस्तोत्र समाप्तम् ।

१४६७ जिनरक्षा-स्तवन

Opening : श्रीजिन भक्तितो नत्वा त्रैलोक्याह्लाददायकम् ।
जैनरक्षामह वक्ष्ये देहिना देहरक्षकम् ॥१॥

Closing : राकाया ? तु विधातव्यामुद्यापनमहोत्सवम् ।
पूजाविधि समायुक्त कर्त्तव्य सज्जनैर्जनैः ॥२१॥

Colophon : इति जिनरक्षा स्तवनम् ।

१४६८. जिनसहस्रनाम

Opening : पंच परम गुरु को नमों उरधरि परम सु प्रीति ।
तीरथराज जिनंद जी चौबीसों धरि चित ।

Closing : सिखिरचंद कृत पाठ यह, बन्यौ अनुपम रास ।
जो पढ़सी मन लायके, पासी सौख्य सुवास ।।

Colophon : इति श्री जिनसहस्रनाम पूजा पाठ भाषा सम्पूर्णम् । शुभमस्तु ।
मकरमासे शुक्लपक्षे तिथौ-२ चंद्रवासरे ··· ···· ।
सूबा औधदेश मुल्क हिन्दुस्तान मे प्रसिद्ध जिला है नवावगंज
बाराबकी नाम है ।
टिकइत नगर मुथाना डाकखाना जानो तासु डिग पूरब सरैया-
भलो ग्राम है ।
वास स्थान लेखक सु भगवान दीन नाम अन्नजल के ववस
आयो यहि ठाम है ।
भोज नृप देश जिले शाहाबाद आरा नग्र राय जी वुलाकचंद-
मंदिर मुकाम है ।।१।।
श्री सहस्रनाम पाठ जी को चढ़ाया श्री चंद्रप्रभु स्वामी जी के
मंदिल मे व्रत उद्यापन का मुनम्मात ······· कुंअर भार्य्या
बाबू रामा प्रसाद अग्रवाल श्रावक दिगम्बर आम्नाय धारक
आरामपुर नग्रनिवासी मिति भादों सुदी ८ संवत् १९५६ ।

१४६९. जिनेन्द्रदर्शन स्तोत्र

Opening : देखें, क० १४४० ।

Closing : जन्मजन्मकृत पापं जन्मकोटिसमर्जितम् ।
जन्ममृत्युजरान्तकं हन्यते जिनदर्शनात् ।।१४।।

Colophon : इति जिनदर्शन संस्कृत सम्पूर्णम् ।

१४७०. जिनदर्शन

Opening : प्रभु पतितपावन मैं अपावन चरन आयो शरण जी,
यों विरद आप निहार स्वामी मेट जामन मरण जी ।

Closing : या श्रद्धा मोही उर भई, कीजे तुम पद सेव ।
नवल नवल गुण गाय कै जै जै जै जिनदेव ॥

Colophon : इति श्री नवलकृत जिनस्तुति भाषा सम्पूर्णम् ।

विशेष— प्रारम्भिक स्तुति कविवर बुधजन कृत है ।

१४७१. जिनदर्शन

Opening : देखे, क० १४७० ।

Closing : जांचो नहीं सुरवास - दीजीए शिवनाथ जी ॥

Colophon : इति श्री भाषा जिनदर्शन सम्पूर्णम् ।

१४७२. ज्वालामालिनी-स्तोत्र

Opening : ॐ नमोभगवते चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय शशाकशंखगोक्षीरहारधवल । गोत्राय घातिकर्म्मनिर्मलोच्छेदनाय जाति जरामरणविनाश-नाय ।

Closing : आं क्रौं क्ष्मं क्षू क्षौं क्षः ज्वालामालिनी ज्ञापयते स्वाहा ।

Colophon : इति श्री चंदप्रभतीर्थंकर की ज्वालामालिनि शासनदेवी सकल दुःखहरन मंगलकर विजयकर स्तोत्र संपूर्णम् ।

विशेष— इसके आगे एक मंत्र भी दिया गया है ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६७६ ।
रा० सू० III, पृ० २३६ ।

१४७३. ज्वालामालिनी-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४७२।

Closing : भृंगारतालिलवरदर्पणे चामराणी अकचंदनादिनवरत्नविभूषितागे ईत्यास्तितापरिजनै करकजयुग्मे ॥६॥

Colophon ; अनुपलब्ध।

१४७४. ज्वालामालिनी-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४७२।

Closing : दहदह पच पच छिद छिद भिद भिद हां ह्रीं हूं हूं फुट स्वाहा। अनेन मत्रेण होम कुर्यात् सहस्र १२००० अनेन मत्रेण गजेन्द्र नरेन्द्र सर्वशत्रु वशीकरणं पूर्वमत्र स्मरणोति

Colophon : इति श्री ज्वालामालिनी स्तोत्रमत्रविधि कल्प सम्पूर्णम्।

१४७५. ज्वालामालिनी-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४७२।

Closing : चद्रहास्य खड्गेन छेदय छेदय, भेदय भेदय डरु डरु छरु छरु स्फुट ऋं द्रा आ क्रों क्षी क्षू क्षो ज्वालामालिनि ज्ञापयते स्वाहा।

Colophon : इति ज्वालामालिनी स्तोत्र संपूर्णम्।

१४७६. ज्वालामालिनी-स्तोत्र

विशेष— पूर्णतः जीर्ण-शीर्ण।

१४७७. ज्वालामालिनी-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४७२ ।

Closing : ... ... तन्याभरणं पीतवर्णं खड्गत्रिशुलपाससरासमायुधं उत्तमासनेन स्थापित तस्याग्रे जाप्य रक्तपीतउज्वलफलानि मध्यरात्रे " " ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१४७८ ज्वालामालिनी

Opening : स्नेहाच्छरण प्रयाति भगवन् पादद्वयं ते प्रजा,
हेतुस्तत्र विचित्रदुःखनिचय संसारघोरार्णव ।
छायानुरागं रवि ॥१॥

Closing : छेदय छेदय भेदय भेदय डरू डरू छरू छरू
हुरू हुरू स्फुट स्फुट घे घे
— ... ज्वालामालिन्यां ज्ञापयते स्तोत्र ।

Colophon : इति ज्वालामालिनी स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

विशेष — इसमे शान्त्याष्टक भी गर्भित है ।

१४७९. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening : कल्याणमदिरमुदारमवद्यभेदि, भीताभयप्रदमनिंदितमङिघ्रपद्मम् ।
ससारसागरनिमज्जदशेषजन्तु पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य १॥

Closing जननयनकुमुदचद्र प्रभासुरा; स्वर्गसपदो भुक्त्वा ।
ते विगलितमलनिचया अचिरान्मोक्ष प्रपद्यन्ते ॥

Colophon : इति श्री कल्याणमदिर सस्कृत समाप्तम् ।

देखें जै० सि० भ० ग्र० I, ६५२ ।

१४८०. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४७६ ।
Closing : देखे, क्र० १४७६ ।
Colophon : इति श्री कल्याणमंदिर जो सस्कृत समाप्तम् ।

१४८१. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening : देखे क्र० १४७६ ।
Closing : देखे, क्र० १४७६ ।
Colophon इति श्री कल्याणमंदिर स्तोत्र जी सम्पूर्णम् । श्रीरस्तु ।

१४८२. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४७६ ।
Closing : देखें, क्र० १४७६ ।
Colophon : इति श्री कल्याणमंदिर सम्पूर्णम् ।

१४८३. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४७६ ।
Closing : देखे, क्र० १४७६ ।
Colophon : इति कल्याणमंदिर सम्पूर्णम् ।

१४८४. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४७६ ।
Closing : देखें, क्र० १४७६ ।

Col phon : इति श्री कुमुदचंद्राचार्यविरचित श्री कल्याणमंदिरस्तोत्र समाप्तम् ।

१४८५. कल्याणमंदिर-स्तोत्र (सटीक)

Opening : देखें, क्र० १४७६ ।

Closing : अस्मिन् श्लोके स्तोत्रकर्त्ता कुमुदचंद्राचार्यस्य नामोऽपि प्रकटो जात ।

Colophon : इति कुमुदचंद्राचार्यकृत कल्याणमंदिरस्य अर्थावबोध टीका पंडित शिवचंद्र निर्म्मापिता अलमगमत् ।

१४८६. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening : परमजोति परमातमा परमज्ञान परवीन ।
वंदौ परमानन्द मैं सो घट-घट अंतरलीन ।।

Closing : यह कल्याणमंदिर कियौ, कुमुदचंद्र की बुद्धि ।
भाषा कियो बनारसी, कारण समकित शुद्ध ।।

Colophon : इति कल्याणमंदिर पूरन ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६६१ ।

१४८७. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening : श्री नवकार जपौ मन रंगे श्री जिनशासन सार री माई ।
सर्व मंगल मैं पहिलो मंगल जपतां जय जयकार री माई ।।१।।

Closing : देखें, क्र० १४८६ ।

Colophon : इति श्री कल्याणमंदिर भाषा संपूर्णम् ।

१४८८. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४८६ ।

Closing : देखें, क्र० १४८६ ।

Colophon : इति श्री कल्याण मंदिर स्तोत्र भाषा संपूर्णम् ।

१४८९. कल्याणमंदिर

Opening : देखें, क्र० १४८६ ।

Closing : देखें, क्र० १४८६ ।

Colophon : इति श्री भाषा कल्याणमन्दिर जी समाप्तम् ।

१४९०. कल्याणमंदिर

Opening : देखें, क्र० १४८६ ।

Closing : देखें, क्र० १४८६ ।

Colophon : इति श्री कल्याण मंदिर की भाषा सपूर्नम् ।

१४९१. क्षेत्रपाल-स्तोत्र

Opening : श्रीमत्सर्वज्ञदेवंनिजमुकुटतटाभ्यतरे संदधानम्,
चंचच्चामीकराभं खचितमणिशतै. भूषणैर्भूषितांगम् ।
स्फुर्जंत्काम्याभिलासप्रदममलतरं वेत्रयष्टिदधानम्,
स्तोष्ये श्री क्षेत्रपाल जिननिलयगतं विघ्नविध्वंसदक्षम् ।।

Closing : ॐ आ क्रों ह्रीं प्रशस्तवर्णसर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधू चिह्न-
सपरिवारसहितमो क्षेत्रपाल येहि तिष्ट तिष्ठ ठः ठः मम संनि-
हितो भव भव वषट् स्वाहा, इति ठः ठ स्वस्थान गच्छतु स्वाहा।

Colophon : संपूर्णम् ।

१४९२. क्षेत्रपाल-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४९१ ।

Closing : इम स्तव यो मतिमानधीते श्रीक्षेत्रपालस्य गरिष्टमूर्ते,
भक्त्यातिकाल सतत पवित्रं भवत्यसौ सारदचन्द्रकीर्तिः ॥

Colophon : इति क्षेत्रपालस्तोत्रम् ।

१४९३ क्षेत्रपाल-स्तोत्र

Opening : देखें क्र० १४०८ ।

Closing : भैरवाष्टकमिद – – · भैरवाष्टककीर्तिनात् ॥

Colophon : इति क्षेत्रपालस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१४९४. क्षेत्रपाल-स्तोत्र

Opening : ॐ ह्रीं नमो भगवति पद्मावती हा हा कात्यायनी हू हू योगिनी
नवकुलनागबधिनी अवतर-२ आगच्छ-२ – · · · ।

Closing : अपुत्रो लभते पुत्रान् बद्धो मुच्चति बंधनात् ।
त्रिसंध्य पठते यस्तु सर्वसिद्धिमवाप्नुयाद् ॥१९॥

Colophon : इति श्री क्षेत्रपालस्तोत्रम् ।

१४९५. लघुसहस्रनाम

Opening : स्वयंभुवे नम. तुभ्यमुत्पाद्यात्मानमात्मनि ।
स्वात्मनैव तथोद्भूत वृत्तयेऽचिन्त्यवृत्तये ॥१॥

Closing : नामाष्टकसहस्राणां ये पठंति पुनः पुनः ।
ते निर्व्वाणपद यान्ति निश्चयेननात्रमंसय ॥

Colophon : इति श्री लघुमहस्रनाम जी सम्पूर्णम् ।

१४६६. लघुसहस्रनाम

Opening : देखें, क्र० १४६५ ।

Closing : देखें, क्र० १४६५ ।

Colophon : इति श्री लघुसहस्रनाम जी समाप्तम् ।

१४६७. लघुसहस्रनाम

Opening : देखे, क्र० १४६८ ।

Closing : देखे, क्र० १४६५ ।

Colophon : इति श्री लघुसहस्रनाम स्तोत्रं सपूर्णम् ।
संवत् १८४२ वर्षे शा० १७०७ प्रवर्त्तमाने श्रावण वदि ३० गुरौ ।

१४६८. लघुसहस्रनाम

Opening : नमः त्रैलोक्यनाथाय सर्वज्ञायमात्मने ।
वक्ष्ये तस्यैव नामानि मोक्षसौख्याभिलाषया ॥१॥

Closing : देखें क्र० १५६५ ।

Colophon : इति श्री लघुसहस्रनाम समाप्तम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७० ।

१४६९. लक्ष्मीस्तोत्र

Opening : लक्ष्मीमहस्तुल्य सती सती सती ।
प्रवृद्धकालो विरतो रतो रतो ।

जराऽजा जन्महृता हृता हृता ।
पार्श्वं फणे रामगिरौ गिरौ गिरौ ।।१।।

Closing : तर्के व्याकरणे च नाटकचये काव्याकुले कौसले,
विख्यातो भुवि पद्मनंदिसुधियस्तत्वस्य कोशं निधिः ।
गंभीरं यमकाष्टकं भणति यः सभूयसा लभ्यते ।
श्री पद्मप्रभुदेवनिर्मितमिद स्तोत्र जगन्मङ्गलम् ।।

Colophon : इति श्रीपार्श्वनाथस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० , क० ७३७ ।
दि० जि० ग्र० र०, पृ० १४०-१४१ ।
जि० र० को०, पृ० २३४ ।

१५००. लक्ष्मीस्तोत्र

Opening : देखें, क० १४६६ ।
Closing : देखें, क० १४६६ ।
Colophon : इति लक्ष्मीस्तोत्रम् ।

१५०१. लक्ष्मीस्तोत्र

Opening : देखें, क० १४६६ ।
Closing : देखें, क० १४६६ ।
Colophon : इति श्री लक्ष्वीपार्श्वनाथस्तवनम् ।

१५०२. महावीर आरती

Opening : आरती करी जिनवीर की, सुन पिया सेनिकराय ।
जन्म-जन्म सुख पाईए, दुरित सकल मिटि जाय ।।१।।

Closing : जिन आरती कीजै सुख लहीजे छीजै कर्म कलक ।
सीवपुर पाई जै सो नर पूजि जै भक्ति सहित निकलक ।।

Colophon : इति आरती सम्पूर्णम् ।

१५०३. मंडलोद्धार-स्तोत्र

Opening : संपूर्व्वं सूरिभिराम्नातं क्षेत्रपालसपर्यका. ।
तथाह मडन वक्ष्ये सर्वविघ्नोपशातये ॥१॥

Closing : यथापूर्व्वं मया श्रुत्वा तथा एवं मया कृतम् ।
क्षेत्रपालविधि दिव्यां विघ्नदु.खप्रणाशकम् ।

Colophon : इति मडलोद्धार स्तोत्रम् ।

१५०४. मंगल आरती

Opening : मगल आरती कीजे भोर विघन हरन सुभ करन किशोर । टेक ।
अरहत सिद्ध सूर उवझाय साधु नाम जपिये सुखदाय ॥१॥

Closing : कहे कहाँ लो तुम सब जानो, द्यानत की अभिलाष प्रमानो ।
करो आरती वर्द्धमान की, पावापुर निर्वाण स्थान की ॥करो॥

Colophon : इति आरती महावीर जी की सम्पूर्णम् ।

१५०५. मणिभद्र-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४०८ ।

Closing : जाप एक लाख पचीस हजार करें १२५००० दिन तीन में जब
उपवास के सरने चूरमो बनाये या लाल वस्त्र जाप माला कनेर
फूल .... ।

Colophon : नहीं है ।

१५०६. मंगलाष्टक

Opening : श्रीमन्नम्रसुरासुरेन्द्रमुकुट · ····कुर्वंतु ते मंगलम् ॥१॥

Closing : इत्थं श्रीजिनमंगलाष्टकमिदं ·· ···· कुर्वंतु मंगलम् ॥१०॥

Colophon : इति मंगलाष्टक संपूर्णम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७०५ ।

१५०७. मंगलजिन-दर्शन

Opening : जै जै जिनदेव के देवा, सुरनर सकल करै तुम सेवा ।
अद्‌भुत है प्रभु महिमा तेरी, बरणी न जाय अलपमति मेरी ॥

Closing : निस्तार के तुम मूल स्वामी बड़े भागन पाइए ।
रूपचंद चिंता कहा जिन चरण सरणनि आइए ॥

Colophon : इति रूपचंद कृत जिनगुण विनती सम्पूर्णम् ।

१५०८. मुनीश्वर विनती

Opening : वंदौ दिगम्बर गुरु चरण जग तरण तारण जान,
जे भरम भारा रोग को हैं राजवैद्य महान ।
जिनके अनुग्रह बिन कबि नहि करे कर्म जजीर,
ते साधु मेरे उर बसे मेरी हरो पातक पीर ॥१॥

Closing : कर जोड़ भूधर वीनमैं वै मिलै कब मुनि राय ।
इह आस मन की कब फलै मेरे सरे सगले काज ।
ससार विषम विदेस मे जे बिना कार वीर ॥ ते साधु० ॥८॥

Colophon : इति साधु विनती सम्पूर्णम् ।

१५०६. नमस्कार

Opening : देखें, क्र० ११६३ ।

Closing : देखें, क्र० ११६३ ।

Colophon : इति श्रीपाल का नमस्कार समाप्तम् ।

१५१०. नमस्कार

Opening : देखे, क्र० १२८७ ।

Closing : देखे, क्र० १५०६ ।

Colophon इति श्रीपालजी कृत नमस्कार समाप्तम् ।

१५११. नंदीश्वर-भक्ति

Opening : त्रिदशपतिमुकुटतटगतमणि ···· विरहित-निलयान् ॥१॥

Closing ; अभ्यध्य स्वपन् जाग्रन् तिष्ठन्नपि पथि चलन् ··· ··· स्तोत्रं सुकृती ॥११॥

Colophon : इति संपूर्ण ।

देखें—जै० सि० भ० ग्र०, I, क्र० ७०८ ।

१५१२. नंदीश्वर-भक्ति

Opening : देखे, क्र० १५११ ।

Closing : ··· ···· दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइ गमणं समाहि-मरण जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

Colophon : इनि नंदीश्वरभक्ति समाप्ता । इति सप्तभक्तय: समाप्ता ।

१५१३. नरक-विनती

Opening : आदि जिनंद जु हारीयै मन धरि अधिक उल्हासो जी।
मन वच काया शुद्ध सुकीजै निज अरदासो प्रभु नरकतना
दु:ख दोहिल ।।१।।

Closing : प्रभु पतितपावन करण भावन श्री गुणसागर भाइयैं।
इह लोक सुख परलोक शिवपद स्वामि सुमिरण पाइयैं ।।

Colophon : इति श्री नरक विनति स्तवन सम्पूर्णम् ।

१५१४. नारायणलक्ष्मी-स्तोत्र

Opening : ॐ अस्य श्री नारायणहृदयस्तोत्रमन्त्रस्य भार्गवऋषि. अनुष्टुप् छद.
श्रीमन्नारायणो देवता श्रीमन्नारायण प्रसादसिद्धयर्थे जपे
विनियोग: ।

Closing : श्रीध्यायेत्वा प्रहसितमुखो कोटिबालार्कभासम्,
विद्युद्वर्णा वरवरधरा भूषणाढ्या सुशोभाम् ।
बीजापुर सरसिजयुगं बिभ्रती स्वर्णपात्रम्,
भर्त्रायुक्तां मुहुरभयदा महामय्यच्युतश्री: ।।१०५।।

Colophon : इति श्री अथर्वणा रहस्ये उत्तरभागे श्री महालक्ष्मीहृदय सपूर्णम् ।

१५१५. नवग्रह-स्तोत्र

Opening : जगद्गुरु नमस्कृत्य श्रुत्वा सद्गुरुभाषितम् ।
ग्रहशांति प्रवक्षामि लोकानां सुखहेतवे ।।

Closing : भद्रबाहु. महाश्चैव पचमश्रुतकेवली ।
तेन विद्यानवादार्च ग्रहशांतिरूदीरित: ।।२१

Colophon : इति नवग्रह स्तोत्रम् ।

देखो, जि० र० को०, पृ० २०६ ।

१५१६. नवग्रह-स्तोत्र

Opening : अर्कचन्द्रकुजसौम्य — — — जिनपूजनात् ।।१।।
Closing : भद्रबाहुरूवाचेद पचमश्रुतकेवली ।
विद्याप्रवादत. पूर्वाद्ग्रहशांतिः विधि श्रुता ।।११।।
Colophon . इति नवग्रह शांति स्तोत्रम् ।

१५१७ नवकारढाल

Opening · पहिलो लोक अलोक ए ढाल छै समरौ श्री नवकार
सार पूरव तणो नव निध सिद्ध आवै सदा ए ।
महिमा मोयी जास सकट सवि टलै सिजय मनोरथ सपदा ए ।।
Closing : दिन-२ अधिकी संपदा ए मनवछित सुखथाय । नमु न० ।
दया कुशल वाचक बढै धर्ममदिर गुण गाय ।।२३। नमु न० ।।
Colophon : इति श्री नवकार चउढालीयो सम्पूर्णम् ।

१५१८. नवकार-स्तोत्र

Opening : हस्तावल वोर्हतां पापाद्वा मत्रराजरस्य जगत ।
सजीवन मत्रराट् ··· · ।।१।।
Closing : अन्यच्च ··· सुकृति ।।१२।।
Colophon ; इति पंच नमस्कार स्तोत्रम् ।

१५१९. नवकारमंत्र-स्तोत्र

Opening : ॐ परमेष्ठी नमस्कारं सार नवपदात्मकम् ।
आत्मरक्षाकर वज्र पजराभि स्मराम्यहम् ।।१।।

Closing : यश्चैनां कुरूते रक्षां परमेष्ठिपदैः सदा ।
तस्य न स्याद्भव व्याधिरधिश्चापि कदाचन ॥८॥

Colophon : इति नवकार मंत्र स्तोत्रम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७ ६ ।

१५२०. नेमिनाथ आरती

Opening : आरती कीजै स्वामी नेम जिनंद की ।
सब सुखदायक आनंद कंद की ॥ आरती० ॥१॥

Closing : भैरो सरन चरन तुम आयौ ।
भव भव मैं प्रभु होइ साहायो ॥ आरती ॥६॥

Colophon : इति भैरोजी कृत आरती ।

१५२१. नेमिनाथ-स्तोत्र

विशेष — यह पूर्णतया जीर्ण है ।

१५२२. निजामणि

Opening : सकल जिनेश्वर देव हूमन पाये करिने सेव ।
निजामणि कहु सार जिन क्षपक तरे ससार ॥१॥

Closing : श्री सकलकीर्ति गुरु ध्याउ, मुनि भुवनकीर्ति गुणगाउ ।
ब्रह्म जिनदास भणे सार ए निजामणी भवतार ॥५४॥

Clolophon : इति श्री ब्रह्मचारी जिनदास विरचिते क्षपक निजामणि सपूर्णम् ।

१५२३. निर्वाण-भक्ति

Opening : विबुधपतिखगपनरपति धनदोरगभूत यक्षपतिमहितम् ।
अतुलसुखविमलनिरूपमशिवमचलमनामय प्राप्तम् ।

Closing : देखे, क्र० १५१२।

Colophon : इति निर्वाणभक्तिः।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७१७।
जि० र० को०, पृ० २१४।

१५२४. निर्वाणकाण्ड

Opening : वीतराग वंदौ सदा, भाव सहित सिरनाई।
कहूँ कांड निर्वाण की भाषा विविध बनाई।

Closing : संवत् सत्रहसै इक तात आश्विन सुदि दशमी सुविशाल।
भैया वंदन करै त्रिकाल, जय निर्वाणकाण्ड गुणमाल ॥

Colophon : इति निर्वाणकाण्ड समाप्ता।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७१५।

१५२५. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे, क्र० १५२४।

Closing : देखे, क्र० १५२४।

Colophon : इति निर्वाणकांड भाषा संपूर्णम्।

१५२६. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे, क्र० १५२४।

Closing : देखे, क्र० १५२४।

Colophon : इति श्री भाषा निर्वाणकाण्ड सम्पूर्णम्।

१५२७. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे, क्र० १५२८।
Closing : देखे, क्र० १५२८।
Colophon : इति श्री निर्वाणकाड भाषा सम्पूर्णम् ।

१५२८. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे, क्र० १५२८।
Closing : देखे, क्र० १५२८।
Colophon : इति श्री निर्वाणकाण्ड भाषा समाप्तम् ।

१५२९. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे, क्र० १५२८।
Closing : देखे, क्र० १५२८।
Colophon : इति श्री निर्वाणकाण्ड समाप्तम ।

१५३०. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे क्र० १५२८
Closing : तीन लोक के तीरथ जहाँ, नित प्रति वंदन कीजे तहाँ।
मन वच काय भाव सिरनाई वदन करौ भविक सिरनाई ।।
Colophon : इति श्री निर्वाणकाण्ड भाषा सपूर्णम् ।

१५३१. निर्वाणकाण्ड

Opening : अट्ठावयम्मि उसहो चपाए वासुपुज्ज जिण-णाहो ।
उज्जते णेमिजिणो पावाए णिव्वुदो महावीरो । १॥

Closing : जो पढइ तियालं णिव्वुइ कंडपि भाव सुद्धीए ।
भुंजदि णरसुरसुक्ख पच्छा सो लहइ णिव्वाणं ॥

Colophon : इति निर्वाणकांड समाप्तम् ।
देखें, जैं० सि० भ० ग्र० I, क० ७१४ ।

१५३२. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे क० १५३१ ।
Closing : देखे, क० १५३१ ।
Colophon : इति श्री णिव्वाणकाड की गाथा संपूर्णम् ।

१५३३. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे, क० १५३१ ।
Closing : देखे, क० १५३१ ।
Colophon : इति श्री निर्वाणकाड समाप्तम् ।

१५३४ निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे, क० १५३१ ।
Closing : देखे, क० १५३१ ।
Colophon : इति निर्वाणकाड संपूर्णम् ।

१५३५. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे, क० १५३१ ।
Closing : देखें, क० १५३१ ।

Colophon : इति निर्वाणकांड सम्पूर्णम् ।

१५३६. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखें, क्र० १५३१ ।
Closing : देखे क्र० १५३१ ।
Colophon : इति निर्व्वाणकाड प्राकृत सपूर्णम् ।

२५३७. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखें, क्र० १५३१ ।
Closing : देखें क्र० १५३१ ।
Colophon : इति निर्वाणकाण्ड गाथा समाप्ता ।

१५३८. निर्वाणकाण्ड

Opening : श्री अर्हंत अनत गुन सिद्ध सूर उवझाय ।
सर्वसाधु के चरण जुग वदो मन वचकाय ।।१।।
Closing : देखें, क्र० १५२४ ।
Colophon : इति श्री निर्वाणकांड भाषा समाप्तम् ।

१५३९. निर्वाणकाण्ड

Opening : रावण के सुत आदिकुमार,
मुक्त गये रेवा तट सार ।
कोडि पाच अरु लाख पचास,
ते वदौ ·· ·· · ।।
Closing : देखे, क्र० १५२४ ।
Colophon : इति निर्व्वाणकाड सम्पूर्ण: ।

१५४०. ॐकार स्तुति

Opening : ॐकारं विस्फुरच्चन्द्रकलाबिंदुमहोज्वलम् ।
नामाग्राक्षरनिस्पन्नं पंचाना परमेष्ठिनाम् ॥
धर्म्मार्थकाममोक्षाणा दातार विश्वपूजितम् ।
हृत्कजकर्णिकासीन ध्यायेत् ध्यानी शिवाप्तये ॥

Closing : सर्वावस्थासु सर्वत्र महामत्र शिवार्थिभिः .... ।
.. .. महत्त्वत्रकोटिभिः ॥

Colophon : नही है ।

१५४१. पद

Opening : मोह यानी हिरदे आय श्री जिनराज की ।
जा वानी तें सब सुख उपजै, सोई हमैं सुहाय ॥ श्रीजि० ॥

Closing : सेवक जान दया कर स्वामी, फिर न फिरो भव फेरी ॥प्रभु०

Colophon : इति पद ।

१५४२. पद

Opening अब चल सग हमारे, तोहे बहुत जतन कर राखो रे काया ॥ टेक
निस दिन पल पल रहे है एकठे अब क्यू नेह निवारे रेकाया॥१॥

Closing : जिनवर नाम सार भज अतम काया भरम ससारे ।
सुगुर वचन परतीत धरत सुभ आनंद भए हैं हमारे रीकाया
॥ अब चल ॥

Colophon : इति पद चेतावनी सम्पूर्णम् ।

१५४३. पद

Opening : आज गई थी समवसरण मा जिनवचनामृत पीवा रे।
आवा श्री परमेसर वदन कमल छवि हरषे निरखेवा रे
।।आवा ।।१।।

Closing : परम दयाल कृपाल कृपानिधि इतनी अरज सुणीजे
परम भगति जिनराज तुहारी अपणी कर जाणीजे ।३।। कु० ।

Colophon . इति श्री जिन कुसलसूरि जी गीतम् ।

१५४४. पद

Opening : मिन जाओ ··· गुरु के वचन मोती कान में।
Closing : सान विमल आगे आवागमन निवारो ।। वृ० ।।
Colophon । सम्पूर्णम् ।

१५४५. पद

Opening : बिना प्रभु पार्श्व के देखे मेरा दिल बेकरारी है ।। बिना ।।
चौरासिलाख मे भटको बहुत सी देहधारी है।
मुसीबत जो पडी मुझपै प्रभु को खुद निहारी है।। बिना ।। ।।१।।

Closing देव त्वदीय ·· · ·· तव दिव्यघोषम् ।।४।।

Colophon : इति काव्य सपूर्णम् ।

१५४६. पद

Opening : देखो मतलब का ससारा, देखो मतलब का ससारा ।। टेक ।।

Closing । भाग चदमा चद या प्रकार जीव लहै सुख अपार याको निहार
स्याद्वाद की उचरनी
परनति सत्र जीवन की तीन भांत वरनी ।। परनति० ।।४।।

Colophon : इति पद सम्पूर्णम् । मिति भादव वदी ३ वार सनिष्चरवार सम्वत् १६४८ का । लिख्यत अमीचद श्रावक पालमग्राम मध्ये ।

१५४७ पद

Opening : तुम भजो निरजन नाव मुक्ति पद पाई ।
ये अचल अखंडित जोति सदा सुखदाई ।। टेक ।।

Closing : अब जैनधर्म हितकार सदा मैं चाहूँ ।
अब लख चौरासी माहि फेरि नही आऊँ ।।
कोई जिनवै यू निणदास भावनी गाई ।। तुम भजो ।।

Colophon : इति पद मरहठी समाप्तम् । शुभ भूयात् मिति भादव सुदी ११ वार सोमवार संवत् १६४८ लिख्यत अमीचद श्रावक पालमग्राम का वासी ।

१५४८. पद

Opening : दिन वारन बोल दुनिया मीनष जमारोपाय जी ।।

Closing : पतरी मारत जावतार साम मिल गया चोर,
पतरी वाण भया ...... ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१५४९. पद

Opening : नेमि सावरो से म्हारि प्रीत लगी हो ।
संतु खग दिवारि सील को न किया जोर जुगती मो तारी लगीहो।

Closing : ... नेम सावरो से म्हारि प्रीत लगी हो ।

Colophon : पद सपूर्णम् । संवत् १९१६ मिति चैत्र वदी १५ । बाबू हरलाल जी अग्रवाल गांगिलगोत्रस्य पुत्र बाबू वधनलाल जी तस्य पुत्र बाबू लक्ष्मीनारायन जी भार्या मधुवन बीबीं पुस्तक लिखापित आरे मध्ये संपूर्णम् ।

१५५०. पद

Opening : मुझे है चाव दर्शन का ...... उबारोगे तो क्या होगा ।।

Closing : अधम उद्धार पूरन के ... नीकारोगे तो क्या होगा ।।

Colophon : इति पूर्णम् ।

१५५१. पद

Opening : शरण पिया जैओ होसी रघुवीर ।।

Closing : ... मेरो बार क्यो विलम्ब करो रे ।।

Colophon : नहीं है ।

१५५२. पद

Opening : तारण वाला न कोई ए जी का ।
आप तरे आप ही ग तोरे देखो चित मे जोई ।
लाख बात की बात है चेत न जाने सिवसुख होइ ।।ग जी का ।।१।।

Closing : वादि न क्यो न विचारी चेतन अवहु होहु खरे ।
जव सुध आवे चेतन प्यारे की तब सब काज सरे ।। ए चेतन ।।

Colophon : नही है ।

१५५३. पद

Opening : किये आराधना तेरी हिये आनंद व्यापत है ।
तिहारे दर्शन देखे सकल ही पाप नाशत है ।।१।।

Closing : दुर्लभ है नर अवतार नहि बार बार श्रावक — ...
— ... सब साधुन ने भाई ॥१२॥
Cloophon : इति द्वादशानुप्रेक्षा समाप्तम् ।
विशेष— पद के साथ ही द्वादशानुप्रेक्षा भी संकलित है ।

१५५४. पद

Opening : जाके वंदन पइयत है री मुक्ति महासुख खानि ॥ माधुरी ॥
Closing : सबही चाहे भोग सजोग, तैं मिल तैं तजि लीनौ जोग ।
सील वरत चित्त मैं दृढ़ राखि, जग भाषौ तेरी उत्तम साखि ।
Colophon : इति ।

१५५५. पद

Opening : कर जोडी माथ नाए नमो, बेरी बेरी ।
हे वीर पीर हरिये सिताबी से अब मेरी ॥ टेक ॥
Closing : प्रभु जी तुम तीन ज्ञानधारी,
सच्चे होंगे ब्रह्मचारी,
तजी तुम राजुल सी नारी,
भये हो गिर के तपधारी,
धर्मचदनी रामचंद गावैं जिन शरण लिया,
हम को छाँडि चले सखी री साजना ॥५॥
Colophon : इति सम्पूर्णम् ।

१५५६. पद

Opening : प्रात भयो सुमिरि सुमिरि देव पुण्यकाल जानरे
चूकत जे औसर ते पीछैं पछितात रे ॥ प्रा० ॥

Closing : माधुरी जिमवानि चलो री सुनिहु,
विपुलाचल परि बाजे बाजेत सुनक परी मेरे कान।
वर्द्धमान तीर्थङ्कर आयेरी, वदे निज गुर जानि ॥

Colophon : नहीं है।

१५५७. पद

Opening : सिद्धचक्र की सेवा कीजे, नवपद महीमा धारी है।
अरीहंत सिद्ध श्री उवझाया सकल साधु गुन भारी है ॥

Closing : अरज सुना बेहरमान वदो नितमेव रे
चेतन को तार लेव मत वीसारो टेव रे ॥ प्र० ॥

Colophon : इति पद सम्पूर्णम् ।

१५५८. पद

Opening : श्रीपति जिनवर करुनायतनं दुखहरण तुम्हारावाना है।
मत मेरी वार अवार करो मोही देहु विमल कल्याना है ॥ टेक ॥

Closing : हो दीनानाथ अनाथ हित जन दीन अनाथ पुकारी है,
उदयागत कर्म विपाक हलाहल मोही विथा विस्तारी है,
ज्यो आप अवर भवि जीवन की तत्काल विथा निरवारी है,
त्यो वृंदावन कर जोर कहैं प्रभु आज हमारी ही वारी है ॥टेक॥

Colophon : इति श्री विनती सम्पूर्णम् ।

१५५९. पद

Opening : मोह नीद मेरी उर भ है, भोत दीना । जाया । जीन ॥१॥

Closing : अस्पष्ट ।

Colophon : नहीं है।

१५६०. पदसंग्रह

Opening : किये आराधना तेरी, हिये आनंद वियापत है।
तिहारे दरस के देखे सकल ही पाप नासत हैं।।१।।

Closing : केवल मैं सुकल मैं अचल सो मैं अचल मैं हूं।
जिनद वकस रिधि सिधि मैं मिलि अटल रहूँ।

Colophon : इति पदसम्पूर्णम्। मितिमाघ वदी १।

१५६१. पदसंग्रह

Opening : भजन तो बनता नही, ध्यान तो लगता नही मन तो सैलानी।।
खाने को तो अच्छा चाहिये, और ठंडा पानी
चाबने को पान बीडा और पीकदानी
ऊंचे नीचे महल चाहिये लाबु आसमानी।।

Closing : तीन खंड के नाथ धनी तुम हरि ल्याये जो परनारी।
यह कैसे छूटे लगा कलंक कुल मे भारी।।

Colophon : अनुपलब्ध।

१५६२ पद-विनती

Opening : सुमरण ही मैं तारे प्रभु तो।। सु०।।

Closing : जिनराज छवि मनमोह लियो
महाराज सबी मन मोह लियो।। टेक।।

Colophon अनुपलब्ध।

१५६३. पद-हजूरी

Opening : घरी धन आज की आई सरे सब काज मो मन के ··· ।।

Closirg : माधुरी जिनवानि चलो री सुनिहृ,
विपुलाचल परि बाजें वाजंत भुनक परी मेरे काम।
वर्द्धमान तीर्थङ्कर आयेरी, बदे निज गुर जानि ।।
Colophon : नही है ।

१५५७. पद

Opening : सिद्धचक्र की सेवा कीजे, नवपद महीमा धारी हैं।
अरीहृत सिद्ध श्री उवझाया सकल साधु गुन भारी हैं।।
Closing : अरज सुना बेहरमान वदो नितमेव रे
सेवन को तार लेव मत वीसारो टेव रे ।। प्र० ।।
Colophon : इति पद सम्पूर्णम् ।

१५५८. पद

Opening : श्रीपति जिनवर करुनायतनं दुखहरण तुम्हारावाना है ।
मत मेरी वार अवार करो मोही देहु विमल कल्याना है ।। टेक ।।
Closing : हो दीनानाथ अनाथ हित जन दीन अनाथ पुकारी है,
उदयागत कर्म विपाक हलाहल मोही विथा विस्तारी है,
ज्यों आप अवर भवि जोवन की तत्काल विथा निरवारी है,
त्यो वृंदावन कर जोर कहै प्रभु आज हमारी ही वारी है ।।टेक।

Colophon : इति श्री विनती सम्पूर्णम् ।

१५५९. पद

Opening : मोह नीद मेरी उर भ हे, भोत दीना ी जाया । जीन ।।१।।
Closing : अस्पष्ट ।
Colophon : नहीं है ।

१५६०. पदसंग्रह

Opening : किये आराधना तेरी, हिये आनंद वियापत है ।
तिहारे दरस के देखे सकल ही पाप नासत हैं ।।१।।

Closing : केवल मैं सुकल मैं अचल सो मैं अचल मैं हूं ।
जिनद वकस रिधि सिधि मैं मिलि अटल रहूँ ।

Colophon : इति पदसम्पूर्णम् । मितिमाघ वदी १ ।

१५६१. पदसंग्रह

Opening : भजन तो बनता नही, ध्यान तो लगता नही मन तो सैलानी ।।
खाने को तो अच्छा चाहिये, और ठंडा पानी
चावने को पान बीडा और पीकदानी
ऊँचे नीचे महल चाहिये ताबु आसमानी ।।

Closing : तीन खंड के नाथ धनी तुम हरि ल्याये जो परनारी ।
यह कैसे छूटे लगा कलक कुल मे भारी ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१५६२ पद-विनती

Opening : सुमरण ही मैं तारे प्रभु तो ।। सु० ।।

Closing : जिनराज छवि मनमोह लियो
महाराज सबो मन मोह लियो ।। टेक ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१५६३. पद-हजूरो

Opening : घरी धन आज की आई सरे सब काज मो मन के ··· ।।

Closing : तीन लोक को रावन अधिपति लक्ष्मन हाथ मरो।
द्यानत की अर्ज बीनती जामन मरन हरो ॥

Colophon : पद संपूर्णम्।

१५६४. पद होली

Opening : सम्मेद शिखर सुखदाई री मोको सम्मेद शिखर सुखदाई ॥ टेक ॥
बीसतीर्थंकर बीस कूट मे कर्म काटि सिद्ध पाई।
तिनके चरण कमल नित बंदौ मन वच तन लवलाई,
पाप सब जाई पलाई ॥ १ ॥

Closing : चेत चेतन चेचेन तुम्हे बार बार समझाई।
वहत शिखर मन वच तन सेती भज ले श्री जिनराई।
याहि ते शिव सुख पाई।
ऐ चेतन तुम्हे चेत न आई ॥ ६ ॥

Colophon : इति सम्पूर्णम्।

१५६५ पद्मावती अष्टोत्तर शतनाम

Opening : नमोनेकातद्रुर्व्वामांग्स्टनदृशभानुवे।
जिनाय सकलाभीष्ट स्यायनि:कामधेनवे।

Closing : दिव्य स्तोत्रमिद महासुखकर आरोग्यसंपत्करम्,
भूतप्रेतपिशाचराक्षसभय विध्वसनिर्णाशनम्।
आनरसते ? वांछित सुनिलय सर्वेपि मृत्युंजय:,
दिव्य व्याप्नकर कवि च जनक स्तोत्र जगन्मगलम्।

Colophon . इति पद्मावती अष्टोतरशतनामावली संपूर्णम्।

१५६६ पद्मावती स्तोत्र

Opening : श्रीमद्गीर्वाणचक्र स्फुटमुकुटतटीदिव्यमाणिक्यमाला,
ज्योतिर्ज्वालाकराला स्फुरति मुकुटिकाधृष्टपादरविंदे।

व्याघ्रोल्का सहस्रज्वलदनलशिखा-लोलपाशांकुशासम्,
आ क्रों ह्रीं मन्त्ररूपे क्षयितवलमरे रक्ष मां देवि पद्मे ।।१।।

Closing : आह् वान न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजा अर्च्चा न जानामि मम क्षमस्व परमेश्वरी ।।३३।।

Colophon : इति श्री पद्मावती स्तोत्रम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७२२ ।
जि० र० को०, पृ० २३५ ।
Catg. of Skt. & Pkt Ms., P. 665.

१५६७. पद्मावती-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १५६६ ।
Closing : इन न मग्मग्णाइ व्रजति नितरा ... दु भिक्षदावानलम् ।।
Colophon : इति श्री पद्मावती स्तोत्र संपूर्णम् ।

१५६८. पद्मावती-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १५६६ ।
Closing : आयुर्वृद्धिकरी जयामयकरी सर्वार्थसिद्धिप्रदाः,
सद्य प्रत्ययकारिणी भगवती पद्मावती ता स्तुवे ।।३६।।
Colophon : इति पद्मावतीस्तोत्रं समाप्तम् ।

१५६९. पद्मावती-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १५६६ ।
Closing : पठितं भणितं गुणितं जयविजयरम -निबन्धनं परमं,
सर्वव्याधिहरस्तोत्रं त्रिजगत पद्मावतीस्तोत्रम् ।।३३।

Colophon : इति पद्मावतीस्तोत्रम् ।
सन्दर्भ के लिए देखें, क्र० १५६६ ।

१५७०. पद्मावती-स्तोत्र

Opening : चक्रच्चाक्रशशाकपूर्णवदना ... सयोज्य हस्तद्वयम् ।।१।।

Closing : लक्ष्मीवृद्धिकरा जगत्सुखकरा ... पद्मावती पातु व. ।।

Colophon : इति पद्मावतीस्तोत्र सपूर्णम् ।

१५७१. पद्मावती-स्तोत्र

Opening : ॐ जयतीभद्रमाताङ्गी सर्वपापप्रणाशनी ।
सर्वदुःखक्षयकारी महापद्मे नमोनम ।।१।।

Closing : अपुत्रो लभते पुत्र धनार्थं लभते धनम् ।
विद्यार्थी लभते विद्या सुखार्थी लभते सुखम् ।

Colophon : इति पद्मावतीस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१५७२ पद्मावती -स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १५६६ ।

Closing : भव्याः कुर्वन्ति मां पूजा सद्भक्त्याभीष्टसिद्धये ।
एवं पूजाविधिर्लोके जीयादाऽऽचंद्रतारकम् ।।

Colophon : इति इष्टप्रार्थना पुष्पाजलि इति पद्मावतीपूजा समाप्तम् ।

१५७३. पद्मावती-स्तोत्र

Opening : जिनमासनी हंसासनी पदमासनी माता ।
भुजचारते फलचारदे पद्मावती माता ॥

Closing . जिनधर्म्म से डिगने का कहीं आपरें कारन
तो लीजियो उबार मुझे भक्ति उदारन ।
न कर्म के संजोग सो जिस जोनि मे जावो ।
तहा दीजियो सम्यक जो शिवधाम को पावो ॥

Colophon : इति पद्मावती-स्तोत्र सम्पूर्णम् ।
देखे, जैं० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७२१ ।

१५७४. पद्मावती सहस्रनाम

Opening प्रणम्य परमा भक्तया देव्या पादाब्रुजस्तिद्या ।
नामान्यष्टसहस्राणि वक्षे तद्भक्तिसिद्धये ॥१॥

Closing . भो ? देवि ! भो मान ...मक्ष्यम्यति प्रीतिफलमाप्नोति॥१३५॥

Colophon : इति पद्मावतीस्तोत्र सहस्रनामस्तवन सम्पूर्णम् ।
देखें, जैं० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७२७ ।
दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८२ ।

१५७५. पद्मावती-सहस्रनाम

Opening : देखे, क्र० १५७४ ।

Closing : भो देवी भीमा ... न क्षम्यति प्रीतिपलायने किम् ।

Colophon : इति श्री पद्मावती सहस्रनाम सम्पूर्णम् ।

१५७६. पद्मावती सहस्रनाम

Opening : देखे, क्र० १५७४ ।
Closing : देखें, क्र० १५७४ ।
Colophon : नहीं है ।

१५७७. पद्मावती-सहस्रनाम

Opening : श्रीमत्पार्श्वेशमानम्य पद्मावत्यामहाश्रिया ।
नामान्यष्टसहस्राणि वक्ष्ये भक्त्या मनोमुदा ।।१।।
Closing : भक्त्या पठन्त्विद स्तोत्र हितोपकृतमुत्तमम्,
आचन्द्रता क जीयात्मद्भव्यसुखहेतवे ।।३४।।
Colophon : इति पद्मावती सहस्रनाम समाप्त: ।

१५७८. पद्मावती-सहस्रनाम

Opening : देखें, क्र० १५७४ ।
Closing : जयना पूजिता पूज्या पद्मावतीमर्मान्विता ।
ते जना सुखमाप्नोति यावत्मेरुजिनालय ।।१४।।
Colophon : इति पद्मावती उद्यापन पद्माग पूजा समाप्तम् ।
लिखित पडित सेवाराम, सवत् १८२७ कुवार कृष्णपक्षे नौमि
शुक्रदिने लक्ष्मणपुरनगरे कौशलदेशे ।

१५७९. पद्मावती-विनती

Opening : देखे, क्र० १५७३ ।
Closing : देखें, क्र० १५७३ ।

Colophon : इति श्री पद्मावती जी की वीनती सपूर्णम् ।

१५८०. पद्मावती-विनती

Opening : देखे, क्र० १५७३ ।
Closing : देखे, क्र० १५७३ ।
Colophon . इति पद्मावती जी की विनती सम्पूर्णम् ।

१५८१. पद्मनदिपंचविंशतिका

Opening : हृदय भुवि ... मुमव्यम् ॥
Closing : ताते धर्मकु धारणकर पुण्य का सचय करो ।
Colophon : नही है ।

१५८२. पंचनमस्कार-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४७८ ।
Closing . देखे, क्र० १५१८ ।
Colophon : इति पचनमस्कार-स्तोत्रम् ।

१५८३. पंचनमस्कार

Opening : ॐ नमः सिद्धेभ्यः । अथ कतिपय पंचपरमेष्ठिना सप्रादाया-
... ... लिख्यते पंचनामादि पदानां पंचपरमेष्ठ ... ... ।
Closing : अस्पष्ट ।
Colophon : नहीं है ।

१५८४. परमेष्ठीस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १५१६ ।
Closing : देखे, क्र० १५१६ ।
Colophon : इति श्री परमेष्टीस्तोत्रम् ।

१५८५. परमानन्द-स्तोत्र

Opening : परमानन्दसंयुक्त निर्विकार निरामयम् ।
ध्यानहीना न पश्यन्ति निजदेहे व्यवस्थितम् ।
Closing : काष्टमध्ये यथा वह्नि शक्तिरूपेण तिष्ठति ।
अयमात्मा शरीरेषु यो जानाति स पंडितः ।
Colophon : इति श्री परमाणद स्तोत्र समाप्त ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७२६ ।
जि० जि० ग्र० र०, पृ० १४४ ।
Catg. of Skt & Pkt Ms. P 665

१५८६. परमानद-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १५८५ ।
Closing : देखे, क्र० १५८५ ।
Colophon : इति श्री परमानंद स्तोत्र समाप्तम् ।

१५८७. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३२२ ।
Closing : देखे, क्र० १३२२ ।
Colophon : इति पार्श्वनाथस्तोत्रम् ।

१५८८. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

Opening : अजरअमरपार बारदुर्वारबार गलितबहलस्वेद सर्वतत्त्वानुवेदम् ।
कमठमदविदार भूरीसिद्धान्तधार विगतवृजनयूथ नौमि य पार्श्वनाथम् ॥१॥

Closing : तीरथपति पारसनाथतिलो भणता यसवासरवासभला
मनांमत्र सुकोमल होइ मिलो अमची प्रभुपारस आसफलो ॥१४॥

Colophon : इति पार्श्वनाथ चितामणि स्तोत्रम् ।

१५८९. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

विशेष— यह पूर्णत. जीर्ण-शीर्ण है ।

१५९०. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

Opening : श्यामो वर्णविराजतेतिविमले श्यामोपिसर्पोस्मृत.,
श्यामो मेघ निर्घरोपि च घटाश्याम चराम्रिखिलम् ।
वर्षामूसलधार-वीरमखिल कायोत्सर्गे नता,
धरणेद्रो पद्मावती युगस्वरं श्री पार्श्वनाथ नम ॥१॥

Closing : इद स्तोत्र पठेन्नित्य त्रिसध्य च विशेषतः,
ग्रहे भवति कल्याण पार्श्वतीर्थं स्तवेन च ॥८॥

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथस्तोत्रम् ।

१५९१. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३२२ ।

Closing : देखें, क्र० १३२२ ।

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१५६२. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

Opening : नरेन्द्रं फणीन्द्र सुरेन्द्र अधीस सतेन्द्रं सुपूज्य नमो नायशीशम् ।
मुनीद्रं गणेन्द्रं नमो जोरि हाथं नमो देवचिन्तामणि पार्श्व-
नाथम् ।।

Closing : गणधर इद्र न कर सकैं तुम विनती भगवान ।
द्यानत प्रीत निहारिकैं कीजैं आप समान ।।१०।।

Colophon : इति पार्श्वनाथस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१५६३. पार्श्वनाथ-स्तुति

Opening : जाकी देह मरकतमनि सो उद्योत अति आनन पे कोटि काम-
देव छवि हटकी ।
अबुज के पत्र सो विशाल दृग लाज भरे सीस पे सरपफन सोभा
है मुकुट की ।।

Closing : तुम तो करुना निधि नायक हो मेरी पीर हरो दुखददन की,
कर जोरि के लालविनोदी कहे बलि जाऊँ मे वामा के
नदन की ।।

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथ जी की स्तुति समाप्तम् ।

१५६४. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

Opening : ॐ ह्री मात श्री पद्मावते नमः, ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वना-
थाय ह्रीं धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय ।

Closing : जो निय कंठे धारइ कम्पमिमं कप्परुक्खु सारित्थं ।
अविकप्प सोकामिय कप्पण कप्पटू मो सुहई ।।२३।।

Colophon : इति पार्श्वनाथ मंत्र सहित स्तोत्रम् ।

१५६५. पार्श्वनाथाष्टक

Opening : क्षीरजलनिधिनीरनिर्मलमिश्रदिमकरवासयम्,
धारात्रय भृंगारभरिकरीजन्ममरणविनासनम् ।
पूज्यभवजीवसौख्यदायक दुरितकल्मषखडनम्,
श्रीपार्श्वनाथ सुदेवजिनवर मूलनायक वदनम् ।

Closing : नीरचन्दन ` `` मूलनायकवंदनम् ।

Colophon : इति पार्श्वनाथाष्टकम् समाप्तम् ।

१५६६. पार्श्वनाथाष्टक

Opening : क्षीर पयोनिधि को जल उज्वल निर्मल सीतल सू भरिझारी ।
पाप मिटे जिन मत्रह के सुधि जिनाग्र पदाबुजधारकरी ॥
अति सु दर देउ लगाव मनोहर श्रीमूलनायक पार्श्वभरम् ।
शत इद्र समर्चित पादयुग सुभवांबुधि तारन पापहरम् ॥

Closing : दशावतारो भुवनैकमल्लो गोपांगना सेवित पादपद्मम् ।
श्रीपार्श्वनाथो पुरुषोत्तमो य ददातु सर्वं समीहितानि ॥१६॥

Colophon : इत्याष्टक जयमाला समाप्त ।

१५६७. पार्श्वजिन आरती

Opening : स्वामी पार्श्वकुमार हू ँ करु वीनती आजीए ।
तुम त्रिभुवन पतिधार मैं तुम सरन चरन गहिए ॥१॥

Closing : श्री जिनधर्म प्रभाव मनवंछित फल पावई ए ।
भैरो पर होय सहाय अपनी उंड ? निवाहगयँ ए ॥

Colophon : इति श्री पार्श्वजिन आरती ।

१५९८. प्रत्यंगिरा सिद्धि-मंत्र-स्तोत्र

Opening : ॐ ह्रीं या कल्पयतिनो अवद्य ···· ·· ब्रह्मणा अपिनिर्णय ·· · ।

Closing : यस्य देवे च मत्रे च गुरौ च त्रिषु निर्मला,
न व्यवछिद्यन्ते भक्तिस्तस्य सिद्धिरदूरतः ।।

Colophon : इति श्री रुद्रजामले पार्वती स्वरसवादे छराजोगमूलपाणि तत्र विनिर्गते प्रत्यगिरा सिद्धमत्रस्तोत्र संपूर्णम् ।

१५९९. ऋषिमडल-स्तोत्र

Opening : आद्यं ताक्षरसंलक्ष्यमक्षरं व्याप्य यत् स्थितम् ।
अग्निज्वालासमनाद बिन्दुरेखासमन्वितम् ।।१।।

Closing : इति स्तोत्र महास्तोत्र स्तुती तामुत्तम वरम्,
पठनात्स्मरणाज्जापाल्लभते पदम ययम् ।।६३।।

Colophon : इति ऋषिमडल स्तोत्रम् ।

दखे, जै० सि० भ० ग्र०, I, क्र० ७८६ ।
दि० जि० ग्र० र०, पृ० १९७ ।
Cagt, of Skt & Pkt Ms P. 629

१६००. ऋषिमंडल-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १५९९ ।

Closing : देखे, क्र० १५९९ ।

Colophon : इति ऋषिमडलस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१६०१. ऋषिमंडल-स्तोत्र

Opennig : देखें, क्र० १५९९ ।
Closing : देखें, क्र० १५९९ ।
Colophon : इति श्री ऋषिमडलस्तोत्र समाप्तम् ।

१६०२. ऋषिमंडल-स्तोत्र

Opening : देखें क्र० १५९९ ।
Closing : दृष्टेशास्मर्हंतेबिंबे भवेत्सप्तमके ध्रुवः ।
पदमाप्नोति विश्रस्त परमानंदसपदा ॥
Colophon : इति रिषीमडल स्तोत्र सपूर्णम् ।
विशेष— इसके साथ एक मंत्र भी लिखा है ।

१६०३. ऋषिमंडल-स्तोत्र

Opening : आद्य पद शिरोरक्षेत्पर रक्षतु मस्तकम् ।
तृतीय रक्षेन्नेत्रे चतुर्थं रक्षेच्च नासिकाम् ॥६॥
Closing : यावच्चद्राय्यंमा च ···· ·· सद्विमानाकुलाया ॥
Colophon : अनुपलब्ध ।

१६०४. साधु वंदना

Opening : श्री जिन भाषित भारती सुमिरि आनि मुखराग ।
कहों मूलगुन साधु के परमिति विंशति आठ ॥
Closing : अट्ठाईस मूलगुन जो पाले निरदोष ।
सो मुनि कहत बनारसि पावै अविचल मोक्ष ॥
Colophon : इति साधु वंदना समाप्ता ।

१६०५. सहस्रनाम-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४६५ ।
Closing : वागटी जिनसेनेन जिननामानि सार्थकम्,
अष्टाधिकसहस्राणि सर्वाभीष्टकराणि च ॥११॥
Colophon : इति श्री जिनसेनाचार्यविरचित युगादिवाष्टोत्तरसहस्रनामस्तोत्र समाप्तम् ।
देखे, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १३८ ।

१६०६. सहस्रनाम-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४६५ ।
Closing : देखे, क्र० १६०५ ।
Colophon : इति श्री जिनसेनाचार्यविरचित युगादिदेवाष्टोत्तरसहस्रनाम स्तोत्र समाप्तम् । सवत् १६८६ का मिति कुवार सुदी लिपीकृत वुजीरामेण आरा मध्ये । श्रीरस्तु ।

१६०७. सहस्रनाम-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४६५ ।
Closing : देखें, क्र० १६०५ ।
Colophon : इति श्री जिनसेनाचार्यविरचित युगादिदेवाष्टोत्तरसहस्रनाम स्तोत्र समाप्तम् ।

१६०८. सहस्रनाम-स्तवन

Opening : प्रभो भवागभोगेषु ······· शरण्य करुणार्णवम् ।
Closing : एतेषामेकमप्यर्हन्नाम्नामुच्चा ···· जिनायातः ॥

Colophon : इत्याशाधरसूरिकृतं जिनसहस्रनामस्तवन समाप्तम् ।

१६०६. सहस्रनाम-स्तोत्र

Opening : श्रीमान् स्वयंभूर्वृषभ शम्भव. शंभुरात्मभू. ।
स्वयप्रभ प्रभुर्भोक्तिविश्वभूरिपुनर्भव ॥१॥

Closing : देखें, क० १६०५ ।

Colophon : इति श्री जिनसेनाचार्यप्रणीत जिनसहस्रनामस्तवन सम्पूर्णम् । सवत् १८०२ वर्षे मीति आसाढ़ सुदी ४ सथेनभाउ परताप गढ मध्ये लिखतम् ।

१६१०. सहस्रनाम-स्तोत्र

Opening : परम देव परनाम करि, गुरुको करो प्रणाम ।
बुद्धि बल वरनौ ब्रह्म के सहस अठोतरनाम ॥

Closing : सगुन विभूति वैभवी सेसुखी ससबुद्ध ।
सकल विश्वकर्मा ········· विश्वलोचन शुद्ध ॥

Colophon . इति श्री दुरितदलन नाम नवम सतक सपूर्णम् ।

१६११ सहस्रनाम

Opening : तुम स्वयभू अनादि सिद्ध अजन्मा सो तिहारे ताई नमस्कार होहु । स्वम आपकू आप करि आप विषै उपजाय प्रगट भये हो । उपजी है आत्मवृत्ति जिनकै अर अचिंत्य है वृत्ति जिनकी ।

Closing : भगवान स्वयभू समस्त सरनि के रााना जगतपति विहार करें ही तिनकू इन्द्र के मुख ते ए प्रार्थना के वचन नीसरे ते पुनरुक्त समान होते भये । २६ ।

Colophon : इति श्री भाषा सहस्रनाम सपूर्णम् ।

१६१२. समन्तभद्र-स्तोत्र

Opening : नताखंडलमौलीना यत्पादनखमडलम् ।
खकेन्दुशेखरीभूत नमस्तस्मै स्वयंभुवे ॥

Closing : अर्हं सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधूनिह ।
पचनमस्कारो भवभवे मम सुह धंतु ॥ ॥

Colophon ; इति समतभद्रस्तोत्र सपूर्णम् ।

१६१३. सम्मेदशिखर-स्तुति

Opening : मैं आयो सरणते तेरे ।

Closing : मो करणी पे नजर न कीजे छीमा करो प्रभु मेरे ।
दीनवन्धु तुम पतित उधारण सेवक चरण गह्यो रे ।। मैं आयो० ॥

Colophon : इति सम्मेदशिखर की पद सपूर्णम् ।

१६१४ सम्मेदाचल-स्तोत्र

Opening : सम्मेदशैल ·· भक्तिभरेण नौमि ॥१॥

Closing : तीर्थानामुत्तम तीर्थ निर्वाणपदमग्रिमम् ।
स्थानानामुत्तम स्थान सम्मेताद्रे सम नहि ॥२३॥

Colophon : इति सम्मेदाचलमहात्म्यस्तोत्र समाप्तम् । श्रीरस्तु सवत् १८२८ वर्षे आषाढ़ द्वितीय वदि अष्टम्या आदित्यवारे लिखत लक्ष्मणपुर-मध्ये श्रीपार्श्वनाथचैत्यालये । शुभ भवतु ।

१६१५. सन्ध्या

Opening : वामे वहुत कुशान् · प्रणव गायत्र्यां रात्रा कुर्यात् ।

Closing : ... — ततः प्रणिपत्य विसर्जयेत् ।

Colophon : इति संध्या समाप्ता ।

१६१६. शांतिजिन-आरती

Opening : आरती कीजै स्वामी शात जिनंद की ।
सब सुखदायक आनद कंद की ॥
विश्वसैन राजा जी के नंदन ।
दरसन करत मिटै भवफदन ॥

Closing : भैरौ जे नर आरती गावै ।
मन वछित फल सोई पावै ॥ आरती० ॥

Colophon : इति श्री शाति जिन आरती समाप्तम् ।

१६१७. शांति-स्तुति

Opening : जय जिनवर गुन रतन निधाना, परमपूज सर्स तम भाना ।
मोह महागिर वज्र सुवेवा, सुर नर असुर करैं तुम सेवा ॥

Closing : हे जिनवर मे आयो ये ही होहु सकल कल्यान अछेही ।
मै निज आतमीक गुन पावो सिघालै मे सिघ सु जावे ॥

Colophon : इति शांति जी पूर्ण भई ।

१६१८. शांतिनाथाष्टक

Opening : सकलगुणनिधान सर्वसत्वे समान मदनमदविनाशं मुक्तिकान्त निवास
मरुजकमलमित्र सर्वविघ्नपवित्र. अनुपमसुख लक्ष्मी वर्द्धता
शांतिनाथः ॥१॥

Closing : शांत्याष्टक सुरनरेण सेव्यमानम्,
भव्येषु ये परिपठन्ति समस्तनीयम् ।
ते स्वर्गसौख्यमनुभूय मनुष्यलोके,
धर्मार्थकाम-ममसा-द्यहीयात्तिमानः ॥

Colophon : इति शांतिनाथाष्टकम् ।

१६१६. शारदाष्टक

Opening : ॐकार धुनि सुनि सुनि अरथ गनधर विचारैं ।
रचि आगम उपदिसैं भविक अब सर्म निवारैं ॥
सो सत्यारथ सारदा तासु भगति उर आनि ।
छद भुजग प्रयातमैं अष्ट कहौं बखानि ॥१॥

Closing : जे हित हेतु बनारसी देहि धर्म उपदेश ।
ते सब पावहिं परम सुख तजि ससार कलेस ॥८॥

Colophon : इति श्री शारदाष्टक समाप्त ।

१६२०. शारदा-स्तुति

Opening : देवी श्रीश्रुतदेवते भगवति त्वत्पादपकेरुहा मधूजयामीधुना ॥

Closing : अरिहन्त भासिय णमहोविह सिरसा ॥

Colophon : इति सारदा-स्तुति अष्टक-जयमाल समाप्तम् ।

१६२१. सरस्वती स्तुति

Opening : जन्ममृत्युजराक्षयकारण समयसारमहं परिपूजये ॥१॥

Closing : मनयकीर्तितामति मस्तुति पठति य मत मनिमाधर ।
विजयकीर्तिगुरो कृतमादरात्सुमतिकल्पलता कलमश्नुत ॥९॥

Colophon : इति सरस्वतिस्तुति ।

१६२२. सरस्वती-स्तोत्र

Opening : नमस्ते सारदा देवी जिनास्यांबुजवासिनीम् ।
त्वामहं प्रार्थये माये विद्यादानं प्रदेहि मे ॥१॥

Closing : सरस्वती मया दृष्टे देवी कमललोचना ।
हंस स्कंध समारुढा वीणापुस्तकधारणी ॥१२॥

Clolophon : इति सरस्वति-स्तोत्रम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७६८ ।

१६२३. सरस्वती-स्तोत्र

Opening : जयत्यशेषामरमौलिलालित सरस्वतित्वत्पदपंकजद्वयम् ।
हृदिस्थित यज्जनजाड्यनाशन रजो विमुक्त श्रयतीत्यपूर्वताम् ॥

Closing : कुंठास्तेपि बृहस्पतिप्रभृतयो यस्मिन् भवति ध्रुवम्,
तस्मिन् देवि तव स्तुतिव्यतिकरे मदानराके वयम् ।
तद्वाक-चापले मे तदा श्रुतवतामस्माकमेव त्वया,
क्षन्तव्य मुखरत्वकारणमतो येनाति भक्तिग्रहः ॥३१॥

Colophon : इति श्री सपूर्णम् ।

१६२४. शास्त्र-वनती

Opening : वंदों तु शास्त्र जिनेस भाषित महासुर्ग निधान ।
जा सुनत सब अज्ञान भाजत होत ज्ञान महान ॥

Closing : ते शास्त्र जी मेरे मन वसो, मेरी हरो भौ भव भीर ॥६॥

Colophon : इति शास्त्र की विनती सपूर्णम् ।

१६२५. सिद्धि-भक्ति

Opening : सिद्धानुद्धूतकर्म्मप्रकृति-समुदयान् साधितात्मस्वभावान्
वंदे सिद्धिप्रसिद्ध्यै तदनुपमगुणप्रगटाकृतितुष्ट. ।
सिद्धिः स्वात्मोपलब्धिः प्रगुणगुणगणो छादिदोषापहारायोग्यो-
पादान् युक्त्या दृषद इह यथा हेमभावोपलब्धि ॥१॥

Closing : .... सुगइगमणं समाहिमरण जिनगुणसम्पत्ति होउ मज्झ ॥

Colophon : इति सिद्धभक्ति ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७७० ।
जि० र० को०, पृ० ४३८ ।

१६२६. सीता-विनती

Opening : प्राणी डारे अरहृत का गुणगाय अरे प्राणी,
जब लग सांस शरीर मे जी ॥१॥

Closing : रामचद्र मुकति पद्यास्यातो सीता सुरपति थाय जी
जो नरनारी ए गुण गावै तौ देव ब्रह्म पदपाय जी ।

Colophon : इति सीता जी की विनती सम्पूर्णम् ।

१६२७. श्रीपाल-विनती

Opening : देखे, क्र० ११६३ ।

Closing : देखे, क्र० ११६३ ।

Colophon : इति श्रीपालविनती सपूर्णम् ।

१६२८. श्रीपाल-विनती

Opening : देखे, क्र० ११६३ ।

Closing : देखें, क्र० ११६३ ।

Colophon : इति श्रीपाल राजा की विनती सम्पूर्ण ।

१६२६. श्रुतभक्ति

Opening : स्तोष्ये सज्ञानानि परोक्षप्रत्यक्षभेदभिन्नानि ।
लोकालोकविलोकन लोलितगल्लोकघनानि सदा ।।१।।

Closing : सुगइ गमणं समाहिमरण जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झ ।।

Colophon : इति श्रुतज्ञान भक्ति ।

देखें, जै० नि० भ० प्र० I, क्र० ७७३ ।

१६३०. स्तोत्र

Opening : प्रभु...यराजी ··· ···· चद्रप्रभ देवदेवम् ।।

Closing : सर्वपापविनिर्मुक्त सुभगोलोकविश्रुतः ।
वांछित फलमाप्नोति लोकेस्मिन्नात्र संशयः ।।

Colophon : इति श्री शारदायास्तोत्रम् ।

१६३१. स्थापना आरती

Opening : सुखयसयलमष्टि जिणजिणवर सुरणरफणपति सेविय ।
तिम चारित्रसयलधम्मदपर सासय पदवरसेविय ।।१।।

Closing : इह भविय णमावहो जिणसुइयावहो चारित्र जयमालवरा,
इह भवि उहहरहो परभवमुलहो नासय कम्मठट नियरा
।।२५।।

Colophon : इति श्री तेरह प्रकार आरती समाप्तम् ।

१६३२. स्तुति

Opening : हरुं प्रभात सुऐ नित उठत है, दर्शन प्रभु चरनन चित चहत है।
वारवकि भई छार रहेय के चाव दर्शन प्रचिभूत में धरे ॥१॥

Closing : यह भजन भये संपूर्ण सीता के बनवास की।
हरि कही धरी प्रीत प्रभुचरन ए चित लाई के ॥

Colophon : इति श्रावण शुक्ल सं० १९६५ शनिवार हरीदास ने आरा मे लिखे है।

१६३३. सुप्रभात-स्तोत्र

Opening : श्री नाभिनंदन जिनोजितसभवेसं देवोभिनदन जिनो सुमतिः जिनेन्द्रः।
पद्मप्रभो प्रणतदेव-सुपार्श्वनाथ चद्रप्रभोस्तु सतत मम सुप्रभातम् ॥१॥

Closing : श्रीपार्श्वनाथपरमार्थविदाम्वरेण ···· ··· कैवल्य वस्तुविशदं जिन सुप्रभातम् ॥४॥

Colophon : इति सुप्रभातस्तोत्रम्।

१६३४. सूर्यसहस्रनाम

Opening : तुहिण किरण विप पोसयत्यसुमाली,
जयति कमललक्ष्मी भाषयत्यसुमाली।
रजतविरद भीतिमोदयन् कोकवृंदम्,
मुखरनरनागे सर्वदा वंदनीये ॥

Closing : तेजोनिधिवृहतेहा वृहत्कीर्त्तिवृहस्पति।
महिमान् श्रीमान् श्री सूर्यदेवं नमोस्तुते ॥

Colophon : इति श्री सूर्यसहस्रनाम सम्पूर्णम्।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १५२।
जि० र० को, पृ० ४५२।

१६३५. स्वयंभू-स्तोत्र

Opening : येन स्वयंबोधमयेन लोका आस्वासिता केचन वित्तकार्ये।
प्रबोधिता केचन मोक्षमार्गे तमादिनाथ प्रणमामि नित्यम् ॥१॥

Closing : यो धर्मं दशधा करोति पुरुष स्त्रीवाकृतपरस्कृतम्,
सर्वज्ञ ध्वनिसंभव त्रिकरण व्यापारशुध्यानिशम्।
भव्यानां जयमालया विमलया पुष्पांजलिंदापयन्,
नित्यं सश्रियमातनौमि शकल: स्वर्गापवर्गस्थिते: ॥

Colophon : इति श्री स्वयंभू समाप्तम्।

देखे, जै० सि० भ० ग्र०, क्र० ७८३।

१६३६. स्वम्भू-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १६३५।

Closing : देखे, क्र० १६३५।

Colophon : इति स्वयंभू समाप्त:।

१६३७. स्वयंभू-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १६३५।

Closing : देखें, क्र० १६३५।

Colophon : इति स्वयंभू संस्कृत सम्पूर्णम्।

१६३८. स्वयम्भू-स्तोत्र

Opening : मानस्तम्भासरांसि पीठिकाग्रे स्वयम्भू ॥
Closing : ये संस्तुता विविधभक्तिः विमलां कमला जिनेन्द्रा ॥
Colophon : अनुपलब्ध ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I क्र० ७८४ ।

१६३९. विनती

Opening : करुना ले जिनराज हमारी करुना ले महाराज । टेक ॥
Closing : इति जिनमाला अमल रसाला जो भव्य जन कंठ धरइ ।
... ... सुर शिव सुन्दर वरइ ॥
Colophon : इति पूजन समाप्ता: ।
विशेष — ग्रन्थ में पूजा भी संकलित है ।

१६४०. विनती

Opening : हो दीन बन्धु श्रीपति करुनानिधान जी ।
यह मेरी विथा क्यों न हरो वार क्या लगी ॥१॥
Closing : करुना निधानवान को अब क्यों न निहारो ।
दानी अनंतदान के दाता हो सम्हारो ॥
वृषचंदनंदवृंद को उपसर्ग निवारो ।
संसार विषमखार से अवपार उतारो ॥
Colophon : इति विनती सम्पूर्णम् ।

१६४१. विनती

Opening : देखे, क्र० १६४० ।

Closing : देखें, क्र० १६४० ।

Colophon : इति श्री विनती सम्पूर्णम् ।

१६४२. विनती

Opening : त्रिभुवनपति स्वामी जी करूनानिधानामी जी,
सुनो अंतरजामी मेरी विनती जी ॥१॥

Closing : दुष्टन देहु निकास साधन को रख लीजै ।
विनवै भूदरदास ए प्रभु ढील न कीजै ॥१२॥

Colophon : इति सपूर्णम् ।

१६४३. विनती

Opening : तारि तारि जिनराज मनवच तन विनती करो ।
मैं जग बहु दु.ख पाय मुख ते किम वरनन करों ॥१॥

Closing : ज्यो जानै त्यो तारि विरद आपनो जान कै ।
हम कितना हि निहार टेक पकर तारो सही ॥१०॥

Colophon : इति विनती सोरठा सम्पूर्णम् ।

१६४४. विनती

Opening : भवविघन विनासनो दुर्गेय नरासनो अवसानै सरण तु ही ।
जिन सासन जाग्यो इन्द्रज माग्यो पहिलै पूज तुमरि करौ ॥

Closing : सदा जिनविंव धरै निज भाल सदा जिन सेवकतरिमंहात्मा ।
मंज्ञानसागर विवद्ध नचन्द्रमूर्ति जीधाज्जिनेद्रवरक प्रविराजमान ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१६४५. विनती

Opening : श्रीपतिजिनवर करुणायतनं दु.खहरण तुम्हारा बाना है।
मत मेरी बार अबार करो, मोहि देहु विमल कल्याना है।।

Closing : हो दीनानाथ अनाथ हि ·· · प्रभु आज हमारी बारी है।
।। टेक ।।

Colophon : इति विनती सम्पूर्णम्।

१६४६. विनती

Opening : चलो रे मनवा मागीतुंगी दर्शनकरस्या प्रभु जी का।
सिद्धक्षेत्र की करो वंदना दुख टलि जावै दुरगति का।।
विषम घाट पहाड़ बिच परवत ऊँचा मांगीतुंगी का।
इन पर मुनिवर मुक्ति गया हैं कोड निन्यानव गिनती का
।। चलो रे ।।

Closing : उगणीसै की साल जेठ सुदि करी जातरा पचसका।
हरषकीर्ति कहै सुद्ध भाव सो मेरो चरण जिनेश्वर का । चलो ।
।।१३।।

Colophon : इति मागीतुंगी की विनती संपूर्णम्।

१६४७. विनती

Opening : तुम तरणतारण भवनिवारण भविक मन आनन्दनम्।
श्री नाभिनंदन जगत वंदन आदिनाथ निरंजनम्।।

Closing : मैं अधीन परवस परै विके तुम्हारे हाथ।
इतनो करिको जानियै लाख बात की बात।।

Colophon : इति श्री विनती सपूणम्।

१६४८. विनती

Opening : देखें, क० १६४२ ।

Closing : भव भव सुख पावें जी, प्रभु हो हूँ सहाइ जी ।
पार उतारी वो जी ॥

Colodhon : विनती सम्पूर्णम् ।

१६४६· विनती

Opening : हो दीनबन्धु श्रीपती करुना निधान जी
यह मेरी वीथा क्यो न हरो ………॥ टेक ॥

Closing : करुनानिधीनवान को — अब पार उतारो ॥ टेक ॥

Colophon : इति विनती संपूर्णम् ।

१६५०. विनती

Opening . देखे, क० १६४२ ।

Closing : देखे, क० १६४२ ।

Colophon : इति भूदरदास कृत विनती समाप्तम् ।

१६५१· विनती

Opening : देखें, क० १६५० ।

Closing : तेरे दास निहारैं नीरमैं कीजिए जी नर नारी गावैं जी ।
भव-भव सुख पावैं जी, प्रभु होउ सहाई पार उतारीए जी ।

Colophon ; इति विनती संपूर्णम् ।

१६५२. विनती त्रिभुवन स्वामी

Opening : देखें, क्र० १६४२ ।

Closing : नर नारी गावें जी, भव भव सुखपावे जी ।
प्रभु होहु सहाई जी, पार उतारिए जी ॥ १६ ॥

Colophon : इति विनती सपूर्णम् ।

१६५३. विषापहार-.स्तोत्र

Opening : स्वात्मस्थित सर्वगत. समस्त व्यापारवेदीविनिवृत्तसंगः ।
प्रवृद्धकालोप्यजरोवरेण्य पायादपायात्पुरुष पुराण: ।।

Closing : वितरति विहितार्था - सुखानियशो धनजय च ।।

Colophon : इति विषापहारस्तोत्र समाप्तम् ।

देखे, जै सि० भ० ग्र० I, क्र० ७८५ ।

१६५४. विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १६५३ ।

Closing : देखें, क्र० १६५३ ।

Colophon : इति श्री धनजयविरचिते श्री विषापहारस्तोत्र समाप्त ।

१६५५. विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १६५३ ।

Closing : देखें, क्र० १६५३ ।

Colophon : इति विषापहारस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१६५६· विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६५३ ।

Closing : नि·शेषत्रिदशेंद्रशेखरशिखा रत्नप्रदीपावली,
सांद्रीभूतमृगेन्द्रविष्टरतटी माणिक्य दीपावली ।
मयेय श्री क्वचनिस्पृहस्त्वमिदमिखानि यशो धनजय च ।।४०

Colophon : इति श्री धनजयकृत विषापहारस्तोत्र समाप्तम् ।

१६५७ विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १६५३ ।

Closing : — येन तेन प्रकारेण बिहित। पुन: स्वयि विषये
नुति विषया नमस्कारपूर्वकस्तुति युक्ता. च भक्ति: विद्यते ।४०।।

Colophon : इति श्री विषापहार स्तोत्रस्य बालावबोध टीका सपूर्णम् ।

१६५८. विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १६५३ ।

Closing : देखे, क्र० १६५३ ।

Colophon : इति श्री धनंजयसूरि विरचितं विषापहारस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१६५९· विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६५३ ।

Closing : देखें, क्र० १६५३

Colophon : इति विषापहारः ।

१६६०. विषापहार स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६५३ ।
Closing : देखे, क्र० १६५३ ।
Colophon : इति विषापहार स्तवन समाप्तम् ।

१६६१. विषापहार-स्तोत्र

Opening : विश्वनाथ विमल गुन विरहमान वंदौ गुनबीस ।
ब्रह्मा विस्नु गनपति सुन्दरी वरु दानी देहूं मोहि वागेसुरी ॥
Closing : भय भंजन रंजन जगत विषापहार अभिराम ।
मसै तजि सुमिरो सदा सासी जिनेश्वर नाम ॥
Colophon : इति विषापहार सपूर्णम् ।

१६६२. विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६६१ ।
Closing : देखें, क्र० १६६१ ।
Colophon : इति श्री विषापहार भाषा समाप्तम् ।

१६६३. विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६६१ ।
Closing : देखें क्र० १६६१ ।
Colophon : इति श्री विषापहार स्तुति संपूर्णम् ।

१६६४. विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६६१ ।

Closing : देखें, क्र० १६६१ ।

Colophon : इति श्री विषापहार स्तोत्र भाषा सम्पूर्णम् ।

१६६५. विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६६१ ।

Closing : देखें, क्र० १६६१ ।

Colophon : इति विषापहार स्तोत्र भाषा संपूर्णम् ।

१६६६. विषापहार-स्तोत्र

Opening : आतमलीन अनत गुन, स्वामी परमानंद ।।
सुर नर पूजित तासु पद बदो ऋषभजिनंद ।।

Closing : भयभंजन गजन दुरित विषापहार सुभाव ।
वैरिन मे सुमिरो सदा श्री जिनवर के नाम ।।

Colophon : इति श्री विषापहार स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१६६७. विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६६६ ।

Closing : देखें, क्र० १६६६ ।

Colophon : इति विषापहारस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१६६८. वृहत्सहस्रनाम

Opening : स्वयंभुवे नमः ········· ··· बिस्तवृतये ।।

Closing : इतिप्रबुद्धतत्त्वस्य स्वयंमर्तुं जिगीयतः ।
पुनरुक्ततरावाच प्रादुरासन जितक्रमो ॥

Colophon : इति श्री वृहत् सहस्रनाम जी समाप्तम् ।

१६६९. वृहत्-स्वयम्भू-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १६३८ ।

Closing : - अनादि के कर्म कलंक पंक धाई चिह्निलायको
अपुनर्भव की लक्ष्मी देह इह प्रार्थना हमारी सफल करो ।

Colophon : इति श्री स्वामी समंत भद्र पर्माहृताचार्य विरचित वृहत् स्वयभू सम्पूर्णम् ।

१६७०. वृहत्स्वयंभू-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६३८ ।

Closing : देखें, क्र० १६६९ ।

Colophon : इति श्री स्वामी समंतभद्र पर्माहंताचार्य विरचित वृहत्स्वयभूस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१६७१. वृहत्-स्वयम्भू-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १६३८ ।

Closing : ये संस्तुमाविविधभक्तिसमंतभद्रै रिद्रा दिमिविनतमौलि मणिप्रभाभि। ।
उद्योतितांघ्रियुगल सकलप्रबोधास्तैनोदशतु विमलां कमला-
जिनेन्द्राः ॥

Colophon : इति स्वयम्भू वडा समंतभद्र कृत समाप्ताः ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७८४ ।

१६७२. योग-भक्ति

Opening : थोसामि गणधरराणं अणयोगाणं गुणेहिं तच्चेहिं ।
अंजलि मउ लिय हथो अभिवंदतो सविभवेण ॥१॥

Closing : इच्छामि भंते जोगभत्ति काउ सग्गो … … सम्पत्ति होउ मज्झ ।

Colophon : इति योग-भक्ति ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८००।

१६७३. अभिषेक विधि

Opening : श्रीमन् मदिरसुन्दरे शुचिजलैर्धौतै च दर्भाक्षतै,
पीठे मुक्तिवरं निधाय रचितत्वत्पादपुष्पस्रजा ।
इन्द्रोह निजभूषनार्थममलं यज्ञोपवीतं दधे,
मुद्राकंकणसेखराण्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे ॥१॥

Closing : वरुनदेवमाह्वानयामहे स्वाहा ॥५॥ पवन ‥ ‥ ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१६७४. आदिनाथ-पूजा

Opening : परमपूज्यवृषभेस स्वयभूदेवजू,
पिता नाभि मरुदेवि करै सुर सेवजू ।
कनक वरन तन तुंग धनुष पन सत तनो,
कृपा सिंधु ‑त आइ तिष्ठ मम दुख हनो ।

Closing : इत्थं श्री जिनराजकर्ममहिमास्तोत्र पटेद्य: पुमान्,
प्रात: प्रातरुदात्तभावसहित सम्यक्तशुध्याश्रित: ।
योगींद्रैश्चिरकाल तस्ससतपसा यत्प्राप्यते तत्सुखम्,

तत्प्राप्नोति पर पदं रुमतिमानानंदमुद्राकितः ॥

Colophon । इति चमत्कार आदिनाथ स्वामी पूजा सम्पूर्णम् ।

१६७५. आदिनाथ-पूजा

Opening । सुधनदुपमतिथि मेटि कर्म प्रभु थापहि, नृप पद तजि वैराग्य भये प्रभु आपही ।
ऐसो आदि जिनेश आदि तीर्थ करा, आह्वाहन विधि करु त्रिविध नमके ध-। ॥

Closing : यह निज मार अपार जो भविजन कठधरिई ।
तेनिजर मरणावलि नासि भवावलि गमचद्र सिव तियपाई ॥

Colophon: इति श्री आदिनाथ जी की पूजा समाप्तम् ।

१६७६. आदित्यवार-पूजा

Opening : इक्ष्वाकुबमकुन मडणअश्वसेनो तद्वल्लभ, प्रनिवताजिनवामदेवी ।
तस्मा जिन विमलभूति सुरेन्द्रवंद्यं त्रैलोक्यनाथ जिनपार्श्वपद नमामि ॥१॥

Closing : इति रवि व्रत पूजा सुरपद पूजा जे करते नव वर्ष सही ।
मनवचक्रमधावहि सो सुरपद पावही पार्श्वनाथ फल देतसही ॥

Colophon । इति रविव्रत पूजा समाप्तम् ।

१६७७. आदित्यवार-उद्यापन

Opening : श्री पार्श्वनाथ प्रणमामि नित्य, सुरसुरैः पूजितपीठवंद्यम् ।
रविव्रतोद्यापनक प्रवक्ष्ये भव्याय नून महतादरेण ॥१॥

Closing : रविव्रतमहापूजाश्लोकपिंडीकृताधुना ।
पंचाश्माविने मया विप्रं लेषकं विस्तरर्पंका: ॥

Colophon : इति श्री भट्टारक श्री विश्वभूषणविरचिते । आदित्यवार-व्रत उद्यापन विधि पूजा समाप्ता ।

१६७८. अकृत्रिम-चैत्यायल आरती

Opening : सकल सुहकारण दुग्खवारणं ·· ···· सुरसुन्दरम् ।

Closing : इह णंदीसर भावऊ- पूज्य सुहावऊ - ··· चंद्रकीर्ति सुहावऊ ॥

Colophon : इति अकृत्रिम चैत्यालय जयमाल समाप्तम् ।

१६७९. अकृत्रिम चैत्यालय अर्घ्य

Opening : वर्षेषु वर्षांतरपर्वतेषु नंदीश्वरे यानि च मंदिरेषु ।
यावन्ति चैत्याययतनानिलोके, सर्वानि वंदे जिनपुंगवानाम् ।
अवनितलगतानां कृत्तिमाकृत्तिमानां,वनभवनगताना दिव्यवैमानिकानण
इहमनुजकृताना देवाराजार्चिताना जिनवरनिलयानां भावतोहं
स्मरामि ॥१॥

Closing : द्यौ कुन्देन्दु ··· ·· — प्रयछतुनः ॥५॥

Colophon : इति अकृत्तिमचैत्यालय जयमाल सम्पूर्णम् ॥

१६८०. अकृत्रिम-चैत्यालय-पूजा

Opening : देखें, क्र० १६७९ ।

Closing : भव णालय चालीसा वंतरदेवाणहुंति वत्तीसा ।
कप्पामरचउवीसा चंदो सूरो णरो तिरिओ ॥

Colophon : इति अकृत्रिम चैत्यालये जिनविंबेभ्यो नमः ।

१६८१. अनन्तजिन-पूजा

Opening : क्षेत्रपालाय यज्ञेस्मिन्न ······ विघ्नविनाशनम् ।।
Closing : भगतन की प्रतिपात करें सबैजीवन कौं काज सरैया ।
नरनारी पूजित क्षेत्रपाल सदा मनवांछित आस भरैया ।।
Colophon : इति कवित ।

१६८२. अनन्तपूजा-विधि

Opening : एकादशी के दिन पूजन कर व्रत थापन करै
तैथा आचमन करें तथा द्वादशी के दिन ऐसे ही करें ।
Closing : जीव समासा ।१४।। अजीव ।।१४।। गुणस्थान ।।१४।। मार्ग ।१४।
भूत ।।१४।। रज्जू ।।१४।। पूर्व ।।१४।। प्रकीर्णक ।।१४।।
मल ।।१४।। ग्रंथ ।।१४।। कुलकर ।।१४।। नदी ।।१४।।
प्रकृत ।।१४।। रत्न ।।१४।। चतुर्दश पदार्थ चितन व्यौरा ।
Colophon : इति अनतपूजन विधि ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८०४ ।

१६८३. अनंत पूजा विधि

Opening : भाद्रपद शुद्ध त्रयोदशी से रात्रि अनंतव्रतद्धेइजे, मायास्नान
करावे, शुभ्रवस्त्रनेसावै · · · · · अष्टदलकमलकरावे ।
Closing : ॐ ह्रीं श्री यसमस्मैददत्तानतफल ···· नित्य वेयाचे मत्र ।
Colophon : इति अनतपूजनविधि सम्पूर्णम् ।
विशेष— ५१।२३ में यज्ञोपवीत मत्र हैं, जो इसीका अग है ।

१६८४. अरिहंत-दक्षिणी

Opening : गगा सिन्धु के निर्मल नीरा स्वर्णभृगार भरविहीरा ।
जन्म मृत्यु जराकृत दूर ···· · · ।।

Closing : अस्पष्ठ—(जीर्ण)

Colophon : अनुपलब्ध ।

१६८५. अष्टवीजाक्षर-पूजा

Opening : पूर्वपत्रे ऐं दक्षिणपत्रे श्रीं पश्चिमपत्रे ह्री उत्तरपत्रे क्लीं
ईशानपत्रे क्रो अग्नियपत्रे ड्रौं नैऋत्यपत्रे क्रौं पवनपत्रे
ज्रौं कुबेरपत्रे यं इत्यादि अष्टवीजाक्षरस्थापनम् ।

Closing : विद्यादेव्या इमा '' ''' कामान् कुरूध्व परान् ।।१०।।

Colophon : इति पूर्णार्घं वृहत् द्रव्येन अर्घ ददात् ।
इति षोडशविद्यादेवता पूजनविधानम् ।

१६८६. अष्टान्हिका-पूजा

Opening : मवौषडाहूय ''' ''' प्रतिमा समस्ता: ।।

Closing : यावति जिनचैत्यानि विद्यते भुवनत्रये ।
तावति सततं भक्त्या त्रि. परीत्य न माम्यहम् ।।१८।।

Colophon : इति अष्टान्हिका पूजा समाप्ता ।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६० ।
जि० र० को०, पृ० २० ।

१६८७. अष्टान्हिका-पूजा

Opening : देखें, क्र० १६८६ ।

Closing : देखें, क्र० १६८६ ।

Colophon : इति अष्टान्हिका पूजा संपूर्णम् ।

१६८८. अष्टान्हिका-पूजा

Opening : आहूय संवौषडिति प्रणीत्वा ताभ्यां प्रतिष्ठाप्य सुनिष्ठितार्थान् ।
वषट् पदेनैव च सन्निधाय नंदीश्वरद्वीपजिनान्समर्च्चें ॥१॥

Closing : आरतिय जोवइ कम्मइ धोवइ सग्गावबग्गह लहु लहइ ।
जं जंमण भावइ त सुह पावइ दीणु विकासुण भासइ ॥१८॥

Colophon : इति अष्टान्हिकाया पूजा समाप्ता ।

देखें दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६१ ।

१६८९. अष्टान्हिका-पूजा

Opening : मध्ये मडपमालिख्येद्वरतरे — तदच्चर्चा ततः ॥१॥

Closing : आयुर्दैर्घ्यकरीवपूर्वं ‥ भवता देयाईतामर्हता ॥

Colophon : इति श्री नदिश्वर पक्तिबंध पूजा समाप्ता ।

१६९०. अष्टान्हिका-पूजा

Opening : तीर्थोदकै मणिसुवर्णघटोऽपिनीतैः,
पीठे पवित्रवपुषै प्रविकल्पितार्थे ।
लक्ष्मीसुता गहनवीजविदर्पगर्भे,
संस्थापयामि भुवनाधिपति जिनेन्द्रम् ॥

Closing : नदीश्वर जिन धाम प्रतिमा महिमा को कहै ।
द्यानत लीन्हो नाम यहीभक्ति शिव सुख करै ॥१०॥

Colophon : इति नंदीश्वर द्वीप अष्टान्हिका जी की पूजा जयमाला भाषा सस्कृत सहित सम्पूर्णम् ।

१६९१. अढाईपूजा

Opening : सरब पव में बड़ो अठाई परव है,

नंदीश्वर सुर जांहि लेयवहु दरब हैं।
हमैं सकति सो नांहि इहा कर थापना।
पूजै जिण ग्रह प्रतिमा है हित आपना ॥

Closing : नंदीश्वरजिनधाम प्रतिमा महिमा को कहै।
द्यानत लीनौ नाम यही भगत सब सुख कतै ॥१६॥

Colophon : इति श्री अढाई पूजा जी समाप्तम्।

१६६२. बाहुबलि-पूजा

Opening : बाहुमान जो षट्बली चक्करेन की,
लखी अनित ससार सबे विच्छेद की।
धरो दिगंवर भेष शान्तमुद्रा वरी,
धानअबात जेहान ठय थिर लक्ष्मीवरी ॥

Closing : पूजन पंचकुमार तणी जे नरकरै,
हरमत हरवलचक्रसकपद ते धरे।
सुरगादिक सुखभोग तिरथपद पायही,
धर्म अर्थलहिकाम मोक्ष सुरपायही ॥

Colophon . इति श्री पंचकुमार की पूजन सम्पन्नम्।

विशेष— इसमें बाहुबलि पूजन और पंचकुमार पूजन दोनो हैं।

१६६३. बाहुबलि-मुनि-पूजा

Opennig : देखें, क्र० १६६२।

Closing : जे नर पढ़ै बिसाल मनोरत सुद्धसो।
ते पावैं थिर वास छूटैं ससार सो ॥
ऐसो जान महान जैन जिन धर्म कौ।
देय अक्षै भंडार ध्याऊं अलख ध्यान कौ ॥२४॥

Colophon : इति श्री बाहुवल मुनी की पूजा सम्पूर्णम्।

१६६४. भैरो-राग

Opening : भली कीनी भोर भयें ।
आए हो भवन हमारें, भली कीनी ये ॥

Closing · आस करें उरगदास, नाथ चरण तुम्हारे ॥ भली० ॥

Colophon : इति भैरो ।

१६६५. बीस-तीर्थंकर-अर्घ्य

Opening : श्री मदिर आदि जिनद बीसों सुखकारी ।
सुविदेह माँहि अभिनद पूजत नरनारी ॥
थिति समवसरन के माँहि त्रिभुवन जन तारक ।
हम पूज अर्घ चढाय आनन्द के कारक ॥

Closing : इह वर्त्तमान सुखकर दक्षिण देस महा,
तह श्री गुर सुगुन भडार राजन हे सुमहा ।
वसुदेव जथो चितल्याय हे त्रिभुवन स्वामी,
हम पूजन पद सिरनाय कीजे सिवगामी ॥१॥

Colophon : इति ।

१६६६. बीस-विरहमान-पूजा

Opening : पूर्वापर विदेहेषु विद्यमानजिनेश्वरा ।
स्थापयामि अहमत्र सुद्ध सम्यक्त्वहेतवे ॥१॥

Closing : श्रीमदिरा दिप देवमजितवीर्यमुत्तमम् ।
भूयात् भव्यसतां सौख्य स्वर्गमुक्तिसुखप्रदम् ॥

Colophon ; इति श्री बीसविरहमान पूजा जयमाल सम्पूर्णम् ।

१६६७. वीस-विरहमान-पूजा

Opening : देखे, क्र० १६६६।

Closing : देखे, क्र० १६६६।

Colophon : इति श्री वीरहमान पूजा समाप्तम्।

१६६८. वीस-विरहमान-पूजा

Opening : देखे क्र० १६६६।

Closing : ये वीस तीर्थंकरन की सेव तुम्हारी कीजिये।
कर जोरि सेवक विनवै मुक्ति श्रीफल लीजिए ।।

Colophon : इति श्री वीस विरहमान पूजा समाप्ता।

१६६९. वीस विरहमान-पूजा

Opening : देखें क्र० १६६६।

Closing : देखे, क्र० १६६६।

Colophon : इति श्री वीस विरहमान पूजा सपूर्णम्।

१७००. वीस-विरहमान-पूजा

Opening : देखे, क्र० १६६६।

Closing : भुमर्कों पूजा वंदना करें धन्य नर सोय।
मारदा हिरदै जो धरें सो भी धरमी होय ।।६।।

Colophon : इति श्रीवीसविरहमान पूजा जी समाप्तम।

१७०१. बीस-विद्यमान-पूजा

Opening : देखें, क० १६६६ ।
Closing : देखे, क० १६वद ।

Colophon : इति श्री बीसविरहमान पूजा समाप्तम् ।

१७०२. बीस-तीर्थंकर-जकड़ी

Opening : श्री मंदरजिण वंदस्पा जग सारहो, पुंडरीकजिणराय ।
जबूदीप विदेह मैं जगसार हो मेरि पूरबदिसिभाय ।।

Closing : सातमा जिन समयगामी गोरिव जेसु दिगवरा ।
भावना भावै हरष सेती होइ मुक्ति स्वयवरा ।।

Colophon : इति बीस बिरहमान की जखडी सम्पूर्णम् ।

१७०३. बीस-विरहमान-आरती

Opening : प्रथम श्रीमदर स्वामी जुगमधर त्रिभुवण धारिए ।।१।।

Closing : इम बीस जिनवर सघ सुखकर सेव तुम्हारी कीजियै ।
करि जोर सेवक वीनवै प्रभु मणवंछित फल दीजियै ।।

Colophon : इति बीम विरहमान जी की आरती समाप्तम् ।

१७०४. बीसतीर्थंकर-जयमाला

Opening : देखे, क० १७०३ ।

Closing : प्रभुजी आनद सदेस घ्यावो शिव सुख पाइये ।
एवीस जिने सुर संग जिनकी सेव नित प्रति कीजियै ।।१।।
करि जोर शंती करै विनती मुक्तिफल पाइरे ।।

Colophon : इति बीस तीर्थङ्कुर की जयमाल सपूर्णम् ।

१७०५. चन्द्रप्रभुपूजा

Opening : सुभ अतिसय चउतीस प्रतिहारज अधिकाही ।
अनतचतुष्टययुक्त दोष अष्टादस नाही ॥
ब्रह्मानन विधि कहूं नाय सिघ सुघ करि मनही ।
लोक मोह तम हरत दीप अद्भुत ससि जिनहीं ॥

Closing : वसुद्रव्य लै सुधभावतै जजूं तिहारे पाय ।
देह देव शिव मुझ अबै अहो चंदद्युतिराय ॥१४॥

Clolophon : इति श्री चद्रप्रभु जी की पुजा सम्पूर्णम् ।

१७०६. चन्द्रप्रभुपूजा

Opening : वरचरित चार गुन अकलघार भवपार बसे हैं ॥
हे त्रिजगतार सहज ही उदार शिवनार रसै हैं ॥

Closing : चद जिनन्द जजन्त तन्त सुख सेवति होई ।
चद जिनन्द जजन्त निराकुल वद न कोई ॥
चद जिनन्द जजन्त वहन्त सबै मिलि जावै ।
चद जिनन्द जजन्त अजित नित हर्ष वढावै ॥

Colophon : इति श्री चन्द्रप्रभोजिनदेव की पूजा सम्पूर्ण ।

१७०७. चारित्रपूजा

Opening : देवश्रुतगुरुनत्वा कृत्वा शुद्धिमिहात्मनः ।
सम्यक्-चारित्र-रत्नस्य वक्ष्ये संक्षेपतोर्चनम् ॥

Closing : अंधउ आलस्सउ पगुल वि जिणवर भासियय ।
तिण तई विणु मुत्ति ण भणइ जणिपु ।।

Colophon : इति चारित्रपूजा ।

देखे, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६३ ।

१७०८. चारित्रपूजा

Opening : देखें, क्र० १७०७ ।

Closing : विरम-विरम मगान्मुंच मुंच प्रपंचम ।
विसृजमोहसृजत्र विद्धि विद्धि स्वतत्वम् ।
कलय कलय वृत्तं पश्य पश्य स्वरूपम्,
कुरु कुरु पुरुषार्थं निवृतानंदहेतुः ।।१४।।

Colophon : इति पंडिताचार्य श्री नरेन्द्रसेन विरचिते चारित्रपूजा समाप्ता ।

१७०९. चारित्रपूजा

Opening : देखे, क्र० १७०७ ।

Closing : देखें, क्र० १७०७ ।

Colophon : इति श्री पंडिताचार्य श्री नरेन्द्रसेनविरचिते । रत्नत्रयपूजा जी समाप्तम् ।

१७१०. चतुर्विंशति-यक्षिणी-पूजा

Opening : चतुर्विंशतियक्षेशान् पूज्यामि सदादरान् ।
आह्वानयामि तिष्ठेत्र जिनयज्ञे स्थिरा भवेत् ।।१।।

Closing : ॐ ह्रीं चतुर्विंशतिकुलदेव्याय जिनसासने सर्व्वविघ्नोपशांत्यर्थं जिनयज्ञविधाने पूर्णार्घं दद्यात् ।

Colophon इति चतुर्विंशतियक्षिणी पूजा ।

१७११. चतुर्विंशति मातृका पूजा

Opening : आद्य तीर्थकृतां सर्वां सर्वविघ्नप्रशान्तये,
प्रणम्य शिरसा जैन स्थापना प्रवदाम्यहम् ।।१।।

Closing : दिव्यं नीरैश्चदनैरक्षतैस्तै ·· ···· कृतोय सुमोघं. ।।

Colophon : इति चतुर्विंशतिजिनमातृका पूजनविधानम् ।

१७१२. चतुर्विंशति-तीर्थंकर-पूजा

Opening : सुभिरमत्रभवेभवत· पदाबुजनताजनताजनताम्पति ।
इति नतोस्मि भवत्यहमन्वह ·· ·· दिने ।।

Closing : ॐ ह्री अर्हं श्री चिन्तामणिपार्श्वनाथाय धरनेन्द्रपद्मावती महितअतुलबलवीर्यपराक्रमाय दुष्टोपसर्गविनाशनाय इदं जल गंधं पुष्प अक्षत नैवेद्य दीपं धूपं फलं अर्घ महाअर्घं निर्पयामि ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१७१३. चतुर्विंशति-तीर्थंकर-पूजा

Opening : वृषभ आदि अंतवीर चतुर्विंशति जिना,
ध्यान खड्ग गही हने कर्म वसु दुर्जना ।
वसुगुण जुत तसुधराव ये नव छारिके,
अह्वानन विधि कर्क गुणोघ उचारिके ।।१।।

Closing : जो को इह व्रत भावो करो, ते नर मुकत पथह वरो ।
श्री भूषन पद प्रनमी सही कथा ग्यानसागर मुनी कही ।।

Colophon : इति श्री अनतव्रत कथा समाप्तो। रामचन्द्रेण लिपि कृत आरामध्ये लाला बिजन लाल जी लिखापितम्। लेखकपाठकयो शुभ भवतु।

विशेष — इसमें कई पूजाएँ सग्रहीत है।

१७१४. चतुर्विंशतितीर्थंकर-पूजा

Opening : रीषम अजित सभव ... - पूज्य पूजत सुरराय ॥

Closign : भुक्ति-मुक्ति दातार चौवीसों जिनराजवर।
तिन पद मन वच धार जो पूजे सो शिव लहै ॥

Colophon : इत्याशीर्वादः इति श्री समुच्चय चतुर्विशति पूजा सपूर्णम् स० १६५०।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८९६।

१७१५. चतुर्विंशति-तीर्थंकर-पूजा

Opening : देखें, क्र० १७१४।

Closing : देखें, क्र० १७१४।

Colophon : इति श्री समुच्चय चतुर्विशति पूजा समाप्तम्।

१७१६. चतुर्विंशति-तीर्थंकर-पूजा

Opening : देशकालादिभावज्ञो निर्म्ममः शुद्धिमान्वर।
साब्दा रायादिगुणोपेतः पूजकः सोत्रशस्यते ॥

Closing : यावच्चंद्रदिवाकर ... ... कल्याणकोटिप्रदम् ॥

Colophon : इति श्री चतुर्विशति तीर्थङ्कराणां संस्कृत पूजा सम्पूर्णम्।

देखे, जि० र० को०, पृ० ११६।

१७१७. चतुर्विंशतिजिन जयमाला

Opening : वंदितानमर ··· — ···· पूरा इव ॥१॥

Closing : अनणुगुणनिवद्धा ···· ···· लक्ष्मीवधूनाम् ॥

Colophon : इति श्री चतुर्विंशति जिन जयमाला समाप्ता । संवत् १६३२ वर्षे चैत्र शुदि ११ शनौ ।

१७१८. चौबीस-तीर्थंकर-पूजा

Opening : देखे, क० १७१३ ।

Closing : ए नाम जिनेश्वर दुरितक्षयंकरि जो भविजनकं वि धरई ।
हुये दिव्य अमरेश्वर पुहिमे नरेश्वर रामचन्द्र शिवतिय वरई ॥२५॥

Colophon : इति श्री चोवीसतीर्थङ्कर पूजा समाप्तम् ।

१७१९. चौबीस-तीर्थंकर-पूजा

Opening : श्री वृषभादि विरांतिमा चौवीसह जिनराय ।
आह्वानन ठांडे करू, तिन बेर गुणगाय ॥१॥

Closing : जे जिय कुट्टक पट्ट तजि सुभभावन तैं जिन पूज्य रच्चावैं ।
ते जिव ह्वै धरणे द्र खगेन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र तणो पद पावैं ॥

Colophon : समाप्त: ।

१७२०. चौबीस-तीर्थंकर-पूजा

Opening : रिद्ध वृद्धि दायक ··· · पदकंज ॥

Closing : वृषभ आदि चौबीस जिनेश्वर ध्यावही ॥
ऽ.च करैं गुणगाय सुर बजावही ॥

Colophon : इति श्री चतुर्विंशति तीर्थङ्कर पूजा सम्पूर्णम् ॥

१७२१. चौबीस-तीर्थंकर-पूजा

Opening : देखें, क० १७२० ।

Closing : देखें, क० १७२० ।

Colophon : इति श्री चउवीस तीर्थङ्कर जी की पूजा संपूर्णम् । चौधरी रामचंद्र जी कृत । संवत् १८३१ वर्षे श्रावणमासे शुक्लपक्षे तिथौ पचम्या । शुभम् ।

१७२२. चौबीसी-पूजा

Opening : देखें, क० १७१८ ।

Closing : देखें, क० १७१८ ।

Colophon : इति श्री समुच्चय पूजा सम्पूर्णम् ।
इह पुजन जी की पोथी श्री व्रतजी के उद्यापन में बाबू परमेसरी सहाय जी की भार्या बनसी कुँअर ने चढाया गागील गोत्र मीति फाल्गुन वदी १२ सन् २२८३ साल?

१७२३. चतुर्विंशति तीर्थंकर पद

Opening : आदिदेव रिषभ जीनराज ······· स्याची सेव ॥

Closing : चौवीसवा श्रीमहावीर — गौतम धीर ॥

Colophon : इति चतुर्विंशति पद सपूर्णम् ।

१७२४. चिन्तामणि-पूजा

Opening : जगद्गुरु जगद्देव जगदानददायकम् ।
जगद्वंद्य जगन्नाथ श्री पार्श्वं मस्तुवे जिनम् ॥

Closing : दीर्घायु सुभपुत्रवनिता आरोग्यसत्संपदम्,
प्राज्यक्षमा पतिसज्यभोगसुरताः सद्गेहभूषादयः ।
भूयासुर्भवतां गजाश्वादिनगर ग्रामप्रभुत्वादयः,
श्री चिंतामणिपार्श्वनाथवररतो मांगल्यमोक्षोद्यता ॥

Colophon : इति इति श्री चिंतामणि पूजाव्रत समाप्तम् । लिखितं संभूनाथ अयोध्यामध्ये सहादति ग्वा० सूबाके लसगरमध्ये सं० १७६३ मगसिर सुदि १३, शनिवार ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८२७ ।
जि० र० को०, पृ० १२३ ।

१७२५. चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : देखे, क्र० १७२४ ।
Closing : देखे, क्र० १७२४ ।
Colophon : इति श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ वृहत्पूजा विधान विधि समाप्ता । संवत् १८१६ माघमासे कृष्णपक्षे तिथौ पचम्या बुधवासरे लिखित ज्ञानसागर पठनार्थ फकीरचदजी । पोथी लीखी सहजादपुर मध्ये लिषीतोय शुभं भूयात् । श्रीरस्तु ।

१७२६. चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : देखे, क्र० १७२४ ।
Closing : कल्याणोदयपुष्पवल्लि ··· श्रीपार्श्वचिंतामणि ॥
Colophon : इति श्री चिंतामणि पार्श्वनाथपूजा सम्पूर्णम् ।

१७२७. चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : देखे, १७२४ ।

Closing : इति जिनपतिदिव्यः स्तोत्रलक्षांतरेण ··· ··· सर्व्वदाम्वेषनीयम् ।।

Colophon : इति श्री चिन्तामणिपार्श्वनाथ पूजनविधाने पीठिका स्तवन समाप्तम् ।

१७२८. चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : शान्त विद्रुद्धरेफं ···· ·· संजायते पूजयेद्यः ।।१।।

Closing : इह वर जयमाला पास-जिन-गुण-विशाला — वच्छिय बहुपयारम् ।।१२।।

Colophon : इति चितामणि पार्श्वनाथपूजा ।

१७२९. चिन्तामणि-जयमाल

Opening : तिहुयण चूडामणं भविय कमल दिनेस ······ जिणेसरहम् ।

Closing : अस्याग्रे पुण्याहवाचना वाचनीय पुनर्शान्तिजिन मसिनिर्मलवक्त्र-मित्यादिपठनीयम् ।

Colophon : इति वृहद् चितामणि पार्श्वनाथ पूजा समाप्ता । संवत् १८२५, पुषमासे शुक्लपक्षे तिथि त्रयोदश्यां शुक्रदिने लिखित पंडित सेवाराम कोशलदेशे तिलोकपुरनगरे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये । श्रीपार्श्वनाथ के भंडार की पोथी परसौ लिखी निज पठनार्थं वा भव्य जीवस्य वाचनार्थं वंधिता जिनशासन शुभ भूयात् लेखकपाठकयो ।

अनित्यं जीवितं लोके अनित्यं धनयौवनम् ।
अनित्य पुत्रदाराश्च धर्मकीर्त्तिधनस्थिरः ।।

१७३०. दर्शनपाठ

Opening : दर्शनं देवदेवस्य दर्शनं पापनाशनम्,
दर्शनं स्वर्गसोपान दर्शनं मोक्ष-साधनम् ।।

Closing : जन्म-जन्मकृत पाप, जन्म कोटिमुपार्जितम् ।
जन्ममृत्युजरातकां, हन्यते जिन दर्शनात् ।।१२।।
Colophon : इति श्री दर्शनं सम्पूर्णम् ।

१७३१. दर्शनपाठ

Opening : देखे, क्र० ७१३० ।
Closing : देखे, क्र० १७३० ।
Colophon : इति दर्शनस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१७३२. दर्शनपाठ

Opening : देखें, क्र० १७३० ।
Closing : देखें, क्र० १७३० ।
Colophon : इति जिनदर्शन सम्पूर्णम् ।

१७३३. दर्शनपूजा

Openign : चहु गति फन विषहर नमन, दुख पावक जलधार ।
शिव सुख सदा सरोवरी, सम्यक् त्रयी निहार ।।१।।
Closing : सम्यक् दरसन रतन गहीजे •— इहा फेरि न आवना ।।२३।।
Colophon : इति दरसन पूजा ।

१७३४. दर्शनपूजा

Opening : परस्याभिमुखीश्रद्धा सुद्धचैतन्यरूपत ।
दर्शनं व्यवहारेण निश्चयेनात्मन· पुन ।।

Closing : अतुलसुखनिधान सर्वकल्याणबीजम्,
जननजलधिपोतं भव्यसत्त्वैकपात्रम् ।
दुरिततरुकुठारं पुण्यतीर्थं प्रधानम् ।
पिवतु जितुविपक्षं दर्शनाख्य सुधांशु ।।

Colophon : दर्शनपूजा ।

१७३५. दर्शनपूजा

Opening : देखे, क० १७३४ ।

Closing : देखे, क० १७३४ ।

Colophon : इति पंडिताचार्य श्री नरेन्द्रसेनविरचिते दर्शनपूजा समाप्ता ।

१७३६. दसलाक्षणी-पूजा

Opening : उत्तमक्षान्तिमाद्यन्त ब्रह्मचर्यसुलक्षणम् ।
स्थापयेत्दशधाधर्ममुतम जिनभाषितम् ।।

Closing : करै कर्म की निर्जरा भव पीजरा विनास ।
अजर अमर पद को लहै द्यानत सुख की रास ।।

Colophon : इति श्री दसलाक्षनी जी की भाषा जयमाल सम्पूर्णम् ।

१७३७. दशलाक्षणी-पूजा

Opening : देखे, क० १७३६ ।

Closing : देखे, क० १७३६ ।

Celophon : इति श्री दसलाक्षणी पूजा जी समाप्तम् ।

१७३८. दशलाक्षणी-पूजा

Opening : देखे, क० १७३६ ।

Closing : पाप तिमिरहर धर्मदिवाकर पढे गणे जे धर्म धनी ।
ब्रह्म जिणदास भासे दशधर्मप्रकाशे मन वांछित फल वुधि धनी ॥

Colodhon : इति दशलाक्षणिक लघु अग पूजा समाप्तम् ।

१७३९. दशलाक्षणी-पूजा

Opening : देखें, क्र० १७३६ ।

Closing : यो धर्म दशधा करोति पुरुष. स्त्रीवाकृतोपस्कृतम्,
सर्वज्ञ ध्वनिसभव त्रिकरण व्यापार-शुध्यानिशम् ।
भव्याना जयमालया विमलया पुष्पाजंलि दापयन्,
नित्य सश्रियमातनोति सकल स्वर्गापवर्गास्थिते ॥

Colophon ; इति श्रीदशलाक्षणी पूजा समाप्ता ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० १६५ ।
जि० र० को०, पृ० १६८ ।

१७४०. दशलाक्षणी-पूजा

Opening : उतमक्षमा मारदव अरजव भाव है, सत्य सौच संयमतप त्याग उपाव है ।
आकिंचन ब्रह्मचरज धरम दस सार हैं, चहुंगति दुखतें काढ मुकति करतार हैं । ॥१॥

Closing : देखें, क्र० १७३६ ।

Colophon : इति दशलाक्षणी पूजा ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८३२ ।

१७४१. दशलाक्षणी-पूजा

Opening : देखें, क्र० १७३६ ।

Closing : कोहाणलु चुक्कउ होऊ गुरुक्कउ जाइ रिसिदहि सिट्ठइं ।
जगताइ सुहकरु धम्ममहातरु देइ फलाइ सुमिट्ठइ ॥

Colophon : इति दसलाक्षणी पूजा ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र०, I, क्र० ८३३ ।
दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६५ ।

१७४२. दशलाक्षणी-पूजा

Opening : देखे, क्र० १७३६ ।

Clsoing : देखे, क्र० १७४१ । ।

Colophon : इति दसलाक्षग पूजा संपूर्णम् ।

१७४३. दशलाक्षणी जयमाला

Opening : पयकमलजिणदहि निहुवणचंदह पणवमि भावे गणहरह ।
पुण सरसइ वाणी धम्मपहाणी धम्मकहमि जह मुणिवरह ॥

Closing : मूलसघपट्टधरो धम्मचन्दगुरो मातिदामुब्रह्म भणद णिम ।
जिणदाम हणदण दहलक्षणगुण सूरदाम तुम करहु थिम ॥

Colophon : इति दसलाक्षणीक गुण जैमाल समाप्तः ।

१७४४. दशलाक्षणी व्रतोद्यापन

Opening : विमलगुणसमृद्धं ज्ञानविज्ञानशुद्ध,
अभयवनमुद्र चिन्मयूख- प्रचण्डम् ।
इत दस विधिसारं संजजे श्रीविपारं,
प्रथम जिन विदक्ष्यं शुद्धताढ्यं जिनेसम् ॥

Closing : श्री कैलासनिवासदेववृषभं ········ जिन देव सा निधिकरि कल्यानकारी सदा ॥८॥

Colophon : इति श्री दसलाक्षणी व्रतोद्यापन समाप्ता। श्रीरस्तु कल्याणमस्तु। शुभं अस्तु।

विशेष— इसके नीचे पूजा सामग्री का विवरण दिया हुआ है।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६६।

जि० र० को, पृ० १६८।

रा० सू II, पृ० ६०।

रा० सू० III, पृ० ५४।

रा० सू० IV, ६६५।

जै० ग्र० प्र० स० I, पृ० ८७।

१७४५. दिग्पालार्चन

Opening : दिग्गीमास ··· ··· ··· प्रत्येकमादरात् ॥१॥

Closing : ॐ दसदिशा दिग्पालाय पूर्णार्घं।

Colophon : इति दिग्पालार्चन विधाण समाप्तम्।

१७४६. देवपूजा

Opening : ॐ जय जय जय णमोस्तु णमोस्तु णमोस्तु।
········· ·· णमो लोए सव्वसाहूण।

Closing : इय जाणिय णामहि दुरिय विरामहि पणहविणामिय सुरावलिहिं।
जे अणिहऊ णाइहि समयकुवा हि पणविवि अरहंतावलिहिं।

Colophon : इति देवपूजाष्टकम्।

देखें, दि० जि० ग्र० र० पृ० १६७।

१७४७. देवपूजा

Opening : देखें, क्र० १७४६ ।

Closing : ... ... ।

यतीद्रसामान्यतपोधनाणां भगवान जितेन्द्र ॥

Colophon : इति देवपूजा सम्पूर्णम् ।

१७४८. देवपूजा

Opening : देखे, क्र० १७४६ ।

Closing : कीनै सकल समान जिन मकने मरधा धरो ।

शानत मग्धावान अजर अमर सुख भोगवै ।

Colophon : इति श्री देवपूजा सम्पूर्णम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८३७ ।

१७४९. देवपूजा

Opening : जय ।३। जयवत प्रवर्त्तो ।३। नमोस्तु ।३। नमस्कार होऊ ।३। णमो अरहताण । अर्हंतनि के निमित्त नमस्कार होऊ । णमो सिद्धाण । सिद्धन के निमित्त नमस्कार होऊ । णमो आयरिआण। आचार्य्यणि के अर्थि नमस्कार होऊ । ... ... ।

Closing : मेरे अैसै प्रभात समय मध्यान्ह समय सध्या समये विषे पूजा करए। सकल कर्म का क्षय निमित्त भावपूजा वदना स्तुत अर्हंत भक्ति प्रनमा नि पंचमहागुर भनि वन्दिये कायोत्सर्ग करीये उवे

पाप है तिनकूं त्यागिए ।

Colophon : इति ... पूजा ... युक्ता सम्पूर्णम् ।

१७५०. देवपूजा

Opening : भोगन्धमगतमधुव्रतलंकृतेन,
सौवर्णमानमिव गधमनिद्यमादौ ।
आरोपयामि विबुधेश्वर वंद्यम्,
पादारविंदमभिवद्यजिनोत्तमानाम् ।।

Closing : ये पूजेजिनशास्त्रयमिना भक्त्या सदा कुर्वते,
त्रिसंध्याणविचित्रकाव्यरचनामुच्चारयतो नरा. ।
पुण्याढ्यामुनिराजकिर्तिमहिता भूतास्तयां भूयगा-,
स्तेभव्या सकलविबोधरुचिर सिद्धि लभते परा ।।

Colophon : इति श्री देवपूजा सपूर्णम् ।

१७५१. देवपूजा

Opening : देखे, क्र० १७४६ ।

Closing : अपराजित मत्रोज्य सर्वविघ्न-विनाशनः ।
मगलेषु च सर्वेषु प्रथम मगल मत ।।

Colophon : कुछ नहीं है ।

१७५२ देवपूजा

Opening : देखे, क्र० १७८६ ।

Closing : देखे, क्र० १७५० ।

Colophon : इति श्री देवतापूजा सम्पूर्णम् ।

१७५३ देवपूजा

Opening : देखे, क्र० १७८६ ।

Closing : गुरोभक्ति गुरोभक्ति गुरोभक्ति सदास्तु मे ।
चारित्रमेव संसारवारण मोक्षकारणम् ॥२५॥

Colophon : नही है ।

१७५४. देवपूजा

Opening : देखे, क्र० १७४६ ।

Closing : ॐ ह्रीं नैर्म्मलयमतिज्ञानप्राप्तेभ्यो अर्घम् ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

विशेष— इसमे चन्द्रप्रभु पूजा मतिज्ञान पूजा के अधूरे पत्र भी है ।

१७५५. देवपूजा

Opening : देखे, क्र० १७४६ ।

Closing : मिथ्यात नयन निवारण (न) चद समान हो ।
अज्ञान तिमिर कारण भान हो ।
काम कषायन मिटावन मेघ मुनीस हो ।
द्यानत सम्यक् रतन त्रैगुन ईश हो ॥१४॥

Colophon : इति बियालीस बोल आरती समाप्तम् ।

१७५६. देवपूजा

Opening : देखे, क्र० १७४६ ।

Closing : अणादि काल के जे कुवादि तिन के मिथ्यात कू दूरि करने वाले चउवीस तीर्थंकर हैं तिनहिं पूज हू ।

Colophon : इति श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जयमाल । ॐ ह्रीं श्री ऋष-भादि वर्द्धमाने नमः ।

१५७. देवपूजा

Opening : देखे, क्र० १७४६ ।

Closing : देखे, क्र० १७४६ ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१७५८. देवपूजा

Opening : ॐ ह्री क्ष्वी स्नानस्थानभू, शुध्यतु स्वाहा इति स्नानस्थानं शुचि-
जलेन सिंचेन् ।

Closing : श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवद्य विशुद्धहस्त ईर्यापथस्य परिशुद्धविधि
विधाय ।

स वजषजरगताकृतसिद्धभक्तिः ... ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१७५९. देवपूजा

Opening : देखे, क्र० १७४६ ।

Closing : देखे, क्र० १७४६ ।

Colophon : इति देवपूजा समाप्तम् ।

१७६०. देवपूजा

Opening : सर्वारिष्टप्रणासाय सर्वमिष्टार्थदायिने ।
सर्वलब्धिविधानाय श्री गौतमस्वामिने ॥

Closing : देखे, क्र० १७५० ।

Colophon : इति श्री देवपूजा समाप्तम् ।

१७६१. देवपूजा

Opening : देखें, क्र० १७४६ ।

Closing : देखे, क्र० १७४६ ।

Colophon : इति श्री जयमाल सपूर्णम् ।

१७६२. देवपूजा

Opening : देखे, क्र० १६४६ ।

Closing : देखे, क्र० १७४६ ।

Colophon : इति श्री जयमाल सपूर्णम् ।

१७६३. देवपूजा

Opening : देखें, क्र० १७८६ ।

Closing : देखे, क्र० १७४६ ।

Colophon : इति देवपूजा सम्पूर्णम् ।

१७६४. देवपूजा

Opening : देखें, क्र० १७४६ ।

Closing : देखे, क्र० १७५० ।

Colophon : इति श्री देवपूजा सम्पूर्णम् ।

१७६५. देवपूजा

Opening : देखें, क्र० १७४६ ।

Closing : जे तपसूरा सजमधीरा सिद्धवधू अणुरईया ।
रयणत्तय रंजिय कम्मह गंजिय ते रिसिवर मइ झाईया ॥

Colophon : इति देवपूजा ।

देखें जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८४१ ।
दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६६ ।

१७६६. देवजयमाला

Opening : वत्ताणुठ्ठाणे ··· ··· परमपउ ॥

Closing : देखे, क्र० १७४६ ।

Colophon : इति चतुर्विंशति तीर्थङ्कर जयमाल सपूर्णम् ।

१७६७. देवप्रतिष्ठा विधि

Opening : प्रतिमाबीजमत्र प्रसिद्ध नदुमिसुरामकृतहरिने रूप ········ ।

Closing : ··· ··· सुरमंत्रजिनप्रभा ।

Colophon : इति सुरमंत्र समाप्तः ।

१७६८. धरणेन्द्रपूजा

Opening : पातालवासं वरनीलवर्णं फणासहस्रान्वितनागराजम् ।
तमाह्वये सत्कमठासन च संस्थापये भूमिधर सुभक्त्या ॥

विशेष-- ग्रथ इतना पुराना है कि सभी पत्र आपस मे सटे हुए है । अलग करने पर फट जाते है, जिससे Closing और Colophon का पता नही चलता ।

१७६९. धरणेन्द्रपूजा

Opening : देखें, क्र० १७७० ।

Closing : भक्तिर्जिनश्वरे यस्य ... तस्यैतत्सकल भवेत् ।।३५ ।।

Colophon : इति नागेन्द्र स्तोत्रम् ।

१७७०. धरणेन्द्रपूजा

Opening : धरणयक्षविलक्षणमहसैः क्षितिपरोन्नतकच्छप्रवाहनैः ।
त्रिदशवंदितपार्श्वजिनक्रम प्रणितमौलिमणीसदल श्रियैः ।।१।।

Closing : श्रीपार्श्वनाथपदपङ्कजसेव्यमान पद्मावती मजतिवाड्मनकामभागम् :
घोपरोपसर्गहनन निजमाणदक्षं तं देवशुद्धिमतिंग प्रभजामि नित्यम् ।

Colophon : इति पुष्पांजलि धरणेन्द्र पूजा सम्पूर्णम् ।

१७७१. गर्भ कल्याणक

Opening : पणविवि पंच परमगुरु गुरु जिन शासन,
सकल सिद्ध दातार सुविघन विनाशन ।
सारद अरु गुरु गौतम सुमति प्रकाशनं ।।
मंगल करि चौसंघह पाप प्रनासन ।

Closing : भासियो सुफल सुणि चित्त दंपति परम आनंदित भये,
छह मास परि नवमास बीते रयण दिन सुखसो गये ।
गर्भावतार महंत महिमा सुनत सब सुख पाईये,
भणि रूपचंद सुदेव जिनवर जगत मंगल गाईये ।।८।।

Colophon : इति श्री गर्भकल्याणक भाषा समाप्तम् ।

१७७२. गिरनारपूजा

Opening : श्री गिरनार सिखर पर्वत पर दक्षिणा दिस में सोहैं
नेमनाथ जिन मुक्तधाम सब जन मोहैं
कोड बहत्तर सात सतक मुनि शिव पद पायो
ता थल पूजन काज भव्य मन अति हरषायो
तिस तीरथ राज सुक्षेत्र को आह्वान विधि ठानि कर
पूजा त्रिजोग मन वच तन सुश्रावक जन गुण जानकर ।।

Closing : तिहुं जग भीतर श्री जिन मंदिर बनै अकीर्तम महासुखदाय,
नर सुर खग कर वदनीक जे तिनको भवि जन पाठ कराय ।
धन धन्यादिक संपति तिनकै पुत्र पौत्र सुसोहत भलाय
चक्री सुरखग इन्द्र होय कै करमना स सिवपुर सुषथाय ।

Colophon : इति श्री तीन लोक सबधी पूजा संपूर्णम् ।

विशेष—इसमें सेठसुदर्शन पूजा तथा तीन लोक सबधी पूजा भी सकलित है ।

१७७३. गिरनारपूजा

Opening : देखें, क्र० १७७२ ।

Closing : जैसवाल वर नित नैन सुख श्रावग ग्यानी ।
रामरतन सुपुत्र भयो धर्मामृत पानी ।।

Colophon : इति श्री गिरनार जी की पूजा संपूर्णम् । मीति फाल्गुन सुदी ३ । मदवासरे । लीखित जूनागढ़ श्री मंदिर जी कायेथा आनद जी ।

१७७४. गिरनारपूजा

Opening : देखे, क्र० १७७२ ।

Closing : जे नर वंदत भाव धर सिद्धक्षेत्र गिरनार ।
पुत्र पौत्र सपति लहि पूरन पुण्य भडार ।।

Colophon : इति श्री गिरनार जी की पूजा सम्पूर्णम् । मिति आषाढ सुदी ७ चित्रा नक्षत्र पहला पहर रात्रि विषै ५३३ ।। मुनि के साथ श्री नेमनाथ जी उर्जयत टोक से जा जूनागढ़ गिरनार परवत पर है, सोरठ देश गुजरात में मुक्त पधारे । नेमपुराण से देखना ।

विशेष—इसमें नीचे चार-पाँच सोरठे भी लिखे गये हैं ।

१७७५. गुरुजयमाला

Opening : भवियभवतारण ··· — · पचमहाव्वयह ॥१॥

Closing : ॐ ह्रीं पुलाकवकुसकुमीलनिर्ग्रं थस्नातकेभ्यो नम ।

Colophon : इति गुरुजयमाल संपूर्णम् ।

१७७६. गुरुपूजा

Opening : सपूजयामि पूजस्य पादपद्म युग गुरौ ।
तप प्राप्तप्रतिष्ठस्य गरिष्ठस्य महात्मने ॥

Closing : तेजस्तिजमस्तिवदमचमत्कारैकमवारिकम्
किर्तिसारदशुभ्रमानधवला निरसेषदिव्यापिनी ।
आयुदीर्घतर निरामदृढपु लीलाधमणीकृत.,
श्रीद. श्रीनिकरं करोतु भवतामाचार्यभवित सताम् ॥१०॥

Colophon : इति श्री गुरुपूजा सपूर्णम् ।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १७२ ।

१७७७. गुरुपूजा

Opening : देखे, क्र० १७७६ ।

Closing : पावै अमरपद होइ चक्री कामदेव समानिया,
इन्द्र चन्द्र धरनेन्द्र चक्री मन प्रवीन जू आनिया ॥
जै सकल पद सीव सौख्यदाता इनहि छिन न भुलाइये,
कहत लालविनोदी मन वच मनहि वछित पाईया ॥

Colophon : इति श्री जिनगुन जयमाल सम्पूर्णम् ।

१७७८. गुरुपूजा

Opening : देखे, क्र० १७७६ ।

Closing : देखे, क्र० १७६५ ।
Colophon : इति गुरुपूजा समाप्ता ।

१७७६. गुरुपूजा

Opening : देखे क्र० १७७६ ।
Closing : देखे, क्र० १७६५ ।
Colophon : सपूर्णम् ।

१७८०. गुरुपूजा

Opening : देखे, क्र० १७७६ ।
Closing : देखे, क्र० १७६५ ।
Colophon : इति गुरुपूजा ।

१७८१. गुरुपूजा

Opening : दिव्यमडलके रम्य चतुपुनोपसोभीते ।
स्थापयामि गुरो पादौ स्व स्व स्थान सिद्धये ॥१॥
Closing : निसगविरागाय ··· ··· प्रणमाम्यहम् ॥
Colophon : गुरुपूजा सपूर्णम् ।

१७८२. गुरुपूजा

Opening : काव्यं सकलगुण – ··· सूरो स्थापयाम्यत्रपीठे ॥१॥
Closing : भाव सुद्ध पूजा करौ सेवौ गुरुचित्त लाय ।
तीम काल आरति करौं रिद्धि सिद्धि सुखथाय ॥१७॥
Colophon : इति दादा श्री जिनसकलसूरि जी की पूजा सम्पूर्णत् ।

१७८३. गुरुपूजा

Opening : सिद्धान्तसूत्रसंकीर्णश्रुतस्कंधवने यने ।
आचार्यता प्रपन्नस्य पादावभ्यर्चयेन्मुने ।।

Closing : मुनिवर स्वामीनमू मिरनामी दोए करजोडी विनय करू ।
दीक्षा अति निर्मली द्योमुझउज्वली, ब्रह्मजिणदास भणि कृपाकरि।

Colophon : इति गुरुपूजा-समाप्त सम्पूर्णम् ।

१७८४. गुरुपूजा

Opening : देखे, क्र० १७८३ ।

Closing : कहो कहाँ लो भेद मैं बुध थोरी गुनभूर ।
हेमराज सेवक हिये भक्ति भरो भरपूर ।।११।।

Colophon : इति श्री गुरुमहाराज की भाषा आरती सम्पूर्नम् ।

१७८५. होमविधि

Opening : तद्यथा ॐ ह्री क्ष्वीं भू स्वाहा । पुष्पाजली ।
ॐ ह्री अत्रस्थ क्षेत्रपालाय स्वाहा ।। क्षेत्रपाल विधि ।।

Closing : इति होमविधि ज्ञात्वा तत्रस्था जिन प्रतिमा सिद्धायतन यत्रानि
पूर्वनिर्मापितजिनग्रहाभ्यतरे सस्थाप्य पुन पुन नमस्कार कृत्वा
नित्यव्रत गृहीत्वा देवान् विसर्जयेत् ।

Colophon : इति होम सपूर्णम् ।

१७८६. जलयात्रा विधि

Opening : प्रथमतडागे गत्वा जलसमीपे ··· ··· पाछैं पूजा कीजइ ।।१।।

Closing : पश्चात स्त्रीनि कौ षोडसाभर्ण दीजै पाछै घट दीजै पाडे छपैया पढत ईसान बेदी मध्य कलश थापी जइ तिसकी विधि आगै विशेष है ।

Colophon : इति जलयात्रा विधि सदूर्णम् । सवोत्तर जलइ सविधि पूर्व लाइयें । श्रीरस्तु । शुभमस्तु ।

१७८७. जिनयज्ञविधान

Opening : नमो अरहंताणं, णमो सिद्धाण णमो आयरियाणं, णमो उवझायाण णमो लोए सव्वसाहूण ... ।

Closing : ॐ ह्रीं सुद्धदृष्टये नमः । ॐ ह्रीं सुधावलोकिने नमः ।

Colophon अनुपलब्ध ।

१७८८. जिनवर विनती

Opening : श्रीपति जिनवर करुनायतन दुखहरन तुमारा ... — ... ।

Closing : हो दीनानाथ अनाथ हितजन दीन अनाथ पुकारी है । उदयागत कर्म विपाक हलाहल मोहि बिथा विस्तारी है ।।

Colophon : विनती सम्पूर्णम् ।

१७८९. जिनगुण-सम्पत्तिपूजा

Opening : वदे श्रीवृषभ देव वृषाकं वृषदायकम् । षट्धर्मप्रणेतार कर्मभूभृतवज्रकम् ।।

Closing : ये हस्तिनागे पुरिकौरवशो यश्चक्रिणायस्य स्तुतिं चकार । दानेश्वरत्व जिनपुंगवाय पुन स्तुव श्रेयगणाजितानाम् ।।

Colophon : इति जिन गुण-संपत्ति-पूजा सम्पूर्णम् ।

देखें, जि० र० को०, पृ० १३५ ।
रा० सू० III, पृ० २०५ ३०८ ।

१७६०. जिनवाणी-पूजा

Opening : प्रकटति परमार्थे सूत्रसिद्धान्तसारे,
जिनपतिसमयेऽस्मिन सारदासदधानम् ।
जगति समयसारः कीर्तितः श्रीमुनिंद्रैः,
स वसतु मम चित्ते सम्पृतज्ञानरूपः ।
जगति समयसार ते पर ज्योतिरूपं,
सुवृतमति विद्यते ज्ञानरूप स्वरूपम् । १।।

Closing : अग्यानतिमिरहर ज्ञानदिवाकर पढ़ै गुनै जो ग्यानधनी ।
ब्रह्म जिनदास भासै विवुध प्रकासै मनवांछित फल वुध धनी ।।

Clolophon : इति श्री शास्त्रजिनवाणी जी की पूजा जयमाल भाषा सम्कृत सम्पूर्णम् ।

१७६१. जंबूस्वामी-पूजा

Opening : चौबीसो जिनपाय पच परमगुरु वंदिके ।
पूज रचो सुखदाय विघ्न हरो मगल करो ।।

Closing : ॐ ह्रीं णमो सिद्धाण सिद्धपरमेष्ठिन् श्रीमज्जवूम्वामिन् सकलगुण-विराजमान् जल चदन अक्षत पुष्प नैवेद्य दीप धूप फल अर्घ महार्घ निर्वपामिति स्वाहा ।

Colophon : इति श्री इति श्री जबूस्वामी पूजा समाप्तम् ।

१७६२. जम्बूस्वामी-पूजा

Opening : देखे, क० १७६१ ।
Closing : देखे, क० १७६१ ।

Colophon : इति श्री जंबूस्वामी पूजा समाप्तम् ।

१७६३. जयमालिकापूजा

Opening : उच्चलिया सुरसल्लिया पुणमत्तिय कुसुमजलि
अमरिदह सुरिदह णिहुय दुरिय ज्वाला
पढ़मविय सुरायण भुवणसामिणा भोमहि पत्ता,
— — — ॥

Closing : तिण्यरह सुहसुयरहं पय पंकयाणि खत्तिए ।
निरूमतिए विहिज्वातीए चउवीसह सुपवित्तिए ॥

Colophon : इति जयमालिका पूजा समाप्ता ।

१७६४. ज्ञानपूजा

Opening : प्रणम्य श्रीजिनाधीशमधीश सर्वसंपदाम् ।
सम्यग् ज्ञानमहारत्नपूजां वक्ष्ये विधानतः ॥१॥

Closing : दुरिततिमिरहंस मोक्षलक्ष्मीसरोजम्,
व्यसनघनसमीर विश्वतत्त्वप्रदीपम् ।
मदनभुजगमत्रं चित्तमात्तगसिंहम्,
विषयसफरजालं ज्ञानमाराधयत्वम् ॥

Colophon : इति श्री ज्ञानपूजा जी समाप्तम् ।

१७६५. ज्ञानपूजा

Opening : देखें, क्र० १७६४ ।

Closing : देखे, क्र० १७६४ ।

Colophon : इति पंडिताचार्य श्रीनरेन्द्रसेन विरचिता सम्यग्ज्ञान पूजा समाप्ता ।

१७६६. ज्ञानपूजा

Opening : देखें, क्र० १७६४ ।

Closing : देखें, क्र० १७६४ ।

Colophon : इति ज्ञानपूजा ।

१७६७. ज्वालामालिनी-पूजा

Opennig : जय ! ज्वाला जगज्योति होति आनन्द विधाई ।
जय ! ज्वाला हर त्रिधा विघन मोद मगल दाई ॥
जय ज्वाला वर अमित शक्ति श्रुति सारद गावे ।
जय ज्वाला पद सुर मुनिन्द्र मति चिन्तित पावे ॥

Closing : पूजन मध्या छन्द की ······ — ।

Colophon : इति श्री चन्द्रप्रभु जिनदेव वा श्यामल यक्ष तथा ज्वालामालिनी महादेवी जी की पूजन स्तुति समाप्तम् ।

१७६८. ज्वालामालिनीपूजा

Opening : श्रीमत्तो प्रभेशजिनपकजसेवकिन्या,
श्यामाख्या यक्षिसुवद्योपादपद्मयुग्मम् ।
चक्राधिपादिमनुर्जं खलवन्यमाना,
माह्या नानादिविधिनात्रसमर्थयेऽहम् ॥

Closing : वरमहिषवाहिनि ··· शतचुडगं ॥जय०।४५ ।

Colophon : इति आरती सम्पूर्णम् ।

१७६९. ज्वालामालिनी-पूजा

Opening : देखें, क्र० १७६८ ।

Closing : रार्केदुबिम्बरूचिशोभितदीव्यगात्रं राजीवपत्रनिभपादसुरांग ..... ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१८००. ज्येष्ठजिनवर-पूजा

Opening : नाभिरायकुलमंडन ... . क्षीर समुद्र भणी ।।१।।

Closing : यावति जिन चैत्यानि विद्यन्ते भुवनत्रये,
तावति सतत भक्त्या त्रिपरीत्य नमाम्यहम् ।।३०।।

Colophon : इति ज्येष्ठ जिनवर पूजा ।

१८०१. कलशाभिषेक

Opening : सौगंध्यसगतमधुव्रतझकृतेन .... जिनोत्तमानाम् ।।१।।

Closing : मुक्ति श्री वनिताकरोदकमिद पुन्यकरोत्पादकम् ।
जिन गधोदक वदे ह्यष्टकर्म निवारणम् ।।

Colophon : इति लघु जिन कलशाभिषेक संपूर्णम् ।

१८०२. कलिकुण्ड-पूजा

Opening : चन्द्रावदातैं सरलैंसुगंधैरनिघपात्रैवंरसालिपुंजै ।। दुष्टो० ।।

Closing : वरखगिन्दु .. उवसग्गुत्तिहू ।

Colophon : इति कलिकुण्ड पूजा समाप्तम् ।

१८०३. कलिकुण्ड-पूजा

Opening : हूंकार ब्रह्मरुद्रं सुरपरिकलितं . . .... विनाशं प्रयुक्तम् ।।

Closing : देखें, क्र० १८०२ ।

Colophon : इति श्री कलिकुंड पूजा जी समाप्तम् ।

देखें, जैं० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८६१ ।
दि० जि० ग्र० र०, पृ० १७५ ।
जि० र० को०, पृ० ७४ ।

१८०४. कलिकुण्ड-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८०३ ।

Closing : देखें, क्र० १८०२ ।

Colophon : इति कलिकुण्ड पूजा ।

१८०५. कलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८०३ ।

Closing : सर्पत्सर्पेशदर्पो - राजहंसोवनाह ।।१३।।

Colophon : इति श्री कलिकुण्ड पार्श्वनाथ पूजा जयमाल समाप्त ।

१८०६. कलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : ह्रूंकारं ब्रह्मरुद्र ... विघ्नविनाशनम् ।

Closing : नव विघ्नविनाशन भयहर सर्व भयानिवारणम् ।

Colophon : इति श्री कलिकुण्ड पूजा समाप्ता । श्री रस्तु ।

१८०७. कलिकुण्ड पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८०६ ।

Closing देखें, क्र० १८०६ ।

Colophon : इति कलिकुण्ड पूजा जयमाला सम्पूर्णम् ।

१८०८. कंजिका-व्रतोद्यापन

Openign : चिद्रूपं चिदानन्द अपरं निर्जर परम् ।
शान्त कर्म्मातिग पूतं पुराणं पुरुषोत्तमम् ॥

Closing : अतुलगुणसमग्रं स्वर्गमोक्षापवर्गम्,
त्रिभुवनपरिरिद्धिः प्राप्तसर्वं प्रसिद्धिः ।
नमति सुजसकीर्ति कोमलाकीर्त्य-कीर्तिः,
रत्नविबुधसांतं पातु व मुक्तिकांतं ॥७७॥

Colophon : इति कंजिकाव्रतोद्यापन समाप्ता श्रीरस्तु । शुभ अस्तु ।

विशेष— इसके आगे पूजा सामग्री विवरणिका भी है ।

१८०९. कर्मदहनपूजा

Opening : लोक सिखर तनछाडि अमूरत ह्वै रहे,
चेतन ग्यान सुभाव गेयते भिन महे ।
लोकालोक सो काल तीन सबविधिधारी ,
जानि सो सिद्ध देव जजो शुभति वनी ॥

Closing : पुत्र प्राप्त करि ऋद्धिसुतरी रोगाग्निधाराधरी,
पापातापहरि प्रबोध सुचरी वश्रीन्द्रभूसोदरी ।
आनन्दाद्भुत धन्य धाम नगरी मायामय मारी,
चक्रीमाभवतो शिवस्य भवतु श्रेयस्करी शकरी ॥

Colophon : इति श्री कर्मदहनपूजा समाप्तम् ।

१८१०. क्षमावणी पूजा

Opening : देवश्रुतगुरुन्नत्वा स्नापयित्वा महोत्सवे ।
ततश्चाष्टविधापूजा कुर्यादिव्रतविधायकः ॥

Closign : यश्चैतन्यमचित्यमद्भुतगुणा श्रद्धानमंतः स्फुरन्,
ज्ञान पचसमस्ततत्वविषय स्वात्मावबोधद्युति. ।
तच्चारित्रमनतरगत व्यापारपारगता,
वदे तन्त्रितयं त्रिधापतिणत यन्निश्चयाश्रिश्रितम् ॥१२॥

Colophon : इति क्षमावणी अर्घ सम्पूर्णम् ।

देखे, दि० जि० ग्र० र०' पृ० १७७ ।

१८११. क्षेत्रपाल पूजा

Opening : युगादिदेव प्रयजे स्वहव्यै. इक्ष्वाकुवशोधरधर्मवेदी ।
चामीकराभाद्युतिकोटिभानु. प्रहाकृता घातकनुर्यमागम् ॥१॥

Closing : श्रीमच्छ्रीकाष्टासंघे यतिपति तिलके ··· ·· क्षेत्रपाना शिवाय
॥२७॥

Colophon : इति श्री विश्वसेनकृता षणवति क्षेत्रपाल पूजा सपूर्णम् । कार्तिक-
मासे शुक्लपक्षे तिथौ पौर्णमास्या भृगुवासरे । श्रीसवत्-१९५३

१८१२. क्षेत्रपाल-पूजा

Opening : क्षेत्रपालाय यज्ञेस्मिन्नत्रक्षेत्राधिरक्षणे ।
बलि ददामि दिश्यग्ने वेद्या विघ्नविनाशने ॥१॥

Closing : आठठो छद गातुं मैं तो रज्यो क्षेत्र को ।
मुनिसुभचद्र गावो छद भैरू लाल को ॥
जैन को उद्योत भैरू समकित धारी ॥१२॥

Colophon : अनुपलब्ध है ।

१८१३. क्षेत्रपाल-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८१२ ।

Closing : अपुत्रो लभते पुत्रान् ·· ···· सर्वसिद्धिमवाप्नुयात् ।।

Colophon : इति क्षेत्रपाल पूजनविधानम् ।

१८१४ क्षेत्रपाल-पूजा

Opening : वंदेह सन्मति देव सन्मति मतिदायकम् ।
क्षेत्रपाना विधि वक्ष्ये भव्यानां विघ्नहानये ।।१।।

Closing : सर्वविघ्नहरायक्षा दक्षालक्षगुणान्विता: ।
एते पिंडीकृता यक्षा· क्षारध्रमिता मया ।।२६।।

Colophon : इति क्षेत्रपालानां नामांकित स्तोत्र सपूर्णम् ।

देखें, जि० र० को०, पृ० ६८ ।

१८१५. क्षेत्रपाल-पूजा

Opening : देखें क्र० १८१४ ।

Closing : घातिघारात्रय ···· ··· · क्षेत्रपानां शिवाय ।।२७।।

Colophon : इति श्री विश्वसेनकृता षणवति क्षेत्रपाल पूजा सम्पूर्णम् ।

१८१६. क्षेत्रपाल-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८१२ ।

Closing : अवसाने राखहु पाप नासहु पहिली पूजा तुम्हरी कही ।
करि पूजा जिनंद ही, कमलानद ही विजैपाल बहु सिरनवै ।।

Celophon : इति श्री क्षेत्रपाल पूजा संपूर्णम् ।

१८१७. क्षेत्रपाल पूजा

Opening : देखे, क्र० १८१२ ।

Closing : इति प्रवुद्धातत्त्वस्य स्वय ० प्रादुरासनजितक्रमी ।

Colophon : इति श्री वृहत् सहस्रनाम समाप्तम् ।

विशेष — इसमे क्षेत्रपालपूजा और वृहत्सहस्रनाम दोनो है । बीच के बहुत से पत्र नही है ।

१८१८ क्षेत्रपाल-पूजा

Opening : प्रणम्य श्री जिनेशानां वर्द्ध मान जिनेश्वरम् ।
पूजा श्रीक्षेत्रपालाना वक्ष्ये विघ्नविहानये ।।१।।

Closing : लक्ष्मीप्राप्तकरी कलत्रसुखकरी चौरादि शत्रुहरि,
शाकिन्यादिहरी प्रशर्मसुचरी राज्यादिनिवर्द्धनी ।
विद्यानदघनौघनामनगरी विघ्नौघनिर्णाशनी,
पूजा श्री जिनक्षेत्रस्य भवतु सपत्करी चित्करी ।।

Colodhon : इति श्री क्षेत्रपाल पूजा सम्पूर्णम् ।

१८१९. लब्धिविधान-पूजा

Opening : श्रीवर्द्धमानजिनचद्र ··· ·· सततं शुभक्त्या ।।१।।

Closing : जिणगुणरयणयरू हियै देवायरू केवलणाणलहैवि चिरू ।
हुय सिद्ध निरजणु भवभयबंधणु अगिणिय रिसिपुंगमुजिचिरू ।८।

Colophon : इति लब्धविधान पूजा ।

१८२०. लघुकर्मदहन-पूजा

Opening : तीर्थ कर जिनको नमत सुर नर संत ।
जे वदौ वरतौ सवा येसे सिद्ध महुत ।।

Closing : मैं मत हीन विवेक नही अर प्रसाद में लीन ।
थिरता लघु जग जानककर लघु मत स्व नवीन ।।

Colophon ; इति लघु कर्मदहन विधान संपूर्णम् । मिति श्रवन सुदी २ सवद् उनैसै अठाईस दसकत परमानद के मुकाम जवलपुर। ठीकाना हनुमान तलाव श्री मंदर वड़े दिवाले के पक्षवाड़े मुनालाल ।

विशेष — इसके बाद कुछ भजन भी हैं ।

१८२१. लघुपचकल्याणक विधान

Opening : वदो श्री अरहत पद मन वच तन चितधार ।
मगलमय जग मैं प्रगट पार उतारनहार ।।

Closing : तुम दयाल जगतपति सिवदरमी भगवान ।
सिव सेवा फल दीजिये तारापति नित जान ।
सवत् येक पदार्थ समगत मिलाय कर ठीक ।
पूरन पाठ भयौ सो तब भद्र कृष्न नवमीस ।।

Colophon : इति लघु पंचकल्याणक विधान सम्पूर्णम् ।

१८२२. महावीर अर्घ्य

Opening : दिन दिन गुनकर करी सवा बढ़त जान जिनचन्द ।
बर्द्धमान कही हरी अर्घ्यो मैं पूजों सुखकंद ।।

Closing : ॐ ह्रीं अतिवीरनामेभ्यो अर्घम् ।

Colophon : सम्पूर्णम् ।

१८२३. मंगल

Opening : पणविवि पंच ... ... जगत मंगल गावई ।।१।।

Closing : वदन उदर अवगाह कलस गति जानिए ... जगत मंगल गाईए ।।

Colophon : इति तृतीय मंगल सम्पूर्ण ।

१८२४. मंत्रविधि

Opening : ते चतुर्दशी पुष्पार्क होवै त्यारितादिनं उपवास कृत्वा जाप्य १२००० त्रिमध्य अर्द्ध रात्रौ । व ८८००० ।

Closing : अनेन मंत्रेण होम कुर्यात् महस्र १२००० । शत्रुनाश भवति । अनेन मंत्रेण गजेन्द्रनरेन्द्र सर्वशत्रुवशीकरण पूर्वम उस्मरणीयम् ।

Colophon : इति विधि सम्पूर्णम् ।

१८२५. मोक्षपैडी

Opening : इक्क समै रूचिवंत नौ गुरुवरकै सुनु मल्ल ।
जों उफ अंदर चेतना वहै उसाडी अल्ल ।।

Closing : भव थिति जिन्ह की छूटि गई तिन्ह कौ यह उपदेश ।
कहत बनारसीदास यौं मूढ़ न समुझै लेस ।।

Clolophon : इति मोक्षपैढ़ी समाप्तम् ।

१८२६. नंदीश्वर-पूजा

Opening : नंदीश्वर पूरब दिसा तेरह श्री जिन गेह ।
आह्वानन तिनका करूँ मन वच तन धरि नेह ॥१॥

Closing : मध्यलोक जिन भवन अकित्तम ताके पाठपढे मनलाई ।
जाके पुण्य तणो अति महिमा वरनन को करि सकै बनाई ॥
ताके पुत्र पौत्र अरु सपति बाढै अधिक सरस सुखदाई ।
इह भव जस परभव सुखदाई सुरनर पदलहि शिवपुर जाई ॥

Colophon : इति नंदीश्वर पूजा सम्पूर्णम् ।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क० ८७६ ।

१८२७. नंदीश्वर-पूजा

Opening : मध्येमण्डपमालिखेद्वरतरे नदीश्वर मण्डलम् ।
वर्णे पञ्चभिरानत गुणगुरु शक्र मतां सम्मत ।
तन्मध्ये चतुराननं जिनवरं बिम्बस्य सातास्पद ।
दिव्यैरष्टभिरिष्ट-सौख्य-जननैः कुर्यात्तदर्च्चा ततः ॥ १॥

Closing : आयु ··· देवार्हतामर्हणा ॥११॥

Colophon : इति श्री नदीश्वरपूजा समाप्त ॥

१८२८. नंदीश्वरद्वीप-पूजा

Opening : कर्पूरपूरपरिपूरितभूरिनीरः धाराभिराभिरभितः श्रीतहारिणीभिः
नदीश्वरेष्टदिवमानि जिनाधिपानां आनदतः प्रतिकृतिः
परिपूजयामि ॥

Closing : इयथुणि वि जिणेसरु महिपरमेसरु ···· ···· सुक्ख सो पावई ।

Colophon : इति श्री नदीश्वर द्वीप पूजा जयमाल समाप्तः। लेखकपाठक-
वाचकश्रोतृणा समस्तु शुभं भवतु ।

१८२९. नवग्रहपूजा

Opening : अर्कश्चंद्रकुजसौम्यगुरुशुक्रशनिश्चरः ।
राहुकेतुग्रहारिष्टनासन जिनपूजनात् ॥१॥

Closing : कन वछित दाईक सेव सहायक जो नर निज मन ध्यान धरै ।
ग्रह दुख मिटि जाई सौख्य लहाई जिन चौबीसी पूजन करै ॥

Colophon : इति श्री नवग्रह अरिष्ट निवारन पूजा सम्पूर्णम् ।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८८१ ।

१८३०. नवग्रह-पूजा

Opening : देखें क्र० १८२९ ।

Closing : देखें, क्र० १८२९ ।

Colophon इति श्री केतुअरिष्ट निवारक श्री मल्लिनाथ पार्श्वनाथ पूजा सम्पूर्णम् । शुभमस्तु । मंगलमस्तु । श्री वीतराग जी सदा सहाय । इति नवग्रहारिष्टनिवारक चतुर्विंशति जिनपूजा सम्पूर्णम् । नवग्रहशान्ति हेतु चतुर्विंशति जिनेन्द्र पूजन मन शुद्ध सागर जी कृत श्री । शुभ सम्वत् १९१३ फाल्गुन मासे शुक्ल पक्षे सोमवारे ।

१८३१. नवग्रह-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८२९ ।

Closing : देखें, क्र० १८२९ ।

Colophon : इति श्री नवग्रह अरिष्ट निवारन पूजा सम्पूर्णम् ।

१८३२. नवग्रहपूजा

Opening : श्रीनाभिसूनो पदपद्मयुग्म नखासुखाणि ? प्रथमं तु तेव,
समक्षमक्षाकिशिरः किरीट संघच्छविश्रस्तमनीयतं वैः ॥१॥

Closing : आदित्यादिग्रहामर्वे नक्षत्रासुरासया ।
कुर्वन्तु मगल तस्य पूजा कर्तृ णस्य वा ॥

Colophon : इति नवग्रहपूजा जिनसागरकृत सम्पूर्णम् ।

१८३३. नवग्रह-पूजा

Opening : प्रणम्याद्य तत्तीर्थेश धर्म तीर्थप्रवर्त्तकम ।
भव्यविघ्नोपशान्त्यर्थं ग्रहार्चाविर्ष्यते मया ॥१॥

Closing देखें, क्र० १८२६ ।

Colophon : इति श्री केतु अरिष्ट निवारक श्री मल्लिनाथ पार्श्वनाथ पूजा सपूर्णम् । इति नवग्रह पूजा जी सम्पूर्णम् । शुभं अस्तु मगलम् अस्तु ।

१८३४. नवग्रह-पूजा

Opening : ग्रहाम शब्दये युष्मानयातः सपरिक्षदा ।
अत्रोपवसतां तावो जये प्रत्येकमादरात् ॥१॥

Closing : ॐ ह्रीं नवग्रहेभ्य दक्षिणा प्रदानम् ।

Colophon : इति नवग्रह पूजाविधानम् ।

१८३५. नवकार-पंच त्रिशत्पूजा

Opening : श्रीमज्जिनेद्रवरसाघनसारभूत पूज्म नरामरसुखेचरनायकैश्च ।
ध्येय मुनीद्रगणनायकवीतरागं सस्थापयामि नवकारसुमंत्रराजम् ।

Closing : जय परमणि रजण दुरिय विहडण ··· वरदितु सुहा ॥
Colophon : इति श्री नवकार पैंतीसी पूजा जयमाला सम्पूर्णम् ।

१८३६. नवपद-कलश-पूजा

Opening : — जोयन श्री जे अरे पहिलो तीरथराय ।
सोल जोजन ऊंचो सही ध्यानधरू चित लाय ॥
Closing : वाणी वाचक जस तणी कोई न थई अधूरी रे ॥२२॥
Colophon : इति इति नवपद कलश पूजा समाप्तम् ।

१८३७. नेमिनाथ जयमाला

Opening : नेमिजी तुम्हारी हठ मानी ॥
Closing : जो एतना करी ··· ··· पावै ।
Colophon : इति नेमिजयमाल समाप्तम् ।

१८३८. न्हवण-पूजा

Opening : सौगन्धसगतमधुव्रतझकृतेन संवर्णमानमित्र गन्धनिद्यमाद्यौ ।
आरोपयामि विवुधेश्वरवृ ववद्य पादारविंदमभिवंद्य जिनोत्त-
मानाम् ॥१॥
Closing : ··· ··· जन्मजरामरण ··· ··· ॥
Colophon : अनुपलब्ध ।

१८३९. न्हवण-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८३८ ।

Closing : अरुहा सिद्धा आइरिया उवज्झाया साहु परमेट्ठी ।
एदे पंच णमोयारा भवे भवे मम सुहं दितु ।।१।।

Colophon : इति न्हवणपूजा ।

१८४०. न्हवणकाव्य

Opening : दूरावनम्रसुरनाथकिरीट कोटि संलग्नरत्नकिरणच्छविधू-
सराघ्रि ।। ।।
प्रस्वेदतापमलमुक्तमपिप्रकृष्टं भक्त्या जलं जिनपते बहुधाभि-
सिंचेत् ।।१।।

Closing : य पादुक ··· ··· ···ल त्वदीय बिंबम् ।।

Colophon : इति बिंब स्थापण मंत्र ।

१८४१ निर्वाण-पूजा जयमाला

Opening : कमलणवेप्पिणु हिये धरेप्पिणु वाएसरेगुणगणहरहं ।
णिव्वाणई ठाणइ तित्थसमाणइ पयडमि भत्ति जिनेसरह ।।१।।

Closing इय तित्थकर तित्थइ पुण्णवित्तइ पठइ वियाणइ विमलयरे ।
तह पावपणासइ दुरिय विणासइ मगल सयल पहु तिधरे ।।१७।।

Colophon : इति निर्वाण पूजा की प्राकृत आरती संपूर्णम् ।

१८४२. निर्वाण-पूजा

Opening : अपवित्रपवित्रो वा सर्व्वावस्थांगतोपि वा ।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः ।।५।।

Closing : देखें, क्र० १८४१ ।

Colophon : इति णिर्व्वाण पूजा समाप्तम् ।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८२ ।

१८४३. निर्वाण-पूजा

Opening : ॐ जय जय जय ... ... सव्वसाहूण ॥१॥

Closing : देखें, क्र० १८४१ ।

Colophon : इति निर्व्वाण पूजा जी समाप्तम् ।

१८४४. निर्वाण-पूजा

Opening : ॐ जय जय जय । णमोस्तु णमोस्तु णमोस्तु ।
... ... णमो लोए सव्वसाहूण ॥१॥

Closing : कहे कहाली तुम सब जानो, द्यानत की अभिलाष प्रमानो ।
करो आरता वर्द्धमान की पावापुर निर्व्वाण थान की ॥७॥

Colophon : इति आरती सपूर्णम् ।

१८४५. निर्वाण-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८४३ ।

Closing : देखें, क्र० १८४१ ।

Colophon : इति निर्व्वाण पूजा ।

१८४६. निर्वाण-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८४३ ।

Closing : संवत् सत्रह सै इकताल, आसिन सुदि दसमी सुविशाल ।
भैया वदन करै त्रिकाल, जय निर्वान काण्ड गुनमाल ॥

Colophon : इति निर्वान काण्ड सम्पूर्णम् ।

१८४७. निर्वाण-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८४३ ।

Closing : देखें, क्र० १८४१ ।

Colophon : इति श्री निर्वाण पूजा समाप्ता ।

१८४८. निर्वाण-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८४३ ।

Closing : देखें, क्र० १८४४ ।

Colophon : इति निर्वाण पूजा सम्पूर्णम् ।

१८४९ निर्वाण-पूजा

Opening : वदों श्री भगवान को भावभगत सिरनाय ।
पूजा श्री निर्वान की सिद्धक्षेत्र सुखदाय ।।१।।

Closing : श्री तीर्थङ्कर चतुर बीस भगवान है ।
गर्भ जन्म तपज्ञान भए निरवान है ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१८५०. निर्वाण-क्षेत्र-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८४९ ।

Closing : संवत् अष्टादस सही सत्तर एक महांन ।
भादौ कृष्ण जु सत्तमी पूरण भयौ सुथान ।।२४।।

Colophon : इति श्री सिद्धक्षेत्र पूजा सम्पूर्णम् ।

१८५१. निर्वाण क्षेत्र-पूजा

Opening : परम पूज चौवीस जहाँ जहाँ शिवथानक भयो ।
सिद्धभूम दशदीश मन वच तन पूजा करो ॥१॥

Closing : ए थल जावै पाप मिटावै गावै धावै भक्ति बढ़ावै ।
जो पुजे सो शिव लहै ॥

Colophon : इति श्री सिद्धक्षेत्रकी पूजा सपूर्णम् ।

१८५२. निर्वाणकल्याणक-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८४३ ।

Closing : देखें, क्र० १८४१ ।

Colophon : इति श्री निर्वाणकल्याणक जी की पूजा भाषा मस्कृत जयमाल सहित सम्पूर्णम् ।

१८५३. निर्वाण-कल्याणक

Opening : केवल दृष्टि चराचर देख्यौ जारिसो,
भविजन प्रति उपदेश्यो जिनवर तारिसो ।
भव भयभीत महाजन सरन जे आईया,
रतनय सुम लछन शिव पथ भाईया ॥१॥

Closing : रचि अगरचदन प्रमुख परिमल द्रव्य जिनजयकारियो ।
पद पतन अग्निकुमार मुकुटानल सुविधि संस्कारियो ।
निर्वान कल्याणक सुमहिमा सुनत सब सुख पाईये ।
भणि रूपचद सुदेव जिनवर जगत मगल गाईये ॥६॥

Colophon : इति निर्वाण कल्याणक भाषा सम्पूर्णम् ।

१८५४. नित्यनियम-पूजा

Opening : सौगन्धसगतमधुव्रत .... -- ।
पादारविंदमभिवंद्यजिनोत्तमानाम् ॥१॥

Closing : सुखदेवो दुखमेटिवो एहि तुमारीबानी,
मो अधीर की बीनती सुन लीजै भगवान ।
दरसन कीजे देव को आदि मध्य अवसान,
सुरगन के सुखभोगके पावै पदनिरवान ॥

Colophon : इति सम्पूर्णम् ।

१८५५. पदलावनी

Opeuing : शिखर गिर के ऊपर तिर्थङ्कर विराजे ।
आध्रि रात में याने देव दुंदुभिबाजे ॥

Closing : समेद शिखर पर्वत केऊपर बीसतीर्थङ्कर मुक्ति गए ।
ककर ककर सिद्ध विराजे असंख्यात मुनि मुक्ति बए ॥

Colophon : इति सम्पूर्णम् ।

१८५६. पद्मावती-पूजाविधान

Opening : देखें, क्र० १८५७ ।

Closing : वार्योभिदिव्यगध्यैः -- .. पूजयामीष्टसिद्ध्यैः ॥१३॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१८५७. पद्मावती-पूजा

Opening : श्रीपार्श्वनाथ-जिननायकरत्नचूड़ा-,
पाशांकुशोरगफलांकितदो चतुष्काः ।
पद्मावती त्रिनयना त्रिफणावतंस-,
पद्मावती जयतु शासनपुण्यलक्ष्मी ॥

Closing : या देवी रिपुचोरवन्हिजमहा सकष्ट संहारिणी,
या रात्रिचरभूतखेचरमहाबेतालनिर्णाशिनी,
रंकानां धनदायिनी सुखकरा इष्ठार्थ संपादिनी,
सा मां पातु जिनेश्वरी भगवती पद्मावती देवता ॥

Colophon : इति पद्मावीपूजा चारूकीर्तिकृत सम्पूर्णम् ।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८२ ।

१८५८. पद्मावती-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८५७ ।

Closing : श्रीमत्पद्मनगराजाग्रे वाराधारां करोम्यहं,
सर्वशोकस्य शान्त्यर्थं भृंगारनालनिर्गता ॥१०॥

Colophon नहीं है ।

विशेष— इसमें पार्श्वनाथपूजा तथा धरणेन्द्रपूजा भी संकलित है ।

१८५९. पद्मावती-पूजा

Opening : श्रीमच्चतुर्विदशशोभितदीर्घबाहिनी वज्रादिकायुधधरामहमा-
ह्वयामि ॥
संस्थापयामि सुजनैरभिपूज्यमानां पद्मावतीक्षितिहेतुतां फणिराज-
कांता ॥

Closing : नाहंकारवशीकृतेन मनसा न द्वेषिणा केवलम्,
नैरात्म्य प्रतिपद्य नश्यति जना: कारुण्य बुध्या मया।
राज्ञ श्री हिमशीतलस्य सदसि प्रायो विदिग्धात्मना,
बौद्धोधान् सकलान् विजित्य सुगत पादेन विस्फालित: ॥१६॥

Colophon : इति अकलंकाष्टकम्।

१८६०. पद्मावती-पूजा

Opening : नम. श्रीपार्श्वनाथाय ··· ··· चतुर्विंशति मंगलम् ॥
Closing : श्रीपार्श्वनाथपदपकज-सेव्यमानं ~ प्रभजामि नित्यम् ॥
Colophon . अनुपलब्ध।

१८६१. पद्मावती-पूजा

Openi-g : जय कुसुमकुंकुमारूणशरीर ···· पद्मावती ॥
Closing : गभीर मधुर मनोहरतर सद्घोषरत्नाकरम्,
वक्र पूर्णकरं सुधाहितकर भक्तांबुज भास्करम्।
नानावर्णसुरत्नभूषितकर संसारसौख्याकरम्।
श्रीपद्मावती देविमूर्त्तिसुभदं कुर्वन्तु वो मंगलम्।
Colophon : इति श्री पद्मावती देवी पूजा सम्पूर्णम्।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८३२।

१८६२. पद्मावती-पूजा

Opening : देखें, १८६१।
Closing : देखे, क्र० १८६१।
Colodhon : इति श्री पद्मावती पूजा समाप्तम्।

१८६३. पद्मावती-व्रतोद्यापन

Opening : नम श्री पार्श्वनाथाय मोक्षलक्ष्मी तिवासिने ।
वक्षे पद्मावती पूजा चतुर्विशतिसंगया ॥१॥

Closing : ये पूजयती मनकायवाणा तेषां जनाना सुखदायकानि ।
पद्मावतीनामपर पवित्रं सद्य पवं दान ददाति पूजा ॥६॥

Colophon : इति प्रथमनिरूपम पुष्पाजलिम् ।

१८६४. पंचवालयती पूजा

Opening : श्री जिनपच अनगजित वासु-पूज्यमल्लनेम ।
पारसनाथ सुवीर अति पूजो चितधर प्रेम ॥१॥

Closing : ब्रह्मचर्य सो नेह धर रचियो पूजन पाठ ।
पाचौं वाल जतीनको कीजै नित प्रति पाठ ॥२७॥

Colophon : इति श्री पचवालजती पूजा सम्पूर्णम् । शुभम्

१८६५ पंचकल्याणक-पूजापाठ

Opening : श्री चौवीस जिनेस पद बदो मन वच काय ।
जाके ध्यावत भव्य जन भववारिधि तरिजाय ॥१॥

Closing : सात जुगुल नव यक लिखि संवत् श्रावण मास ।
कृष्णपक्ष दसमी दिवस शुक्रवार परमास ॥१३॥

Colophon : इति श्री चतुर्विशति जिन पंचकल्यानक पूजापाठ समाप्तं

१८६६. पंचकल्याणकपाठ

Openign : पणविविपचपरमगुरुजिनशासन --- --- . पापप्रणा-
सनम् ॥१॥

Closing : पावए अष्टौ सिद्ध ··· चउसंघहि गए ॥२५॥

Colophon : इति श्री पच कल्याणक जी समाप्तम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८८६ ।

१८६७. पंचकल्याणकपाठ

Opening : देखें, क्र० १८६१ ।

Closing : फुनि हरैं पातक टरैं विघन जे होय मंगल नित नए ।
भनि रूपचंद त्रिलोकपति जिनदेव चउ संघहिंगए ॥२६॥

Colophon : इति श्री पंचकल्याणक संपूर्णम् ।

१८६८. पंचकल्याणकपूजा

Opening : सिद्ध कल्याण बीज कलिमलहरण पंचकल्याणयुक्तम्,
स्फूर्यदेवेन्द्रवर्यै मुकुटमणिगणैर्दीप्तपादारविन्दम् ।
भक्त्या नत्वा जिनेन्द्रसकलसुखकर कर्मवल्लीकुठारम्,
कुर्वेऽहं पूजनं वैः प्रबलभवभय शान्तये श्री जिनानाम् ॥१॥

Closing : इति शान्तिधारा श्रयं –
ये कल्याणकभूषिताः सुरनुता सत्यं च बोधान्विताः ।
भव्यै सद्विधिनाविधानसमये संपूजिताः संस्तुता ॥
त्रैलोक्येशमहोदरोप्येव सुख समारकं चाप्नुतम्,
मोक्षं चापि दिशतु वै जिनवराः सर्वात्मना सर्वदा ॥६॥

Colophon : इति श्री पंचकल्याणकपूजा समाप्तम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८६७ ।

दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८४ ।

Cagt, of Skt. & Pkt. Ms. P. 662.

१८६६. पंचकल्याणक-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८६८।

Closing : अनेकतर्कसकर्षहर्षातितवृद्योत्तमा।
स्वर्द्धिनी च वयस्फूर्तिजीवात् श्री प्रतिवर्द्धनम् ॥

Colophon : इति श्री पंचकल्याणक पूजा जी सम्पूर्णम्। लाला सकरलाल रतनचंद के माथे को पुस्तक।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६०२।

१८७०. पंचकल्याणक-दोहा

Opening : कल्याणक नायकनमूं, कलपकुरूह कुलकंद।
कलमष हुर कल्याणकर, बुधकुलकमलदिनंद ॥१॥

Closing : तीन तीन वसु चंद ये संवत्सर के अंक।
जेष्ट शुक्ल दशमी दिवस पूरन पढ़ो निसंक।

Colophon ; इति पंचकल्याणक के सागीत कवित सम्पूर्णम्।

१८७१ पंचकल्याणक-पूजा

Opening : परमब्रह्मेभ्यस्तेभ्यो नमो निर्वाणसिद्धये।
येषां नामान्यनतानि कातिभिरपि मस्तुवे ॥१॥

Closing : देह दीप्तप्रकारी सुनाम्नसुकरी चक्रेन्द्रसपत्करी जन्मादिसुतरी।
गुणाकरकरी स्वमोक्षधाम्नीकरी .... रोगाद्यनासकरी ॥

Colophon · इति श्री चतुर्विंशतितीर्थङ्कर पूजा पंचकल्याणक समाप्तम्।

१८७२· पंचकल्याणक-पूजा

Opening : पंच परमगुरु वंदि करि पंचकुमार बनाय।
मदन व्याधि मेरी हरो जगत करो सुखदाय ॥

Closing : पूजन पंचकुमार ·· — मोक्ष सुरपायहो ॥१७॥

Colophon : इति श्री पंचकुमार जिनेन्द्रपूजा संपूर्णम् ।

१८७३. पंचकुमार-विधान

Opening : ॐ परम ब्रह्मणे नमो नमः । स्वस्ति स्वस्ति, जीव जीव, नद नंद वर्द्धस्व वर्द्धस्व विजयस्व विजयस्व आनुसाधि आनुसाधि — ···· ।

Closing : ॐ ह्रीं क्रों षष्टिमहस्र संख्येभ्यो स्वाहा । नाग-सतर्पनार्थ ईशान्या दिसि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।

Colophon : इति पचकुमार विधान सम्पुर्णम् ।

१८७४. पंच-मगलपाठ

Opening : शिलागतमादिदेवयघ्नस्नापयन् सुरवरा. सुरशैलमूर्ध्नि । कल्याणमी सुरदमक्षततोयपुजै मभावयामि पुर एव तदीय बिंबम् ।।

Closing : मैं मति हीन भगति वसभावन ··· ··· । — ·· — जिन देव वौ संघहि जयौ ॥१५॥

Colophon : इति श्री पंचकल्याणक गीतम् ।

१८७५. पंच-मंगलपाठ

Opening : देखें, क्र० १८६६ ।

Closing : देखें, क्र० १८६७ ।

Colophon : इति श्री रूपचंद कृत पच मंगल समाप्तम् ।

१८७६. पंचमंगलपाठ

Opening : देखे, क्र० १८६६ ।

Closing : देखे, क्र० १८६६ ।

Colophon : इति पचमगल सम्पूर्णम् ।

१८७७. पंचमेरु-पूजा

Opening : देखे, क्र० १८७८ ।

Closing : ॐ नंदीश्वरद्वीपवावनजिनालयस्थ जिनेभ्यो नम ।

Colophon : नही है ।

१८७८. पंचमेरु-पूजा

Opening : सर्वौषड्ढाहूयनिवेश्य ताभ्या मानिध्यमानीयषड्वःन,
श्रीपचमेरुस्थ जिनालयाना यजाम्यशीति. प्रतिमासमस्ता ॥१॥

Closing : पचमेरु की आरती पढ़ै सुनै जो कोय ।
द्यानत फल जानै प्रभु तुरत महा सुख होय ॥

Colophon : इति श्री पचमेरु जी की आरती भाषा सम्पूर्णम् ।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८६१ ।

१८७९. पंचमेरु-पूजा

Opening : देखे, क्र० १८७८ ।

Closing : देखे, क्र० १८७८ ।

Colophon : इति पंचमेरु की आरती समाप्तम् ।

१८८०. पंचमेरु-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८७८।

गन्धपुष्पअक्षतदीपधूपैः नैवेद्य दुर्वाफलवह्निरर्घैः।

श्री पंचमेरोस्तु जिनालयानां यजाम्यणीति प्रतिमां समस्तम्।

Colophon : इति श्री पंचमेरु पूजाष्टक समाप्त।

१८८१. पंचमेरु-पूजा

Opening : देखें, १८७८।

Closing : भूधर प्रति जेहा कर्म न एहा, भक्ति विषै दिढ भव्य जनौ।

कर पूजा सारी अष्टप्रकारी, पंचमेरु जयमाल भणौ ॥१॥

Colophon : इति पंचमेरु पूजा।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८५।

१८८२. पंचमेरु-पूजा

Opening : जिनान् संस्थापयाम्याह्वानादि विधानतः।

सुदर्शनाख्यमेरुस्थान् पुष्पांजलि विशुद्धये॥

Closign : सुदर्शनादिमेरूणां पूजाकारिसुभावहा।

रत्न-रत्नाकरेणासौ पुष्पांजलि विशुद्धये॥

Colophon : इति श्री पुष्पांजलि पूजा समाप्तम्।

१८८३. पंचमेरु-पूजा

Opening : तीर्थंकर के न्हौन जलतैं भए तीरथ सर्वदा,

तातैं प्रदच्छन देत सुरगन पंचमेरुनि की सदा।

दो जलधि ढाई दीप में सब गनत मूल विराजही
पूजो असी जिनधाम प्रतिमा होंहि सुख दुख भाजही ।।१।।

Closing : देख, क्र० १८७८ । ।

Colophon : इति पचमेरु पूजा

१८८४ पचपरमेष्ठी अर्घ्य

Opening श्रीमत्त्रिलोके तिलकायमान मानुष्रनोभव्यसरोजभानु ।
देवेन्द्रनागेन्द्रनरेन्द्रवद्यो वदे जिनेन्द्रोविश्रुत विधाता ।।

Closing ॐ ह्रीं समोशरणाविश्वराय अष्टाविंमतिगुण विराजमानाय श्री मोक्षलक्ष्मीनिवासाय श्री सर्वसाधुपरमेष्टिणो मम सुप्रसन्नवरदा भवतु ।।

Colophon इति पचपरमेष्ठी अर्घ सम्पूर्णम् ।

१८८५ पच परमेष्ठी जयमाला

Opening : मणयण स्द • अट्ठावर मगल ।

Closing अरहा सिद्धा आयरिया उवझाया स हुपचपमेट्ठी ।
एदे पच नमोयारो भवे भवे मम सुह दिंतु ।।७।।

Colophon इति श्री पचप मेष्ठी जयमाल सम्पूर्णम् ।

१८८६ पच परमेष्टी पाठ

Opening . प्रथम पचपद को नमो गुरुपद सीस नवाय ।
तुच्छ बुद्धि रचना रचौ सारद सरन मनाय ।।१।।

Closing : जै जै श्री आचार्य नमस्ते गुन छतीस वपुधार्य नमस्ते ।
तिन पदमसिघरि ध्यान नमस्ते, होतआतमाज्ञान नमस्ते ।।३।।

जै जै श्री उपझाय नमस्ते, गुन पचीस सुखदाय नमस्ते,
बदय जे धरि भक्ति नमस्ते, " ... ... " ।।४।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१८८७. पंच-परमेष्ठी-पूजा

Opening : श्रीमतं त्रिजगद्देवं त्रैलोक्यानंददायकम् ।
चन्द्राक चन्द्रभं वंदे स्वस्थप्रारब्धसिद्धये ।।

Closing : धर्माधर्मप्रकाशनैकनिपुणस्त्रैलोक्यबिम्बाधरो,
मोहे भेभमृगेश्वरे गतरिपुर्दे वाधिदेवो जिन ।
ससारार्णवतारकोहतमन्नो धर्मादिभूषो मुनिः,
श्रीदेवेन्द्रसुकीर्तिपादनमितः कुर्यात्सदा वः सुखम् ।।

Colophon : इति श्री भट्टारक श्री धर्म्मभूषण विरचितं परमेष्ठिपूजा समाप्ता । शुभमस्तु ।

१८८८. पंच-परमेष्ठी-पूजा

Opening : श्रीधर श्रीकर श्रीपते भव्यन श्री दातार ।
श्री सरवज्ञ नमो सदा पार उतारन हार ।।

Clo ing : संवत एक महस्र नव सतक सो सताईस ।
भादौ कृस्न त्रयोदसी बुद्धवार सो गनीस ।।

Colophon : इति पंच परमेष्ठी विधान सम्पूर्णम् ।

१८८९. पंचपरमेष्ठी-पूजा

Openi g : ॐ अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय साधुभ्यो नम,
ॐ अथ अरहंतदेव के ४६ गुण ।

ॐह्री षट चत्वारिंशत गुण सहिताहृत्परमेष्ठिभ्यो नम ।

Closing : ॐ ह्री वीर्यान्तराय कर्मरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नम ।

Colophon : नहीं है।

१८६० पच परमेष्ठी पूजा

Opening कल्याणकीर्तिकमलाकर सच्च चित्प्रबलमह प्रकटीकृताथम् ।
उच्चैर्निधाय हृदिवीर जिन विशुद्ध शिष्टेष्टपच परमेष्ठीमह
प्रवक्ष्ये ॥

Closing स्फुरत प्रतापतपनप्रकटीकृताशा।
श्री धर्मभूषणपदांबुजचुम्नावलि ।
कत्तव्यमित्यदयत सुयसोभिनदिसूरे
सदतरूदपीकरणैकहेतु ॥६॥

Colophon : इति यशोनंदिविरचिता पचपरमेष्ठी पूजा सम्पूर्णम् ।
देख दि० जि ग्र० र० पृ० १८७ ।

१८६१ पार्श्वनाथ कवित्त

Opening प्रभु पारसनाथ अनाथ के नाथ कि आप जगौ जगवन्दन की ।
तिहुँलोक के नायक लायक हो सुखदायक आनि निकदन की ॥

Closing जग सौ भै भीत तरे पयमो परम प्रीति ।
ग्मो जाकी रात नाको वदना हमारी है ।

Colophon नहीं ।

१८६२ पार्श्वनाथ पूजा

Opening : न्मंडल चारुचतुर्विंशति कोष्टकम् ।
महारम्य पचवर्ण रत्नप्रकरसभृतम् ॥२॥

Closing : श्रीमज्जिनेन्द्रपादाग्रे समस्तलोकशांतये ।
भृंगारनालनिर्गति शांतिधारा करोम्यहम् ।

Colophon : नहीं है ।

१८९३. पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : प्रानत देवलोक ते आये वामादेवी उर जगदाधार ।
अश्वसेन सुत नुत हरिहर हरि अंक हरित तन सुख दातार ।।
जरत नाग जुग बोधि दियो तिहि सुरपद परम उदार ।
ऐसे पारस को तजि आरस थापि सुधारस हेत विचार ।।

Closing : पारसनाथ अनाथन के हित दारिद गिरि को वज्र समान ।
सुखसागर वर धन को शमि सम सब कषाय को मेघ महान ।।
जिन को पूजै जो भवि प्रानी पाठ पढ़ै अति आनंद आन ।
सो पावै मन वंछित सुख सब और लहै अनुक्रम निरवान ।।

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथ पूजा समाप्तम् ।

१८९४. पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : ह्री देवं पार्श्वनाथं धरणिपतिनुत देवदेवेन्द्रवद्यम्,
ह्रीकारं बीजमंत्र जगदकलिमंत्र सर्वो ऽवहारी ।
ॐ ह्रां ह्रीं हुंकारनार अघहरनमहाभक्तिरूप जनानाम्,
व्यालीढ पादपीठ शठकमठमति माह्वय पार्श्वनाथम् ।

Closing : कल्याणोदयपुष्पवल्लभदय संसार संतापभृत्,
तुंगौतुंगभुजंगमंगलफणाः माणिक्यमालायते ।
पाद्यात्म्यज्जनभृंगभृंगसहितो नागेन्द्र पद्मावती,
सेव्यसेवक वांछितार्थफलदं श्रीपार्श्वकल्पद्रुमः ।।

Colophon : इति पार्श्वनाथ पूजा ।

१८९५. पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : सुद्ध तीर्थ पवित्र निर्मल पुण्य हिमकर शीतले ।
मिलि सुगध जगत पावन जन्म दाष विनासने ॥
परम श्री जिनपाद पकज विगत कल्मषदूषणम् ।
श्री पार्श्वनाथमहं यजेवर फणि लाक्षन भूषणम् ।

Closing : जलादिगधाक्षतचारुपुष्पं, नैवेद्यसद्दीपकधूपफलार्घदानैं ।
श्री लक्ष्मिसेनादिसुरासुरेश, श्री पार्श्वनाथं परिचर्यमानि ॥

Colophon : इति पार्श्वनाथ पूजा सपूर्णम् ।

१८९६. प्रभाती मंगल

Opening : जै जै जिन देवन के देवा, सुरनर सकल करैं तुम सेवा ।
अद्भुत है प्रभु महिमा तेरी, वरणी न जाय अलप मन मेरी ॥

Closing : निस्तार के तुम मूल स्वामी, बडे भागनि पाइयै ।
जन रूपचद चिंता कहा जब सरण चरण न आइयै ॥

Colophon : इति श्री मगलजीत समाप्तम् ।

१८९७. प्रतिष्ठा-तिलक

Opening : अथ बिंबजिनेन्द्रस्य कर्त्तव्यं लक्षणान्वितम् ।
ऋज्व्यायत सुसंस्थान तरुणाग दिगम्बरम् ॥१॥

Closing : ये केचिज्जिन ········ नरेन्द्रार्चिचतान् ॥१०॥

Colophon: इति श्री पंडिताचार्य श्री नरेन्द्रसेन विरचितं प्रतिष्ठातिलक समाप्तम् ।

१८९८. पूजामाहात्म्य

Opening : नीर के चढाये वीर भवदधि पारहूजे चदन चढ़ाये दाह दुरित मिटाईये ।
पुष्प के चढ़ाये पूजनीक हूजे जगत मे अक्षत चढाऐ ते अभय पद पाईये ।

Closing : पाप न कर पावै जाके जिय दया आवै धर्म को बढावे दया कही आचरन को ।
ताते भव्य दया कीजे तिहुलोक सुख लीजै कहत विनोदीलाल जी तहु मरन को ।।

Colophon : इति सम्पूर्णम् ।

१८९९. पूजासंग्रह

यह पूरा ग्रथ अस्पष्ट है । इसे पढ़ा नही जा सकता ।

१९००. पूजासंग्रह

Opening : प्रणमि सकल सिद्धनिकू प्रणमि सकल जिनराय ।
प्रणमि सकल सिद्धान्तकूँ नमि गणधर के पाय ।।

Closing : मनवछित दायक सेव सहायक जो नर निज मन ध्यान धरे ।
ग्रह दुःख मिटि जाई सौख्य लहाई जिन चौबीसी पूज करै ।

Colophon : इति केतु अरिष्ट निवारक श्री मल्लिनाथ पार्श्वनाथ पूजा सम्पूर्णम् । इति श्री नवग्रहारिष्ट निवारक चतुर्विंशति जिनपूजा संपूर्णम् ।

१९०१ पूजा-विधान

Opening : चितवत वदन अमल चद्रोपम ताज चिता चित होय अकामी ।
त्रिभुवन चद्र पाप तम चदन नमत चरन चद्रादिक नामी ।।
तिहु जग छाई चद्रिका कारत चिह्न चाद चितत शिवगामी ।
वदो चतुर चकोर चद्रमा चद्रवरन चद्रप्रभु स्वामी ।।

Closing राखो सभार उर काम मे नहि विसरो पल रकधन ।
परमाद चार टारन निमित करो पाम जिन गुण कथन ।।

Colophon नही है ।

विशेष सम नई पूजाएँ सकलित है ।

१९०२ पुण्याहवाचन

Opening श्री शान्तिनाथममरासुरमर्तिनाथ
भास्वत्किरीटमणिदीधितिपादपद्मम् ।
त्रैलोक्यशान्तिकरण प्रणव प्रणम्य
होमोत्सवाय कुसुमाजलिमुत्क्षिपामि ।।

Closing श्री शान्तिरस्तु शिवमस्तु जयोऽस्तु नित्यमारोग्यमस्तु तव पुष्टि
समृद्धिरस्तु कल्याणमस्तु अभिवृद्धिरस्तु दीर्घायुरस्तु कुलगोत्र
धन तथास्तु ।

Colophon : इति पुण्याहवाचन सपूर्णम् ।

देख जै० सि० भ० ग्र० I क्र० ९१९ ।

१९०३ पुण्याहवाचन

Opening श्रीनिर्जरेशाधिपचक्रिपूर्व श्रीपादपकेरुहयुग्ममीशम् ।
श्रीवर्द्धमान प्रणिपत्य भक्त्या सकल्यरीतिकथयामि सिद्धै ।।१।।

Closing : देखें, क्र० १६०२ ।
Colophon : इति पुण्याहवाचन सपूर्णम् ।

१६०४ पुण्याहवाचन

Opening देखे क्र० १६०२ ।
Closing देखें क्र० १६०२ ।
Clolophon इति श्री पुण्याह वाचन सपूर्णम् ।

१६०५ पुण्याहवाचन

Opening : देख क्र० १६०२ ।
Closing : चतुर्वर्णसघप्रसीदन्तु प्रीयन्ता शातिभवन्तु कीर्तीभवतु दीर्घायुरस्तु कुलगोत्रधनधान्य तथास्त ।
Colophon : इति पुण्याहवाचन लघु सम्पूर्णम् ।

१६०६ पुण्याहवाचन

Opening : देखे क्र० १६०२ ।
Closing : देखे, क्र० १६०२ ।
Colophon : इति पुण्याहवाचन सम्पूर्णम् । सवत १८६६ साके १७३२ प्रम इनाम सछरेतीथ श्राव (ण) मासे शुक्लपक्ष षष्टम्या तद्दिने लिखित कारजा नगर द० देवमनराय स्वकरेण स्व-पठनार्थ ज्ञानावर्णिकर्म्मक्षयार्थम् । श्री सरस्वत्यै नम ।

१६०७ पुण्याहवाचन

Opening ॐ पुण्याह ३ प्रीयता ३ भगवतोर्हता सर्वज्ञा। सर्वदर्शिन सकल-वीर्या. सुसकलसुखकरास्त्रिलोकेशास्त्रिलोकेश्वरपूजिता ... ।

Closing : स्वस्तिभद्र चास्तु ३ न स्वी क्ष्वी हस स्वस्ति स्वस्ति
स्वस्ति भवतु मे स्वाहा।

Colophon : इति पुण्याह्वाचन ।

१९०८. पुष्पांजलि पूजा

Opening . वीरदेव को प्रनमि करि अर्चा करौ त्रिकाल ।
पुष्पांजलिव्रत कथा को सुनो भविक अघटाल । १।।

Closing : घाति कर्म निरमूलन करौ निर्वानपद तब अनुसरैं ।
ज विधि व्रत प्रभाव तित लह्यौ ललितकीर्ति कवि उस विधि
ह ो ।।

Colophon : पुष्पांजलिव्रत कथा समाप्तम् ।

१९०९ रत्नत्रयपूजा

Opening चिदगतिफणविष हरन मन दुख पावक जलधार ।
शिवमुख सुधा म ोवरो सम्यक त्रयी निहार ।

Closing : पर सरूप प्रकाश निज वचन कह्यो न जाय ।
तीन भेद व्यौहार सब द्यानत को सुखदाय ।।

Colophon : इति रत्नत्रयपूजा सम्पूर्णम् ।

१९१०. रत्नत्रयपूजा

Opening · पचभद जाके प्रगट ज्ञेय प्रकासन भान ।
मोह तपन हर चद्रमा सोई सम्यक् ज्ञान ।।

Closing देखें, क्र० १९०६ ।

Colophon . इति रत्नत्रय पूजा ।

विशेष— इसी से ध्यानपूजा, समुच्चय आरती भी अन्तर्भूत है ।

१६११. रत्नत्रयपूजा

Opening : देखें, क० १६१२ ।

Closing : मोहाद्रियकटतटीविकटप्रवासं सपादिने सकलसर्वहितंकराय ।
रत्नत्रयाय शुभहेतिसमप्रभाय पुष्पाञ्जलिं प्रविमलं हि अवतारयामि ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१६१२. रत्नत्रय-पूजा

Opening : श्रीमतंसन्मत नत्वा श्रीमत् सुगुरुनपि ।
श्रीमदागमत श्रीमान् वक्ष्ये रत्नत्रयार्चनम् ।।१।।

Closing : देखें, क० १६०६ ।

Colophon : इति रत्नत्रय जी की भाषा आरता सम्पूर्णम् ।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क० ६२३ ।

१६१३. रत्नत्रय-पूजा

Opening : देखें, क० १६१२ ।

Closing : इति दर्शनस्तुति .. मुक्ति ।।६।।

Colophon : इति श्री रत्नत्रयपूजा समाप्तम् ।

१६१४. रत्नत्रय-पूजा

Opening : देखें, क० १६१२ ।

Closing : सम्यक दरशन ज्ञाण व्रत शिवमग तीनों मई ।
पार उतारण जान द्यानत पूजो इत सहित ।।१०।।

Colophon : इति समुच्चय पूजा जी समाप्तम् ।

१६१५. रत्नत्रय-पूजा

Opening : देखे,, क्र० १६१२ ।

Closing : अतुलसुखनिधानं ··· ··· ··· दर्शनाख्य सुधांशु ॥३॥

Colophon : इति पंडिताचार्य श्री नरेन्द्रसेन विरचिते दर्शनपूजा समाप्ता ।

१६१६. रत्नत्रय-जयमाला

Opening : जय जय सद्दर्शन भवभय निरसन मोह महातरु वारण ।
उपसम कमल दिवाकर सकल गुणाकर परम मुक्ति सुखकारण ॥

Closing : मदरागकषायरज. समन भवदुर्नयदानवपदमनम् ।
परमं शिवसौख्यनिवासकर चरण प्रणमामि विशुद्धितरम् ॥

Colophon : नही है ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६३२ ।

१६१७. रविव्रत उद्यापन

Opening : पार्श्वनाथमह वंदे सर्वविघ्ननिवारकम् ।
कमठोपसर्गहरन जागीकल्पतरु परम् ॥

Closing : रविव्रतमहापूजा श्लोकपिण्डीकृताधुना ।
पचात्माविने विप्र लेखक चित्ततल्पका. ॥

Colophon . इति श्री भट्टारक श्री विश्वभूषण विरचिते आदित्यवार व्रत उद्यापन विधि पूजा समाप्तम् ।

१६१८. रविव्रत-पूजा

Opening : इक्ष्वाकुवंशकुलमंडनअश्वसेनो तद्वल्लभः प्रतिवताजिनवामदेवि ।

तस्या जिन विमलमूर्तिसुरेंद्रवंद्यं त्रैलोक्यनाथजिनपार्श्वपरं नमामि ॥

Closing : इति रविव्रत पूजा सुरपति पद दूजा जे करंत भव व्रत सही । मन वचकाय ध्यावहो सो सुरपद पावही पार्श्वनाथ फल देत सही ॥१२॥

Colophon : इति रविव्रत पूजा सम्पूर्णम् ।

१६१६. रविव्रत-पूजा

Opening : देखें, क्र० १६१८ ।

Closing : .इक्ष्वाकीवरवंशभूषननृपो श्रीअश्वसेनोनुज,
वामानदनदन्द्रचद्रधरनी ससेव्यमान सदा ।
प्रत्याहार्य विभूषित वसुबुधि कल्याणकारी सदा,
ते तुभ्य त्रिदधातु वाछित फल श्री पार्श्वकल्पद्रुम ॥१२॥

Colophon : इति रविव्रत पूजा ।

१६२०. ऋषिमंडल-पूजा

Openign : प्रणम्य श्री जिनाधीशं — वक्ष्ये पूजादिमल्पशः ॥

Closing : श्रीमक्षारुचरित्र ··· ···· वदीगुणादिमुनिः ॥

Colophon : इति ऋषिमंडल पूजा समाप्ता । शतत्रयाशीभिः श्लोकै ग्रथाग्रथ । ३८० । संवत् १८१८ कार्तिक शुक्ले १४ बुद्धे लि० पंडित श्री हेमराजेन हुकुमचद गहोई श्रावकस्य पठनार्थम् ।

१६२१. ऋषिमंडल-पूजा

Opening : देखें, क्र० १६२० ।

Closing : देखे, क० १६२० ।

Colophon : इति ऋषिमंडल पूजा समाप्ता । शतत्रयाशीभिः श्लोक ग्रन्था- ग्र० । संवत् १६५६, वैशाख कृष्ण ८ मंगलवारे लि० ।

१६२२ ऋषिमंडल-पूजा

Opening : देखे क० १६२० ।

Closing : देखे, क० १६२० ।

Colophon : इति ऋषिमंडलपूजा विधि समाप्तम् ।

१६२३. ऋषिमंडल-पूजा

Opening : देखे, क० १६२० ।

Closing : देखें, क० १६२० ।

Colophon : इति श्री ऋषिमंडलपूजा समाप्तम् ।

१६२४. सहस्रनाम-पूजा

Opening : परमगुरु कोनमो उर धरि परम सुप्रीति ।
तीर्थराज जिनन्द जी, चोबीसो धरि चीत ॥१॥

Closing : सम्वत् विक्रम भूप के जुग गतिग्रह ससि जान ।
यह रचना पूरी भई मंगल मुद सुखथान ॥
सिखिरचंद कृत पाठ यह बन्यौ अनुपम राम,
जो पढसी मन लाय के पामी सुख्य सुवास ॥

Colophon : इति श्री जिनसहस्रनाम पूजा सम्पूर्णम् । शुभमस्तु । मिति पौषशुद्ध ८ बार सुभ बुध समत् १६४२ । को पूर्ण हुई सो जयवंत प्रवर्तो । श्रीकल्याणमस्तु । सिखिरचंद अग्रवाल गोइल गोती कवि श्री वृंदावन के लघु सुतन कृत जयवतो ।

१९२५ सकलीकरा

Opening इन्द्रश्चैत्यालय गत्वा वीक्ष्य यज्ञागसज्जिनान ।
यागमगनपूजाय परिक मचिगेदिदम ॥१॥

Closing सिद्धायान अभिमन्त्र्य परमत्रण सवविघ्नोप समर्थान सवदिक्षु क्षिपेत् ॥

Colophon इति सकलीवरण मपूणम् ।

देख दि० जि० ग्र० र पृ० १९४ ।

१९२६ सम् नीरग्ण विधि

Op n ng ध त्रा पदपादह्वाग्पटकं प्रवेयका नार
कयरागदर्मा वधुरकन्नी सूत्रा च मुद्राक्तिम् ।
चत्र कु डल न णग्रमम्ल पाणिद्वय क कणम
मजीर कटकपने जिनपत श्रीगधमुद्राक्ति ॥

C osing मवराजभय छि० सवचोग्भय छि० सवदृष्टिभय छि० सव दृष्टिमृगभय छि० सवमपभय छि० सववृश्चिकभय छि० सव ग्रहभय चि० सवदोषभय छि० सवव्या — ।

Colophon अनुपलब्ध ।

१९२७ सकलीकरण विधि

Opening वासपूज्य जगत्पूज्य नाकालाकप्रकाशकम् ।
नत्वा वक्ष्येत्र पूजाना मत्रा पवपुराणत ॥

Closing : लोक्याचोक्त श्री सोमसेनमुनिभि शुभमत्रपूवम् ।

Colophon : इति श्री सकलीकरण विधि सम्पूणम् स० १९२१ ।

१९२८ सकलीकरण विधि

Opening : देखे, क्र० १९२५ ।

Closing : देखे, क्र० १९२५ ।

Colophon : इति सकलीकरण सम्पूर्णम् । ह० पंडित परमानंदेन बाबू धर्मकुमारस्य पठनार्थं मिति आषाढ़ शुक्लपक्षे शनिवासरे संवत् १९५५ का । शुभ भूयात् ।

१९२९. समाधिमरण

Opening : गौतम स्वामी वंदु निरनामी मरण समाधि भला है ।
मोक्ष पाऊ नीस दिन ध्याउ गाउ वचन कलायै ॥१॥

Closing : हास आवे शीव पद पावे बील सुख अनन्ता ।
द्यानत सोगत होय हमारी जैनधर्म जइवत ॥२०॥

Colophon : इति श्री समाधिमरण समाप्त: ॥

१९३०. सामायिकपाठ

Opening : आदि ऋषभ सनमति चरम तीर्थंकर चउबीस ।
सिद्ध सूरि उवझाय मुनि नमो धारि कर सीस ॥

Closing : ऐसे सामायिक पढो सार जान मुनिवृ द ।
धर्मराग मति अल्प फुनि भाषामय जयचद ॥

Colophon : इति श्री सामायिक वचनिका सम्पूर्नम् ।

१९३१. सामायिक वचनिका

Opening : देखें, क्र० १९३० ।

Closing : देखे, क्र० १९३० ।

Colophon : इति श्री सामायिक वचनिका सम्पूर्णम् ।

१६३२. समवशरण

Opening : आज गई थी समोसरण मैं कहाँ कहुँ हीत हेत री।
बार बार दरवाजे चहुदिस परखा कोट समेत री ॥१॥

Closing : परम सरस्वती सिव -- गहे निज ग्याने तीन जु वरी।
कहे दीप याते तुम सेवा भजै भावकर उरसो री ॥

Colophon : अनुपलब्ध।

१६३३. समवशरन

Opening : धूल साल देखे मूल साल नरहत,
डर मानथल देखें जो ईमान महामानी को।
वेदी के विलोकैं आप वेदी पर वेदी होत,
निरवेद पद पावैं याते है कहानी को।

Closing : धरि लई सुध अनुभूत की ज्ञानलोग भोगी लयो।
अनुभाग बध स्थिति भागतें, भागगगदारिद गयला ॥

Colophon : इति श्री मोक्षमार्ग सम्पूर्णम्। सवत् १७७४ वर्षे पोसमासे शुक्लपक्षे सप्तमी शनिवासरे लिखितम्। शुभमस्तु।

१६३४ सम्मेदाचल-पूजा

Opening : मुक्तिकान्ता प्रदातारं स्थानेषु स्थानमुत्तमम्।
मुक्ति तीर्थंकर प्राप्य वदे शैलेन्द्रसिद्धिदम् ॥१॥

Closing : वज्रीवद्रप्रतेंद्रवेद्रतरणी ······ प्राप्नुवन्ति शिवम् ॥१३॥

Colophon : इति सम्मेदाचल पूजनविधान समाप्तम्। सवत् १८२६ भाद्र बदि १२ भौम दिने लिखि।

१६३५ सम्मेदशिखर-पूजा

Opening : गिरसम्मेदतैं बीस जिनेश्वर शिव गए,
अवर असंखित मुनि तहां तैं सिद्ध भए ।
वंदौ मन वच काय नमौ सिर नायकैं,
तिष्ठौ श्री महाराज सबै इति आयकैं ॥

Closing : ए बीस जिनेश्वर नमित सुरेश्वर नित मघवा पूजन भावैं ।
नर नारी ध्यावैं सो सुख पावैं रामचन्द्र जिन सिर नावैं ॥११॥

Colophon इति सम्मेदशिखर पूजा सम्पूर्णम् ।

१६३६. सम्मेदशिखर-पूजा

Opening : परमपूज्य जिन बीस जहाँ ते शिव लये,
औरहु बहुत मुनीश शिवालै सुखमये ।
ऐसे श्री सम्मेद शिखर नमिहू सुरा,
दरब साजि शुचि रुचि युत पूज रचा सदा ॥

Closing : जय एक बार बंदे जु कोय
तसु नर्क तिर्यं च कुगत न होय ।
इत्यादि घनी महिमा अपार
प्रणमो मनवचकर सीमधार ।।

Colophon : 'इति' ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I क्र० ६४३ ।

१६३७ सम्मेदशिखर-पूजा

Opening : सिद्धक्षेत्र तीरथ परम, है उत्कृष्टसुख थान ।
शिखर समेद सदा नमो होई पाप की हान ॥

Closing : नेमीनाथ श्री अरहनाथ श्री मल्लाना के पूजे पाये,
श्रीप्रमनाथ श्री सुविधपद्म श्री मुनिसुव्रत को निचै जाये ।
श्रीचन्द्रप्रभु कोस एक पर लौट फेर मुनसोव्रत आये ।
शीतल अनत सभव अभिनदन चित्त चाये वदो सुख पाये ।

Colophon : इति कवित्त सपूर्णम् ।
मती भादो, वदी ५, वारगुरु सम्वत् १६२६ ।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६४२ ।

१६३८. सम्मेदशिखरपूजा-विधान

Opennig : प्रणम्य सर्वज्ञमनतबोद्यामाप्तप्रद सद्गुणरत्नसिद्धम् ।
कुर्व्वेत्रिशुध्या सुभ्रतां हि तीर्थं सम्मेदशैलस्थजिनेन्द्रपूजाम् ॥

Closing : वधु: मुनीन्द्रिभि श्लोकैमानुछदोवचोमये ।
ज्ञातव्या ग्रथसख्या नृगणकै. लेखकोत्तमै । ५॥

Colophon : इति भट्टारक श्री धर्म्मचद्र विनुच र पडित गगादास कृत सम्मेदा-
चलपूजा समाप्तम् ।

१६३९. सम्मेदशिखर-पूजा

Opening : पन परमगुरु ... ... सारदा सीस ॥१॥

Closing : सिखरसम्मेद ... ... भानिये ॥

Colophon : इति सवैया सपूर्णम् ।

१६४०. सम्मेदशिखर-पूजा

Opening : देखे क्र० १६३७ ।

Closing : तुच्छ बुद्ध मोरी सही पढोन करो विचार ।
भूल चूक अब होई जहां लीजो चतुर सुधार ॥६॥

Colophon । इति श्री सम्मेदसिखर जी सिद्धक्षेत्र पूजा समाप्तम् ।

१६४१. सम्मेदशिखर-पूजा

Opening : अमल गग सुवारिणा भरि झारिणा सुखकारिणा.,
भवतापनिवारिणा. मलहारिणा. कर्मवारिणा; ।
सम्मेदाचलपर्वत अपवर्गत सुखअर्पितम्,
वीसतीर्थसुपूजित भववर्जित मुक्तिसर्जितम् ।।

Closing : यः यात्राकरि भावसुद्धमनसा ते स्वर्गमुक्तिप्रदा
ते नारकतिर्य चगतिर्विमुखा सद्भावनाभावत ।
तेषा पुत्रकलत्रमित्रभवता मल्लक्ष्मी लीलाकराः
सत्समेदगिरिसु धर्ममतं कुर्वन्तु वो मगलम् ।।

Colophon : इति श्री मम्मेद जी की पूजा सलाप्ताः ।

१६४२. समुच्चय चौवीसी पूजा

Opening । रिषभ अजित ... . पूजत सुरराय ।।
Closing : मुक्ति मुक्ति दातार ... ... सिव लहै ।।
Colophon इति श्री समुच्चय पूजा सपूर्णम् ।

१६४३. शातिनाथ-पूजा

Opening । शांति जिनेश्वर नमू तीर्थ वसु दुगुनही ।
पचमचक्री अनता दुविधि षटगुनीही ।।
तृणवत् रिधि सब छांरि धरि तप सिववरी ।
आह्वानन विधि करू बार त्रय उच्चरी ।।

Closing : प्रभु के चैय प्रमाण सुरतन धरि सेवा करत सोहयो ।
देवी वृंद जिनवर को जनम कल्याणक गायो ।।

Colophon : इति श्री सपूर्णम् ।

१९४४. शांतिनाथ-पूजा

Opening : देखे, क्र० १९४३ ।

Closing : इति जिनमाला अमल रसाला ---- सुंदर ततखिन वरई ॥

Colophon : इति श्री शातिनाथ जी की पूजा सपूर्णम् ।

१९४५. शांतिपाठ

Opening : शांतिजिनशशिनिर्म्मलवक्त्र सीलगुणव्रतसंयमपात्रम् ।
अष्टमहाशतलक्षणगात्रं नौमि जिनोत्तममबुजनेत्रम् ।

Closing : क्षेम सर्वप्रजाना प्रभवतु बलवान् धार्म्मिका भूमिपालः,
काले काले च सम्यक् वर्षतु मधवान व्याधयो यातु नाशम् ।
दुर्भिक्ष चोरमारिक्षणमपि जगत मास्मभूज्जीवलोके,
जैनेन्द्र धर्मचक्र प्रभवतु सतत सर्व्व शौख्यप्रदायि ॥

Colophon : इति श्री शांतिजिनस्तोत्रम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६५६ ।

१९४६. शांतिपाठ

Opening : देखें, १९४५ ।

Closing : मंत्रहीनं क्रियाहीनं श्रद्धाहीनं तथैव च ।
स्तवनभक्तिः न जानामि क्षमस्व परमेश्वर; ॥

Colodhon : इति विसर्जन मत्र सम्पूर्णम् ।

१९४७ शांतिपाठ

Opening : देखे, क्र० १९४५।

Closing : आह्वानाय पुरादेव लब्धभागा यथाक्रमम्।
मयाभ्यर्चिता भक्ता सर्वे यातु य था स्थितिम्।

Colophon : इति श्री शांति सम्पूर्णम्।

१९४८ शांतिपाठ

Opening : देखे क्र० १९४५।

Closing : आह्वानन नैव जानामि नैव जानामि पूजनम।
विसर्जन नैव जनामि क्षमस्व परमेश्वर ।
स्वस्व स्थान ग छतु स्वाहा।

Colophon : इति शांति पाठ।

१९४९ शान्तिचक्र-पूजा

Opening : अर्हन्बीजमनाहन च हृदये ··· यद्वाछितम् ॥

Closing निशषश्रुतबोधवृत्तमतिभि प्राज्ञैरूदारैरपि
स्तोत्रैय्यस्य गुणार्णवस्य हरिभि ·· ।
– ··· श्री शांतिनाथ सदा ॥

Colophon : इति श्री शांतिचक्र पूजा जयमाल सम्पूर्णम्।

देखें, जि० र० को०, पृ० ३७६।

दि० जि० ग्र० र०, पृ० १९६।

१९५०. शांतिधारा

Opening : श्री खण्डोद्रवकर्दमेसु रुचिरै. कर्पूरचूर्णै.मितै:
समिश्रैरूतिगंधिलैं नदनदिकमारकूपादिभि: ।
... ... देवां जिनंस्थापये ॥१॥

Closing : सर्व्वदेशमारी छिंद-२ भिंद-२ सर्व्वविषभयं छिंद-२ भिंद-२
सर्व्वक्रूररोगवैतालशाकिनी डाकिनी भय छिंद-२ भिंद-२ सर्व-
वेदनी छिंद२ भिंद-२ सर्वमोहनी ... ... ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१९५१. शांतिधारा

Opening : सिद्धावल श्री ललनाललाम मही महीयो महिमाभिरामम् ।
आसार संसार पथोपपराम नमामिनाभेय जिनं निकामम् ॥१॥

Closing : नेत्रे द्वंद्वरूजाविनाशनकरं ... ... स्नानस्य गंधोदिकम् ॥

Colophon : इति शांतिधारा ।

१९५२ शांतिधारा

Opening : ॐ ह्री श्रीं क्ली रों हूं वं मं हूं सं त पं वं व मं मं हूं हूं सं सं
तं तं पं पं ... ... ।

Closing : देखें, क्र० १९५१ ।

Colophon : इति शांतिधारा सम्पूर्णम् । इति सिंहासन प्रतिष्ठा संपूर्ण ।
शुभमस्तु ।

१६५३. सप्तर्षि-पूजा

Opening : श्रीमद्गणीद्र-हिमवन्मुखकंदरायाः वाग्भीसप्तसु रितिचारू विनिर्गतायाम् ।

स्नातानतेकविधधर्मतरंगिकायां योगीश्वरानवरत्नधराम् समर्च्चे ।

Closing , असमसुखसार तीक्ष्णदंष्ट्राकरालं स्वकरकरजटिल दीर्घजिह्वा-करालम् ।

सुघटविकृतवक्रं शांतिदासप्रसस्य भजतु नमतु जैनं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥१॥

Colophon : अनुपलब्ध है ।

१६५४. सप्तर्षि-पूजा

Opening : देखे, क्र० १६५३ ।

Closing : ए रिसि व्रत ······ वसुरिद्धिहं ॥

Colophon : इति सप्तऋषि पूजा समाप्तम् ।

१६५५. सप्तर्षि-पूजा

Opening : वंदेहं विश्वसेनेश ········· ज्ञानरूपं निरंजनम् ॥१॥

Closing : मानव विकृति येवा ········· तत्व तत्वार्थवेदिनः ॥१४॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१६५६. सरस्वती-पूजा

Opening : ॐ नमः प्रणटित-परमार्थगुद्धसिद्धांतसारे,
जिनपतिसमयेऽस्मिन् सारतां संदधानः ।
जगति समयसारकीसंतः सम्बुनिम्नः
स वसतु मम चित्ते सच्छुतज्ञानरूपः ।

Closing : अज्ञान तिमिरहर ज्ञान दिवाकर, पढ़े सुणे जे भाव धनी ।
ब्रह्म जिनदास भासि विविध प्रकासि मनवंछित फल बुद्धिघणी ।।

Colophon : इति सरस्वति जयमाला संपूर्णम् ।

१६५७. शास्त्र-पूजा

Opening : पयः पयोधेस्त्रिदशापगायाः पयः पयः पेयतयोपयोग्यम् ।
समंतभद्रा श्रुतदेवतायैः भक्त्या परार्धैः परया ददामि ।।१।।

Closing : जिनवाणी के ज्ञान तैं सूझे लोक अलोक ।
द्यानत जग जंवत को सदा देत है धोक ।।११।।

Colophon : इति शास्त्र पूजा ।

१६५८. शास्त्र-पूजा

Opening : जननमृत्युजराक्षयकारण ··· ··· ··· अहं परिपूजये ।।१।।

Closing : मलयकीर्ति कृतामपि सस्तुति पठति यः सतत मतिमान्नरः ।
विजयकीर्त्तिगुरुकृतमादरात् सुमतिकल्पलताफलमस्तुति ।।१०।।

Colophon : इति सरस्वति स्तुति विधानम् ।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १९८ ।

१६५९. शास्त्र-पूजा

Opening : देखें, क्र० १६५८ ।

Closing : दुरिततिमिरहंस मोक्षलक्ष्मी सरोजम्,
मदन भुजगमंत्र चित्तमातंगसिंहम् ।
विसनघनसमीरं विश्वतत्त्वैकदीपम्,
विषयरसकरीजाल ज्ञानमाराधीयत्वम् ।।

Colophon : इति शास्त्रपूजा समाप्तम् ।

१६६०. शास्त्रपूजा

Opening : देखें, क्र० १६५८ ।

Closing : देखें, क्र० १६५७ ।

Colophon : इति श्री शास्त्रपूजा जी समाप्तम् ।

१६६१. शास्त्रपूजा

Opening : देखें, क्र० १६५८ ।

Closing : स्तुत्वेति .... समुद्धरेत् ।।२।।

Colophon : इति शास्त्रपूजा समाप्ता ।

१६६२. शास्त्रपूजा

Opening : देखें, क्र० १६५८ ।

Closing : देखें, क्र० १६५८ ।

Colophon : इति श्री शास्त्रपूजा सम्पूर्णम् ।

१६६३. शास्त्र जयमाला

Opening : सपयसुहकारण ... . संयमकरणं ।।१।।

Closing : इय जिनवरवाणी ··· ···· णवि उत्तरई ॥१३॥

Colophon : इति श्री शास्त्रजिनवाणी की जयमाल सम्पूर्णम् ।

१६६४. शत्रुञ्जयगिरिपूजा

Opening : सिद्धं सिद्धार्थदं सुद्धं सिद्धात्मानं स्ववर्गगम् ।
ध्रौव्योत्पादगुणे युक्त वदे त जगद्धेतवे ॥

Closing : विश्वभूषण तस्य पट्टे प्रसिद्धः कविनायकः ।
तेनेद रचितः पाठः शत्रुंजयाख्याभिधानकः ॥

Colophon : इति श्री विशालकीर्त्यात्मजो श्री भट्टारक श्री विश्वभूषण विरचिते ईतुजय गिरि पूजा सम्पूर्णम् सवत् सै १० ? वर्षे अश्विनी शुक्ल द्वितीयां पटनानामनगरे श्रीमूलसंघे अवावती गच्छ भट्टारकाधिराज श्री सुरेंद्रकीर्तिजी तच्छिष्येण विनय तार्विद तेजपालेनेयं पूजा लिखिता । सत्रुंजय पूजायाः कमलानि प्रथम वलये ।१॥ द्वितीय वलये ॥८॥ तृतीये ॥१२॥ चतुर्थे ॥१३॥ पचमे ॥३२ एव ६६॥ कल्याणमस्तु । इति सपूर्णम् ।

१६६५. सिद्धपूजा

Opening : उर्ध्वाधोरयुतं सबिंदुसपर ब्रह्मासुरावेष्टितम्,
वर्गापूरितदिग्गतांबुजदल तत्सघितत्वान्वितम् ।
अंतः पत्रतटेष्वनाहतयुत ह्रींकार सवेष्टितम् ,
देव ध्यायति सुमुक्ति सुभगो वैरीभकंठीरव ॥१॥

Closing : असमसमयसारं चारुचैतन्यचिन्हम्,
परपरणतिमुक्तं पद्मनदीन्द्रवद्यम् ।
निखिलगुणनिकेतं सिद्धचक्र विशुद्धम्,
स्मरति नमति यो वा स्तोति सोभ्येति मुक्तिम् ।

Colophon : इति श्री सिद्धपूजा सम्पूर्णम् ।

देखें, दि० जि० ग्र० र० पृ० २००

जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६६० ।

१९६६. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क्र० १९६५ ।

Closing : आवृष्ट सुरसपदं विदधति ...... आराधनादेवता ॥

Colophon ; इति सिद्धपूजा जयमाला समाप्ता ।

१९६७. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क्र० १९६५ ।

Closing : देखें, क्र० १९६५ ।

Colophon : इति सिद्धचक्रपूजा जयमाला समाप्तम् ।

१९६८. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क्र० १९६५ ।

Closing : देखें, क्र० १९६५ ।

Colophon : इति सिद्धचक्रपूजा समाप्ता ।

१९६९. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क्र० १९६५ ।

Closing : देखें, क्र० १९६५ ।

Colophon : इति सिद्धपूजा समाप्ता ।

१६७०. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क० १६६५ ।
Closing : जो पूजै गावै धुत चढावै मन लगावै प्रीति सौं ।
द्युस्याल चन्द कहैं कहां लौं जस जिनौ का रीतसौं ।
जे नाम अक्षर जपै हरखै धन्य ते नरनारि है ।
प्रभु पतित तारन दुख निवारन भगत कौ निरतार हैं ।
Colophon : इति श्री सिद्धपूजा जी समाप्तम् ।

१६७१. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क० १६६५ ।
Closing : देखें, क० १६६५ ।
Colophon : इति सिद्धपूजन प्रतिष्ठा सम्पूर्णम् ।

१६७२ सिद्धपूजा

Opening : देखें, क० १६७० ।
Closing : देखें, क० १६७० ।
Colophon इति श्री सिद्धमहाराज की पूजा सम्पूर्णम् ।

१६७३. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क० १६६५ ।
Closing : सिद्ध तरै ससार, सिद्धन की पूजा करो ।
आवागमन निवार, मन वच तन पूजा करो ।।
Colophon : इति सिद्धपूजा सपूर्णम् ।

१९७४. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क० १९६५ ।

Closing : दीर्घायुरस्तु शुभमस्तु सुकीर्तिरस्तु सुदृष्टिरस्तु धनधान्य समृद्धि-
रस्तु आरोग्यमस्तु विजयोरस्तु भयोरस्तु पुत्रपौत्रोद्भवोरस्तु तव
सिद्धप्रसादात् ॥१॥

Colophon : इति सिद्धपूजा सम्पूर्णम् ।

१९७५. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क० १९६५ ।

Closing : कृत्याकृत्तिमचारुचैत्यनिलयान् ... दुष्कर्मणा शान्तये ॥

Colophon : नही है ।

१९७६ सिद्धपूजा

Opening : देखें, क० १९६५ ।

Closing : देखें, क० १९६५ ।

Colophon : इति सिद्धपूजा ।

१९७७. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क० १९६५ ।

Closing : देखें, क० १९६५ ।

Colophon : इति सिद्धपूजा माला सम्पूर्णम् ।

१६७८. सिद्धपूजा

Opening : परम ब्रह्म परमातमा परम जोत परमीस ।
परम निरंजन परम सिव नमो सिद्ध जगदीस ॥१॥

Closing : सुद्ध विसुद्ध सदा अविनासी ······ जाने सो दीवाना आतम को यह ॥

Colophon : संपूर्ण ।

१६७६. सिद्धपूजा

Opening : इत्थ चक्रमुपास्य दिव्य ध्यानं फल न्यस्तुते ॥

Closing : आकृष्टं सुरसपदा विदधति मुक्तिश्रियोवश्यताम्········ पायात्प-
चनम. कृपाक्षरमयो साराधनादेवता ॥१॥

Colophon : नहीं है ।

१६८०. सिद्धक्षेत्र-पूजा

Opening : परम पूज्य चौबीस जिह जिह थानक सिव गये ।
सिद्ध भूमि निम दीस मन वच तन पूजा करो ॥१॥

Closing : जो तीरथ जावै पाप मिटावै ध्यावै गावै भक्ति करै ।
ताके जस कहिए सपति लहिए गिर के गुन को बुद्ध उचरै
॥१०॥

Colophon : इति श्री सिद्धक्षेत्र पूजा सम्पूर्णम् ।

१६८१. सिद्धचक्र-पूजा

Opening : जिनाधीस सिवईस नमि सहस गुणित विस्तार ।
सिद्ध चक्र पूजा रचों सुद्ध त्रियोग संभार ॥

Closign : जिन गुण करण आरंभ हास्य कोधाम है।
वायस का नहि सिंधु तारण को काम है ॥

Colophon : इति श्री सिद्धचक्रपाठभाषा समाप्तम्।
सवत् १६६४ फाल्गुन शुक्ल ६ लिखितम् ॥

१६८२. सिद्धचक्र-पूजा

Opening : अरिहंत पद ध्यातो थको दव्वह गुण परजाय रे।
भेद छेद करि आत्मा अरिहतरूपी थाय रे ॥

Closing : योग असख्य ते जिण कह्या नत्र पद मोक्ष ने जांणो रे।
एह तणें अविलबनें आतम ध्यान प्रमाणो रे । २१ वी० ॥

Colophon : अनुपलब्ध।

१६८३. सिद्धक्षेत्र-पूजा

Opening : वंदौ श्री भगवानकूं भावभगत सिरनाय।
पूजा श्री निर्वान की सिद्धक्षेत्र सुखदाय ॥

Closing : सवत् अष्टादश सही सत्तर एक महान।
भादो कृष्ण जु सप्तमी पूरन भयो सुजान ॥

Colophon : इति श्री सिद्धक्षेत्र पूजा समाप्तम्।

१६८४. सिद्धक्षेत्र-पूजा

Opening : श्री आदीश्वर वदौ महान, कैलास सिखर तैं मोक्ष जांन।
चंपापुर तै श्री वासपूज, तिन्ह मुकति लही अति हरषि हूज ॥१॥

Closing : देखें, क्र० १६८३।

Colophon : इति सिद्धक्षेत्र पूजा।

१६८५. शिखर-विलास-पूजा

Opening : जेठ शुक्ल चतुर्थ दिवस ········ करिकै बहुत उछाह ।।

Closing : ···· ···· ध्यावै सो सुख पावै रामचंद्र निति सिरनावै ।।

Colophon : इति श्री शिखर विलास जी की पूजा सम्पूर्णम् । लिखते सीकर-मध्ये — मिति फाल्गुन सुदि अठाई संवत् १६४२ । का लिखते बेठराज दिवाण जी सुखलाल जी का पोता भूल चूक सुद्ध करो ।

विशेष—इसके Closing के पहले का बहुत से पत्र गायब हैं ।

१६८६. सील-बत्तीसी

Opening : सीलवतीमीवर्णवउ ·· ···· ·· सदा सुमरो ग्सिहेश्वर ।।१।।

Closing : हरिहर इंद नरिंद नरसुर जप हिए कान्ताजेन नारी ।
सजम धरम सुगण अकू जंपहि जसु ते हरि ।।

Colophon : इति सीलवतीसी समाप्तम् ।

१६८७. सिंहासन-प्रतिष्ठा

Opening : श्रीमद्वीरजिनेशानां प्रणिपत्य महोदयम् ।
नव्याशनस्य सूत्रेण शुद्धि वक्ष्ये यथागम् ।।

Closing : नेत्रे द्व द्वरुजाविनाशनकरं गात्र पवित्रीकरम्
वात. पित्तकफादिदोषरहित सूत्र च सूत्र भवेत् ।
पाप कर्म कुरोगनाशनपरं राहुक्षय कुर्वते,
श्रीमत्पार्श्वजिनेन्द्रपादयुगल स्नानस्य गधोदकम् ।

Colophon : इति शांतिधारा सम्पूर्णम् । शुभमस्तु । पौषमासे शुक्लपक्षे तिथौ ६ सवत् १६५५ । श्री इद पुस्तकं लिखावा भगवानदीन पंडित ।

देखें, जै. सि. भ. ग्र., क्र. ६६४ ।

१९८८. शीतलनाथ पूजा

Opening : सीतल जुगपद नमूं धर्मदसधा इम भाख्यौ,
उत्तमषिमा सु आदि अंत ब्रह्मचर्य सन्ध्यायौ ।
सुनि प्रतिबोध हुयो भवि मोक्ष मारग कौं लागै,
आह्वानन विधि करं चलण जुग करि अनुरागै ॥१॥

Closing : पूर्वाषाढ़ नक्षत्र माघ वदि द्वादशी,
जनमैं श्री जिननाथ निवोगे सब हुमी ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

विशेष— इसके बाद अनन्तनाथ, पार्श्वनाथपूजा, शान्तिनाथ पूजा तथा पद्मावती पूजा अधूरी-अधूरी लिखी गई है ।

१९८९. स्नानपूजा-विधि

Opening : प्रथम हुँ निस्सही पूर्वक देह रै जी आवी अंग,
सुद्ध करी नवा वस्त्र पहरी स्वभाल तिलक करिनै ।

Closing : देवचन्द्र जिन पूजतां करता भवपार ।
जिन प्रतिमा जिन सारषी कही सूत्र मझार ॥

Colophon : इति स्नानपूजा विधि संपूर्णम् ।

१९९०. सोलहकारण-पूजा

Opening : एन्द्रं पदं प्राप्य पर प्रमोदं धन्यात्मनामात्मनिमन्यमान ।
दृक्-शुद्धिमुख्यादि जिनेन्द्रलक्ष्मी महामोह षोडशकारणानि ॥

Closing : भक्ति प्रदा सुरेन्द्रसंस्तुतमिद तीर्थंकराणां पदम्,
लब्धुं वांछति योनि (पि) वा चतुरं संसारभीताशयैः ॥
श्रीमद्दर्शनशुद्धिसूरिविनयं ज्ञानं तथा तत्फलम् ।
भक्त्या षोडशकारणानि सततं संपूज्य वाराधयेत् ॥

Colophon : नहीं है ।

१९९१. सोलहकारण-पूजा

Opening : देखें, क्र० १९९० ।
Closing : इय सोलाकारण — ··· – सिद्धवर गणहियइ हरा ।
Colophon : इति सोलाकारण पूजा जयमाल संपूर्णम् ।

१९९२. सोलहकारण-पूजा

Opening : देखें, क्र० १९९० ।
Closing : हण बहु भविय – — ··· संकप्पवि — ··· ।
Colophon : अनुपलब्ध ।

१९९३. सोलहकारण-पूजा

Opening : देखें, क्र० १९९० ।
Closing : देखें, क्र० १९९१
Colophon : इति श्री सोलहकारण पूजा सम्पूर्णम् ।

१९९४. सोलहकारण-पूजा

Opening : देखे, क्र० १९९० ।
Closing : देखें, क्र० १९९१ ।
Colophon : इति षोडसकारण अंग पूजा समाप्ता। ।

१९९५. सोलहकारण-पूजा

Opening : देखें, क्र० १९९० ।

Closing : एई सोले भावना सहित धरै व्रत जोइ ।
देव इन्द्र नरविंद पद द्यानत शिव पद होइ ।।

Colophon : इति श्री सोलै कारण पूजा जी समाप्तम् ।

१९९६. सोलहकारण-पूजा

Opening : देखे, क० १९९० ।।

Closing : एते षोडशभावना - ... मोक्ष च सौख्यास्पदम् ।।

Colophon : इति श्री षोडशकारण जयमाला भाषा संस्कृत पूजा समाप्तम् ।

१९९७. सोलहकारणपूजा

Opening : देखें, क० १९९० ।

Closing : देखे, क० १९९१ ।

Colophon : इति षोडशकारण पूजा ।

१९९८. सोलहकारण-पूजा

Opening : देखें, क० १९९० ।

Closing : भविभवियणिवारण सोलहकारण पयडमिगुण-गण-सायर ।
पणविवि तित्थंकर — ... ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१९९९. सोलहकारण-पूजा

Openign : सरव परव मैं बडा अठाई परव है,
नंदीश्वर स्वर जाँहि लिए बहु दरब है ।
हमे सकति सो नाहि इहाँ करि थापना,
पूजे जिनग्रह प्रतिमा है हित आपना ।।

Closing : देखें, क० १९९५ ।

Colophon : इति सोलैकारण पूजा ।

२०००. सोलहकारण-पूजा

Opening : मैया मेरी कूरिया हसुन ?
आवे मेरी कूरिया हसुन ।
लै खोज मेरी हम बहहमको न विसरो ये कहमा ।
कर हे सीता बीसेर हम ॥१॥

Closing : सांझ सुबेरा वेर न जाने न जाने धूप अब बरखा जी ॥

Colophon : नही है ।

२००१. सोलहकारण-पूजा

Opening : सोलैकारन भाय तीर्थंकर जे भये,
हर्ष इन्द्र अपार मेरु पै ले गए ।
पूजा करि निज धन्य लख्यौ बहु चावसौं,
हमहूँ षोडस भावन भावें भाव सौं ॥

Closing : देखें, क० १९९५ ।

Colophon : इति सोलह कारन पूजा सपूर्णम् । भाद्र शुक्ल १० गुरु सं०
१९६५ आरा मे बाबू हरिदास ने लिखा बाबू अनतकुमार के
पढ़ने हेतु । शुभम् ।

२००२. सोनागिरि-पूजा

Opening : जंबूद्वीप मंझार भरत क्षेत्तर कह्यौ,
आरज षंड सुजान वद्र देसै लह्यौ ॥

सोनागिर अभिराम सुपर्वत है तहाँ ।
पच कोडि अर अरघ मुक्ति पहुचे तहाँ ॥

Closing : सोनागिर जैमाल का लघुमति कहि बनाय ।
पढ़े गुनै जो प्रेम सो तिनको पातक जाय ॥१७॥

Colophon : इति सोनागिरि पूजा संपूर्णम् ।

२००३. स्तवन जयमाल

Opening : श्रीमत् श्रीजिनराजजन्मसमये इंद्राविहर्षायमान् ।
हस्तारूढविराजमानत्रिपुरीपुष्पांजलि दापयन् ।
इन्द्राणीपरिवारभृत्यसहिताः देवांगनावृत्यवान,
नानागीतविनोदमगलविधौ पूजार्थमादसौ ॥१॥

Closing : जिनवर वरमातामाननीय समर्थो स जयति जिनराज लालचन्द्र विनोदी ।
जिनवरपदपूज्यं भावनेंद्रसुपूज्य सकलमलविमुक्त ते लभते विमुक्तिम् ।

Colophon : इति श्री स्तवन जयमाल सम्पूर्णम् ।

२००४. स्वाध्याय पाठ

Opening : शुद्धज्ञानप्रकाशाय लोकालोकैकभानवे ।
नमः श्री वर्द्धमानाय वर्द्धमान-जिनेशिने ॥१॥

Closing : उज्जोवण मुज्जोवण णिव्वाहण ··· — ···· भणिया ॥३॥

Colophon : इति स्वाध्याय पाठः ।

२००५. श्यामलयक्ष पूजा

Opening : महिषासीनकराष्ठासित नख-शिखसुन्दररूप ।
स्थापित यक्ष अष्टमजिना श्यामलरूप अनूप ॥

Closing : श्यामल यक्ष समर्च अर्च पूजे जो प्राणी ।
तनमन कर आह्लाद प्रमति रुचि हृदि हरषानि ।।
तेइ अन्न धन सौभाग्य अष्टगत पद मिलि जावें ।
अजितदास मन आस पूज एहि गहि सुख पावें ।।

Colophon : इति श्री श्यामल-यक्ष पूजा सम्पूर्णम् ।

२००६. तत्वार्थसूत्राष्टक-जयमाला

Opening : उदधिक्षीरसुनीरसुनिर्म्मलैः कलशकांचनपूरितशीतलैः ।
पवनपावनक्षीमृतपूजनैः जिनजूहे जिनसूत्रमहं भजे ।।१।।

Closing : इति जिनमतसूत्रे ... — ... मोक्षमार्गस्य भानुः ।।

Colophon : इति तत्वार्थसूत्राष्टक जयमालसहित समाप्ता ।

२००७. तेरहद्वीप-पूजा

Opening : श्री अरिहंत प्रमाण करि पंच परमगुरु ध्याइ ।
तिनके गुन बरनंन करौं, मन वच सीस नवाइ ।।

Closing : अचल मेरु पश्चिम सुखकार कुमुद देश बसै निरधार ।
जिन मंदिर तहाँ पूजौ जाइ, रूपाचल पर अरघ चढ़ाइ ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

२००८. तीनलोक-संबंधी-पूजा

Opening : यह विधि ठाड़ौ होय कै प्रथम पढ़ै जो पाठ ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम नासै कर्म जु आठ ।।

Closing : तिहू जग भीतर श्री जिन मंदिर बने अकिर्त्तम महासुखदाय ।

नर सुर खग कर वंदनीक जे तिनको भविजन पाठ कराय ।।
धन धान्यादिक संपति तिनकैं पुत्र पौत्र सुख होउ भलाय ।
चक्रिपद सुरपद खग इंद्र होय कै करम नास शिवपुर सुखपाय ।।

Colophon : इति श्री तीनलोक-संबंधी पूजा संपूर्णम् ।

२००९. तीसचौवीसी-पूजा

२००९

Opening : संवौषडाह्वानम् संयुक्तान् ठः ठ. स्थापन-निष्टितार्थान् .... ।।

Closing : सकलसुखधामात्रिकालस्य ...... शिवकान्ति ।।

Colophon : इति चौवीसी पूजा समाप्तम् ।

२०१०. तीसचौबीसी-पूजा

Opening : ॐ जय जय जय णमोऽस्तु णमोऽस्तु णमोऽस्तु ... सव्वसाहूण ।।

Closing : जम्बूघातकपुष्करेषु .... - नित्यमाप्नुते ।।

Colophon : इति मधुकरविनियोगात् सवणविभावशर्म्मणाविहिता सुहितकरो-
भव्यानां नंद्यावन्द्र ताराकनि इति पंडित श्री भावशर्मकृत मधु-
करकारितं त्रिशतचतुर्विंशतिकार्च्चनं समाप्तम् ।

२०११. उद्यापन

Opening : भवांभोधिनिमग्नानां जन्तुनां तारणे क्षम ।
संस्थापयामि दशधा धर्म्मशर्म्मैककारणम् ।।

Closing : श्रीनाभीजिनींदो परमानंदो परमसुखकरकारम् ।
भवसागरपारं दुरधनिवारं परम ... . सुखकारम् ।।

Colophon : इति ।

२०१२. वर्द्धमान-पूजा

Opening : श्रीमतवीर हरैं भवपीर भरैं सुख सीर अनाकुल ताई ।
केहरि अंक अरी करि दंक नये सिव पंकज मोलि सुआई ।।
मैं तुमको इत थापत हौं प्रभु भक्त समेत हिये हरिषाई ।
हे करुना धन धारक देव इहाँ अब तिष्ठहु शीघ्रहि आई ।

Closing : श्री सनमति के जुगल पद जो पूजैं धरि प्रीत ।
वृंदावन सो चतुर नर लहै मुक्त नवनीत ।।

Colophon : इति श्री वीर वर्द्धमान पूजा समाप्तम् ।

२०१३. वर्तमानचौबीसी-पाठ

Opening : वंदो पांचो परमगुरु सुरगुरवंदत जास ।
विघन हरन मंगल करन पूजत परम प्रकाश ।।

Closing : रिषभ देव को आदि अंत श्री वर्द्धमान जिनवर सुखकार ।
तिनके चरन कमल को पूजै जो प्रानी गुनमाल उचार ।।
ताके पुत्र मित्र धन जीवन सुख समाज गुन मिले अपार ।
सुरपद भोग भोगि चक्री ह्वै अनुक्रम लहै मोक्ष पदसार ।।

Colophon : इति श्री वर्तमान चौबीस तीर्थंकर जिन पूजापाठ वृंदावन कृत सम्पूर्णम् । ज्येष्ठ मासे शुक्लपक्षे तिथौ १५, भृगुवासरे संवत् १६५२ ।

विशेष—इसके नीचे कवि नाम वर्णन भी दिया गया है ।

२०१४. वर्तमानचौवीसी-पूजा

Opening : श्री आदीश्वर आदि जिन अंतनाम महावीर ।
वन्दौ मन वच काय सौ मेटौ भव भय भीर ।।१।।

Closing : चौबीसों जिनराज की महिमा कही बताई ।
पढ़ैं सुनैं नरनारी सब सुर शिव पहुंचे जाई ।।४३।।

Colophon : इति श्री वर्तमान चौबीसी बास ठिठाने ? की पूजा सम्पूर्णम् । शुभमस्तु सिद्धिरस्तु । कल्यानमस्तु शुभ सम्वत् १८६० । मासोत्तमे मास अग्रहने मास शुक्लपक्षे द्वादश्यां चन्द्रवासरे पुस्तकमिद रघुनाथ सर्मने लेखि पट्टनपुरमध्ये आलमगज निवसतु । लेखक पाठकयो मगलमस्तु ।। शुभ भूयात् ।

२०१५. वर्तमानजिननाम

Opening : नत्वा सिद्धसमूह च ज्ञानमूर्तिजिनप्रभम् ।
भरतैरावतास्थाना निनैः साक विदेहजै ।।

Closing : भूतानागतवर्तमानिजिन ... सद्भव्यसप्रार्थनात् ।।३०।।

Clolophon : इति श्री अतीतवर्त्तमानागतपचभरतैरावतत्रिशच्चतुर्विंशतिका लौकिकाव्यवस्थया वीक्ष्य कृता शुभचन्द्रेण जिनभक्तिरागारिचर नन्दतु । इति त्रिशत्चतुर्विंशतिका पूजा समाप्ता ।

२०१६. विद्यमान-बीसतीर्थ कर-पूजा

Opening : पूर्वापरविदेहेषु विद्यमान-जिनेश्वर· ।
स्थापयामि अहम् अत्र शुद्धसम्यक्तहेतवे ।।१।।

Closing : श्री मदिरादियुग देवमजित वीर्यमुत्तमम् ।
भूयात् भव्य सता सौख्य स्वर्ग-मुक्ति-सुखप्रदः ।।

Colophon : इति श्री बीस विद्यमान पूजा संपूर्णम् ।

२०१७. विद्यमान बीस पूजा

Opening देखे, क्र० २०१६ ।

Closing : ए बीस जिणेसर णमिय सुरासुर,
बिहुरमाण मय संथुणिमा ।
जे भणई भणावइ अरू मणम बइ ,
ते पावइ सिव परमपय ॥

Colophon : इति बीस बहुरमाण की पूजा जयमाल समाप्तम् ।

२०१८. विद्यमान बीस तीर्थंकर पूजा विधान

Opening : वदो श्री जिनबीसको वि हमान सुखखान ।
दीप अढाई क्षेत्र मे श्री विदेह शुभ थान ॥१॥

Closing : सम्बत्सर विक्रम विगत बसु जुगग्रहगसि कह ।
ज्येष्ट शुद्ध प्रतिपद सुरि पूरन भयो सुछन्द ॥

Colophon : इति श्री सीमन्धरादि बीस तीर्थंकर पूजा समाप्तम् । शुभमस्तु ।
लिखा शिखिरचन्द भद्रपद कृष्ण ग्यारह (एकादशी) वार
शुक्रको शुभ बेला पूर्ण करी । सो जयवन्त प्रवर्तो ।

२०१९. विद्यमान बीस तीर्थंकर-पूजा

Opening : श्रीमज्जबूधातुकीपूष्कराद्ध द्वीपेषु च्चर्यै विदेहा. शर स्यु ।
वेदा वेदा विद्यमानाजिनेद्रा प्रत्येक तास्तेषु नित्य यजामि ॥१॥

Closing : एते विंशति तीर्थराअघहरा: कर्म्मारिविध्वंसका,
ससारार्णव तारणैकचतुरा इंद्रादिदेवैर्चिता ।
अतातितगुणाकरा सुखकरा मोहांधकाराबहा,
मुक्ति श्रीललनाविलास ललिता रक्षतु वो भक्तिकान् ॥१२॥

Colophon : इति विंशतिविद्यमान तीर्थंकर पूजा समाप्ता ।

२०२०. व्रत-विधान

Opening : चौदाशि ग्यारस ११ आठै ८ तीज ३ चौथ ४ एवं उपवास ४५
भावनापंचीसी व्रत दसैं १० पून्यो १५ एवं उपवास २५ भावना
बत्तीसी व्रत ।

Closing : आश्विनन्या पूर्वमुपवास एक पूर्णे सप्तविंशति,
नक्षत्रव्रते द्वितीयमुपवासवन्या क्रियते ॥

Colophon इति व्रत विधानम् ।